ISSN 2454-1109

The South Asian Academic Research Chronicle

A Refereed Interdisciplinary Indexed International

Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

SPECIAL ISSUE

M.S.P. Mandal's

Shri Shivaji College, Parbhani

Affiliated to Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded (Maharashtra, India)
NAAC Accreditation : A+ Grade, UGC : CPE, DBT Star College, STRIDE, Paramarsh

Deaprtments of English, Hindi and Marathi

&

English Language Teachers' Association of India (ELTAI) Parbhani Chapter

jointly organized

One Day International Hybrid Conference on

Nationalism and Literature

Exploring the Intersections of Language, Identity, and Imagination

Thursday, 17th April 2025

Venue : Shri Shivaji Auditorium 2, Shri Shivaji College, Parbhani

One Day International Hybrid Conference

on

Nationalism and Literature

Exploring the Intersections of Language, Identity, and Imagination

Thursday, 17th April 2025

Venue : Shri Shivaji Auditorium 2, Shri Shivaji College, Parbhani

Our Patrons

Hon. Shri. Prakash Dada Solanke
(MLA, Former Cabinet Minister, Maharashtra Govt.)
President MSP Mandal, Chhatrapati Sambhaji Nagar

Hon. Shri. Satishbhau Chavan
(MLC, Maharashtra Legislature)
Secretary, MSP Mandal,Chhatrapati Sambhaji Nagar

Hon. Shri. Hemantrao Jamkar
Member, Executive Council,
MSP Mandal,Chhatrapati Sambhaji Nagar

Chief Organiser

Dr. Balasaheb Jadhav
Principal

Prof. Dr. S.N.Keshatti
Vice Principal

Convenor

Prof. Dr. Rohidas Nitonde
Vice Principal,
Chairman, BOS in English, SRTMU Nanded

Organising Secretary

Prof. Dr. Utkarsh Kittekar
Co-ordinator, IQAC

Mr. Vijay More
Registrar

Co-convenors

Prof. Dr. Vijaya Nandapurkar
(HOD, English)

Prof. Dr. S.L.Rathod
(HOD, Hindi)

Prof. Dr. P.D.Bhope
(HOD,Marathi)

Co-ordinators

Prof. Dr. Sanjiv Jadhav श्री शिवाजी महाविद्या

Prof. Dr. Jayant Bobade राष्ट्रीय चेतना ए

Prof. Dr. R.S.Badure

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

श्री शिवाजी महाविद्यालय परभणी

द्वारा आयोजित

"राष्ट्रीय चेतना एवं साहित्य"

आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठीकी

स्मरणिका

(दि १७ अप्रैल २०२५)

Editor-in-Chief:

Dr. Rohidas Nitonde

Managing Editor:

Ms. Sushama Ingole

Guest Editors of the Current Volume:

Prof. Dr. S. L. Rathod

Prof. Dr. S. S. Jadhav

Prof. Dr. J. D. Bobde

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ. क्र.
०१	राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य एक विमर्श	डॉ. कलावती चि. निंबालकर	०६
०२	हिन्दी गीतों में राष्ट्रीय चेतना	प्रो.डॉ.शेषराव लिंबाजी राठोड	१०
०३	राष्ट्रीय चेतना के विविध आयाम	प्रो.डॉ.संजय जाधव	१५
०४	छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना का स्वर	प्रो.डॉ. जयंत बोबडे	२८
०५	हिंदी फिल्मी गीतों में अभिव्यक्ति राष्ट्रीय चेतना	रेमिसा सी.यू.	३४
०६	शहीद भगत सिंह की साहित्यिक प्रतिभा	संदीप चाळक	३९
०७	नासिरा शर्मा रचित 'बहिश्ते जेहरा' उपन्यास में राष्ट्रीय अस्मिता का स्वर	डॉ.रमेश शिंदे, योजना नाकाडे	४५
०८	२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.भाऊसाहेब नवले, रागिनी टेकाळे	४८
०९	'देश के लिए' नाटक में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. सुधीर वाघ	५४
१०	राष्ट्रीय हिंदी काव्यधारा और मैथिलीशरण गुप्त	डॉ. अनिल कुमार राठोड़	५९
११	आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. विजय वाघ, ज्ञानेश्वर हालसे	७०
१२	राष्ट्रीय चेतना और छायावादी युगीन काव्य	डॉ.दिलीपसिंह राजपूत	८२
१३	आधुनिक हिंदी महिला उपन्यासकारों की उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. व्ही.डी. कापावार	८८
१४	आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. भारत उपाध्य	९२
१५	आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.हनुमंत शेवाळे	९६
१६	स्वतंत्रता पूर्व हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	१०३
१७	आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीयता	प्रा. निर्मला जाधव	११०
१८	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य	डॉ.संतोषकुमार यशवंतकर	११४
१९	हिंदी नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.मोहन डमरे	११८
२०	हिंदी कहानी में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.वसंत माळी	११२
२१	अज्ञेय का काव्य और राष्ट्रीय चेतना	डॉ. अर्चना पत्की	१२७
२२	हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना	प्रो. डॉ. माधव पाटील	१३२
२३	निशा नंदिनी के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना	डॉ. पद्मानंद सोनकांबळे	१३५
२४	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता	डॉ सुभाष क्षीरसागर	१३९
२५	राष्ट्रीय चेतना और मैथिलीशरण गुप्त की हिंदी कविता	डॉ.बी.डी.मुंडे	१४३
२६	'हिमांद्री तुंग श्रृंग से' कविता में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. संदीप पाईकराव	१४९
२७	माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना	डॉ. प्रकाश सूर्यवंशी	१५४
२८	कथेत्तर गद्य विधाओं में (आत्मकथा) राष्ट्रीय चेतना	डॉ.संजयकुमार नरवाडे राधा देवहंस	१५७
२९	दिनकर का काव्य और राष्ट्रीय चेतना	डॉ. शेषराव माने	१६३
३०	कवि रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.युवराज मुळये	१६७
३१	राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख हस्ताक्षर : रामधारी सिंह दिनकर	डॉ. काकासाहेब गंगणे	१७३
३२	आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.शहाजी चव्हाण	१७९
३३	राष्ट्रीयता से ओतप्रोत भारतेंदु युगीन काव्य	डॉ. विजय पवार	१८७

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

३४	विष्णु प्रभाकर के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.महावीर हाके	१९३
३५	हिंदी दलित साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.विवेक घोबाळे	१९८
३६	राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता	डॉ. गोविंद शिवशेट्टे	२०४
३७	छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना एक अवलोकन	डॉ.आर.एस. पवार	२०९
३८	आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता के स्वर	डॉ.देविदास जाधव	२१४
३९	राष्ट्रीय चेतना और हिन्दी साहित्य	प्रा.डॉ.सुरेश शेळके	२२१
४०	ओमप्रकाश वाल्मीकि के कविताओं में यथार्थ	प्रा.डॉ. गौतम वाघमारे	२२४
४१	माखनलाल चतुर्वेदी के कविता में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.अर्चना बंग सोमाणी	२२९

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

१. राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य एक विमर्श

डॉ कलावती चि. निंबालकर
के, एल, ई संस्था हिंदी विभाग
लिंगराज महाविद्यालय, बेलागावी

सारांश- राष्ट्रीय चेतना यानी किसी राष्ट्र के लोगों में एकता और साजा भावना का होना है। हिंदी साहित्य राष्ट्रीय चेतना में अहम भूमिका निभा रहा है। संसार में ज्ञान के जितने भी अनुशासन है, उसमें साहित्य ही एकमात्र मानव जीवन की प्राथमिक मातृभाषा और परिभाषा रही है। राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसका संबंध मानव की अंतशचेतना से है। मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है जिसके कारण वह अपने राष्ट्र से विशेष प्रकार का लगाव रखता है। राष्ट्र और चेतना दोनों स्वतंत्र शब्द है जिसके मेल से एक महान शक्ति होकर राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय भावना और राष्ट्रीय चेतना का रूप धारण करती है। जिस राष्ट्र में राष्ट्रीयता की यह चेतना अधिक बलवान होगी उतना ही वह शक्तिशाली तथा समृद्ध मान जाएगा।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक का विपुल साहित्य राष्ट्रीयता की भावना है। साहित्य सामुदायिक विकास में सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अंग रहा है। संसार में ज्ञान के जितने भी अनुशासन हैं, पुणे में साहित्य एकमात्र जीवन की मातृभाषा रही है। साहित्य में जब हम प्रेम, श्रद्धा, करुणा, भक्ति,परोपकार आदि को पढ़ते हैं तो हमें मानवीय संवेदना के दर्शन होते हुए दिखाई देते हैं। समाज का राष्ट्र से बहुत गहरा संबंध रहा है। समाज की अपनी विशिष्ट जीवन शैली होती है जो समाज को प्रभावित करती है।

हिंदी साहित्य की प्रमुख विशेषता राष्ट्रीयता रही है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल स्वतंत्रता का युग रहा है। इसकी शुरुआत भारतेंदु युग से हुई है। भारतेंदु मंडल के कवियों के बाद यह पुष्पित और पल्लवित होती गई। जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, बालकृष्ण शर्मा नवीन,रामनरेश त्रिपाठी,, माखनलाल चतुर्वेदी ,सुभद्रा कुमारी चौहान ,रामधारी सिंह दिनकर आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इसमें सुभद्रा कुमारी चौहान भी राष्ट्रीय आंदोलन की नेता रही है। वह अपनी प्रसिद्ध कविता झांसी की रानी में देश भक्तों का सच्चा गुणानुवाद करती है—

"बुंदेले हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी, वो तो झांसी की रानी थी"1

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

इसी तरह भक्ति काल में कबीर दास जी ने निराकार ब्रह्म की उपासना का आदर्श प्रस्तुत किया और राष्ट्रीय गरिमा में नव जीवन का संचार कर राष्ट्र को नई दिशा दिया। राष्ट्रकवि कबीर ने राम और रहीम को एक सूत्र में फिर रोने का कार्य भी किया है।

एक जगह भारतेंदु कहते हैं "इस महामंत्र का जाप करो जो हिंदुस्तान में रहे, चाहे किसी रंग, जाति का क्यों ना हो वह हिंदू है। हिंदू की सहायता करनी चाहिए जिससे धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीयता की न्यू भारतीय संविधान में ही पड़ी उसकी परिकल्पना भारतेंदु ने बहुत पहले ही कर ली थी वह कहते हैं--

"अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी
पैधन बिदेश चलि जात इहै अति स्वारी "2

एक साहित्यकार अपने यूजीन परिवेश से अछूता नहीं रह सकता। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में देश में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की लहर दौड़ रही है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी लेखनी से भारत दुर्दशा का चित्रांकन करके समाज में जागरण का संदेश दिया है। इस प्रकार मैथिलीशरण गुप्त के द्वारा पहला राष्ट्रवादी स्वर भी उठा, मैथिलीशरण गुप्त जी के द्वारा लिखित भारत -भारती पढ़कर भारत के सैकड़ो ना जवानों में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ है। गुप्त जी ने अंग्रेजों के दमन आत्मक कार्यवाही का मुकाबला किया और जेल की यात्राएं भी सही है उन्होंने लिखा है-

"हम कौन थे क्या हो गए,
और क्या होगे अभी
आओ विचारे बैठकर
ए समस्याएं सभी।"3

राष्ट्रीयता को श्री गिल ग्राइस्ट ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है।

"राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जो उन लोगों में उत्पन्न होती है जो एक व्यक्ति ही जाती, धर्म , भाषा, इतिहास, आचार -विचार एवं एक ही राजनीति आदर्श से संगठित हो।"4

एक जगह पर जयशंकर प्रसाद जी लिखते हैं की उनकी एक कविता उसे पढ़ते ही लोगों का कलेजा पिघलेगा उसमें सिख सैनिकों के मृत्यु की गोद में उसी भांति का वर्णन है जैसे बचपन में मां की धमकी से बालक सो जाता है वह अपने-अपने माता का दूध भरी ,दूध के समान पवित्र दुलार भरी गोदों को सुना कर मृत्यु की की आक्रोशसे समा गए।

" रूप भरी, आशा भरी, यौवन अधीर भरी,
पुतली प्राणयिनी का बाहु पाश खोलकर दूध भरी,
दूध सी दुलार भरी मां की गोद, सूनी कर सो गए।"5

यहां कवित्री सुभद्रा कुमारी चौहान जी की और एक कविता "वीरों का कैसा हो बसंत"कविता में राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करते हैं। जलियांवाला बाग में हुए नृशंस हत्या पर करुणा का भाव प्रदर्शित करते हुए वीरों का कैसा हो बसंत कविता में कवयित्री यह कहती है—

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

"आओ प्रिया ऋतुराज किंतु धीरे से आना
यह है शोक स्थान यहां मत शोर मचाना,
कोमल बालक मारे यहां गोली खाकर,
कलियां उनके लिए चढ़ता थोड़ी सी लाकर।"6

सिया राम शरण गुप्त की बापू कविता में गांधीवाद के प्रति आस्था, अहिंसा,करूना,शांति आदि का प्रभाव रहा है। इसी तरह गद्य साहित्य में प्रेमचंद ,जैनेंद्र, राहुल सांकृत्यायन, शिवपूजन सहाय, राजा राधिका रमन प्रसाद सिंह आदि ने अपने रचनाओं में देश प्रेम राष्ट्रीयता की भावना प्रस्तुत किया है। इसी तरह रामधारी सिंह दिनकर विद्रोही कवि रहे हैं स्वतंत्रता के बाद के राष्ट्रकवि के रूप में जाने जाते हैं, उनके काव्य में राष्ट्रीयता की परिपूर्णता दिखाई देती है जैसे-

"लड़ना उसे पड़ता मगर, और जितने में वह देखता है,
सत्य को रोता हुआ। वह सत्य है जो रो रहा,
इतिहास के अध्याय में, विजयी पुष्प के नाम पर
कीचड़ नयन का डालता।"7

मैथिलीशरण गुप्त पर गांधीवाद का भी प्रभाव रहा है। वह अपने सामने हुए आंदोलन की घटनाओं को लेकर एक कथा तैयार करते थे। इस कारण से माखनलाल चतुर्वेदी का कार्य सबसे अलग रहा है। राष्ट्रीय भावना के ओजस्वी कवि भी रहे हैं। कविता में वह कहते हैं-

"तोड़ लेना वनमाली उसे मुझे पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पर जावे वीर अनेक।।"8

जयशंकर प्रसाद की काव्य कृति 'लहर 'इस कृति में, आंखों में अलग जगाने को, यह कौन भैरवी आई है, बीती विभावरी जाग री, अब जागो जीवन के प्रभात, जगती की मंगलमयी उषा बन, करुणा उषाकालीन रही है, इन कविताओं मेंजागरण का संदेश मिलता है। प्रसाद जी की कविता में दल- कपट से पूर्ण वातावरण को छोड़ निश्चल प्रेम युक्त वातावरण में रहने दिन हीनों के प्रेमी, जगत को सत्य मानने वाले एवं नवजागरण नवनिर्माण की प्रेरणा दी है वह लिखते हैं-

"फैलानी है जब उषा राग, जंग जाता है उसका विराग
वंचकता पीड़ा घृणा, मोह मिलकर बिखेरते अंधकार
धीरे से वह उठता पुकार, मुझको ना मिला रे कभी प्यार।"9

इन पंक्तियों में भी प्रभात बेला की उषा अपनी मधुर लालिमा के रूप में सर्वत्र अनुराग और जागरण का संदेश देती है।

इस प्रकार हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय कविताओं में एक और पराधीनता के प्रति क्षोभ का भाव व्यक्त किया है। और गौरवपूर्ण अतीत का भी गुणगान करते हुए देश के प्रति प्रेम भाव प्रकट हुआ दिखाई देता है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

निष्कर्ष- राष्ट्रीय भावना राष्ट्र के प्रगति का मूल मंत्र है। हिंदी साहित्य के अनेक साहित्यकारों ने राष्ट्रीयता के भाव भूमि पर अपनी कृतियां रच कर नवजागरण का संदेश दिया गया है। शोषण, अ न्याय,पूंजीवादी और अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह एवं क्रांति के स्वर प्रस्तुत हुए हैं। राष्ट्रीय चेतना की सुप्त धारा को नई दिशा मिली और जन- जागरण को नयीचेतन अरे जागृति भी मिली। इस तरह राष्ट्रीय चेतना को शक्ति प्रदान करने में हिंदी साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

आधार ग्रंथ सूची

1) झांसी की रानी, सुभद्रा कुमारी चौहान
2) भारतेंदु ग्रंथावली, संपादक, ब्रजरत्न दास, नागरी प्रचारिणी, काशी संख्या2010.
3) भारत -भारती, वर्तमान खंड, मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ संख्या 10
4) हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना, विद्यानाथ गुप्त ,पृष्ठ संख्या07.
5) जयशंकर प्रसाद ,ग्रंथावली, प्रसाद वांग्मय भाग 1, रत्न शंकर प्रसाद पृष्ठ संख्या377
6) वीरों का कैसा हो वसंत, सुभद्रा कुमारी चौहान
7) 'कुरुक्षेत्र'-,रामधारी सिंह दिनकर
8) त्रिपाठी, विश्वनाथ ,हिंदी साहित्य का संक्षिप्त ,इतिहास 2000,एन.सी.आर.टी नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या1181
9) जयशंकर प्रसाद ,ग्रंथावली,प्रसाद वांग्मय भाग 1,कॉपीराइट रत्न शंकर प्रसाद ,पृष्ठ संख्या 361.
10) अंतरजाल की सहायता

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२.

हिंदी गीतों में राष्ट्रीय चेतना

प्रो. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड

प्रोफेसर, शोध निर्देशक एवंम हिंदी विभागाध्यक्ष,

श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी

ई-मेल : shesharaolrathod298@gmail.com मो. 9420531719

सारांश :

राष्ट्रीय चेतना की अनुभूति देशभक्ति की सघनता के कारण अधिक प्रखर होती है। देशभक्ति को सही दिशानिर्देश राष्ट्रीय चेतना से मिलती है। राष्ट्रीय चेतना और देशप्रेम एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। राष्ट्रीय चेतना व्दारा हम अपनी मातृभूमि से प्रेम करना सिखते हैं। राष्ट्रीय चेतना के अंतर्गत देश की भूमि, भूमि के निवासी, एवं भूमि पर बसे जन की संस्कृति के प्रति प्रत्यक्ष एवं परोक्ष, दोनों ही रूपों में प्रगति और विकास का भाव ध्वनित होता है। व्यक्तिगत स्तर से उपर उठकर परिवार, समाज, जाति, धर्म आदि सारे सोपानों को पार करती हुई चेतना की असंख्य धाराओं का समूचा प्रवाह जब राष्ट्रीयता के उच्च सिखरों को स्पर्‌श करता है, तब वह राष्ट्रीय चेतना का रूप धारण करता है। पराधिनताकालीन आन्दोलन के व्दारा भारत की राष्ट्रीय चेतना की समूचे विश्वस्तर में अभिव्यक्ति हुई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्रीय चेतना का धर्म देश में पूर्ण मनुष्यत्व की स्थापना, सहअस्तित्व, सहबंधुत्व आदि गुणों के व्दारा राष्ट्र के विकास का है। अनेक विविधता के रहते हुए भी भारतीय जीवन दर्शन में राष्ट्रीय चेतना की अमोघ सत्ता ही सक्रिय है। विगलित मान्यताओं, जड रूढियों और मिथ्याडंबरो की त्रासदी, पीडा और घुटन को झेलते हुए जन जीवन में आशा और विश्वास के नये क्षितिजों के उदघाटन में राष्ट्रीय चेतना की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। राष्ट्रीय चेतना के कारण ही देशप्रेम की उत्कट अभिलाषा देशवासियों के मन में निर्माण होती है। हिंदी गीतों में राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति प्रखर रूप में हुई है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय चेतना, देश प्रेम, त्याग एवं बलिदान, क्रांति

प्रस्तावना :

अनेक विविधता के रहते हुए भी भारतीय जीवन दर्शन में राष्ट्रीय चेतना की अमोघ सत्ता ही सक्रिय है। विगलित मान्यताओं, जड रूढियों और मिथ्याडंबरों की त्रासदी पीडा और घुटन को झेलते हुए जन जीवन में आशा और विश्वास के नये क्षितिजों के उदघाटन में राष्ट्रीय चेतना की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वास्तव में चेतना के कारण राष्ट्रीय अनुभूतियों की सघनता सुधारात्मक दृष्टिकोण का विस्तार, बहुमुखी प्रगति के बढते दायरे, देशप्रेम की उत्कट अभिलाषा, राष्ट्रीय मान-सम्मान के प्रश्नों पर त्याग और बलिदान की भावना में राष्ट्रीय चेतना का श्री गणेश होता है। राष्ट्रीय चेतना की विशद परिकल्पना में एक महान राष्ट्र के रूप में देश की छवि को उभारने, उसकी प्रगति और विकास के लिए प्रयत्न, उसकी स्वतंत्रता एवं अखण्डता की

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

रक्षा, धर्म, जाति, भाषा, प्रान्त की संकिर्णता से मुक्ति, देश के गौरवपूर्ण अतीत की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप के प्रति आस्था, सांप्रदायिक अंधविश्वासों, रुढियों के प्रति आक्रोश, सामाजिक एवं धार्मिक संकीर्णता तथा अज्ञावता को दूर करने के लिए संघर्षरत रहना, अभाव, अनास्था, कुण्ठा, भ्रष्टाचार, आंतकवाद आदि के प्रति क्षोभ और आक्रोश आदि निरूपित होते हैं। भारत देश की राष्ट्रीय चेतना अपने दिव्य अलोक से अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित है। इसमें विश्व मानवता के कल्याण की शाश्वत भावना निहित है।

हिंदी गीतों में राष्ट्रीय चेतना :

यह तो सर्व विदित है कि भारत भूमि को स्वतंत्र करने में स्वतंत्र सेनानियों, क्रांतिकारकों के साथ-साथ हिंदी गीतकारों का भी अपना विशिष्ट योगदान रहा है। युँ कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी की हिंदी के ओजस्वी, राष्ट्रप्रेमी, क्रांतिकारी गीतों को सुनकर हमारे देश में अनेक क्रांतिकारी निर्माण हुए। शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ ये ऐसे नाम हैं, जिन पर हमारा राष्ट्र गर्व करता है। ये महान क्रांतिकारी भारतीय स्वतंत्रता की नीव के पत्थर थे। वृंदावनलाल वर्मा ने कही लिखा है कि- नींव के पत्थर भवन को देख नहीं पाते। सच तो यह है कि भवन उन्हीं के भरोसे खडा होता है, जो नींव के पत्थर बनकर नींव में गडे हुए हैं। उन शहीदों में बलिदान की इतनी उंची और गहरी भावना थी कि आज भी उनपर हम फक्र कर सकते हैं। हिंदी गीतों ने क्रांतिकारकों के दिल में विचारों की ऐसी मशाल जलाई थी कि वे दिवाने बनकर राष्ट्र को आजाद करने के लिए उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। उन महान क्रांतिकारकों यह राष्ट्र कभी भूल नहीं सकता। रामप्रसाद बिस्मिल ने फांसी के तख्ते पर कहा था-

"सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं।
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।"

शहीदेंआजम भगतसिंह का जीवन राष्ट्रीय स्वाभिमान का जीवन था। वे जिए और मरे इसी स्वाभिमान के लिए। शहीद भगतसिंह को अभ्यास करने का काफी शौक था। उन्होंने उत्तम शेरों का संचय भी किया था। उनके व्दारा संचित एक ऐसा शेर है जो उन्होंने अपने भाई सरदार कुलतारसिंह को एक पत्र में लिखा था। इस शेर में भगतसिंह का सारा जीवन दर्शन मुखरित हो उठता है-

"मेरी हवा में रहेगी खयाल की बिजली,
ये मुश्ते-खाक है फानी, रहे रहे, न रहे।"

आधुनिक काल का आरंभ होने से पहले ही हिंदी के गीतकारों ने अपने परतंत्र देश की दुर्दशा को देखकर अनेक ओजस्वी गीत लिखे थे। कुछ हिंदी गीतकारोंने विदेशी सत्ताके अत्याचारों को समाप्त करने के लिए आक्रोश के स्वर गुँजाएँ हैं। हिंदी गीतकारों ने राजनैतिक चेतना निर्माण कर अपने देश की सोई हुई जनता को जगाने का प्रयत्न किया है। देश के महान नेताओं, समाज सुधारको के साथ-साथ हिंदी के गीतकारों ने आजादी की लढाई में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महात्मा गांधीजी ने स्वदेशी आंदोलन चलया था।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

उसका प्रभाव भारतवासियों पर इस प्रकार हुआ कि वे विदेशी वस्तुओं को त्यागकर स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने लगे। इस संबंध में आर.एस. शर्मा का []स्वराज्य का तुफान[] नाम का गीत काफी चर्चित रहा है।

"इक लहर चला दी भारत में इन गांधी टोपी वालोंने।
स्वाधिन बनो यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने।
सदियों की गुलामी में फंस कर अपने को भी जो भूल चुके।
कर दिया सचेत उन्हें तो, इन गांधी टोपी वालों ने।" 1

भारतीय जनता आरंभ से ही अपने राष्ट्रध्वज को वंदन करते आयी है। भारतवासियों के लिए अपना राष्ट्रध्वज उसकी आन, बान, शान सबकुछ है। इसी राष्ट्रध्वज की शान के लिए हमारे शुरवीर बहादुर शिपाई वीर गति को प्राप्त हुए। श्री श्यामलाल गुप्त []पार्षद[] ने []राष्ट्रीय झंडा[] नामक गीत में देश प्रेम को व्यक्त किया है। विशेष रूप से सैनिकों का अपने देश के ध्वज के प्रति असीम सम्मान का भाव देखने को मिलता है-

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा उँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम-सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हर्षानेवाला, मातृभूमि का तन-मन सारा।
झंडा उँचा रहे हमारा।" 2

कवयित्री श्रीमती. सुभद्रा कुमारी चौहान ने "आजादी की देवी" नामक गीत में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के संबंध में ओजपूर्ण वाणी में कहा है-

"बुंदेले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लडी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"3

15 अगस्त 1947 को जब भारत देश स्वतंत्र हुआ, तब अपनी खुषी और आनंद को व्यक्त करने के लिए गीत लिखे हैं। श्रीमती. सुभद्राकुमारी चौहान []स्वदेश के प्रति[] नामक गीत में कहती है-

[]आ, स्वतंत्र प्यारे देश आ, स्वागत करती हूँ तेरा,
तुझे देखकर आज हो रहा दूना प्रमुदित मन मेरा।[] 4

कवि श्री शिवमंगलसिंह []सुमन[] ने अपने एक गीत के माध्यमसे भारतवासियों को चीन के साथ युध्द काल में आत्मबलिदान करने के लिए प्रेरित किया था। उस गीत की प्रेरणादायी पंक्तियाँ इस प्रकार है-

"आजाद देश की प्रथम परीक्षा हुई शुरू,
कुरबानी का फिर नया जमाना आया है,
फिर हुई चुनौती वहशी हूणों की आई,
फिर नये राष्ट्र ने भैरव राग गुँजाया है।
हिमवान हुआ घायल तो सागर हुँकारा,
चालीस कोटि लहरों से फिर फुफकार उठी।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

हर नौजवान सिर लेकर चला हथेली पर,
बलिदानों की वेदी पर हवि धुधकार उठी।" 5

हिंदी गीतकारों ने राष्ट्रभाषा हिंदी को देश में जातीय एकता की एक महत्वपूर्ण कडी माना है। भारतेन्दु तथा कुछ राष्ट्रभक्त हिंदी गीतकारों ने अपने गीतों में इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति की है। प्रसिध्द हिंदी गीतकार श्री विरेन्द्र मिश्र ने एक गीत में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किए हैं-

"हिंसा से जलती दुनिया में हिंदी अमृत-वाणी
तोडेगी क्यों ? जोडेगी यह राम कहानी।
मिट्टी में मिल जाए न सपने, यह है इनकी फौली,
धरती-जाई भाषा अपनी जननी, अपनी बोली।" 6

भारत देश में अनेक जाती तथा अनेक धर्मो के लोग रहते हैं। देश के विकास की दृष्टि से जाती और धर्मो में एकता का होना आवश्यक है। कवि एवं गीतकार श्री शैलेन्द्र चतुर्वेदी ने वतन एक ही है नामक गीत में जातीय एकता की स्थापना की है। वे अपने गीत में कहते हैं-

हिंदु मुस्लीम हो चाहे दो, पै वतन एक ही है।
दोनों के वास्ते डायर की भी गन एक ही है॥
एक ही माँ के हैं आगोश में बैठे दोनो।
सर पै दोनों के मियाँ चर्खे कुहन एक ही है।" 7

इसी प्रकार श्री हुलास शर्मा प्रेमी" ने "बलिदान आहवान" गीत में जातीय एकता के संबंध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं-

"मेरी जाँ न रहे, मेरा सर न रहे, सामान रहे न ये साज रहे।
फकत हिंद मेरा आजाद रहे, माता के सर पर ताज रहें॥
मेरे हिंदु मुसलमाँ एक रहें, भाई-भाई सो रस्मों-रिवाज रहे।
मेरे वेद-पुराण कुराण रहें, मेरी पूजा संध्या नमाज रहे॥" 8

उपसंहार :

इस प्रकार हिंदी के गीतकारों ने अपने गीतों के माध्यम से भारत देशवासियों मन में राष्ट्र प्रेमभाव एवं राष्ट्रीय चेतना को निर्माण किया है। इनके गीतों में परतंत्र भारत को स्वतंत्र करने की प्रेरणा, भारत माता की वंदना, राष्ट्रीय झंडे का गौरवगान का ओजस्वी स्वर सुनाई देता है। महात्मा गांधी के अहिंसा तथा स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग, भारतीय सभ्यता और संस्कृति आदि का वर्णन इनकी रचनाओं में हुआ है। इसके साथ ही भाषायी एकता और प्रेमभाव, मातृभूमि के प्रति प्रेम, राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जागरण आदि का वर्णन भी इनके गीतों में हुआ है। दूसरे शब्दों में कहे तो इनके गीतों में राष्ट्रप्रेम की भावना तथा राष्ट्रीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ सूची :

1 साहित्य अमृत : स्वाधीनता विशेषांक, अगस्त, 2007
2 भारत के राष्ट्रीय गीत : सं.डॉ. पी.सी. शर्मा एवं भानुशंकर मेहता
3 स्वराज्य का तुफान : आर. एम. शर्मा
4 राष्ट्रीय झंडा : श्री. श्यामलाल गुप्त
5 आजादी की देवी : श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान
6 स्वदेश के प्रति : श्रीमती. सुभद्राकुमारी चौहान
7 वतन एक ही है : श्री. शैलेन्द्र चतुर्वेदी
8 बलिदान आहवान : श्री. हुलास शर्मा प्रेमी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

३. राष्ट्रीय चेतना के विविध आयाम

प्रो. डॉ. संजय जाधव
श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी
Email: drssjhindi@gmail.com मोब. 9075663188

शोध-सारांश

राष्ट्रीय चेतना किसी राष्ट्र के नागरिकों की सामूहिक मानसिकता, एकता की भावना और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक होती है। यह चेतना राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में विकसित होती है। इस शोध पत्र में राष्ट्रीय चेतना के विविध आयामों पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें इसकी उत्पत्ति, विकास, प्रभाव और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। राष्ट्रीय चेतना का अर्थ उस भावना से है, जो किसी विशेष राष्ट्र के नागरिकों को एकता, समरसता और देशभक्ति की भावना से जोड़ती है। यह चेतना केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं होती, बल्कि भाषा, संस्कृति, इतिहास और मूल्यों से भी गहराई से जुड़ी होती है। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी देश में राष्ट्रीय चेतना विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। राष्ट्रीय चेतना का विकास ऐतिहासिक घटनाओं, आंदोलनों और संघर्षों से प्रभावित होता है। भारत में स्वतंत्रता संग्राम इस चेतना का प्रमुख उदाहरण है, जिसमें महात्मा गांधी, भगत सिंह और नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डॉ.आंबेडकर जैसे महामानवों राष्ट्रवाद को नई दिशा दी। किसी राष्ट्र की राजनीतिक संरचना और शासन प्रणाली राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित करती है। लोकतंत्र, संविधान और नागरिक अधिकार इस चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में संवैधानिक मूल्यों, जैसे कि समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व, ने राष्ट्रीय चेतना को सशक्त किया है। भाषा, धर्म, परंपराएं, कला और साहित्य किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को परिभाषित करते हैं। भारत में हिंदी, तमिल, बंगाली, मराठी जैसी भाषाएँ और उनकी साहित्यिक विरासत राष्ट्रीय चेतना को बल प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, योग, भारतीय संगीत, नृत्य और लोक कलाएँ भी इस चेतना को सशक्त करती हैं।

बीज शब्द : राष्ट्र और राष्ट्रीयता राष्ट्रीय चेतना, विविध आयाम, राष्ट्रीय चेतना और चुनौतियाँ

मूल शोधालेख

प्रस्तावना -

राष्ट्रीय चेतना यानी किसी राष्ट्र के लोगों में एकता और देशप्रेम की भावना का होना है। राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसका संबंध मानव की अंत:चेतना से है। मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है जिसके कारण वह अपने राष्ट्र से विशेष प्रकार का लगाव रखता है। राष्ट्र और चेतना दोनों स्वतंत्र शब्द है

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

जिसके मेल से एक महान शक्ति होकर राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय भावना और राष्ट्रीय चेतना का रूप धारण करती है। जिस राष्ट्र में राष्ट्रीयता की यह चेतना अधिक बलवान होगी उतना ही वह शक्तिशाली तथा समृद्ध मान जाएगा सामाजिक समता और सामूहिक उत्तरदायित्व राष्ट्रीय चेतना के महत्वपूर्ण पहलू हैं। जाति, धर्म, लिंग और क्षेत्रीयता की विविधता के बावजूद, समाज में समता और सहिष्णुता की भावना राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करती है। आर्थिक समृद्धि और आत्मनिर्भरता भी राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित करती है। जब कोई राष्ट्र आत्मनिर्भर बनता है, तो उसमें आत्मगौरव और आत्मसम्मान की भावना विकसित होती है। 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी पहलें इस आयाम को दर्शाती हैं। वर्तमान युग में वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के चलते राष्ट्रीय चेतना की परिभाषा भी बदल रही है। आज राष्ट्रवाद केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रवासी भारतीयों के योगदान, अंतरराष्ट्रीय संबंधों और डिजिटल मीडिया के माध्यम से भी विकसित हो रहा है। राष्ट्रीय चेतना किसी भी राष्ट्र की एकता और अखंडता की नींव होती है। यह केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं है, बल्कि आज भी समाज में इसकी महत्ता बनी हुई है। जब नागरिक अपने राष्ट्र के प्रति गर्व और एकजुटता की भावना रखते हैं, तभी देश विकास और समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकता है। राष्ट्रीय चेतना को बनाए रखना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है, जिससे राष्ट्र सशक्त और आत्मनिर्भर बन सके। राष्ट्रीय चेतना एक गतिशील प्रक्रिया है, जो समय, परिस्थितियों और सामाजिक परिवर्तनों के अनुसार विकसित होती रहती है। इसके विभिन्न आयामों को संतुलित रखते हुए, एक समृद्ध, सशक्त और एकीकृत राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय चेतना को सकारात्मक दिशा में विकसित किया जाए, ताकि देश की एकता, अखंडता और समृद्धि बनी रहे।

शोधालेख के मुख्य उद्देश्य

1. राष्ट्र और राष्ट्रीयता के अंत:संबंधों का विवेचन करना
2. 'चेतना' अवधारणा को स्पष्ट करना
3. राष्ट्रीय चेतना के उदय और विकास को समझना
4. राष्ट्रीय चेतना के विविध आयामों का विवेचन करना
5. राष्ट्रीय चेतना में बाधाक तत्वों का आकलन करना

राष्ट्र और राष्ट्रीयता का अंत:संबंध

"राष्ट्र" और "राष्ट्रीयता" दो ऐसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक अवधारणाएँ हैं, जो किसी भी देश की अस्मिता, एकता और स्थायित्व के आधार स्तंभ माने जाते हैं। यद्यपि ये दोनों शब्द अलग-अलग हैं, परंतु इनमें गहरा अंत:संबंध है। राष्ट्र एक भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक इकाई है, जबकि राष्ट्रीयता उस राष्ट्र के नागरिकों की सामूहिक पहचान, गौरवबोध और एकता की भावना को दर्शाती है।

राष्ट्र की संकल्पना:

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

राष्ट्र एक ऐसी राजनीतिक इकाई है, जो एक निश्चित भौगोलिक सीमा में रहने वाले लोगों के बीच सांस्कृतिक समानता, ऐतिहासिक अनुभव, भाषा, परंपरा, धर्म या अन्य तत्वों के आधार पर एकता की भावना उत्पन्न करती है। राष्ट्र केवल सीमाओं से नहीं, बल्कि लोगों की मानसिकता, एकजुटता और पहचान से बनता है। राष्ट्र शब्द जिसे अंग्रेज़ी भाषा में नेशन (Nation) कहा जाता है, लैटिन (Latin) भाषा के नेशियो (Natio) शब्द से निकला है। लातीनी भाषा में 'नेशियो' शब्द का अर्थ 'जन्म' अथवा 'जाति' है। शब्द की उत्पत्ति की दृष्टि से राष्ट्र का अर्थ हुआ वह जनसमूह जो वंश अथवा जन्म की एकता में बँधा हुआ हो।

राष्ट्र की परिभाषाएँ -

1. बर्गेस (Burgess) के अनुसार, "राष्ट्र भौगोलिक एकता वाले निश्चित इलाके में रहती हुई एक ही जाति की जनसंख्या है।"1 (Nation is a population of the ethinic unity, inhabiting a territory of geographical unity.)

2. लॉर्ड ब्राइस (Lord Bryce) के शब्दों में, "राष्ट्रीयता वह जनसंख्या है जो भाषा, साहित्य और विचार, प्रथाओं और परम्पराओं जैसे बन्धनों में परस्पर इस तरह बंधी हुई हो कि वह अपनी ठोस एकता अनुभव करे तथा उन्हीं आधारों पर बंधी हुई जनसंख्या से अपने-आप को भिन्न समझे।"2 (A nationality is a population held together by certain ties, as for example language and literature, ideas, customs and traditions in such a way as to feel itself a coherent unity distinct from other population. Similarly held together by like ties of their own.)

3. ब्लंशली - " राष्ट्र ऐसे मनुष्यों के समूह को कहते हैं जो विशेषतया भाषा और रीति-रिवाजों के द्वारा एक समान सभ्यता से बंधे हुए हों, जिससे उनमें अन्य सभी विदेशियों से अलग एकता की सुदृढ भावना पैदा होती है।"3. (Nation is a union of men... bound together, especially by language and customs in a common civilization, which gives them a sense of unity and distinction from all foreigners.)

एक राष्ट्र भाषा, इतिहास, जातीयता, संस्कृति या समाज जैसी साझा विशेषताओं के संयोजन के आधार पर गठित लोगों का एक समुदाय है। एक राष्ट्र इस प्रकार उन विशेषताओं द्वारा परिभाषित लोगों के एक समूह की सामूहिक पहचान है।

राष्ट्रीयता एक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भावना है, जो व्यक्तियों को उनके राष्ट्र के प्रति समर्पित करती है। यह एक ऐसी भावना है, जिसके तहत व्यक्ति स्वयं को राष्ट्र के साथ जोड़ता है, उस पर गर्व करता है, उसकी रक्षा करता है और उसके विकास में भागीदार बनता है।

राष्ट्रीयता की परिभाषा -

जॉन स्टुअर्ट मिल : "मानव जाति का एक भाग राष्ट्रीयता कहा जा सकता है, यदि वह सामान्य सहानुभूति द्वारा परस्पर बंध हुआ हो, तथा उसी के समान किसी अन्य समुदाय से सहानुभूति न रखता हो जो केवल लोगों की बनी हुई हो।"4

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

लॉर्ड ब्राइस (Lord Bryce) के शब्दों में, "राष्ट्रीयता वह जनसंख्या है जो भाषा, साहित्य और विचार, प्रथाओं और परम्पराओं जैसे बन्धनों में परस्पर इस तरह बंधी हुई हो कि वह अपनी ठोस एकता अनुभव करे तथा उन्हीं आधारों पर बंधी हुई जनसंख्या से अपने-आप को भिन्न समझे।"5 (A nationality is a population held together by certain ties, as for example language and literature, ideas, customs and traditions in such a way as to feel itself a coherent unity distinct from other population. Similarly held together by like ties of their own.

आम तौर पर राष्ट्र और राष्ट्रीयता को एक दूसरे का पर्याय माना जाता है। परंतु दोनों में वैज्ञानिक दृष्टि से देखने पर सूक्ष्म अंतर दिखाई देता है। राष्ट्रीयता की व्याख्या कई दृष्टिकोणों से । राष्ट्रीयता शब्द की उत्पत्ति की दृष्टि से यह शब्द अंग्रेज़ी भाषा के शब्द नेशनलिटी (Nationality) का हिन्दी रूपान्तर है । Nationality शब्द लैटिन भाषा के 'नेशियो' (Natio) शब्द से बना है। जिसका अर्थ जन्म या जाति से लिया जाता है। समान नस्ल, जाति या जन्म के आधार पर समानता पाने वाले लोगों के समूह को राष्ट्रीयता कहा जाता है। संचार के साधनों के विकास के कारण लोग दुनिया के हर हिस्से में पहुँच रहे हैं और स्थायी रूप से वहाँ पर रहने लगे हैं। परिणामत: वर्ण संकर होना स्वाभाविक है। आज किसी भी नस्ल शुद्धता पर विश्वास नहीं किया जा सकता। मनुष्य में अन्तर्जातीय विवाह व अन्तर्नस्लीय विवाह हो रहे हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीयता की जो पारंपारिक अवधारणा है वह बदल गयी है। उदाहरण के लिए भारतीय पुरुष और अमरिकी स्त्री से जन्में बच्चे में माँ व बाप दोनों के गुण आने से एक नई नस्ल का जन्म होता है। ऐसे समय पर हमारे सामने यह प्रश्न खड़ा होता है कि उस बच्चे को किस राष्ट्रीयता का नाम दिया जाए।

राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति सांस्कृतिक गर्व, एकता और अखंडता के प्रति समर्पण, स्वतंत्रता, समानता और न्याय की भावना, देश के प्रतीकों, भाषा और परंपराओं का आदर आदि से होती है।

चेतना का अर्थ :

चेतना' का शाब्दिक अर्थ होता है, मनोवृत्ति, स्मृति, याद, स्मरण, सुध, चेत, बोध, संज्ञा, होश, बुद्धि। चेतना का स्थूल अर्थ होता है जो तत्व जीवधारियों में होता है जिससे वह निर्जीव पदार्थों से भिन्न बनता है। जीवधारियों को अथवा मनुष्यों की जीवन क्रियाओं को चलाने वाले तत्व का को चेतना कहा जा सकता है। 'चेतना' शब्द व्याकरण की दृष्टि से 'युच' प्रत्यय और 'टाप्' प्रत्यय और टाप् प्रत्ययों के योग से बना है जिसका अर्थ होता है-चेत् यते अर्थात् इसके द्वारा किसी को चेतन बनाया जाता है। अंग्रेजी में चेतना का समानार्थी शब्द है- 'कांशसनेस' जिसका सामान्य अर्थ होता है- आंतरिक ज्ञान अथवा चेतन, जागरूकता।

चेतना की परिभाषा - डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार, "चेतन मानस की प्रमुख विशेषता चेतना है अर्थात् वस्तुओं, विषयों व व्यवहारों का ज्ञान। चेतना का प्रभाव हमारे अनुभव वैचित्र्य से प्रमाणित होता है और चेतना की अविच्छिन्न एकता हमारे व्यक्तिगत तादात्मय के अनुभव से।"6 चेतना मस्तिष्क में निहित पदार्थ का एवं प्रकृति के एक अंश का गुण है। इसलिए वास्तविक विचार केवल चिन्तन द्वारा अपने भीतर से

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

उत्पन्न नहीं किए जा सकते। सही विचार के लिये मानव चेतना और बाह्य जगत का सम्पर्क आवश्यक होता है।

प्रसिद्ध विचारक हैमिल्टन चेतना की परिभाषा देते हुए कहा है कि "चिंतनशील प्राणी द्वारा अपने कार्यों अथवा प्रवृत्तियों की स्वीकृति है।"7

सुविख्यात पाश्चात्य विचारक लोके के अनुसार "मनुष्य के अपने मन में जो कुछ घटित होता है, उसके प्रत्यक्ष ज्ञान को चेतना कहा है।" 8

भारतीय चिंतक लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने चेतना को जीवन का लक्षण बताते हुए कहा है, "चेतना का प्रवाह जीवन का द्योतक है। अहम् इस चेतना की अभिव्यक्ति है। एक ओर यदि चेतना जीवन के भार को वहन करती है, तो दूसरी ओर वह जीवन के प्रसंग में सक्रिय भाग लेती है।"9

चेतना उस अखंड शक्ति का नाम है जो स्वयं को और अपने आपपास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्योंकरन करती है। विज्ञान में चेतना को अनुभूति के साथ जोडा जाता है जो मस्तिष्क में पहुचने वाले अभिगामी आवेगों से उत्पन्न होती है।

राष्ट्रीय चेतना का उदय और विकास :

राष्ट्र और राष्ट्रीयता एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। राष्ट्र एक संरचना है, जबकि राष्ट्रीयता उसका आत्मा है। राष्ट्रीयता ही राष्ट्र को जीवंत बनाती है। राष्ट्रीयता के बिना राष्ट्र केवल एक भौगोलिक सीमा बनकर रह जाएगा। जब लोगों में एकता की भावना और सांस्कृतिक समानता होती है, तभी राष्ट्र मजबूत बनता है। राष्ट्रीयता नागरिकों को राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराती है, जिससे सामाजिक सद्भाव और राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित होती है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीयता की भावना ने ही लोगों को एकजुट कर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित किया।राष्ट्रीयता समाज के विभिन्न वर्गों में समता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे एक मजबूत और विकसित राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्रीय पुनर्जागरण भारत में एक राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने में सहायक सिद्ध हुआ। "सन् 1828 में ब्रह्म समाज का गठन हुआ जिसने शिक्षित हिन्दुओं की राष्ट्रीय भावना का प्रदर्शन किया। सन् 1843 ई. में ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी तथा 1851 में ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन जैसी संस्थाओं का गठन आरम्भ हुआ। ये संस्थाएँ भारतीयों के राजनीतिक राष्ट्रवाद का प्रदर्शन तो करती थीं किन्तु इनमें केवल गिने-चुने लोग ही सदस्य थे। इनका कोई राष्ट्रव्यापी आधार नहीं था। इस प्रकार 19वीं शताब्दी के आरम्भ से ही भारत में विभिन्न संगठनों द्वारा राष्ट्रीय भावना तथा राष्ट्रीय आन्दोलन का सूत्रापात होने लगा था। जिसका सबसे पहला विस्फोट सन् 1857 में हुआ।"10

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय समाज गहरे परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। एक ओर ब्रिटिश शासन का दमन था, तो दूसरी ओर पश्चिम से आने वाली आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और राजनीतिक आदर्शों ने भारतीय चेतना को झकझोरना शुरू कर दिया था। इस बदलाव की धुरी बने, वे युवा भारतीय जिन्होंने पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त की और पश्चिम के लोकतांत्रिक मूल्यों से प्रेरणा ली। ब्रिटिश शासन ने भारत

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

में अंग्रेज़ी भाषा और पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की नींव रखी। लॉर्ड मैकाले ने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली शुरू की गई, जिससे भारतीयों को अंग्रेजी भाषा, विज्ञान, गणित, इतिहास, दर्शन, राजनीति आदि का ज्ञान मिलने लगा। इससे भारतीयों को तर्क, विवेक, स्वतंत्रता, समानता और मानवाधिकार जैसे विचारों से परिचय हुआ। अंग्रेजी भाषा ने भारत की विभिन्न भाषाओं के लोगों को आपस में जोड़ने का कार्य किया, जिससे एक राष्ट्रीय एकता का बीज बोया गया। "संचार-साधनों, रेलमार्गों तथा समाचारपत्रों के प्रकाश से भारतीयों को आवागमन तथा विचारों के आदानप्रदान की सुविधा प्राप्त हुई। इससे भारतीयों में विचार-विमर्श होने लगा।जिससे समाज सुधार की माँग होने लगी। विभिन्न समाज सुधारकों को देश के विभिन्न भागों में जाकर अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ। वे समाचार-पत्रों द्वारा अपने विचारों का प्रचार कर सकते थे। इससे समाज सुधार आन्दोलन चलना सम्भव हो सका। उन्होंने राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार किया। अंग्रेज शासको के दुर्व्यवहार, शोषण तथा क्रूरता की घटनाओं का प्रकाशन भी समाचार-पत्रों द्वारा होता था। इन कारणों से सुधार की माँग तीव्र होती गई। राष्ट्रीय चेतना सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आन्दोलन का एक प्रमुख कारण बन गई।"11 कई भारतीय युवक, जैसे दादाभाई नैरोजी, बिपिन चंद्र पाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मोतीलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस आदि, शिक्षा या व्यवसाय के लिए इंग्लैंड गए। वहाँ जाकर वे संसद, प्रेस, राजनीतिक दलों, जनप्रतिनिधियों, कानून और स्वतंत्र अभिव्यक्ति जैसी संस्थाओं को देखकर चकित रह गए। उन्होंने समझा कि ब्रिटिश समाज में नागरिकों को कितनी स्वतंत्रता, सम्मान और अधिकार प्राप्त हैं। जब वे भारत लौटे, तो यहाँ की दासता, अन्याय, शोषण और मौलिक अधिकारों की कमी उन्हें असह्य लगने लगी। गुलामी की हीन मानसिकता उनके भीतर टूटने लगी और उनमें राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। राष्ट्रीयता यह केवल भावनात्मक बोध नहीं, बल्कि तर्कसंगत और समावेशी मूल्यअवधारणा है। सच्ची राष्ट्रीयता केवल देशप्रेम तक सीमित नहीं होती, बल्कि समाज के हर वर्ग को समान अधिकार और अवसर प्रदान करना भी राष्ट्रीयता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

राष्ट्रीय चेतना के विविध आयामों

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ है राष्ट्र के प्रति गहरी समझ, समर्पण और आत्मीयता की वह भावना जो किसी समाज या व्यक्ति को देश की एकता, अखंडता और गौरव से जोड़ती है। यह चेतना केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से भी एक राष्ट्र को मजबूती प्रदान करती है। यह बहुआयामी होती है और समाज के विभिन्न स्तरों पर इसका प्रभाव दिखाई देता है। राष्ट्रीय चेतना के विविध आयाम हैं।

1. राष्ट्रीय चेतना का ऐतिहासिक आयाम :

राष्ट्रीय चेतना का निर्माण ऐतिहासिक स्मृतियों और अनुभवों पर आधारित होता है। भारत में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन', और 1947 की स्वतंत्रता जैसे घटनाएँ इस चेतना की आधारशिला बनीं। ऐतिहासिक नायकों जैसे भगत सिंह, म.गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, झांसी की रानी आदि महान व्यक्तित्वों ने भारतीयों के भीतर राष्ट्रप्रेम तथा देश के लिए बलिदान करने की प्रेरणा जगाई। पूरे

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

देश में राष्ट्रीय चेतना की लहर दौड रही थी। "20 सितंबर, 1942 का दिन भी शांतिपूर्ण अहिंसात्मक कार्यक्रम के लिए तय कर दिया। चार हजार कार्यकर्ता कालाबड़ी से और इतने ही बरंगाबाड़ी से गोहपुर पुलिस स्टेशन की ओर अग्रसर हो गए। इस भारी-भरकम आंदोलन की अग्रपंक्ति में कनकलता बरुआ राष्ट्रीय ध्वज लिये हुए चल रही थी। उसने पुलिस स्टेशन के मुखिया को कहा कि पुलिस स्टेशन के पश्चिमी द्वार पर शांति से राष्ट्रीय ध्वज फहराने दे। पुलिस स्टेशन के प्रमुख ने उसके निवेदन को दरकिनार कर उसे धमकी देते हुए कहा कि अगर उसने आगे बढ़ने का साहस किया तो वह उसे गोली मार देगा। उत्साही कनकलता आगे बढ़ती ही गई और पुलिस की गोली की शिकार बनी, उसने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।"12 राष्ट्रीय चेतना का यह आयाम अपने आपमें प्रेरणादायी है।

2. राष्ट्रीय चेतना का सांस्कृतिक आयाम :

राष्ट्रीय चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम संस्कृति के साथ जुडा होता है। संस्कृति ही वह आयाम है जिससे राष्ट्रीय चेतना और अधिक सुदृढ एवं सशक्त होती है। "भारतीय संस्कृति की यह प्राणधारा आध्यात्मिक अनुभूति और साधना के रूप में एक चिंतन परंपरा का निर्माण करती है, जो कि उसके अनेकविध मूल्य-बोध की जन्मभूमि है। इस मौलिक सांस्कृतिक परंपरा के जन्मदाता ऋषि-मुनि, सिद्ध और संत, सूफी, भक्त एवं त्यागी महापुरुष रहे हैं, जिन्होंने इस कर्मभूमि में अवतरण किया। इस संस्कृति के तीर्थंकरों की कोई जाति-प्रजाति नहीं होती, पर उनकी गुरु-शिष्य परंपरा रहती है। यह परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। दूसरी ओर जो भौतिक परंपरा की सभ्यता है, उसमें प्राचीन काल से नाना जातियों-जनपदों का योगदान है।"13 भारत की विविध संस्कृतियाँ, भाषाएँ, त्योहार और परंपराएँ राष्ट्र को जोड़ती हैं। संस्कृति, कला, संगीत, लोकनाट्य और साहित्य में देशभक्ति का भाव समाहित होता है।

3. राष्ट्रीय चेतना का सामाजिक आयाम:

जाति, धर्म, भाषा आदि विविधताओं के बावजूद समता और एकता की भावना राष्ट्रीय चेतना का सामाजिक पक्ष है। राष्ट्रीय चेतना का सामाजिक आयाम उस जागरूकता को दर्शाता है जो नागरिकों को सामाजिक समता, एकता, समानता और कर्तव्यबोध की ओर प्रेरित करती है। यह आयाम एक राष्ट्र की आत्मा को सामाजिक धरातल पर सशक्त करता है और विविधताओं के बावजूद देशवासियों को एक सूत्र में बाँधता है। भारत एक बहुभाषी, बहुधर्मी और बहुजातीय देश है। इसके बावजूद, एक राष्ट्र के रूप में हमारी एकता यही सामाजिक चेतना की विशेषता है। राष्ट्रीय पर्वों, जैसे गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस, पर हर वर्ग के लोग एकजुट होकर हिस्सा लेते हैं। संकट की घड़ी में एक-दूसरे की मदद करना, जैसे महामारी या प्राकृतिक आपदाओं के समय, सामाजिक राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है।

संविधान में वर्णित "बंधुत्व और सामाजिक न्याय" का सिद्धांत सामाजिक राष्ट्रीय चेतना को आधार प्रदान करता है। जाति, वर्ग, धर्म और लिंग के भेदभाव से ऊपर उठकर सभी नागरिकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करना इसका लक्ष्य है। सामाजिक चेतना के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानताओं को कम किया जा सकता है। राजा राममोहन राय, महात्मा फुले, डॉ. भीमराव अंबेडकर, और स्वामी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

विवेकानंद जैसे समाज सुधारकों ने सामाजिक एकता और समानता की भावना को जाग्रत किया। किशोर मकवाना लिखते हैं, "बाबासाहब हमारे सामने सामाजिक न्याय पर आधारित संविधानमूलक लोकतांत्रिक राष्ट्रवाद की संकल्पना रखते हैं। राष्ट्रनिर्माण में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का यह योगदान अलौकिक है। डॉ. बाबासाहब की नजर में राष्ट्रवाद और सामाजिक न्याय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। राष्ट्र का अर्थ होता है जन, भूमि और संस्कृति। जन, भूमि के आधार पर संस्कृति का विकास होता है और यह संस्कृति राष्ट्र को जोड़ने का काम करती है।"14 भारतीय समाज में अनेक प्रकार की कुप्रथाएँ प्रचलित थी। बाल विवाह, सती प्रथा, जातिगत भेदभाव जैसी कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन सामाजिक चेतना के जागरण का परिणाम थे। जब समाज का हर वर्ग-चाहे वह महिला हो, दलित हो, आदिवासी हो या अल्पसंख्यक अपने को राष्ट्र की मुख्यधारा का हिस्सा समझे, तभी सच्ची राष्ट्रीय चेतना विकसित होती है। NGOs, स्वयंसेवी संस्थाएं, और युवा संगठन इस चेतना को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में सहायक हैं। राष्ट्रीय चेतना का सामाजिक आयाम भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र की रीढ़ है। यह नागरिकों को सिर्फ अपने अधिकारों के प्रति नहीं, बल्कि अपने सामाजिक कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक बनाता है। जब समाज में समता, सहयोग, सहिष्णुता और समर्पण की भावना मजबूत होती है, तभी एक मजबूत और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।

4. राष्ट्रीय चेतना का राजनीतिक आयाम :

राष्ट्र और राष्ट्रीयता के बीच घनिष्ठ संबंध है। राष्ट्रीयता राष्ट्र की आत्मा है, जो उसे जीवंत बनाती है, जबकि राष्ट्र उस भावना का भौतिक और राजनीतिक स्वरूप है। जब किसी देश के नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल होती है, तो वह राष्ट्र सभी संकटों को पार कर प्रगति की ओर अग्रसर होता है। अतः राष्ट्र और राष्ट्रीयता का विवेकपूर्ण संतुलन किसी भी देश की एकता, अखंडता और विकास के लिए आवश्यक है।

लोकतंत्र, सार्वभौमिक मताधिकार, संविधान, नागरिक अधिकार जैसे तत्त्व राष्ट्रीय चेतना को राजनीतिक रूप से आकार देते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राजनीतिक दलों और आंदोलनों ने लोगों में राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध जगाया। आज भी मतदान, जन आंदोलन, और राजनीतिक सहभागिता राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति हैं।

5. आर्थिक आयाम :

आत्मनिर्भरता, स्वदेशी आंदोलन और 'मेक इन इंडिया' जैसे प्रयास आर्थिक राष्ट्रीय चेतना के उदाहरण हैं। जब नागरिक अपने देश की आर्थिक मजबूती को प्राथमिकता देते हैं, तो वह चेतना आर्थिक रूप लेती है। ग्रामीण विकास, लघु उद्योगों का समर्थन और करों का भुगतान भी इसका भाग हैं।

6. शैक्षिक एवं बौद्धिक आयाम :

- शिक्षा राष्ट्रीय चेतना को दिशा देती है। राष्ट्रप्रेम, सेवा, दायित्वबोध की भावना विद्यालयों में ही विकसित होती है। साहित्य, इतिहास, नागरिकशास्त्र, और भाषा के माध्यम से राष्ट्र की गरिमा को समझने का अवसर मिलता है। विवेकानंद, तिलक, टैगोर, अंबेडकर जैसे शिक्षकों और विचारकों ने इसे बौद्धिक

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

आधार दिया। "बेहतर शिक्षा की चाह के साथ-साथ उस समय आंबेडकर की सोच में संस्कृतिकरण के मूल्यों की जड़ें भी बहुत गहरी थीं। इसके अलावा, एसोसिएशन ने जिन सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहन दिया वे दरअसल सवर्णों के ही मूल्य थे। महार हॉकी क्लब, जिसकी डिप्रेस्ड क्लासेज़ इंस्टिट्यूट द्वारा स्थापना की गई थी, के रूप में हमें इन हालात का एक बड़ा सकते में डाल देने का उदाहरण दिखाई देता है क्योंकि यह क्लब अस्पृश्यों को 'जुआख़ोरी, शराबखोरी और दूसरी विकृतियों व मनोरंजन के अस्वास्थ्यकर तरीक़ों' से दूर रखने के उद्देश्य से शुरू किया गया था।"15 समाज के वंचित तबके में व्यापक रूप से राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने का संपूर्ण श्रेय डॉ.अम्बेडकर जी को जाता है। डॉ. अंबेडकर ने कहा था, "मैं पहले भारतीय हूँ और दिल से भी भारतीय हूँ," जिससे स्पष्ट होता है कि वे जाति, धर्म, भाषा या किसी अन्य पहचान से पहले स्वयं को एक भारतीय मानते थे। उनका राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय से भी जुड़ा था। उनका यह दृष्टिकोण भारतीय समाज के हर वर्ग को एक समान दर्जा देने पर केंद्रित था। राष्ट्रीय चेतना के एक प्रमुख आयाम के रूप में शिक्षा एवं बौद्धिकता को देखा जा सकता है।

7. राष्ट्रीय चेतना और वैज्ञानिक एवं तकनीकी आयाम:

राष्ट्र की प्रगति विज्ञान और तकनीक से जुड़ी होती है। हमारे वैज्ञानिक जब विज्ञान के क्षेत्र में अत्युच्च उपलब्धि हासील करते हैं तब हमें अपने राष्ट्र एवं हमारे वैज्ञानिकों पर गर्व महसूस होता है। जब देशवासी देश के वैज्ञानिक विकास में योगदान करते हैं (जैसे ISRO, DRDO, आदि), तो यह राष्ट्रीय चेतना का तकनीकी स्वरूप है। स्वातंत्र्योत्तर भारत ने अनेक क्षेत्रों में उच्चतम उपलब्धियाँ हासिल की है। "महासागर विकास का एक अन्य एवं महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है - अटाकाटक अभियान वर्ष 1981 में प्रथम अंटार्कटिक अभियान की शुरूआत उस समय हुई, जब महासागर विकास विभाग के तत्कालीन सचिव डॉ. सैयद जहूर कासिम के नेतृत्व में 21 सदस्यीय प्रथम अभियान दल अंटार्कटिक की यात्रा पर निकला । 9 जनवरी, 1982 को जब इस दल ने अंटार्कटिक पर तिरंगा फहराया तो भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इतिहास में नया मील का पत्थर और स्थापित हो गया और भारत उन 18 देशों की सूची में आ गया जो वहाँ अपना स्थायी स्टेशन बना चुके हैं। तब से भारत नियमित रूप से लगभग प्रतिवर्ष अपने अभियान दल भेज रहा है।" स्वाधिन भारत में विज्ञान और प्राद्योगिकी, बिष्ट दीक्षा, पृष्ठ 92 यह समाचार देश में अलग प्रकार की खुशी लहर निर्माण करते हैं। वास्तव में यही खुशी राष्ट्रीयता का अहसास है। "मिशन चंद्रयान-3 के लिए बुधवार, 23 अगस्त बेहद महत्वपूर्ण और इतिहास रचने वाला साबित हुआ. ठीक 06.04 बजे चंद्रयान सफलतापूर्वक चांद के साउथ पोल पर लैंड हो गया. पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ पड़ी. विक्रम लैंडर को चांद के साउथ पोल पर उतारने वाला भारत पहला देश बन गया।"16 डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, स्वच्छ भारत जैसे अभियानों से यह जागरूकता फैल रही है। वैज्ञानिक क्षेत्र में भारत देश प्रगत देशों के समकक्ष बडे आत्मविश्वास के साथ जब खडा होता है तब प्रत्येक देशवासी के मन में राष्ट्रीयता का भाव हिलोरे लेने लगता है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

8. सैन्य और सुरक्षा संबंधी आयाम:

सेना और सीमा सुरक्षा बलों के प्रति सम्मान तथा रक्षा के क्षेत्र में सहयोग राष्ट्रीय चेतना का सुरक्षा पक्ष है। राष्ट्रीय चेतना जागृत होने के कारण ही देश का सिपाही देश के लिए बलिदान देने की भावना से प्रेरित हो जाता है। देश पर जब आक्रमण होता है तो सिपाही में यह चेतना उच्चतम स्तर पर पहुँचाती है। आजादी के पहले भी नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा स्थापित न जाने कितने ही वीर सिपाहियों ने अपनी उज्वल राष्ट्रीय चेतना का परिचय देते हुए अपना बलिदान दिया था। "नेताजी की आजाद हिंद फौज में भरती होने के पहले चत्तरसिंह ब्रिटिश फौज की पंजाब रेजीमेंट में सैनिक था और वह मलाया में जापानी सेना के विरुद्ध लड़ा था। युद्धबंदी के रूप में वह सिंगापुर रहा और जब वहाँ आजाद हिंद फौज का गठन हुआ तो वह उसमें भरती हो गया। नेताजी सुभाष का भाषण सुनने के पश्चात् उसमें नई चेतना का संचार हुआ और वह बर्मा के मोरचे पर बहुत बहादुरी के साथ लड़ा। एक युद्ध में वह अपने कुछ साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। फौजी अदालत में उसपर मुकदमा चला और सम्राट् के विरुद्ध युद्ध करने के अपराध में उसे २९ जुलाई, १९४४ को फाँसी दे दी गई।"17 राष्ट्रीय चेतना कोई एक रेखीय या सीमित भाव नहीं है, बल्कि यह बहुआयामी, व्यापक और गहराई से जुड़ी भावना है। जब हमारी सेना हमारे शत्रू राष्ट्र पर विजय प्राप्त करती है तब भी देश में खुशी की लहर छा जाती है। "आज पूरे देश में गर्व के साथ कारगिल विजय दिवस मनाया जा रहा है. कारगिल विजय दिवस देश की एकता और भारत की भक्ति का प्रतीक है. 26 जुलाई 1999 का वो दिन हर भारतीय के लिए गर्व का दिन था, जब 25 साल पहले भारतीय वीर सपूतों ने पाकिस्तानियों को हराते हुए कारगिल की चोटी पर झंडा फहराया था।"18 राष्ट्रीयता व्यक्ति के व्यवहार, विचार, कर्म और कर्तव्य में झलकती है। जब एक राष्ट्र के नागरिक विविधता में एकता के साथ, समान अधिकार और कर्तव्य का निर्वहन करते हैं, तभी वह राष्ट्र जागरूक, मजबूत और प्रगतिशील बनता है।

राष्ट्रीय चेतना के समक्ष चुनौतियाँ

1. सांप्रदायिकता और क्षेत्रीयता का प्रभाव
2. जातिवाद और सामाजिक भेदभाव
3. विदेशी सांस्कृतिक प्रभाव और पश्चिमीकरण
4. डिजिटल माध्यमों में गलत सूचना और प्रचार
5. राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार

भारतीय समाज में राष्ट्रीयता के लिए सबसे बड़े चुनौती जाति व्यवस्था तथा सामाजिक विसंगतियां हैं। आज भी हमारे समाज में ऐसे घटना-प्रसंग सामने आते हैं जो हमारी राष्ट्रीयता के लिए हानीकारक हैं। कहीं पर दलित दूल्हे के घोड़ी चढ़ने पर तथाकथित सवर्णों को आपत्ति होती है। उसको लेकर बवाल खड़ा किया जाता है। सामाजिक वातावरण दूषित किया जाता है । कहीं पर दलित के मूँछ रखने पर सवर्णों को आपत्ति हो रही है, तो किसी अध्यापक को एक छोटे से बच्चे द्वारा पीने के घड़े को छूने से इतनी आपत्ति है कि उस क्रूर अध्यापक ने बच्चों को पीट पीट कर उसकी जान ही ले ली । यह घटनाएं हमारे राष्ट्रीयता के

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

लिए बाधा के रूप में सामने आ रही है इन बाधाओं को समय रहते दूर करना जरूरी है। आज भी अनेक समूदाय समाज के हाशिए पर हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शक्तिहीन महसूस करते हैं। यह सत्ता संरचनाओं और सामाजिक असमानता पर सवाल उठाती है।

भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. अंबेडकर का सपना एक ऐसा भारत था, जो सामाजिक भेदभाव से मुक्त हो, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हो। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संविधान का निर्माण किया, जो न केवल लोकतंत्र को मजबूत करता है, बल्कि नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा भी करता है। उनका मानना था कि बिना सामाजिक समरसता के कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं बन सकता। संवैधानिक आचरण अपनाने की आवश्यकता है। डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर ने कहा था कि संविधान तभी सफल होगा जब नागरिक संवैधानिक मूल्यों का पालन करेंगे। समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय तभी स्थापित हो सकते हैं। नागरिक संविधान का सम्मान करें। जाति, धर्म और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता दें। आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को सशक्त बनाने के लिए कार्य करें। लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करें और कर्तव्यों का पालन करें। आज के वैश्वीकरण और डिजिटल युग में राष्ट्रीय चेतना की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षा, मीडिया, खेल, तकनीक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया जा सकता है।

राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करने के उपाय:

- शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय मूल्यों का समावेश
- भारतीय संस्कृति, इतिहास और परंपराओं को बढ़ावा देना
- लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान के प्रति जागरूकता
- सामाजिक एकता और समरसता को प्रोत्साहित करना

सारांश रूप में हम कह सकते हैं, राष्ट्रीय चेतना (National Consciousness) किसी राष्ट्र के नागरिकों में एकता, सामूहिक पहचान, और राष्ट्र के प्रति निष्ठा की भावना को दर्शाती है। यह चेतना किसी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है। जब कोई समाज या राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को पहचानकर एक साझा भविष्य की ओर अग्रसर होता है, तब राष्ट्रीय चेतना का विकास होता है। राष्ट्रीय चेतना वह मानसिक और भावनात्मक स्थिति है, जिसमें किसी राष्ट्र के लोग अपने देश के प्रति गर्व, समर्पण और एकता की भावना रखते हैं। यह चेतना किसी विशेष भाषा, संस्कृति, परंपरा और मूल्यों पर आधारित हो सकती है। इतिहास और परंपरा- ऐतिहासिक घटनाएँ और परंपराएँ नागरिकों को अपनी विरासत से जोड़ती हैं और उनमें राष्ट्रीय गौरव की भावना उत्पन्न करती हैं। कला, संगीत, त्योहार और रीति-रिवाज किसी भी राष्ट्र की आत्मा होते हैं और लोगों को एक साझा पहचान देते हैं। लोकतंत्र और संविधान में विश्वास, नागरिक अधिकारों एवं कर्तव्यों की समझ राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करती है। राष्ट्रीय चेतना और धार्मिक संकीर्णता दो परस्पर विरोधी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

विचारधाराएँ हैं। जहाँ राष्ट्रीय चेतना किसी राष्ट्र के नागरिकों को एकता और सामूहिक पहचान की भावना प्रदान करती है, वहीं धार्मिक संकीर्णता समाज में विभाजन और टकराव को जन्म देती है। राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित समाज न केवल आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त होता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी सम्मान प्राप्त करता है। राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है, जब नागरिक 'राष्ट्र सर्वोपरि' की भावना को अपने हृदय में धारण करें। यह भावना प्रत्येक नागरिक को अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठाकर राष्ट्रहित में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। जब हर व्यक्ति राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देता है, तो वह राष्ट्र विश्व मंच पर अपनी पहचान स्थापित कर सकता है। राष्ट्रीय चेतना प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। यह न केवल राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि समाज में भाईचारे, प्रेम और सद्भावना को भी बढ़ावा देती है। आज के समय में भी हमें अपने कर्तव्यों को समझते हुए राष्ट्रहित में कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए, ताकि हमारा देश और अधिक समृद्ध एवं सशक्त बन सके।

1. राष्ट्रीयता यह सर्वोच्च भाव है जो अपने राष्ट्र के प्रति वहां के नागरिकों के मन में उत्पन्न होता है।
2. अपने देश के प्रति सच्ची निष्ठा तथा प्रेम ही राष्ट्रीयता है।
3. राष्ट्र की एकता तथा अखंडता, संप्रभुता को अक्षूण्ण रखने की भावना ही राष्ट्रीय चेतना है।
4. राष्ट्रीय चेतना का मूलाधार नागरिकों के बीच बंधुता तथा आपसी सद्भाव है।

संदर्भ संकेत :

1. राजनीतिक विज्ञान, कौशिक डॉ.नरेंद्र तथा अन्य पृष्ठ 267
2. मांगलिक रोहन, सामाजिक और सांस्कृतिक मनोविज्ञान, पृष्ठ 210
3.राजनीतिक विज्ञान, कौशिक डॉ.नरेंद्र तथा अन्य पृष्ठ 269
4. राजनीतिक विज्ञान, कौशिक डॉ.नरेंद्र तथा अन्य पृष्ठ 270
5.राजनीतिक विज्ञान, कौशिक डॉ.नरेंद्र तथा अन्य पृष्ठ 270
6. वर्मा डॉ.धीरेंद्र, हिन्दी साहित्य कोश, पृ० 289
7. Encyclopaedia of Social Science, Volume III, IV. p.212
8. Encyclopaedia of Social Science, Volume III, IV, p.212
9. डॉ० प्रेमपाल: नई कहानी में वैयक्तिक चेतना, पु० 5
10.भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं भारत का संविधान, जैन कल्पना एवं चौधरी ममता, पृष्ठ 15
11. वर्मा, डॉ.एस.आर, भारतीय समाज एवं संस्कृति, पष्ठ 288-289
12.तँवर, डॉ.श्यामसिंह, भूले बिसरे क्रांतिकारी, पृष्ठ 95
13. मिश्रा डॉ.दयानिधि, संस्कृति की सत्ता, पृष्ठ 25
14. मकवाना किशोर, डॉ.अम्बेडकर: व्यक्ति दर्शन, पृष्ठ भूमिका
15. जेफरलॉट क्रिस्टोफर, अनु. दत्त योगेंद्र, भीमराव अम्बेडकर: एक जीवनी, पृष्ठ 1914

16.https://hindi.news18.com/news/knowledge/chandrayaan-3-history-will-be-made-vikram-lander-will-land-on-moons-south-pole-7323451.html
17. सरल श्रीकृष्णा, क्रांतिकारी कोश, पृष्ठ 26
18.https://mpcg.ndtv.in/lifestyle/why-is-kargil-vijay-diwas-celebrated-every-year-you-will-be-surprised-to-know-the-story-6192465

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

४. छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना का स्वर

प्रोफे.(डॉ.)जयंत बोबडे
हिंदी विभाग, श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी

स्वाधीनतापूर्व कालखंड १९१८ से १९३६ के बिच भारतीय राष्ट्रीय चेतना चरमसीमा पर थी. इसी कालखंड में हिंदी साहित्य में छायावादी काव्यधारा चल रही थी.इसी दरमियान महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल तथा सुभाषचंद्र बोस जैसे राष्ट्रवादी नेताओं का प्रभाव जनमानस पर गहराई से अंकित था. ऐसे समय में जब स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था और हर वर्ग में राष्ट्रीयता का जागरण हो रहा था, ऐसे में हिंदी साहित्य के कविता विधा में इसका प्रभाव काफी दिखाई देता है. साहित्यिक दृष्टि से यह काल छायावाद की कविता का समय था. छायावाद को अक्सर एक ऐसा काव्य-आंदोलन माना गया, जिसमें कवि व्यक्तिगत और आंतरिक अनुभूतियों को अधिक महत्व देते थे और यथार्थ के बजाय मिथकीय तथा कल्पनाशीलता में रमते दिखाई देते थे. छायावादी कवियों के काव्य में तत्कालीन राजनीतिक हलचलों और सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव काफी दिखाई देता है. प्रस्तुत शोधालेख के माध्यम से छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन की भावना को किस तरह से प्रतिपादित किया है इसका शोध करने का प्रयास किया है. इस अध्ययन के माध्यम से छायावादी कवियों के माध्यम से समकालीन कविता में राष्ट्रिय चेतना किस प्रकार व्यक्त हुई है इसका शोध लेने का प्रयास किया गया है. छायावादी साहित्य केवल व्यक्तिगत भावनाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें समकालीन समाज और राजनीति की गूंज के साथ राष्ट्रीय स्वर किस प्रकार मुखरित हुआ है इसका भी अवलोकन करने का प्रयास किया है.

मुख्य शब्द: छायावाद, राष्ट्रीय चेतना, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, स्वाधीनता, देशप्रेम, देशभक्ति, सामाजिकता, राष्ट्रीयता.

उद्देश्य : प्रस्तुत शोधलेख के माध्यम से निम्न उद्देश्यों को साध्य करने का प्रयास किया गया है.

1.राष्ट्रिय काव्यधारा को रेखांकित करना.
2.भारतीय राष्ट्रिय काव्यधारा में हिंदी कविता का योगदान विश्लेषित करना.
3.हिंदी के छायावादी काव्यधारा का महत्व अधोरेखित करना.
4.छायावादी काव्यधारा में चित्रित राष्ट्रिय काव्यधारा का महत्व रेखांकित करना.
5.छायावादी कवि वैयक्तिक तथा छायावादी संवेदना के साथ साथ राष्ट्रिय चेतना को भी रेखांकित करते थे, स्पष्ट करना.

प्रस्तावना :

छायावाद ने व्यक्तिगत और आंतरिक भावनाओं, प्रकृति-प्रेम, और सौंदर्य की ओर साहित्य को नई दिशा प्रदान की. भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की शुरुआत भारतेन्दु युग से ही हो गई थी और द्विवेदी युग में

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

इसका व्यापक विकास हुआ. इस काल में स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव इतना व्यापक था कि साहित्यकार भी इससे अछूते नहीं रहे. छायावाद का सामान्य अर्थ प्रतीकवाद से सम्बद्ध है. जब हिन्दी कविता में प्रतीकों का यथास्थान, यथासम्भव अधिकाधिक प्रयोग किया जाने लगा, तब उसे दुरूह और असहज मानकर प्रतीकवादी कविता या दूसरे अर्थों में छायावादी कविता कहा जाने लगा. कतिपय आलोचक काफी समय तक छायावाद और रहस्यवाद को एक ही मानते रहे हैं, जबकि छायावाद और रहस्यवाद दोनों एक दूसरे के पर्याय नहीं हैं. वैयक्तिक आत्मपरक अनुभूतियों से संवलित प्रतीकात्मकता और अद्वैतभाव की विविध भावभंगिमाओं का सम्मान करनेवाली छायावादी कविता का एक हिस्सा रहस्यवाद से भी सम्पृक्त है. यहाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की महत्त्वपूर्ण टिप्पणी का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा, जहाँ वे छायावाद को इसाई सन्तों के छायाभास तथा यूरोपीय काव्य के आध्यात्मिक प्रतीकवाद से जोड़ते हुए, उसे बंगला की काव्यप्रवृत्ति के अनुकरण में विकसित मानते हैं, "पुराने इसाई सन्तों के छायाभास तथा यूरोपीय काव्य-क्षेत्र में प्रवर्तित आध्यात्मिक प्रतीकवाद के अनुकरण पर रची जाने के कारण बंगला में ऐसी कविताएँ छायावादी कही जाने लगी थीं." आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शुक्ल जी के इस मत का पुरजोर खण्डन करते हैं तथा बंगला में छायावाद के प्रचलित होने का विरोध करते हैं.हिन्दी में हम जिसे छायावाद के नाम से जानते हैं,उस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुकुटधर पाण्डेय के निबन्ध 'हिन्दी में छायावाद' जो शारदा पत्रिका (सन् १९२०) में प्रकाशित हुआ था, में प्रयुक्त हुआ दिखाई देता है. मुकुटधर पाण्डेय ने छायावादी शब्द का प्रयोग उन कविताओं के लिए किया था, जिनमें उन्हें अस्पष्टता और भावों का धुँधलापन दिखाई पड़ा. उसी वर्ष (सन् १९२०) सरस्वती में सुशीलकुमार का भी एक लेख उपर्युक्त नाम से प्रकाशित हुआ. उसके बाद छायावाद नाम चल पड़ा और चर्चित होता गया. परवर्ती कुछ आलोचकों ने व्यंग्यार्थ में भी कहा कि जो समझ में न आए, वह छायावाद है. वस्तुतः छायावाद शब्द उस विशिष्ट काव्यधारा के लिए चल पड़ा और रूढ़ हो गया, जिसकी अधिकांश कविताएँ रोमेण्टिक प्रवृत्तियों से ओतप्रोत थीं. केवल रोमांटिक कविता ही छायावाद युग का उद्देश्य ऐसा नही है. इस काव्यधारा के अधिकांश कवियों ने राष्ट्रिय काव्यधारा की कविताओं का लेखन भी किया है.प्रस्तुत शोधालेख में छायावादी काव्यधारा के कविताओं में राष्ट्रिय चेतना के स्वर को किस तरह से मुखरित किया है इसका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है.

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' -

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावादी कवि हैं. उनकी पहली छायावादी कविता "जूही की कली" (१९१६ ई.) में प्रकाशित हुई. हालांकि निराला केवल छायावादी कविता तक सीमित नहीं थे, उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता का स्वर भी गहरे रूप से समाविष्ट है.वे भारत माँ की विजयी पताका को अपने कंधे पर रखकर चलना चाहते थे, वे कहते हैं:

'भारत, जय विजय करे!,कनक-शस्य-कमलधरे!
लंका पदतल शतदल,गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल,स्तवन कर कर बहु-अर्थ-भरे!"

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

निराला प्रेरणादायी कवि थे. वे समकालीन भारतीयों को जगाने का काम भी अपनी कविताओं के माध्यम से करते हैं. वे कहते हैं:

'जागो फिर एक बार!, प्यार से जगाते हुए, हार से तारें तुम्हे,
अरुण-पंख, तरुण-किरण,खड़ी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार.''

जैसे जैसे स्वाधीनता आन्दोलन आगे बढ़ता जाता है वैसे वैसे निराला की कविता भी तीव्र होती जाती है, और वे आंदोलनकारियों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भगतसिंग जैसे कार्य करने की प्रेरणा देते है-:

'सोचो तुम,उठती है नग्न तलवार जब स्वतंत्रता की
कितने ही भावों से,याद दिलाकर दु:ख दारुण परतंत्रता का
फूँकती स्वतंत्रता निज मंत्र से जब व्याकुल कान,
कौन वह सुमेरु रेणु-रेणु जो न हो जाय.''

कवि निराला ने प्रतिकत्मकता को अपनी कविता का माध्यम बनाया. राम-रावण युद्ध को आधार बनाकर "राम की शक्ति पूजा" नामक लंबी कविता लिखी है, जिसमें वे स्वाधीनता के सेनानियों को को शक्ति संग्रह और सामूहिकता का पाठ पढ़ाते हुए स्वतंत्रता का आत्मविश्वास भर देते है:

'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!
कह महाशक्ति राम के वंदन में हुई लीन.''

निराला की राष्ट्रीय चेतना अन्य छायावादी कवियों की तुलना में प्रभावी और क्रांतिकारी भावना से युक्त थी, क्योंकि वे केवल की स्तुति ही नहीं करते थे, बल्कि राष्ट्र की समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए लगातार प्रयत्नशील रहते थे. वे न केवल स्वतंत्रता का अमर गान प्रस्तुत करते थे, बल्कि स्वतंत्रता को बचाए रखने की चेतावनी भी देते थे.

2. जयशंकर प्रसाद :

जयशंकर प्रसाद छायावाद के अग्रणी कवि माने जाते हैं. उनकी रचना 'झरना' (१९१८) से ही छायावाद की शुरुआत मानी जाती है. प्रसाद को मुख्यतः प्रेम और धार्मिक भावना का कवि माना गया है, लेकिन यह धारणा उनके साहित्य की व्यापकता के साथ न्याय नहीं करती। उनके साहित्य में ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं. उनके लेखन काल में, जब अंग्रेज भारतीयों को उनकी पहचान और इतिहास से काटने का प्रयास कर रहे थे, प्रसाद ने अपने साहित्य में भारतीय गौरव और इतिहास को पुनः जागृत करने का कार्य किया. उनकी कविताएँ अतीत के गौरवशाली चित्र प्रस्तुत करती हुई समकालीन भारतीयों को प्रेरणा देती हैं. उदाहरण:

"हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार,
ऊषा ने हँसकर अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार,
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

व्योम-तम-पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक."

अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा भारतीयों को आर्य-द्रविड़ के विभाजन के माध्यम से उनके स्वाभिमान को तोड़ने का प्रयास किया गया. इस संदर्भ में प्रसाद भारतीयों को अपनी मिट्टी से जोड़े रखने का आह्वान करते हुए लिखते हैं:

"किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं.
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं."

प्रसाद की राष्ट्रीयता मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, और माखनलाल चतुर्वेदी से भले ही भिन्न हो, लेकिन उनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का एक गहरा स्वर विद्यमान है. वे प्रकृति और प्रेम को माध्यम बनाकर जनता को जागृत करते हैं। उनकी कविता 'बीती विभावरी जाग री' में प्रकृति का सहारा लेकर आलस्य और निष्क्रियता को त्यागने का आह्वान किया गया है. यह कविता एक प्रकार का सांकेतिक संदेश है, जो राष्ट्रीय चेतना को उभारने का कार्य करती है:

"बीती विभावरी जाग री,अंबर पनघट में डुबो रही
तारा-घट ऊषा नागरी,खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का आँचल डोल रहा,तू अब तक सोयी है आली!
आँखों में भरे विहाग री!"

जयशंकर प्रसाद और अन्य छायावादी कवियों की कविताएँ इस तथ्य का प्रमाण हैं कि छायावाद केवल व्यक्तिगत अनुभूतियों और कल्पनाओं तक सीमित नहीं था। इन कविताओं में निहित राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति प्रतिबद्धता, और जनता को जागृत करने का प्रयास स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है. छायावाद ने साहित्य को एक नई दिशा दी, जिसमें व्यक्तिगत सौंदर्य और सामाजिक चेतना का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है. छायावादी कवियों का योगदान राष्ट्रीय जागरण की दिशा में साहित्यिक प्रयासों का एक महत्वपूर्ण अध्याय है.

उन्होंने न केवल समाज को जागरूक किया, बल्कि जागरूक जनता का मार्गदर्शन भी किया. वे जागृत जनता को स्वतंत्रता संग्राम में आगे बढ़ने और विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं:

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,प्रबुद्ध शुद्ध भारती–
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला,स्वतंत्रता पुकारती–
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है– बढ़े चलो, बढ़े चलो
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ,विकीर्ण दिव्य दाह-सी.
सपूत मातृभूमि के–रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में– सुबाड़वाग्नि-से जलो,
प्रवीर हो जयी– बनो बढ़े, चलो बढ़े चलो.''

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

इस प्रकार छायावादी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के विकास और अतीत के गौरव गान में प्रसाद जी का काव्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है.

3. महादेवी वर्मा :

किसी भी साहित्य पर उस सनम की तद्युगीन सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक, परिस्थितियों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है. १९वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है. उस समय भारतीय समाज अंग्रेजी शासन के अत्याचारों से पीड़ित था. महादेवी वर्मा छायावाद की महत्वपूर्ण कवयित्री है. उस समय की सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक परिस्थितियों का प्रभाव महादेवी वर्मा के काव्य पर भी पड़ा. १९वीं सदी के पुर्वाद्ध का भारत पराधीन है. महादेवी अपनी इन पंक्तियों के माध्यम से देशवासियों में स्वतंत्राता की चाह जगाती है. निराशावाद की अंधेरी रात में जीवन-प्रभात की चाह महादेवी वर्मा की रचनाओं में साफ नजर आती है. महादेवी वर्मा की हम नीहार की कविताओं पर नजर डाले तो उनकी अधिकतर कविता प्रकृति, प्रणय और वेदना पर आधारित है. परन्तु रश्मिरेखा में महादेवी वर्मा अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय जनता के शोषण, उनकी समाजिक आर्थिक स्थिति पर चिंतित है. भारत माँ की व्यथा, उसकी दयनीय स्थिति उनसे देखी नहीं जाती। वह लिखती हैं

'कह दे माँ क्या अब देखूँ देखूँ खिलती कलियाँ या प्यासे सूखे अधरों को.'

महादेवी वर्मा के साहित्य में स्वाभिमान एवं देशानुराग कूट-कूट कर भरा पड़ा है. वह भारतीय जनता को ब्रिटिश सरकार से संघर्ष करते रहने के लिए प्रेरित करती है. हमें स्वतंत्रा होना चाहिए. अभी हमें स्वतंत्राता नहीं मिली है. भारतवासियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है. नवजाग-युग की मानसिकता करती है. छायावादी चेतना पराधीनता से मुक्ति चाहती है. यही भाव महादेवी वर्मा के काल में नजर आता है.

झंझा है दिग्भ्रांत रात की मूर्छा गहरी आज पुजारी बने,
ज्योति का यह लघु प्रहरी जब तक लौटे दिन की हलचल
तब तक यह जागेगा प्रतिपल रेखाओं में भर
आभा-पल दूत-साँझ का इसे प्रभाती तक चलने दो.

अमृत राय जी महादेवी को एकाकिनी बरसात कहते है. पृथक आलोचकों के अनुसार महादेवी वर्मा जो अपने काव्य में रोती रहती है उसका मुख्य कारण उनका असफल वैवाहिक जीवन रहा है. डॉ. नगेन्द्र लिखते है, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरोध से जीवन से रस और मांस न ग्रहण कर सकने के कारण एक वो वांछित शक्ति का संचय नहीं कर पायी, दूसरे अर्न्तमुखी हो गयी. इस प्रकार उनके आविर्भाव में मानसिक दमन और अतृप्तियों का बहुत बड़ा भोग है, इनको कैसे भुलाया जा सकता है.

4. सुमित्रानंदन पन्त :

सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, हालांकि उनकी कविताओं का मुख्य स्वर राष्ट्रवादी नहीं है, लेकिन उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, सामाजिक चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति गहरी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भावनाएं दिखाई देती हैं. उन्होंने अपनी कविताओं में युद्ध और ओज के पारंपरिक मुहावरों के बजाय उपासना, प्रार्थना, अहिंसा, प्रेम और मानवता जैसी उदात्त भावनाओं को व्यक्त किया है.

पंत की कविताओं में भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। वे अपनी कविताओं में ग्रामीण भारत, प्रकृति, और भारतीय दर्शन के तत्वों को शामिल करते हैं. पंत की कविताओं में समाज में व्याप्त गरीबी, अज्ञानता, और असमानता के प्रति गहरी चिंता दिखाई देती है। वे अपने कविताओं के माध्यम से सामाजिक सुधार और न्याय की वकालत करते हैं. हालांकि पंत ने सीधे तौर पर स्वतंत्रता आंदोलन की कविताएं नहीं लिखीं, लेकिन उनकी कविताओं में स्वतंत्रता की भावना, राष्ट्र के प्रति प्रेम, और देश की मुक्ति की इच्छा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है. पंत महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे और उनकी कविताओं में गांधीवाद के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है। वे सत्य, अहिंसा, और सेवा के सिद्धांतों को अपनाने का समर्थन करते हैं. निष्कर्ष में, सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का एक महत्वपूर्णस्थान है। उनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति, सामाजिक चेतना, स्वतंत्रता आंदोलन,और गांधीवाद के विचारों से प्रभावित हैं. उनकी कविताएँ हमें देश के प्रति प्रेम,सामाजिक सुधार, और स्वतंत्रता की भावना के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करतीहैं.

निष्कर्ष :

निष्कर्षता हम कह सकते है की छायावाद मूलतः स्वछन्दवादी कविता है. इस काव्यधारा में व्युक्तिवाद की प्रधानता तो थी ही साथ ही सामाजिक चिन्तन ही था. सामाजिक चिंतन की पृष्टभूमि राष्ट्रिय चेतना से जुडी हुई है. समकालीन परिवेश में राष्ट्रियस्तर पर स्वाधीनता का आन्दोलन जोरोशोरो पर था. भारत के अधिकांश हिस्सों में यह आन्दोलन जोड़ पकड चूका था. साहित्य भी इससे अछूता नही रहा. छायावादी कवियों ने समकालीन परिस्थीती की मांग के अनुसार अपने कविताओं में राष्ट्रिय प्रेम देशभक्ति, राष्ट्रिय चेतना का भाव प्रकट होता हुआ दिखाई देता है. जो आगे की आन्दोलन की पार्श्वभूमी बना देने में कारीगर साबित हुआ है.

संदर्श संकेत :

1.देसाई, ए.आर. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठ भूमि
2.दत्त, रजनी पाम आज का भारत
3.शर्मा, रामविलास निराला की साहित्य साधना,
4.राय, महेन्द्रनाथः छायावाद और नवजागरण,
5.त्रिपाठी, अनिल नई कविता,
6.जैन, निर्मला महादेवी साहित्य भाग-१
7.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास
8.नामवर सिंह,छायावादद्वितीय संस्करण, १९६८

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

५. हिंदी फिल्मी गीतों में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना

रेमीसा सी. यू.
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, केरल
Ph- 8089260731 Email: remeesacu७@gmail.com)

शोध सारांश -

हिंदी फिल्मी गीत भारतीय फिल्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। गीतों के साथ पुरातन काल से लेकर मानव का संबंध रहा है। साहित्य के समान गीतों का मानव समाज पर गहराई से असर देखा जा सकता है। मानव जीवन फिल्मी गीतों से बहुत अधिक प्रभावित है। मानव के भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक स्थितियों से भी गीत का प्रभाव स्पष्ट है। मानव मन की विभिन्न भावनाएं - सुख, दुख, शांति और उत्तेजना जैसी भावनाओं को प्रतिफलित करने की शक्ति गीतों में निहित है। वर्तमान समय में फिल्मी गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है। भारत के प्रति राष्ट्रीय चेतना को उजागर करने में गीतों की अतुलनीय भूमिका रही है। स्वतंत्रता संग्राम में और विभिन्न लड़ाइयों में भारतीयों के अंतःकरण में स्फूर्ति और चेतना को जागृत करने में गीतों का प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव निस्संदेह है। देश की राष्ट्रीय चेतना एवं देशभक्ति की भावना को जगाने और लोगों को एकजुट रखने में हिंदी फिल्मी गीतों की अहम भूमिका है।

बीज शब्द - फिल्म, फिल्मी गीत, राष्ट्रीयता, देशभक्ति , देश , राष्ट्र , गुलज़ार, मनोज मुंतशिर , गीतकार, स्वतन्त्रता, आत्मसमर्पण।

प्रस्तावना -

हिंदी फिल्म, भारतीय फिल्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। फिल्म और समाज का आपस में घनिष्ठ संबंध है। साहित्य का मानव पर जितना प्रभाव है, उससे भी अधिक प्रभाव फिल्म का मानव समाज पर है। फ्रांसीसी दार्शनिक गिल्स डेल्यूज़ (Gilles Deleuze) ने तो यहां तक कह दिया कि - "सिनेमा में इतनी ताकत है कि वह दर्शनशास्त्र भी बदल सकता है। इसका कारण उसकी बौद्धिकता नहीं, बल्कि उसकी भावनात्मक क्षमता है। क्योंकि पर्दे पर दिखलाई जाने वाली आकृतियों को किसी सुनिश्चित दृष्टिकोण से जानने/समझने की प्रवृत्ति से प्रायः मुक्त करा चुका होता है।" १. इसी कारण से फिल्म उद्योग भी भारत में साहित्य के समान प्रगति प्राप्त है। साहित्य के समान फिल्म भी देश की राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

फिल्मी गीत भारतीय फिल्म का एक अभिन्न अंग है जो भारतीय समाज के विभिन्न मूल्यों, मान्यताओं और आकांक्षाओं के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। मानव जीवन के साथ गीतों का बहुत पुराना संबंध है। मानव जीवन से गीतों का संबंध इतना दृढ़ है कि गीत, मनुष्य के जीवन के कई स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। कभी वह मानव के मानसिक तनाव और अवसाद को कम करने में मदद करता है तो कभी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

सृजनात्मकता के स्तर पर नए विचारों और अवधारणाओं के विकास में प्रेरक बनता है। सामाजिक स्तर पर भी गीतों का उतना ही महत्व है जहां वह मानव को एक दूसरे के साथ जोड़ रखने और मानव-मानव के बीच सामुदायिक भावना को जागृत करने का साधन बन जाते हैं। विभिन्न विद्वानों ने अध्ययन द्वारा यह भी प्रामाणिक हो चुका है कि गीत-संगीत से मनुष्य के कई तरह के मानसिक व शारीरिक अस्वस्थ्यों का इलाज के लिए भी कामयाब सिद्ध हुआ है।

आधुनिक काल से लेकर हिंदी साहित्य में काव्य, नाटक आदि में भारत के राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त करने वाली कई गीतों की रचना हुई है। नाटकादि के बीच में प्राप्त कुछ पंक्तियों के अलावा हिंदी के वरिष्ठ कविगण स्वतंत्र रूप से ऐसे अनेक गीत लिखे गए जो भारतवासियों के ज़हन में राष्ट्रीयता की भावना को तेज किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में ऊर्जा प्रदान की है। श्रीधर पाठक का 'भारत देश' , रविंद्रनाथ टैगोर का 'राष्ट्रीय गीत' , मैथिलीशरण गुप्त का 'मातृभूमि' , जयशंकर प्रसाद का 'भारत महिमा' , माखनलाल चतुर्वेदी का 'तुम एक हो' , रामनरेश त्रिपाठी का 'स्वदेश गीत' , सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का 'भारत माता' , बालकृष्ण शर्मा नवीन का 'हिंदुस्तान हमारा है' , सुमित्रानंदन पंत का 'भारत गीत' , सुभद्राकुमारी चौहान का 'वीरों का कैसा हो वसंत' , रामधारी सिंह दिनकर का 'मेरे प्यारे देश' , गिरिजा कुमार माथुर का 'हम होंगे कामयाब' , बालकवि बैरागी का 'जवानों से' आदि हिंदी में लिखे गए कुछ श्रेष्ठ राष्ट्रीय गीतों का उदाहरण है।

देश' और 'राष्ट्र' इन दोनों शब्दों के अर्थ और अनुभूति में फर्क है। सुनील जोगी के अनुसार - " 'देश' एक स्थूल भौगोलिक स्थिति का अर्थ देता है। देश को हम 'छू' सकते है। स्पर्श कर सकते है। वह विशालता का सूचक है। 'राष्ट्र' एक सूक्ष्म-चेतना का अर्थ देने वाला शब्द है। 'राष्ट्र' हमें अस्मिता का आभास देता है। यह विराटता का सूचक है।" २. यह मानव की सहज स्वाभाविक वृत्ति है कि उन्हें अपने देश या राष्ट्र के प्रति विशेष प्रकार का लगाव हो। हर एक मनुष्य जो चाहे विश्व के किसी भी देश या राष्ट्र के निवासी हो, वह अपने देश या राष्ट्र को सदा उन्नत और समृद्ध देखने के लिए इच्छुक रहता है। क्योंकि राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसका सीधा संबंध मानव के अंतःकरण से जुड़ी हुई है। उनके मन में अपने देश या राष्ट्र के प्रति कल्याण की भावना सदा सजीव रहती है। वह एक ऐसी जटिल अनुभूति है जिसके आवेग से मानव अपने देश या राष्ट्र के हित में अपना सबकुछ न्यौछावर करने में आनंद और गौरव अनुभव करता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रवाद और देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत ऐसे अनेक हिंदी फ़िल्मों का निर्माण हुआ, जिसमें ऐसी सामाजिक परिवर्तन और सुधार की भावनाओं को प्रोत्साहित करने वाले कई गीतों की भी रचना हुई। अब हिंदी के फिल्मी गीतों का उद्देश्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीयों के मानस पटल पर राष्ट्रीयता की भावना का बीज बोने और पूरे भारतीयों के बीच देशप्रेम और राष्ट्रीय एकता के संदेश का प्रचार-प्रसार भी हिंदी के फिल्मी गीतों के महानतम उद्देश्य में शामिल है। गुलज़ार हिंदी फिल्मी जगत में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय गीतकार, कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक और शायर हैं।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

गुलज़ार एक ऐसे गीतकार हैं जिन्होंने अपने गीतों के माध्यम से अपनी राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्त किया है। उनके द्वारा लिखे गए बहुत से फिल्मी गीतों में भारत के प्रति राष्ट्रीय चेतना का गुंजाइश है, जो अब भी श्रोताओं के लबों से नहीं उतरी है। 'राज़ी' २०१८ में रिलीज हुई एक हिंदी फिल्म है जो हरिंदर सिक्का के उपन्यास 'कॉलिंग सहमत' के आधार पर बनाई गई है। इस फिल्म की कहानी १९७१ के भारत-पाक युद्ध के दौरान की है। इसके लिए गुलज़ार द्वारा लिखी गई गीत है 'ए वतन। देशभक्तिपूर्ण शैली में लिखा गया यह फिल्मी गीत फिल्म जगत में हलचल मचा दी। इस गीत की लेखन के लिए कई आलोचकों से गुलज़ार को प्रशंसा प्राप्त हुई। विपिन नायर ने 'दी हिन्दू' में इस गीत की प्रशंसा करते हुए लिखा - 'लंबे समय में बॉलीवुड से निकला पहला देशभक्ति गीत' । ३. इस गीत की देशभक्ति भावना इतनी ऊंची है कि जहां व्यक्ति किसी भी वस्तु से पहले अपनी मातृभूमि को रखता है, यहां तक कि अपने जान से भी आगे। इस गीत के जरिए गीतकार ने अपने वतन के लिए मंगलकामना की है कि अपना वतन हमेशा समृद्ध, संपन्न और खुशहाल बना रहे। चाहे वे विश्व के किसी भी कोने में रहें, उसके मन में हमेशा देश की यादें ताजा रहें और कभी न भूल जाएं -

'ए वतन , वतन मेरे आबाद रहे तू
मैं जहां रहूं जहां में, याद रहे तू ए वतन, मेरे वतन··· ।४.

गुलज़ार के मन में अपने देश के लिए जितना लगाव है कि वे अपने देश के ऊपर कोई आपत्ति न आने के लिए सदा सतर्क हैं। देश पर किसी भी प्रकार की परेशानी का अहसास उनके लिए दुखदायक है और देश के हित में अपना जीवन तक त्याग देने की कसम खाते हैं -

'तुझ पे कोई ग़म की आंच आने नहीं दूं
कुर्बान मेरी जान तुझ पे, शाद रहे तू।' ५.

गीतकार के लिए देश की सेवा ही अपना परम लक्ष्य है और उसकी अस्मिता भी देश से ही जुड़ी हुई है। इस गीत के माध्यम से यह भी कहना चाहते हैं कि जीवन में चाहे जहां कहीं भी पहुंचूं, कितना भी आगे बढ़ जाऊं, अपनी जड़ें हमेशा अपने वतन से ही जुड़ी रहेंगी - 'तू ही मेरी मंजिल है , पहचान तुझी से पहुंचूं मैं जहां भी मेरी बुनियाद रहे तू।' ६. टाइम्स ऑफ इंडिया को दिया गया एक साक्षात्कार में गुलज़ार कहते है - ' मैं चाहता हूं कि 'ए वतन' हमारे राष्ट्रगीत बने। यह हम सभी के लिए बोलता है और यह बिना किसी पूर्वाग्रह के बोलता है। लोग पूछते रहते है कि राष्ट्रवाद क्या है। खैर , कोई इस गीत के माध्यम से राष्ट्रवाद को परिभाषित कर सकता है।' ७.

मनोज मुंतशिर एक प्रसिद्ध भारतीय गीतकार, पटकथा लेखक और कवि हैं। वे हिंदी फ़िल्मों, टेलीविजन, और संगीत उद्योग में अपने भावनात्मक, राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति से भरपूर लेखन के लिए जाने जाते हैं। मनोज मुंतशिर द्वारा लिखित 'देश मेरे' फिल्म गीत की बुनावट देशभक्ति की सच्ची भावना से हुई है। इस गीत को २०२१ के 'भुज: द प्राइड ऑफ इंडिया' नामक फिल्म के लिए लिखा गया था। इस गीत में

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

गीतकार ने अपने देश के प्रति गहरी श्रद्धा और सम्मान प्रकट किया है। इस गीत की आरंभिक पंक्तियां इस प्रकार हैं –

'ओ देश मेरे, तेरी शान पे सदके
कोई धन है क्या तेरी धूल से बढ़के।'

इन पंक्तियों में गीतकार भारतवर्ष की महिमा का गायन करते हैं। इस देश के निवासी होने पर गौरव प्रकट करते हुए अपनी धरती को नमन करते हैं। इन पंक्तियों से गीतकार का तात्पर्य यह है कि वे अपने देश के सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए कुछ समर्पित करने को तैयार हैं। गीतकार के लिए देश की मिट्टी से बढ़कर कोई धन नहीं है। इस गीत के द्वारा मनोज मुंतशिर यही कहना चाहते हैं कि विश्व में कोई भी संपत्ति, कोई भी ऐश्वर्य, अपनी जन्मभूमि की पवित्र पावन धूल से बढ़कर नहीं हो सकता। यह देशभक्ति की भावना का अत्यंत मनोहर चित्रण है।

इस गीत में काव्यात्मक ढंग से गीतकार ने बलिदान, स्मरण और अमरता की भावना को भी व्यक्त किया है 'कभी याद करें जो ज़माना माटी पे मर मिट जाना जिक्र में शामिल मेरा नाम हो।' इन पंक्तियों के द्वारा गीतकार यह आकांक्षा रखते हैं कि जब भविष्य में लोग अतीत को याद करें या जब कभी इतिहास की चर्चा हो, देश के लिए जान की आहुति देने वाले वीरों, सैनिकों और महान व्यक्तियों को याद करें, उस वक्त उनका भी नाम उसमें शामिल हो। यह पंक्तियां देशभक्ति, त्याग और अमरता की आकांक्षा को दर्शाती हैं। मनोज मुंतशिर द्वारा लिखित एक और हृदयस्पर्शी फिल्म गीत है 'तेरी मिट्टी' । यह गीत २०१९ के 'केसरी' नामक फिल्म के लिए लिखा गया था। इस फिल्म की कथानक सारागढ़ी की लड़ाई पर आधारित है, जो १८९७ में ब्रिटिश भारतीय सेना की ३६वीं सिख रेजिमेंट के २१ सैनिकों और अफगान आदिवासियों के बीच हुआ था। यह गीत २०१९ की शुरुआत में भारतीय फिल्मी गीतों के चार्ट में उच्च स्थान पर रहा। 'तेरी मिट्टी' गीत की पंक्तियां देशभक्ति भावना से ओतप्रोत हैं, जिसमें देश के लिए जीवन बलिदान देने वाले वीरों के प्रेम और आत्मसमर्पण को व्यक्त किया गया है -

'तलवारों पे सर वार दिए, / अंगारों में जिस्म जलाया है
तब जाके कहीं हमने सर पे / ये केसरी रंग सजाया है।'

इन पंक्तियों में उन साहसी वीरों की बहादुरी और आत्मसमर्पण को दर्शाया गया है जिन्होंने देश की रक्षा हेतु अपने सिर तक कट जाने पर भी तनिक न डरे और आक्रमियों से लड़ते हुए अपने जिस्म को आग में जलने तक का कष्ट सहा है। गीतकार ने सिखों के सिर के केसरिया रंग की पगड़ी को उनके बलिदान और साहस का प्रतीक बनाया है। भाव यह है कि देश के लिए निर्भीक होकर सिखों ने अपनी जान को त्याग दिया है। उसके बाद ही वे अपने माथे पर यह केसरिया रंग धारण करते हैं, जो बलिदान और वीरता का रंग है।

इस गीत की आगे की पंक्तियों में एक वीर सैनिक की सच्ची भावना प्रकट होती है, जो अपने वतन के लिए अपनी आहुति दे चुका है, साथ ही अपनी जमीन के प्रति अटूट प्रेम और आग्रह को भी दर्शाती है। उस सैनिक के दुख और आत्मसमर्पण इन पंक्तियों का जान है। अपने गांव, खेत, लहलहाती हुई सरसों के फूल

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

आदि देखने और खुशी से नाचने-झूमने का अवसर उसे अब नहीं होगा। अपने कर्तव्य के आगे गांव और वहां की सभी आनंददायक स्मृतियों को उसने त्याग दिया। फिर भी, उसके मन में अपने जान जाते वक्त में भी अपने गांव को हमेशा समृद्ध और खुशहाल देखने की आशा बरकरार है -

‘ सरसों से भरे खलिहान मेरे , / जहां झूम के भांगड़ा पा न सका
आबाद रहे वो गांव मेरा , / जहां लौटके बापस जा न सका।’

सैनिक अपने वतन को संबोधित करते हुए कहता है कि वतन के साथ उसका प्रेम बहुत अद्वितीय था। वह अपने देश के लिए जान तक कुर्बान कर चुका है क्योंकि बाकी रिश्तों से बढ़कर था देश के साथ उसका रिश्ता। वह अपने प्राण त्यागने की बात पर गौरव भी महसूस करते हैं और अपने देश की अस्मिता की रक्षा हेतु सेवा कर सकने पर स्वयं को सौभाग्यशाली भी मानते हैं। देश के लिए मर मिटने का अवसर उसे आनंद देता है -

‘ओ वतना वे मेरे वतना वे / तेरा मेरा प्यार निराला था
कुर्बान हुआ तेरी असमत पे / मैं कितना नसीबों वाला था।’

इस गीत को लिखने का उद्देश्य फिल्म के आखिरी दृश्य में मरते हुए एक सैनिक के अंतिम विचारों को दर्शाना था। गीतकार ने अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल सिद्ध हुआ है।

निष्कर्ष -

हिंदी के फिल्मी गीतों में राष्ट्रीय चेतना का अनूठा संगम देखने को मिलता है। फिल्मी गीतों का उद्देश्य मनोरंजन की सीमा को पारकर हमारे देश के प्रति प्रेम, बलिदान की भावना और आत्मगौरव आदि अनुभूतियों को मानव मन में मजबूत करने के लिए सक्षम हुए हैं। भारत एक बहुभाषी देश है। फिर भी भारत के लगभग सभी राज्यों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त है। हिंदी फिल्म और फिल्मी गीतों के प्रेमी सिर्फ हिंदी प्रदेशों में ही नहीं, हिंदीतर प्रदेशों में भी हैं। हिंदी फिल्मी गीतों की लोकप्रियता और प्रभाव को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि हिंदी फिल्मी गीत भारतवर्ष में राष्ट्रीय भावना के संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बने रहेंगे।

संदर्भ सूची -

१. बॉलीवुड पाठ विमर्श के संदर्भ, ललित जोशी, पृ.९
२. १५१ श्रेष्ठ राष्ट्रीय गीत, (सं) सुनील जोगी, पृ.५
३. द हिन्दू , विपिन नायर, २६ अप्रैल २०१८ अंक
४. गुनगुनाइए, गुलज़ार, पृ.५८८
५. गुनगुनाइए, गुलज़ार, पृ.५८८
६. गुनगुनाइए, गुलज़ार, पृ.५८८
७. टाइम्स ऑफ इंडिया, देबराती एस सेन, ६ मई २०१८ अंक

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

६. शहीद भगतसिंह की साहित्यिक प्रतिमा

संदीप संपतराव चाळक
पीएच.डी. शोधछात्र, हिंदी विभाग,
डॉ. बा. आं.म.विश्वविद्यालय,छत्रपति संभाजीनगर, ४३१००१,
मो.८८८८६७८३२२ ई मेल : sandipschalak@gmail.com

सारांश :
शहीद भगतसिंह श्रेष्ठ पुत्र, अच्छे नागरिक, क्रांतिकारी, दार्शनिक, नेता, सिपाही, सच्चे देशभक्त के साथ-साथ लेखक भी थे। लेकिन अधिकांश लोग उन्हे क्रांतिकारी युवा के रूप में ही जानते हैं। भगतसिंह ने जिन प्रगतीशील विचारों के लेखकों, विद्वानों को पढा जिनसे वे वैचारिक रूप से प्रभावित हुए। उसी वैचारिक पृष्ठभूमी के आधार पर भगतसिंह ने अनेक लेख, पत्र, पुस्तकें लिखी। जो भगतसिंह एक श्रेष्ठ लेखक होने के ही धोतक है। भगतसिंह की वैचारिक परिपक्वता और साहित्यक दृष्टीकोन को समझना है तो, 'मैं पूरे जोर से कहता हूं कि, मैं आकांक्षाओं और आशाओं से भरपूर हूं और जीवन की आनंदमय रंगीनियों से ओत-प्रेत हूं, पर आवश्यकता के समय सब-कुछ कुर्बान कर सकता हूं और यही वास्तविक बलिदान है।' असेंबली में बम फेंकने से कुछ ही पहले भगतसिंह ने अपने साथी सुखदेव को जो लंबा पत्र लिखा, उसकी यह पंक्तियां महत्वपूर्ण साबित होती है। भगतसिंह पर जो कुछ लिखा गया है, वह इतना है कि, उसके कागज कई एकड़ भूमि पर फैल सकते हैं, पर इन इकत्तीस शब्दों में उन्होंने अपने व्यक्तित्व का जो चित्र दिया है, क्या वह उन सब कागजों से अधिक परिपूर्ण नहीं है? और जो इतने बड़े व्यक्तित्व को, इतने छोटे शब्दों में, इतनी सुंदरता के साथ, चित्रित कर सकता है, उसे एक श्रेष्ठ लेखक मानने में किसको झिझक होगी। इस तरह से कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक आशय प्रस्तुत करना उनके लेखन की विशेषता थी। अधिक से अधिक पढ़ना, उसमें से महत्वपूर्ण जो है, उसे निकालना और फिर उसका उपयोग सही समय पर सही जगह करना ही उनके लेखन की विशेषता थी। साहित्यिक दृष्टीसे अगर देखा जाए तो भगतसिंह ने लेखक, अनुवादक और पत्रकार के रूप में अपनी कलम चलाई है।

बीज शब्द : क्रांतिकारी, लेखक, अनुवादक, पत्रकार, संगठक

लेखक भगतसिंह:

शहीद भगतसिंह ने जो भी साहित्य लिखा उसमें से अधिकांश साहित्य जेल में ही लिखा था। जिसमें कुछ लेख और चार पुस्तके थी । "दुर्भाग्यवश जेल में भगतसिंह द्वारा लिखी गई चार महत्वपूर्ण पुस्तकों की पांडुलिपियां नष्ट हो चुकी है। ये थी-

१) 'आइडियल ऑफ सोशलिज्म' (समाजवाद का आदर्श)
२) 'द डोर टू डैथ' (मृत्यु के द्वार पर),

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३) 'ऑटो-बायोग्राफी' (आत्मकथा),

४) 'रिवोल्यूशनरी मूहमेंट ऑफ इंडिया विद शॉर्ट बायोग्राफी स्कैचेज ऑव द रिवोल्यूशनरीज' (भारत में क्रांतिकारी आंदोलन और क्रांतिकारियों का संक्षिप्त परिचय)।" १ सच में यह किताबें आज अस्तित्व में होती, तो आज देश का प्रतिनिधित्व करते हुए जरूर समाज के सम्मुख होती। इतनी मेहनत से भगतसिंह ने जो किताबें लिखी थी, वह उपलब्ध नहीं है, तो कहां गई इस संदर्भ में शिव वर्मा लिखते हैं, कि- "यह चारों पांडुलिपियां चोरी-छिपे जेल से बाहर लाई गई थी और कुमारी लज्जावती के पास 'जालंधर' भेज दी गई थी। जिन्होंने १९३८ में इनको विजयकुमार सिन्हा के हवाले कर दिया। १९३९ में दूसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने के बाद सिन्हा को लगा और ठीक ही लगा, कि उनकी गिरफ्तारी और उनके घर की तलाशी हो सकती है। इसलिए पांडुलिपियों को पुलिस के हाथों पढ़ने से बचाने के लिए उन्होंने उनको सुरक्षित रख-रखाव के उद्देश्य से अपने एक मित्र के हवाले कर दिया। लेकिन १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन के बाद जब पुलिस दमन जोरों पर था, यह दोस्त बेहद डर गया और उसने पांडुलिपियों को नष्ट कर दिया।" २ इस तरह से भगतसिंह की सृजित ४ पुस्तकें नष्ट हो जाना देश के लिए बहुत बड़ी हानी ही है। क्योंकि उन किताबों के जरिए भगतसिंह ने देश हित को ही सूचित किया था। वर्तमान में उनकी जो रचनाएं उपलब्ध हैं, उनके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि उनकी वे पुस्तकें कितनी महत्वपूर्ण और प्रासंगिक होती। यदि आज भी वे सुरक्षित होती तो बिल्कुल क्रांतिकारी आंदोलनों में मौलिक दस्तावेजों की भूमिका निभाती।

भगतसिंह जितने कुशल, ओजस्वी और प्रभावशाली वक्ता थे, उतने ही अच्छे और सशक्त लेखक। क्रांतिकारी आंदोलनों को आम जनता तक पहुंचाने का माध्यम उन्होंने भाषण तथा लेखन को बनाया। उनके भाषाई ज्ञान को अगर देखे तो "कलम का धनी तो था ही हिंदी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी पर उसका समान अधिकार था। अंग्रेजी में लिखे हुए उसके लेख, अदालती वक्तव्य, पत्र, पर्चे आदि उसके सशक्त शैली के प्रमाण है। नौजवान भारत सभा के घोषणापत्र का अंग्रेजी मसविदा भगवती चरण ने भगतसिंह के साथ मिलकर, १९२८ में तैयार किया था। भाषा शैली तथा देश के उस समय के राजनैतिक स्तर को देखते हुए विचारों की परिपक्वता की दृष्टि से उस घोषणापत्र का आज भी ऐतिहासिक महत्व है। असेंबली में बम फेंकने के बाद पकड़े जाने पर अदालत में जो बयान दिया था, वह तो उसी समय एक 'अंतरराष्ट्रीय ख्याति का दस्तावेज' बन गया था।" ३ इस तरह से भगतसिंह एक बहुभाषाविद के रूप में परिचित होते हैं। जिन्होंने विश्व के साहित्य, इतिहास और राजनीति को समझने के उद्देश्य से अनेक भाषाओं को अर्जित किया था। आजादी के पश्चात वे जीवित रहते, तो भारत की परिस्थितियां सुधारने में इसका प्रयोग अवश्य करते।

उन्होंने 'पंजाब की भाषा और लिपि कि समस्या' इस लेख में साहित्य की महत्ता को अनेक उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया है। वह कहते हैं, कि "ज्यों-ज्यों देश का साहित्य ऊँचा होता है, त्यों-त्यों देश भी उन्नति करता जाता है। देशभक्त, चाहे वे निरे समाज-सुधारक हों अथवा राजनीतिक नेता, सबसे अधिक ध्यान देश के

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

साहित्य की ओर दिया करते हैं। यदि वे सामाजिक समस्याओं तथा परिस्थितियों के अनुसार नवीन साहित्य की पुष्टि न करें तो उनके सब प्रयत्न निष्फल हो जाए और उनके कार्य स्थायी न हो पाएँ।" ४ साहित्य किस तरह ऊँचा होता है, यह भगतसिंह अच्छी तरह से जानते थे। भारत की राजनीति और समाज को सुधारना है, तो पहले यहां के साहित्य को सुधारने की आवश्यकता है और उस तरह से प्रयास भी उन्होंने किए थे। लेकिन यह शोकांतिका है, कि उनके द्वारा सृजित किताबें जीवित नहीं रही।

अनुवादक भगतसिंह:

लेखक के साथ-साथ भगतसिंह श्रेष्ठ वक्ता, अच्छे संगठक, क्रांतिकारी नेता, बहुभाषाविद और एक अच्छे अनुवादक भी थे। इतिहास, राजनीति के साथ-साथ वे साहित्य के प्रति भी आकर्षित थे। "वैचारिक साहित्य के साथ कविता, उपन्यास और ललित साहित्य के प्रति भी एक विशेष आकर्षण था। उनके लेखन में, टिप्पण और डायरी में अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, पंजाबी आदि सभी भाषाओं में लेखन को हम देख सकते हैं। संस्कृत का तो उन्हें अच्छा ज्ञान था, अंग्रेजी और पंजाबी भाषा सीखने के लिए उन्हें विशेष प्रयास करने पड़े। यह बांग्ला को भी पढ़ लिखने तक सीख चुके थे।" ५ एक सफल अनुवादक के लिए आवश्यक होता है, कि दोनों भाषाओं पर उसका समान अधिकार हो। शहीद भगतसिंह भी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, इस कारण ही वह एक सफल अनुवादक थे। उनके पंजाब की भाषा और लिपि की समस्या' इस लेख में उन्होंने उर्दू भाषा को आम जनता तक पहुंचने में किस तरह से कठिनाई होती है। अनुवाद करने का अगर प्रयास भी, होता है, तो किस तरह से सही अर्थ न समझ पाने के कारण अनुवाद बिगड़ जाता है। उसका उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन दिनों पंजाब में उर्दू, हिंदी और पंजाबी तीन भाषाओं का प्रचलन था। "परंतु हमारे सामने इस समय सबसे मुख्य प्रश्न भारत की एक राष्ट्रभाषा बनाना है। एक राष्ट्र बनाने के लिए, एक भाषा होना आवश्यक है। परंतु यह एकदम हो नहीं सकता उसके लिए कदम-कदम चलना पड़ता है, यदि हम अभी भारत की एक भाषा नहीं बना सकते, तो कम से कम लिपि तो एक बना देनी चाहिए। 'उर्दू' लिपि तो सर्वांग संपूर्ण नहीं कहला सकती और सबसे बड़ी बात तो यह हैं, कि उसका आधार 'फारसी' भाषा पर है। 'उर्दू' कवियों की उड़ान, चाहे वे हिंदी, भारतीय ही क्यों ना हो, ईरान के साथी और अरब की खजूरों को जा पहुंचती है 'काजी-नजरुल इस्लाम' की कविता में तो 'धूरजटी', 'विश्वामित्र' और 'दुर्वासा' की चर्चा बार-बार है। परंतु हमारे पंजाबी, हिंदी, उर्दू कवि उस ओर ध्यान तक ना दे सके। क्या यह दुख: की बात नहीं है? इसका मुख्य कारण भारतीयता और भारतीय साहित्य से उनकी अनभिज्ञता है। उन्हें भारतीय भाषा आ ही नहीं पाती, तो फिर उनके रचित साहित्य से हम कहाँ तक भारतीय बन सकते हैं? केवल उर्दू पढ़नेवाले विद्यार्थी भारत के पुरातन साहित्य को जानकर नहीं हासिल कर सकते। यह नहीं कि उर्दू जैसी साहित्यिक भाषा में उन ग्रंथों का अनुवाद नहीं हो सकता, परंतु उसमें ठीक वैसा ही अनुवाद हो सकता है, जैसा कि एक ईरानी को भारतीय साहित्य संबंधी ज्ञानोपार्जन के लिए आवश्यक हो। हम अपने उपरोक्त कथन के समर्थन में केवल इतना ही कहेंगे कि जब साधारण 'आर्य' और 'स्वराज्य' आदि शब्दों को आर्या और स्वराजिया लिखा और पढ़ा जाता

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

है तो मूढ तत्वज्ञान संबंधी विषयों की चर्चा ही क्या? अभी उस दिन श्री लाला हरदयाल जी एम.ए. की उर्दू पुस्तक 'कौमें किस तरह जिंदा रह सकती है?' का अनुवाद करते हुए सरकारी अनुवादक ने 'ऋषी नचिकेता' को उर्दू में लिखा होने से 'नीची कुत्तिया' समझ कर 'ए बिच ऑफ लो ओरिजिन' अनुवाद किया था। इसमें न तो लाला हरदयाल जी का अपराध था, न अनुवादक महोदय का। इसमें कसूर था, उर्दू लिपि का और उर्दू भाषा की हिंदी भाषा तथा साहित्य से विभिन्नता का।" ६ इस से ज्ञात होता है, कि भगतसिंह अनुवाद को, किस हद तक समझते थे। अनुवाद के आवश्यक सभी पहलुओं को भगतसिंह के अंतर्गत देखा जा सकता है। उन्होंने अनेक भाषाओं को इसलिए सीखा था, कि विभिन्न भाषाओं के साहित्य को, इतिहास को वे समझ सके। अध्ययन के दौरान उन्हें जो महत्वपूर्ण लगता था, वे उसे अनुदित करते थे। ताकि अन्य साथी भी इसे आसानी से पढ़ सके और प्रेरित हो सके। उन्होंने अधिकांश साहित्य जेल में ही लिखा था। जिसमें उनकी चार रचनाएं, अनुपलब्ध है। "भगतसिंह ने आयरलैंड के क्रांतिकारी डानब्रीन की आत्मकथा 'माय फाइट फॉर आइरिश फ्रीडम' का हिंदी अनुवाद किया है, 'मेरी कहानी' नाम से। यह कृति स्वर्गीय सूर्यनारायण व्यास के प्रयास से सन १९३१ में ही प्रकाशित हो गई थी।" ७ शहीद भगतसिंह को अनुवाद के संबंध में सही ज्ञान होने के कारण ही उन्होंने सफल अनुवाद भी किया। अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं पर समान अधिकार न होने पर किस तरह 'ऋषी नचिकेता' की जगह पर 'नीची कुत्तीया' समझा जाता है और फिर उसका नतीजा क्या निकलता है, यह स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख रखा है। इस उदाहरण से भगतसिंह एक सफल अनुवादक होने की प्रचिति हमे होती है।

पत्रकार भगतसिंह:

शहीद भगतसिंह एक लेखक, अच्छे अनुवादक, अध्यापक, क्रांतिकारी नेता, संगठक के साथ-साथ निडर पत्रकार भी थे। हिंदी और पंजाबी भाषा के पत्रकारिता में उन्होंने अपना अनमोल योगदान दिया है। उनके व्यक्तित्व और स्वभाव की तरह उनकी लेखनी भी तेज ही थी। इस संदर्भ में शिव वर्मा लिखते हैं- "हिंदी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी पर उसका समान अधिकार था। उन दिनों कामरेड सोहनसिंह जोश, अमृतसर में कीर्ति नाम से गुरुमुखी तथा उर्दू में एक मासिक पत्रिका निकालते थे। भगतसिंह उसमें नियमित रूप से लिखता था। विभिन्न नामों से कीर्ति में क्रांतिकारी शहीदों की जीवनीयाँ प्रकाशित हुई थी। उनमें से अधिकांश भगतसिंह की ही कलम की देन थी। हिंदी में उसने अधिकतर 'प्रताप' तथा 'प्रभा' (कानपुर), 'महारथी' (दिल्ली) और 'चांद' (इलाहाबाद) में ही लिखा।" ८ बचपन से ही अध्ययन की रूचि होने के कारण चाचा आजीतसिंह और उनके साथियों के कई दस्तावेजों को उन्होंने पढ़ लिया था। बढ़ती उम्र के साथ-साथ यह पढ़ते गए और वाचन के साथ-साथ लिखते भी गए। अनेक पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में कई मौलिक लेख उन्होंने लिखे हैं। उसी तरह अनेक नामों से भी उन्होंने कलम चलाई है।

भगतसिंह जैसे उच्चप्रति के लेखक थे, वैसे ही वे उच्चप्रति के पत्रकार भी थे। उन्होंने समाचार पत्र बेच कर उससे कुछ दिनों तक अपना उधर निर्वाह किया था। कुछ समाचार पत्रों में संपादक के रूप में उन्होंने काम

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

किया था। उन्होंने पत्रकार के रूप में बहुत कुछ लिखा था । वह समाज के प्रति, दायित्व निभानेवाले और समाज को न्याय मिलने हेतु पूरे होश और जोश के साथ लिखने वाले पत्रकार थे। "उन्होंने अनेक नाम धारण करके, क्रांतिकारी लेख लिखें। 'युवक', 'एक पंजाबी युवक', 'विद्रोही', 'बी.एस.सिंधू', 'श्रद्धानंद, 'हबळराज', 'बलवंत' आदि नामों से भगतसिंह ने सा.मतवाली, सा.प्रताप, कीर्ति, महारथी आदि समाचार पत्रों में अधिकांश लेखन किया है।" ९ भगतसिंह ने जिस तरह से निडर होकर समाजहित, लोकमंगल के लिए अपनी कलम चलाई क्या आज के युवा पत्रकारों को उसी तरह से नहीं लिखना चाहिए? लिखना तो चाहिए, लेकिन आज तो पत्रकारिता एक व्यवसाय हो चुका है। पैसा कमाने के उद्देश्य से ही, आज अधिकांश जनसंचार माध्यमों का प्रयोग किया जा रहा है। कहीं पर भी चोरी, खून, बलात्कार, अन्याय, अत्याचार होता है, तो उसके खिलाफ आवाज उठाने की, उसे न्याय देने की मानसिकता, पत्रकारों में बिल्कुल भी नहीं है। किसी के इशारों पर नाचने की, किसी के फेंके टुकड़ों पर पलने की स्थिति वर्तमान में दृष्टिगोचर होती है। "लोकमान्य तिलक, समाज-सुधारक आगरकर, आचार्य अत्रे और मुख्यता भगतसिंह इनके जैसे ध्येयवादी पत्रकारों की आज हमारे देश को आवश्यकता है। गरीबों पर हो रहे अन्याय-अत्याचारों को न्याय देने वाले, भगतसिंह जैसा आदर्श पत्रकार, कौन हो सकता है।" १० सच में भगतसिंह आदर्श पत्रकार थे। अगर नियती उन्हे अपना दायित्व निभाने का अवसर देती, तो भगतसिंह पूरे देश की पत्रकारिता में, आदर्श रूप में सर्वसाधारण तक आसानी से पहुंचे होते। कोई भी समाचार लिखते समय, पहले उसे वह समझ लेते थे और फिर उसे किस रूप में लिखना है, यह तय करते थे। 'वीर अर्जुन' के संपादक उनके साथी श्री दीनानाथ सिद्धांतालंकार ने लिखा है कि- "उनमें समाचार उत्पादन की अपूर्व क्षमता थी। वे समाचार की आत्मा को पहचानते थे और उसे इस तरह प्रस्तुत करते थे, कि वह आत्मा सामने आ जाए। यदि उस समाचार के पीछे कोई इतिहास होता, तो यह उसे लेख का रूप दे देते।" ११ इससे भगतसिंह के एक जानकार पत्रकार का रूप उभरकर आता है।

भगतसिंह ने, विवाह ना करने का बहाना बनाकर, पूर्ण रूप से क्रांति-यज्ञ में अपने आप को झोंक दिया था। तो गणेश शंकर विद्यार्थी के साथ में प्रताप' में पत्रकारिता सीख रहे थे। उन्हीं दिनों दिल्ली के दरियागंज में दंगा हुआ, तो वहां की खबरें लाने के लिए भगतसिंह को भेज दिया गया। "भगतसिंह प्रताप के संवाददाता के रूप में दिल्ली गए। उन्होंने सांप्रदायिक दंगे के बारे में तथ्य इकट्ठे किए और कानपुर लौटकर २ कलम की रपट लिखी। इसके बाद वह अखबार में 'बलवंत सिंह' नाम से काम करने लगे। विद्यार्थी का प्रेस क्रांतिकारियों का केंद्र था और उसमें गुप्त क्रांतिकारी साहित्य भी छपता था।" १२ भगतसिंह के पत्रकारिता की शुरुआत ही, विद्यार्थी जैसे देशभक्त और क्रांतिकारी साहित्य छापने वालों के साथ हुई थी। तो इसके परिणाम के रूप में हम भगतसिंह के पत्रकारिता को देख सकते हैं।

इस तरह से शहीद भगतसिंह के साहित्यकार के रूप में अनेक पैलुओं के दर्शन हमे होते हैं।

निष्कर्ष:

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

भगतसिंह एक क्रांतिकारी के साथ-साथ अच्छे लेखक भी थे। साथ ही वे अनुवाद के महत्व और गांभीर्य को भी अच्छेसे समझते थे। शहीद भगतसिंह एक अच्छे संगठक के साथ-साथ निडर पत्रकार भी थे। लेखक के साथ-साथ भगतसिंह श्रेष्ठ वक्ता, क्रांतिकारी नेता, बहुभाषाविद और एक अच्छे पाठक भी थे। भगतसिंह के इस अनेक पैलू को देखते हुए हम कह सकते है कि भगतसिंह एक सफल साहित्यकार के रूप में उभरकर आते हुए हमे दिखाई देते है।

संदर्भ संकेत:

१. पंडा चयनिका उनियाल – क्रांतिकारी भगतसिंह व्यक्तित्व, विचारधारा और प्रासंगिकता, पृ. १०९
२. वर्मा शिव - भगतसिंह की चुनी हुई कृतियां, पृ. २०
३. वर्मा शिव – संस्मृतीयाँ, पृ. २३
४. मानस मुकेश – मेरा रंग दे बसंती चोला, पृ.०३
५. देसाई दत्ता - मूल दस्तावेजांचा स्त्रोत, प्रा. चमनलाल पृ. ३७६
६. मानस मुकेश – मेरा रंग दे बसंती चोला, पृ.८९
७. व्यास राजशेखर - मृत्युंजय भगतसिंह, पृ.७५
८. वर्मा शिव – संस्मृतीयाँ, पृ. २२
९. इंगळे व. नि. – शहीद भगतसिंग, पृ. ११
१०. वही , पृ. ११
११. सिन्धु वीरेंद्र – युगद्रष्टा भगतसिंह और उनके मृत्युंजय पुरखे , पृ. ३०६
१२. हंसराज रहबर - भगतसिंह एक ज्वलंत इतिहास , पृ. ६५

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

७. नासिरा शर्मा रचित 'बहिश्ते जहरा' उपन्यास में राष्ट्रीय अस्मिता का स्वर

डॉ. रमेश माणिकराव शिंदे
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष ,हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई,
जि बीड़ संपर्क -९४२२२९१५१५

योजना रामकिशन नाकाडे
शोधार्थी, हिन्दी अनुसंधान केन्द्र,
स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई,
जिला- बीड, मो. नं.- ९४०४०२५१८२

भारतीय अस्मिता का साहित्य वह है, जो सभी भारतीय भाषाओं में लिखित समग्र भारतीयता को दर्शाता है। वह भारतीय समाज की कला, साहित्य,सभ्यता तथा संस्कृति का परिचायक है; चाहे वह साहित्य की किसी भी विधा में लिखित हो सकता है। हिन्दी उपन्यास भी इस दृष्टि से अपवाद नहीं है। विपरीत हिन्दी उपन्यास में भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता का सामाजिक और महत्वपूर्ण विषय रहा है, जो स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और बाद के भी व्यापक चिंतन का विषय रहा है। समकालीन परिवेश में राष्ट्रीय चेतना विषयक चिंतन वर्तमान युग की महत्वपूर्ण आवश्यकता ही बन गई है। राष्ट्रीय चेतना से तात्पर्य किसी राष्ट्र में घटित घटनाओं का नहीं होता; बल्कि राष्ट्र की एकात्मता और अखंडित विचारों की संवदना से होता है और उसके आसपास के जन जीवन के लोगों पर क्या प्रभाव रहा है, ईसी भावनात्मक जागरूकता ही राष्ट्रीय अस्मिता के विचारों का बीजारोपण करती है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना विशेषकर विभाजन और सांप्रदायिकता, मानवीय संवेदना और सामाजिक यथार्थ के माध्यम से व्यक्त होती हैं। नासिरा शर्मा स्त्री विषयक विमर्श और मानवीय मूल्यों को भी प्रमुखता से दर्शाती है। जिंदा मुहावरे उपन्यास में सांप्रदायिकता और विभाजन के बाद के माहौल में मानवीय संवेदनाओं को दर्शाया है। 'अजनबी जंजीरा ' उपन्यास में इराक़ की बदहाली का वर्णन और युद्ध के दौरान वीरान मानवीय संवेदनाओं को दर्शाया गया है। शाल्मली उपन्यास में मुस्लिम समाज में स्त्री की दयनीय स्थिति और रूढ़ियों से ग्रस्त परिवेश की घुटन से बाहर निकलने के लिए किया गया संघर्ष अभिव्यक्त किया गया है।

नासिरा शर्मा के 'बहिश्ते जहरा' उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना को नायिका तय्यबा के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास की वह नायिका है। उपन्यास में ईरानी क्रांति को कथाभूमि का आधार बनाया गया है। उपन्यास में सूसन, मलीहा, परी, महनाज, तय्यबा, सनोबर, अख्तर इन सात किरदारों के क्रियाकलाप पर आधारित कथा का विकास किया गया है। यह सात सहेलियां के आस पास ही उपन्यास की कथावस्तु घूमती हुई दिखाई देती है।

इन सभी पात्रो के बीच उपन्यास की महत्वपूर्ण कड़ी तय्यबा है। विश्वविद्यालय के शैक्षिक माहौल से ही उपन्यास का आरंभ हो जाता है। तय्यबा की सहेलियां फालगीरन से अपना भविष्य देखती हैं। ईरान में शाह के शासन को हटाकर लोगों ने खुमैनी के शासन को लाया है। जिसके कारण तय्यबा और उसकी सहेलियां की आगे की पढ़ाई के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं। आम लोगों को लगता था कि उनकी स्थिति अब सुधर

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

जाएगी क्योंकि अब खुमैनी का शासन आ गया है। लेकिन उनका यह आश्वासन भी गलत साबित हो जाता है। उनकी स्थिति पहले से भी ज्यादा बिगड़ जाती है। लोग खुमैनी के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। शाह का साम्राज्य चला जाने के बाद भी खुमैनी का शासन भी वैसा ही रहता है। एक ऐसा भी वर्ग देखने को मिलता है जो सिर्फ खुमैनी के ही नारे लगाता है। उनका मानना है,-"खुमैनी हमारे नेता,खुमैनी हमारे रहबर।"1

परी, अख्तर,तय्यबा को अब अपनी पीएच. डी. के दाखिले की आशा भी समाप्त हो चुकी थी और धीरे-धीरे इनका मिलना भी कम होता चला जाता है। महनाज के पिता की मृत्यु हो जाती है। महनाज का विवाह असलम के साथ नहीं हो पाता। महनाज को सुलेमान के साथ शादी करनी पड़ती है। सुलेमान अब पत्नी महनाज को लेकर जर्मनी चला जाता है। शाह का शासन तो गया है लेकिन खुमैनी भी ईरान देश को सही से चला नहीं पाता है। तय्यबा को अपने देश के प्रति आदर सम्मान तथा प्यार है। खुमैनी के शासन से ईरान को आजाद करवाने के हेतु से क्रांतिकारी पार्टी में शामिल हो जाती है। वह ईरान में क्रांति लाना चाहती है। तय्यबा खुमैनी के विरुद्ध जाकर देश के प्रति अपनी कलम चलाती है। खुमैनी के विरुद्ध जाकर देश के प्रति अपनी कलम चलाना अर्थात् खतरा मोल लेना ही है। इस लड़ाई में तय्यबा उसकी सहेली अख्तर की भी मदद लेती है। सुसन और मलिहा तय्यबा को समझती तक है, लेकिन वह उनकी बातें समझाना नहीं चाहती। वह खुमैनी के शासन से ईरान को आजाद करना चाहती है। मलीहा और सुसन उससे कहती है,-"खुदारा काम के नशे में कहीं जान से हाथ न धो बैठना, यह सरकार ऐसे दर्शन समझ नहीं पाती है, जो तुम्हारा है।"2

मलीहा और सुसन दोनों की बातों को सुनकर तय्यबा को हंसी आ जाती है। तय्यबा आम लोगों को खुमैनी की सरकार से मुक्त कराना चाहती है। तय्यबा ने खुमैनी के विरुद्ध लिखना शुरू किया है। उसे इसका अंजाम भी पता है, लेकिन फिर भी वह हार मानने वालों में से नहीं है। आधी रात को कुछ बंदूकधारी पासदारो ने तय्यबा का दरवाजा खटखटाया है। तय्यबा ने दरवाजा खोलते ही पासदार तय्यबा के कमरे की तलाशी लेने लगते हैं। पासदारो ने तय्यबा से कहा कि-"चलिए आप इसी समय थाना।"3

तय्यबा उन पासदारो को बाहर खड़े रहने की बात करते हुए कमरे में दाखिल हो जाती है। तय्यबा को पता चल चुका है कि वह अब जिंदा नहीं बचेगी। फिर भी उसे पलंग के नीचे छुपाई हुई चीजों का ख्याल आता है। उसे पता है कि एक यही कागजात है; जिसने अपनी कलम के माध्यम से क्रांति की चाहत रखी है। आखिर में तय्यबा को जेल हो जाती है। तय्यबा को जेल के एक कमरे में बंद कर दिया जाता है। उस पर अत्याचार तक किया जाता हैं । उसके बालों को जोर से खींचते हुए तय्यबा को जमीन पर जोरों से पटक दिया जाता है। तय्यबा अत्याचार सहते हुए जेल में दिन काट रही है। पर फिर भी उसका हौसला अभी भी बरकरार है। ईरान की धरती को वह खुमैनी की सत्ता से आजाद करना चाहती है। उसका मकसद ही ईरान में क्रांति लाना है। तय्यबा को पता चल चुका है कि उसके साथ कुछ गलत होने वाला है। फिर भी वह हौसला कायम रखती है। बेहोश तय्यबा उठने की कोशिश करती है। तय्यबा यह बात कहती है कि-"मेरी आत्मा को तुम दागदार नहीं

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

कर पाए! यह शरीर तो पहले से ही तुम लोगों की दी हुई यातनाओं की सनद बना रहा है; नश्वर है मगर आत्मा नहीं, आत्मा का स्पर्श तुम कर पाए ऐसा भ्रम केवल पाल सकते हो!"4

तय्यबा का देश के प्रति निस्सीम प्रेम भाव बहुत ही गहरा है। अपने साथ तय्यबा युवाओं को भी क्रांति में शामिल करती है। तय्यबा राजनीति में पडना नहीं चाहती है। सिर्फ खुमैनी के शासन से ईरान को आजाद कराना है।

'बहिश्ते जहरा' उपन्यास ईरान क्रांति के पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसमें ईरानियो की हालत का वर्णन सात लड़कियों के जीवन के माध्यम से किया है। प्रस्तुत उपन्यास में विद्रोह, आक्रोश और अशांति का सटीक वर्णन हुआ है। पीड़ित, शोषित जनता सत्ताधारी के प्रति आक्रोशित हो उठी है। जनजीवन के दर्दनाक चित्रण से लोगों को उपन्यास 'बहिश्ते जहरा' में मार्मिक किया है। जहां पर ज्यादा शोषण होता है; वहां पर उतनी ही ताकत से आक्रोश या विद्रोह भी होता है। देश का भविष्य अंधकार मय न हो इसलिए तय्यबा विद्रोह करती है। युवाओं को अपने साथ लेते हुए ईरान मे क्रांति लाना चाहती है। यह तो यह तय्यबा का राष्ट्र प्रेम ही है। यहां तैयबा के माध्यम से नासिरा शर्मा राष्ट्र के प्रति अपनी निश्चय प्रेम को अभिव्यक्त करती हुई नारी जीवन की भूमिका में भी राष्ट्रीयता को प्रमुखता से स्पष्ट करती है। जैसेकि तैयबा अनेक नारियों के माध्यम से आंदोलन का निर्माण कर राष्ट्र के प्रति न्याय की भूमिका निभाती है। वह किसी भी प्रकार के राजनीति से परहेज करते हुए राष्ट्र को ही वरीयता देती है। एक और व्यक्तिगत जीवन के सुख-दुख से परे राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना उसके जीवन का उद्देश्य बन जाता है। वह यह नहीं चाहती स्त्री परिवार में रहते हुए अपना जीवन संघर्ष कर सकती है। वह पारिवारिक जिम्मेदारियां को निभाती हुई राष्ट्र के प्रति अपने अहम भूमिका निभाती हुई समाज की दिशा दर्शक बन जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में शहनाज एक ऐसी कन्या है; जो पत्रकारिता के द्वारा समाज की सच्चाई और आंदोलन की दिशा सुनिश्चित करती है। स्पष्ट की इन सभी नारी चरित्र में नारी जीवन का रोना नहीं है; बल्कि कुछ कर दिखाने का सपना संजोते हुए आंदोलन को और भी सक्रिय बना देती है। परिणामत: राष्ट्र ही सर्वोपरि रहा है।

आधार ग्रन्थ सूची :

बहिश्ते जहरा, नासिरा शर्मा, पृ.52
बहिश्ते जहरा,नासिरा शर्मा, पृ.65
बहिश्ते जहरा,नासिरा शर्मा, पृ.68
बहिश्ते जहरा,नासिरा शर्मा, पृ.264

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

नासिरा शर्मा कृत 'बहिश्ते जहरा' में चित्रित स्त्री: एक अध्ययन : डॉ. बनजा तालदी
नासिरा शर्मा के उपन्यासों में चित्रित नारी चेतना : सोलंकी घरनी
समकालीन लेखिकाओ के उपन्यासों में नारी : डॉ. रेखा पाटिल

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

८. इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना

सुश्री. टेकाळे रागिनी पुरुषोत्तम
हिंदी विभाग,
राजर्षी शाहू महाविद्यालय, देवळाली प्रवरा
तहसील-राहुरी, जिला-अहिल्यानगर
E-mail raginitekale१९@gmail.com

डॉ. भाऊसाहेब एन. नवले
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रळ,
तहसील-राहुरी, जिला-अहिल्यानगर
E-mail-drbhausahebnavale@gmail.com

शोधसार — अपने राष्ट्र के संस्कृति प्रति प्रेम और अपनत्व और जागरूकता ही राष्ट्रीय चेतना कहलाती है। अपने देश के इतिहास, संस्कृति और भविष्य के लिए प्रयत्नशील होने की भावना ही राष्ट्र कों प्रगति के पथ पर ले जा सकती है। देश की स्वतंत्रता और सुरक्षितता को अखंडित रखना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है जो आज आधुनिकता और वैश्वीकरण के युग में दुर्लक्षित होता नजर आ रहा है। आज का युग राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक उथल-पुथल का युग है। सभी क्षेत्रों में भ्रम, द्वन्द्व, संघर्ष और आंदोलन इस सदी की विशेषता है। उपन्यासकार अपने समय की वास्तविकता से प्रभावित होकर अपनी रचनाओं के माध्यम से समकालीन प्रवृत्तियों को वाणी देते है। उसकी रचना समकालीन युग की मूल प्रवृत्तियों को रुपाकार देती हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय चेतना के साथ समकालीन साहित्य का सहज संबंध प्रस्थापित होता है। भारतीय गौरवशाली अतीत का गुणगान, राष्ट्र की दयनीय अवस्था का चित्रण और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की कामाना इन तीनों को एक सूत्र में बांधने का कार्य समकालीन उपन्यासकारों ने सफलता पूर्वक किया है।

कुंजी शब्द : गौरवशाली इतिहास, दयनीय अवस्था, उज्ज्वल भविष्य, ग्राम स्वराज, भ्रष्टाचार, सरकारी योजनाएं, किसान, क्रांति, सांस्कृतिक मिलाप, स्वर्णिम भविष्य, मानवतावादी दृष्टि, विश्व बंधुत्व ..

विषय प्रवेश :

इक्कीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य राष्ट्र के मिट्टी में अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित हुआ है, तो देश के प्रति राष्ट्र भक्ति को जागृत करना उनका कर्तव्य है। आज के समय में प्रत्येक भारतीय जनमानस में राष्ट्र प्रेम समुद्र की लहरों की तरह तरंगित होना अतिआवश्यक बन गया है केवल यही एक रास्ता हैं जो भारत की संस्कृति और सभ्यता को जीवित रख सकेगा। उपन्यासों से यह आशा करना स्वाभाविक है कि वह समकालीन युग का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति करे। उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति तीन प्रमुख मुद्दों के आधारपर की जाती हैं, भारत के गौरवशाली इतिहास का गुणगान, राष्ट्र की दयनीय स्थिति के चित्रांकन द्वारा और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना के माध्यम से समकालीन उपन्यासकारों इन तीनों को एक सूत्र में बांधने का कार्य करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

हमारे देश का स्वर्णिम इतिहास देशवासियों के लिए आज भी प्रेरणादायी है। महात्मा गांधीजी ने जिस सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह की राह पर चलकर देश को आजादी दिलाने में मुख्य भूमिका निभायी है, उसी राह पर चलकर 'भूमिपुत्र' उपन्यास का नायक रवि समाज परिवर्तन कर दिखाता है। रवि एक गाँव दत्तक लेकर उसे गाँधीग्राम के रूप में विकसित करता है। स्वच्छता अभियान चलाता है। लोगों कों घर, गलियाँ और परिवेश साफ करने का प्रशिक्षण भी देता है। इससे गाँव में क्रांति आयी। यह सब कार्य सम्पन्न करने के लिए गांधीजी के ही मार्गदर्शक तत्त्वों का अनुसरण किया। लेखक कहते हैं, "गाँधी जी का सुधार कार्यक्रम उपदेशात्मक नहीं था। वे कृति में विश्वास करते थे। वह स्वयं सफाई करते थे, दूसरे लोग उन्हें देखकर सीखते थे। उनका अनुकरण करते थे।" १ इसी प्रकार सर्व शिक्षा अभियान, आर्थिक निर्भरता, नशामुक्ति जैसे महत्वपूर्ण कार्यों कों भी अंजाम दिया गया। इस योजना के कार्यान्वयन में कोई अनिश्चय और संभ्रम नहीं है, इस बात कों समझते हुए उपन्यासकार कहते हैं, "ये सब बाते यूटोपिया नहीं हैं। मूर्ख हैं वे लोग जो गाँधी जी के सिद्धांतों को अप्रासंगिक और अव्यावहारिक कहते हैं।" २ तेजपाल जी यहाँ कहना चाहते हैं कि यदि स्वतंत्रता के बाद देश गाँधीजी के आदर्शों और ग्राम स्वराज की नीति का अनुसरण किया होता तो आज देश की स्थिति कुछ और ही होती। इसप्रकार शताब्दियों से गुलामी की जंजीर में जकड़े हुए देशवासियों की संघर्ष गाथा आज भी देशवासियों की आलस्य और नैराश्य की भावना को हटाकर आत्मगौरव और आत्मविश्वास संचार करने की क्षमता हमारे देश के गौरव गान में है। जिसकी आवश्यकता हर समयावधि में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी उसका सटीक उदाहरण तेजपाल चौधरी ने किया है। 'फाँस' उपन्यास में भी इसका वर्णन किया गया है, शगुन घर में देवी-देवताओं के साथ ही भगवान बौद्ध, आंबेडकर, फुले, और सवित्रीबाई फुले की तस्वीर लगाती है, देश के महामानवों के वचनों का स्मरण रहे इसलिए उपन्यास की छोटी दीवार पर एक फ्रेम लगाती है और अपने अनपढ़ माता-पिता के पूछने पर कहती है, "बाबा साहब की वाणी-'शिक्षित हो। संगठित हो। संघर्ष करो' ।" ३ बाबा साहब के आदेशानुसार शगुन भी अपने पति शिबू के विरोध के बावजूद अपनी बेटियों को फिरसे स्कूल भेजती है। इस प्रकार महामानवों के विचार आज भी समाज को सही राह पर चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

आज के युग में राजनीतिक क्षेत्र में जो मूल्यों का पतन हुआ हैं इसका प्रभाव सर्वत्र दिखाई दे रहा हैं। साम, दाम, दंड, भेद की राजनीति का चित्र डॉ. हनुमंतराव पाटील अपनी 'गिरगिट' कविता के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं,

"राजनीति/नीति को छोड़कर सबकुछ करती है।
एक-दूसरे में फूट डालकर/स्वार्थ सिद्धि करती है।
धर्म का सहारा लेकर/खून की नदी बहाती है।
जाति का आश्रय लेकर/एकता खंडित करती है।
वायदों और फायदों में फली-फूली/ राजनीति चिरंजीवी होती है।" ४

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

सम्पूर्ण व्यवस्था की वास्तविकता के दर्शन इस कविता के माध्यम से होते है। सत्ता की इयत्ता में आम आदमी केवल एक मोहरा बनकर रह गया है। एक मुख्यमंत्री चुनाव नजदीक आने पर किस प्रकार वोट प्राप्ति के उद्देश्य से नोटों और योजनाओं की बरसात करते है इसका सजीव चित्रण राजू शर्मा के 'हलफनामे' उपन्यास में मिलता है। उपन्यास में मुख्यमंत्री से लेकर उसके अंतर्गत काम करने वाले अन्य कर्मचारियों के भ्रष्ट व्यवहार कों दर्शाया है। सरकारी कार्यालय, कोर्ट, कचहरी सब जगह पर आम आदमी का शोषण हो रहा है। जो मंत्री चुनाव जीतने के पश्चात पाँच वर्ष तक जनता की खबर नहीं लेता, वही नेता चुनाव नजदीक आते ही उनका हमदर्द बनकर उनकी दहलीज तक पहुँचता है। उपन्यास में मुख्यमंत्री 'किसान आत्महत्या योजना' की घोषणा करते हैं- "प्रदेश के किसान को, हर सम्भावित दुर्दशा से बचाना, उसकी रक्षा करना हमरा अनिवार्य लक्ष्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए मुख्यमंत्री ने किसान विपदा (आत्महत्या व अन्य कष्ट) निवारण योजना का शुभारम्भ किया है।" ५ योजना के अनुसार मृतक किसान के परिवार कों सरकार दो लाख रुपये की राशी मुआवजे के रूप में प्रदान करने वाली थी। आज की राजनीति में आम आदमी का स्थान सिर्फ वोट प्राप्ति के लिए सीमित बनता जा रहा है इसका चित्रांकन उपन्यास में सूक्ष्म रूप से हुआ है। उपन्यास के माध्यम से नेताओं की पोल खोलते हुए समाज को सजगता का इशारा भी किया है।

किसान को देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है, लेकिन आज तक सदियाँ गुजर गई लेकिन फिर भी देश का किसान खुशहाल जीवन जीने को तरसता है। उसके मेहनत को पूँजीपतियों की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ लूट रही हैं। 'अकाल में उत्सव' में पंकज सुबीर इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, "कितना बड़ा मजाक है कि गरीब किसान की मक्का का तो समर्थन मूल्य ते है मगर उस मक्का से बने कॉर्न-प्लेक्स बनाने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनी के लिए कोई न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं है। डेढ़ रुपये किलो की मक्का कों बहुराष्ट्रीय कंपनी कॉर्न-प्लेक्स बनाकर तीन सौ रुपये में बेचती है।" ६ यही कारण है कि जिसके श्रम की उपज पर पूंजीपति अधिक से अधिक अमीर हो रहे है, वही किसान आत्महत्या के लिए मजबूर है। सरकार द्वारा आम आदमी और किसान सदैव उपेक्षित ही रहा है। देश के विकास का केंद्र आज पूँजीपतियों की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ ही है। इस संदर्भ में सूर्यनाथ सिंह 'चलती चाकी' उपन्यास में गाँव के मुखिया मंगतराम के माध्यम से कहते हैं, "सरकार से किसी अच्छे काम के लिए मदद हासिल करना बहुत मुश्किल है महाराज। अंट-संट कामों के लिए करोड़ों रुपये बहा दिए जाते हैं, लेकिन किसी ठोस काम के लिए अठन्नी निकलवाना मुश्किल हो जाता है।" ७

देश का इतिहास इतना गौरवशाली होने के बावजूद भी आज की युवा पीढ़ी पश्चिम के अंधानुकरण में लिन है। फलत: वर्तमान दु:खदायी होने लगा है। समकालीन उपन्यासों में अज्ञान, गरीबी, जातिभेद, अंधविश्वास और इससे उपजे क्लेश का चित्रण किया गया है। 'बहुत लंबी राह' का महतो गाँव के मुखिया मिसिर की गुलामी सहन करता आया लेकिन उसका बेटा विभूति इस गुलामी के विरुद्ध विद्रोह करता हैं जिससे महतो की भी आँखें खुल जाती है और उसे अपने गलती का अहसास होता है। "अब समझ में आ

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

रहा है-असल दोस हमारा ही है। हम ही इतने दिनों तक सहते गए-कभी कुछ नहीं किया। उसी का फल है कि आज हमारा बेटा भोग रहा है। अगर हम ही पहले से चेत गए होते, तो आज यह दिन नहीं आता-ऐसी दुरगत नहीं होती।" ८ गरीबी ने भारतीयों को झकझोर दिया है। गरीबी ने ही अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जड से हिला दिया है। देश की दयनीय स्थिति का चित्रण कर उपन्यासकार जनमानस की गरीबों के प्रति सहानुभूति जागृत कर, इस दशा के लिए जिम्मेदार तत्त्वों के विरुद्ध द्वेष और घृणा जगाना उनका लक्ष्य है। युवको में क्रांति और बलिदान की भावना को अंकुरित करना चाहते है। "देखना, देखना तुम! एक दिन उलटन होगी-बहुत भरी उलटन! सब कुछ एकदम से बदल जाएगा-उलट-पुलट हो जाएगा। बस मन-माथा थिर कर-धीरज रख। अभी हम सबको, बहुत लंबी राह चलनी है। बिना थके, बिना रुके-बहुत लंबी!..."९ देशवासियों को संकेत करते हुए लेखक बताना चाहते है कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम की तरह ही क्रांति और मुक्ति की राह बहुत लंबी होती है। समाज में परिवर्तन लाने के लिए हिम्मत और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। इसमें कुछ लोगों के बलिदान की भी संभावना है लेकिन फिर भी हमें संयत होकर इस राह पर चलना होगा। इस महान कार्य में देश का इतिहास हमें प्रेरणा देकर और हौसला बढ़ाता रहेगा। आज प्रत्येक क्षेत्र में अन्याय-अत्याचार और भ्रष्टाचार व्याप्त है फिर भी प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन संभव है यही संदेश उपन्यासकार पाठकों और समाज के सामने रखते हैं।

वैश्वीकरण के कारण देश की कृषि संस्कृति पर मँडराते खतरे की वास्तविकता के दर्शन 'ताकि बची रहे हरियाली' उपन्यास में होते हैं। उसके विरुद्ध छटपटाते गरीब किसानों का संघर्ष दिन-प्रतिदिन विकराल स्वरूप धारण कर रहा है। प्राचीन भारतीय कृषि, बीज, खाद और खेती पद्धतियाँ वैश्वीकरण की चपेट में आकर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं। उपन्यास का ईमानदार और संघर्षशील पात्र नवीन देश की कृषि संस्कृति को बचाने के लिए प्रयत्नशील दिखाई देता है। अनंत कुमार सिंह कहते हैं, "लड़ाई अभी जारी है और उसके रुकने की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है।" १० 'ताकि बची रहे हरियाली' में अनंत कुमार सिंह उपन्यास के पात्र नवीन के माध्यम से युवाओं को समाज सुधारणा के लिए श्रम, आत्मविश्वास, अनवरतता और लगन से आगे आने का आह्वान करते है। यह क्रांति का चक्र निरंतर घूमता रहने से ही समाज में सुव्यवस्था आबधित रहेगी, यह सूचना उपन्यासकार देते हैं।

आज गाँवों में बिजली के प्रकाश तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और सुविधाएं उपलब्ध हैं। टी. वी., रेडियो, फोन, मोबाईल जैसे उपकरणों से लोग भलीभाँति परिचित हैं। संचार माध्यमों की लोकप्रियता की अंधी दौड़ में उत्तेजक नृत्य, अश्लील गीतों और मार-काट के दृश्यों पर ही सोशल मीडिया की सफलता निर्भर है। यौन और हिंसा के संस्कार मीडिया के द्वारा ही आयातित हुए है। अधिकतर चैनलों पर अर्धनग्न बालाओं के कामुक दृश्य देखने-सुनने को मिलते है जो हमारी युवा पीढ़ी की पहली पसंद हैं। इन सभी से भारतीय संस्कृति के दिन-प्रतिदिन हो रहे अवमूल्यन से समकालीन उपन्यासकार चिंतित हैं। 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' उपन्यास में मनमोहन सहगल इस संदर्भ में कहते हैं, "अकेले दृश्य मीडिया को इसका जिम्मावार क्यों ठहराया जाए? माता-पिता, घर का वातावरण, विद्यालय, अध्यापको का व्यवहार और बदलता हुआ

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

सामाजिक व्यवहार इस अपसंस्कृति के उत्तरदायी हैं।" ११ देश के नगर इससे पहले से ही प्रभावित और पतनोन्मुख हो चुके हैं, अब गाँव भी इस अंधानुकरण के शिकार बन गए हैं। आधुनिकता के इस दौर में पश्चिम संस्कृति तथा सभ्यता के साथ बढ़ती पारस्परिकता और उसके सही मूल्यांकन के बिना अंधानुकरण ही देश की वैभवशाली संस्कृति के पतन का प्रमुख कारण हैं। अपने आप को आधुनिक समजने वाला समाज दहेज और ऊँच-नीच जैसी खोखली प्रथाओं से मुक्त नहीं हुआ है। उपन्यास के गगन की बारात दूल्हे के लोभी माता-पिता के कारण वापस जाती है। गाँव की इज्जत बचाने के लिए उत्तर प्रदेश का प्रवासी मजदूर ठाकुर गगन के विवाह का प्रस्ताव स्वीकारता हैं लेकिन परिवार वाले इस अन्तर-जाति विवाह को बड़ी मुश्किल से तैयार हो जाते हैं। प्रवासी मजदूरों को पंजाब के लोग अपनाने को तैयार नहीं होते है लेकिन उपन्यास के अंत में गगन और प्रवासी मजदूर ठाकुर के विवाह की घटना के माध्यम से मनमोहन सहगल समझाते हैं, "कौन कहता है कि तुम इस धरती का अंग नहीं? देश-वासी विभिन्न जातियों, वर्गों और श्रेणियों में बटे होने पर भी भारतीय ही हैं। सबका मजहब भारतीयता है।" १२ यहाँ मनमोहन सहगल जी ने देश की प्रथाओं की दशा की अभिव्यक्ति के साथ ही पंजाब राज्य में विभिन्न प्रांतों से आए प्रवासी मजदूरों और उस राज्य लोगों की संस्कृति के मिलाप से देश के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना की है। इस उपन्यास में गांधीजी की मानवतावादी दृष्टि और संत ज्ञानेश्वर की विश्व बंधुत्व की भावना व्यक्त की है। उपन्यासकार जाति-भेद को भूलकर आदर्श भारतीय समाज की कामना करते परिलक्षित होते हैं।

निष्कर्ष : इस प्रकार इक्कीसवीं सदी के उपन्यास राष्ट्रीय चेतना को वाणी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए नजर आते है। 'हलफनामें' और 'बहुत लंबी राह' उपन्यासों में एक ओर देश के अतीत का गौरव गान करते हुए देश की दशा और मंत्रियों के बढ़ते भ्रष्टाचार के प्रति क्षोभ का भाव अभिव्यक्त किया है। 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' और 'ताकि बची रहे हरियाली' में शोषण, अन्याय, अत्याचार, बुरी प्रथाओं का विरोध करते हुए उपन्यास पात्रों के माध्यम से समाज में क्रांति लाने के स्वर भी परिलक्षित होते हैं। 'फाँस' और 'अकाल में उत्सव' देश में स्थित समस्याओं में अपेक्षित सुधार लाने की प्रेरणा देते है। साथ ही समाज के सभी वर्गों को एकसूत्रता में बाँधने की मंगल भावना व्यक्त करते हुए देश के विकास की कामना की हैं। 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' में लेखक देश के गौरवपूर्ण इतिहास और सभ्यता से परिचित कराते हुए देश की संस्कृति के अवमूल्यन के विरुद्ध चिंता व्यक्त करते हुए परिवर्तन पर चिंतन करने को प्रेरित करते हैं।

अत: कहा जा सकता हैं कि जिस प्रकार राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में लाखों लोगों ने अपने संघर्ष और बलिदान से क्रांति लाई है, उसी प्रकार की कोशिश इक्कीसवीं सदी हिन्दी उपन्यासकार अपनी कलम की जादू से करते हुए नजर आ रहे हैं।

संदर्भ संकेत:

१. तेजपाल चौधरी, भूमिपुत्र, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. २०१२, पृ. १०३

२. वही, पृ. १०३
३. संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. २०१५, पृ.२८
४. डॉ. हनुमंतराव पाटील, गणतंत्र का अंतरंग, कविता-गिरगिट, समता प्रकाशन द्वि. संस्करण, पृ. ५६
५. राजू शर्मा, हलफनामे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. २००७, पृ. २२
६. सुबीर पंकज, अकाल में उत्सव, शिवना प्रकाशन,सीहोर(म.प्र.), दसवाँ सं.२०२०, पृ. ४८
७. सूर्यनाथ सिंह, चलती चाकी, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, प्र. सं. २०११, पृ. ८०
८. कर्मेन्दु शिशिर, बहुत लंबी राह, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली, सं. २०१५ पृ. २२२
९. वही, पृ. २२३
१०. ताकि बची रहे हरियाली, अनंत कुमार सिंह, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली, सं. २०१५, पृ. २००
११. सहगल मनमोहन, मिले सुर मेरा तुम्हारा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र. सं. २००९, पृ. ८०
१२. वही, पृ. २१०

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

९. देश के लिए' नाटक में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ

प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष

शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली. जिला हिंगोली महाराष्ट्र

शोध सार: राष्ट्रीयता का स्वप्न शब्दों के बंधन में बांधना कुछ कठिन तथा असंभावित है। राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसका संबंध मानव की अन्तश्चेतना से है। जो अनिर्वचनीय होने के कारण केवल अनुभूति का विषय है। यह मनुष्य की स्वभाविक वृत्तियों में से एक है जिसके कारण वह अपने राष्ट्र से विशेष प्रकार का लगाव रखता है और उसे सदा उन्नत तथा समृद्धशाली देखने को उत्सुक रहता है। इसी भावना के आवेग से उन्मत्त व्यक्ति अपने राष्ट्र के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में तथा सहर्ष अपना जीवन अर्पण कर देने में अपना गौरव समझता है। जिस राष्ट्र में राष्ट्रीयता की यह चेतना जितनी अधिक बलवनी होगी उतना ही वह शक्तिशाली तथा समृद्ध माना जाएगा।

बीज शब्द: राष्ट्र, राज्य, देश, प्रजा, रीति-रिवाजों, भाषा, साहित्य तथा भौगोलिक एकता।

'राष्ट्र' की मूल परिकल्पना मनुष्य की उदात्त भावना से प्रेरित है। सह-अस्तित्व एवं परस्पर सहयोग की भावना से राष्ट्र की अवधारणा साकार हुई है। समय-समय पर उसके अर्थोघाटन में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा जो विचार प्रस्तुत किये गये हैं, वे सब उसके विभिन्न पहलूओं पर प्रकाश डालते हैं। भारतीय शब्द-कोष में 'राष्ट्र' का अर्थ है राज्य, देश, प्रजा (किसी देश के निवासी लोगों का समुदाय)। वर्तमान सन्दर्भ में 'राष्ट्र' को सामान्यतः अंग्रेजी शब्द 'नेशन' (Nation) का पर्याय माना जाता है। यह लेटिन शब्द 'नेशो' (Natio) से बना है और इसका अर्थ है जन्म या वंश। इस सन्दर्भ में जे. डबल्यू बोर्गीज द्वारा प्रस्तुत व्याख्या भी उल्लेखनीय है एक जैसी भावनाओं, रीति-रिवाजों, भाषा, साहित्य तथा भौगोलिक एकता से युक्त जनसमूह, एक सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। स्टुअर्ट मिल ने भौगोलिक एकता के अतिरिक्त पूर्वकालिक इतिहास पुरूषों के विचारों की एकता, जाति तथा धर्मगत एकता, समष्टिगत भाषायी चेतना, राजनीतिक लक्ष्यों की एकता आदि को भी राष्ट्रीयता के निर्माण में सहयोगी तत्व माना है। ब्राईस के मतानुसार "राष्ट्रीयता वह जनसंख्या है जो भाषा एंव साहित्य, विचार प्रथाओं एवं परम्पराओं जैसे बन्धनों से परस्पर इस प्रकार बँधी हुई है कि वह अपनी ठोस एकता अनुभव करे तथा उन्हीं आधारों पर बँधी हुई जनसंख्या से अपने आपको भिन्न न समझे। गिल क्राइस्ट के अभिमत में राष्ट्रीयता व राज्य मिलकर राष्ट्र बनाते हैं।

राष्ट्र के सम्बन्ध में भारतीय चिन्तको एंव विद्वानों के मत भी विचारणीय हैं। 'राष्ट्र' को परिभाषित करते हुए डॉ0 सुधीन्द्र ने भूमि, भूमिवासी, जन और जन की सांस्कृतिक समुच्चय को 'राष्ट्र' कहा है। डॉ0 विद्यानाथ गुप्त ने 'राष्ट्र' के कतिपय अन्य पक्षों को उद्घाटित करते हुए लिखा है कि किसी निश्चित

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भौगोलिक इकाई पर बसा हुआ जनसमुदाय, जिसकी अपनी ही सभ्यता संस्कृति हो, अपनी ही भाषा तथा धर्म हो एंव अपनी ही विधि-निषेध की परम्परा हो 'राष्ट्र' है।' उपर्युक्त विचारों के आधार पर यह स्पष्ट है कि 'राष्ट्र' के निर्माण के लिए अधिकांश विद्वानों ने प्रमुख रूप से निम्नलिखित पाँच तत्वों की आवश्यकता पर बल दिया है- निश्चित स्थान या देश, एक जाति, उनकी भाषा, संस्कृति और धर्म। धीरे-धीरे इन पाँच तत्त्वों के स्वरूप में लचीलापन आया, जिसके परिणाम स्वरूप अब एक निश्चित भू-भाग पर बसने वाला जनसमुदाय, जो एक या एक से अधिक जातियों का जनसमुदाय हो सकता है, उनकी एक या अनेक भाषाएँ हो, वे एक या अनेक धर्म को मानने वाले हो तथा उनकी संस्कृतियाँ एक से अधिक हों और जिसमें अपनत्व अथवा एकानुभूति की भावना हो 'राष्ट्र' की संज्ञा से अभिहित है।"

भारत में राष्ट्रीय भावना के विकास के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग-अलग मत प्रवाहमान है। कतिपय विद्वान इसे अत्यन्त प्राचीन मानते हैं तो अधिकांश विद्वानों ने अंग्रेजों के शासनकाल में स्वाधीनता प्राप्ति की आकांक्षा के साथ ही राष्ट्रीय चेतना के प्रवाह का गतिमान होना माना है। यह निर्विवाद रूप से सर्वमान्य है कि स्वाधीनता के लिए किये गये आन्दोलन ने राष्ट्रीय भावना को जन-मन में जागृत किया। राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा में निष्ठावान देश भक्तों ने धार्मिक और जातीय संकीर्णता को कुचलकर जन-सामान्य में राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का पूरा प्रयास किया। गाँधीजी के नेतृत्व में बीसवीं शताब्दी में देश के निष्ठावान और जागरूक राजनीतिज्ञों एंव समाज सुधारको के महत्वपूर्ण योगदान के साथ-साथ साहित्य-सर्जको ने पूरी निष्ठा से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। राष्ट्रीय भावना के प्रसार-प्रचार में देश की दयनीय दशा, अशिक्षा, बेकारी, अनैतिकता, धार्मिक वैमनस्यता आदि का प्रभावशाली निरूपण अपनी ओजस्वी वाणी में करके जन-जागृति में साहित्यकारों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। काश्मीर से कन्याकुमारी और राजस्थान से बंगाल तक समग्र देश को स्वतन्त्रता आन्दोलन द्वारा एक सूत्र में बाँधने का कार्य उस युग के हिन्दी साहित्य ने किया है।

राष्ट्रीय भावना का जो विस्तार स्वाधीनता आन्दोलन द्वारा प्रारम्भहुआ, वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की अखण्डता और गौरव की सुरक्षा, राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान, साम्प्रदायिकता का विरोध, देश की समृद्धि के लिए यत्न, सामाजिक आर्थिक शोषण के प्रति आक्रोश आदि की अभिव्यक्ति द्वारा आज भी व्याप्त है। देश के गौरव के लिए जन-मन में त्याग, बलिदान और साहस की अदम्य आकांक्षा भरने का कार्य आधुनिक साहित्य ने किया था। साठोत्तरी हिन्दी साहित्य के निर्माण, उसमें अनुभूत अवरोध एवं उसके बदलते हुए स्वरूप की अभिव्यक्ति करता है।

उपर्युक्त विवेचन के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीयता के स्वरूप निर्माण में अधिकांश विद्वानों ने भौगोलिक एकता, जनसमुदाय की जातिगत एकता, धर्म एवं भाषागत एकता, राजनीतिक लक्ष्य की समानता एंव सांस्कृतिक साम्यता आदि तत्वों पर अधिक बल दिया है। धीरे-धीरे इन तत्वों की एकता पर अधिक बल न देते हुए तत्सम्बन्धी उदात्तता को विद्वानों ने अब मान्य किया है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

'देश के लिए' (१९९०) सुदर्शन मजीठिया का नाटक है । इस नाटक में देश की शासन व्यवस्था, राजनीति और व्यवस्था के शोषण तंत्र पर कई गहरे सवाल खड़े करता है। इस नाटक की भूमिका में नाटककार ने यह स्पष्ट किया है कि शोषण एक सीमा के बाद तंत्र से व्यवस्था का रूप ले लेता है और तब ईसा सलीब पर चढ़ा दिया जाता है, सुकरात को जहर पिलाया जाता है और गाँधी को गोली मार दी जाती है। हर युग में सत्य की भाषा बोलने वाले सत्याग्रही का यही अंत हुआ है। नाटक का नायक एक अगली कड़ी है। वह मारा तो नहीं जाता है, लेकिन उसे इस हद तक मजबूर कर दिया जाता है कि खुद को मार दे, अपने घर को जला दे। प्रजातंत्र एक जीवन मूल्य है, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मूल्य। प्रजातंत्र के नाम पर आज जो कुछ हो रहा है नाटककार अपने दर्शक को यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि क्या यही हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनमूल्य है। "लोकशाही का मूल है उदारता और समरक्षता, संस्कृति आचरण में ढ़ालकर सभ्यता बन जाती है। अतः लोकतंत्र उदार संस्कृति की समरस सभ्यता का शिखर है। शिखरत्त्व के इस मूल्यगत आचरण को नाटककार 'देश के लिए' शिवसंकल्प बनाना चाहता है। लेकिन, अन्याय शोषण एक सीमा के बाद तंत्र का ही हिस्सा बन जाता है।"1 सत्ता राजनीति के पाखंड और आतंकपूर्ण आचरण की पूरी पड़ताल इस नाटक में है। "शोषण की घटना हो या घटनाएँ, शोषण के तत्व सब में एक से होते हैं। मात्रा के अंतर से तात्विक रूप से कोई फर्क नहीं पड़ता। शोषण ही हर बूंद में एक ही तत्व निहित होता है, जिसका विरोध हर कीमत पर करना होगा। आत्मदाह और गृहदाह के द्वारा अपना विरोध प्रकट करना कुछ नया तरीका है। स्वतंत्रता के बाद में ऐसे अनेक आत्मदाह देखे हैं।"२ मूल्यों का अपहरण जब-जब होगा, विरोध होगा। पूरे नाटक में इसी संवेदना को व्यक्त किया गया है। ये फार

नाटक की कथावस्तु इस प्रकार है- जिस गाँव में आत्माराम रहता है उस गाँव के सरपंच की नजर चौराहे पर स्थित आत्माराम के घर पर टिकी है। जब और तरीके से उस घर को हथियाना संभव नहीं हुआ तो राजनीतिक हथकंडा अपनाया गया। सन् 1642 के सत्याग्रह में गाँधीजी एक रात आत्माराम के घर रह चुके थे। महात्मा गाँधी जिस गद्दी पर बैठे थे जिस गिलास से उन्होंने पानी पिया था। जिस रुमाल से छींके आने पर उन्होंने अपनी नाक पोंछी उनके टूटे हुए पुराने चश्मे की डंडी आत्माराम ने संभालकर रखी थी, महात्मा गाँधी के इसी बात का हथकडा बनाकर सरपंच एम. एल. ए. साहब से बात कर मुख्यमंत्री के द्वारा यह घोषित करवा देते हैं कि आत्माराम जी का घर राष्ट्रीय स्मारक है और सरकार इसे अधिग्रहण करने जा रही है। बदले में आत्माराम जी को उचित मुआवजा दिया जायेगा। आत्माराम जी इस बयान से बिकर उठते हैं- घर छोडना उन्हें हरगिज मंजूर नहीं। सरपंच जी मनाते हैं। नेता जी मनाते हैं: पुलिस धमकाती है: पर आत्माराम अपना घर छोडने को राजी नहीं होते। सरपंच जी और बंबई का एक दलाल आत्माराम को मुँह माँगी कीमत देने को राजी होते हैं. ताकि उस मकान का स्वामित्व खरीदकर वे सरकार से 'अपनी' मुंहमांगी रकम हासिल कर सके। आत्माराम को अपने घर का यह रोजगार नहीं सुहाता उसमें वह गाँधीवादी सत्यनिष्ठा जिसकी सीख कभी गाँधी जी ने दी थी। पर गाँधी जी के नाम पर होने वाला यह व्यापार उसके गले नहीं उतरता। वह अखबार के रिपोर्टर को अपनी बात बताता है और रिपोर्टर सच्चाई अपने अखबार में छापने का आश्वासन

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

देता है। पर रातोंरात अखबार मालिक पर सरकारी दबाव पड़ता है और रिपोर्ट कूड़ेदान में झोक दिया जाता है। वह मुख्यमंत्री के पास अपनी फरियाद लेकर जाता है पर मुख्यमंत्री अपने विधायक, सरकार और पार्टी की भाषा में आत्माराम की बात अनसुनी कर देते हैं। वह विपक्ष के नेता से मिलता है पर नारे, जुलूस, प्रदर्शन, जाम, पोस्टर और हड़ताल कराने की सिफारिश आत्माराम नहीं दे पाता। इसलिए विपक्ष भी उससे मुँह फेर लेता है। थका हारा आत्माराम आवारागर्दी के आरोप में रात को हवालात में बंद कर दिया जाता है। लौटकर जब वह घर आता है तो न्याय पाने की उसकी सारी आशा चूर हो चुकी होती है। पड़ोसी करीम भाई न्याय के नारे लगाने के लिए तैयार होते हैं ताकि सरकार और व्यवस्था का आदमखोर तंत्र आत्माराम के मकान को निर्विरोध न निगल सके। आत्माराम का विरोध उसके घर में ही होता है। आजीवन तंगी और बदहाली में साथ बंटाने वाली उसकी पत्नी शीला अंत में आत्माराम के सिद्धांतों का साथ छोड़ देती है। उसके जीवन में एक अवसर आया है कि वह इस खंडहर की मुहमांगी कीमत वसूल कर शेष जीवन सुख और शांति से बिता सकती है। अतः घर नहीं बेचने की आत्माराम की जिद उसे अपने पति की मूर्खता प्रतीत होती है। शीला अड़ जाती है कि घर बिकेगा, कम से कम उसका आधा हिस्सा, जिस पर उसका कानूनी हक है, आधे हिस्से का आत्माराम चाहे जो करें। सारी दुनिया की अवसरवादिता और स्वार्थपूर्ण रवैयों से आत्माराम जूझता हुआ उतना नहीं टूटता था। जितना उसे शीला तोड़ती है। अब तक उसे यह आभास था कि परे विश्व में कम-से-कम पति-पत्नी का रिश्ता ऐसा है जहाँ सिद्धांत की जगह स्वार्थ नहीं ले सकता। यह आखिरी झटका आत्माराम नहीं झेल पाता है और आत्मनिर्णय के किसी भयानक क्षण में वह आत्मघाती निर्णय ले बैठता है। पत्नी को झूठा आश्वासन देकर वह उसे मंदिर पूजा करने भेजता है और बाहर राष्ट्रीय स्मारक के रूप में अपना घर दान देने की आत्माराम की घोषणा सुनने आये लोगों को भीतर बुलाता है जिनमें सरपंच, एम. एल. ए. साहब दरोगा प्रमुख हैं। फिर उनसे दो मिनट की फुरसत लेकर आत्माराम घर के भीतर चला जाता है। जलने के लायक घर की चीजों को जमा कर उन पर मिट्टी का तेल छिड़क आत्माराम घर में आग लगा देता है। धुंआ, लपट और गंध के बीच आत्माराम झूलसा हुआ बाहर आता है और अट्टाहास करते हुए घोषणा करता है "उसे न पैसे चाहिए न सम्मान। मेरा घर मेरा रहेगा मेरी मर्जी के खिलाफ कोई मेरा घर नहीं ले सकता। मैं लडूंगा... आखिरी साँस तक लडूंगा।" ३ मंदिर से लौटी हुई शिला भस्म होते हुए अपने घर को देखती है, आत्माराम की घोषणा सुनती है और मैं आपको अकेले नहीं जलने दूँगी कहते हुए आत्माराम की ओर झपटती हुई धुएँ में विलीन हो जाती है

'देश के लिए' नाटक शिल्प की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। नाटक में आए पात्र कथा के अनुरूप हैं। कहीं भी अनावश्यक पात्रों का स्थान नहीं है। नाटक में अनेक दृश्य होने के बावजूद एक ही दृश्य पर इस नाटक का सफलतापूर्वक मंचन किया गया है। नाटक के संवाद सीधे सरल हैं। लंबे और कठिन संवाद नहीं हैं। समकालीन परिवेश की जीती जागती तस्वीर ही इस नाटक की परिक्रमा है। नाटककार आज के यथार्थ की नाट्याभिव्यक्ति में पूर्णतः सफल है।"४

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजनीतिक व्यंग्य नाटकों की बहुत बड़ी संख्या दिखाई देती है। फिर भी जो दृष्टिगत हुए उन्हीं नाटकों को मैंने चयन किया। समकालीन हिंदी नाटक को कथ्य, शिल्प और मंचीय स्तर पर नूतन आयामों से समृद्ध करने की इस प्रयोग यात्रा में कई नाटककारों का योगदान है। समकालीन नाटककारों में आज ऐसे नाटक लिख रहे हैं जिनमें आज का समग्र जीवन धड़कता हुआ महसूस किया जा सकता है। समकालीन नाटककारों ने शिल्प के नये प्रयोग प्रस्तुत किये हैं। रंगमंच की सारी अपेक्षाओं, संभावनाओं एवं दर्शकों की रुचियों से जुड़कर आधुनिक हिंदी नाटक सही अर्थों में दृश्य विधा होने की योग्यता अर्जित कर सका है। ऐब्सर्ड शैली के नाटक तथा लोक नाट्य प्रयोगों ने रंगमंच की अपनी सीमाओं की विवशता से मुक्त करके तनाव को दूर किया है। शैली के अनेक प्रयोगों में नाटक को पर्याप्त संपन्नता प्रदान की है। समकालीन नाटक शैली की दृष्टि से प्रयोगधर्मी रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

१) डॉ.गौतम वीणा, हिन्दी नाटक आज तक,शब्द सेतु दिल्ली प्र.सं.-२००२ पृ.-४००
२) मजीठिया सुदर्शन, स्वातत्र्योत्तर व्यंग्य नाटक,नीरज बुक सेंटर,दिल्ली प्र.सं.-१९९९ पृ.-१४५-१४६
३) मजीठिया सुदर्शन, देश के लिए,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली-१९९० पृ.-९०
४) डॉ.गौतम वीणा, हिन्दी नाटक आज तक, शब्द सेतु दिल्ली प्र.सं.-२००२ पृ.-४०१

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

१०. राष्ट्रीय हिन्दी काव्यधारा और मैथिलीशरण गुप्त

डॉ. अनिलकुमार रामधन राठोड
सहयोगी प्राध्यापक,
शहिद भगतसिंह महाविद्यालय, किल्लारी जिला लातूर

बीज शब्द : व्यष्टि चेतना, समष्टि, प्रत्याक्रमण, सांस्कृतिक गरिमा, साम्राज्य, नवोन्मेष, अन्तर्निहित

शोध की भूमिका : राष्ट्रीयता एक उच्च, विराट् और व्यापक भाव-धारा है। जो व्यक्ति के अन्तर में पलकर सम्पूर्ण राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति का पथ प्रशस्त करती है। राष्ट्रीय भावना हमें परम्परा की जर्जर रूढ़ियों के निष्ठुर वात्याचक्र के विरुद्ध सिर उठाने को बाध्य करती है, युग की दूषित दुर्भावनाओं की होली जलाकर भविष्य के स्वर्णिम विहान का सन्देश वितरित करती है, जन-जीवन को समस्याओं के पूर्णिचक्र से मुक्ति दिलाकर उसे शान्ति का स्निग्ध पीयूष प्रदान करती है। एकता और समानता, निर्भीकता और स्वतन्त्रता के साथ पारस्परिक प्रेम, संगठन, सेवा और सहयोग की भावना तथा प्रेम और सद्भावना के पुष्प इसके पोषक तत्त्व हैं। चाहे अतीत का प्रेरक प्रकाश स्तम्भ हो, चाहे वर्तमान की समृद्धि के प्रति सहज मोह, चाहे युग जीवन की छटपटाती कराहती मानवता का दर्द व्यक्ति के अन्तर में संवेदना की आर्द्रता भर दे अथवा भविष्य की नूतन सम्भावनाओं के प्रति लालसा के अंकुर ही क्यों न फूट रहे हों सबों में राष्ट्र-निर्माण, राष्ट्र उन्नति के बीज ही अन्तर्निहित हैं।

व्यष्टि चेतना का सीमित स्वार्थ समष्टि-व्यापक परिधि में फैलकर लोकहित को संज्ञा प्राप्त करता है और समष्टि का विराट् व्योम जब वैशिष्ट्य को स्वीकार कर एक निश्चित भू-भाग के जन-जीवन पर छा जाता है तब राष्ट्र का स्वरूप निर्धारित होता है। इसी राष्ट्र के स्वरूप का सही और संतुलित ज्ञान राष्ट्रीयता की भावना का जनक है। रस्किन के शब्दों में---" जिस राष्ट्र ने अपने स्वरूप को पहचान लिया, वही सच्चे साम्राज्य को पाने का अधिकारी है।" इनके अनुसार "प्रेम और भ्रातृत्व को अपनाकर एक विशाल कुटुम्ब की तरह अपनी वृद्धि करने में ही राष्ट्र की सड्डी शक्ति वर्तमान है।" अतः 'अयं निजः परो वेति' की गणना से परे, स्नेह और सौहार्द्र के कोड़ में ही सच्ची राष्ट्रीयता का शिशु अपने विकास का सम्बल बटोर सकता है। सम्भवतः इसी आदर्श की आधारभित्ति को स्वीकार करते हुए बाबू गुलाब राय "एक सम्मिलित राजनीतिक ध्येय में बंधे हुए किसी विशिष्ट भौगोलिक इकाई के जन-समुदाय के पारस्परिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित उस भू-भाग के लिए प्रेम और गर्व की भावना को राष्ट्रीयता कहते हैं। भारत को राष्ट्रीयता परम्परा से मनीषियों के चिन्तन का परिणाम है। अतः समन्वय की धरती पर जन-कल्याण के किसलय को पुष्पित-फलित करने का प्रयास ही भारतीय प्रयास रहा। यही कारण है कि भारतीय राष्ट्रीयता आक्रमण या विस्तारवाद की नीति का समर्थन नहीं करती- 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' के आदर्श को अपने दृष्टि-पथ में रखते हुए अपनी समृद्धि का विस्तार करना चाहती है। बाबू गुलाब राय के

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

शब्दों में- 'हमारी राष्ट्रीयता यूरोप की भांति आक्रमणकारी नहीं है। वह अहिंसात्मक है। हमको अपनी 'भुवन मनमोहिनी' भारत-भूमि पर गर्व है- 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' किन्तु हम दूसरों को भी घृणास्पद नहीं समझते। हमारी राष्ट्रीयता रंग-भेद, जाति-भेद, धर्म और सम्प्रदाय-भेद पर आश्रित नहीं है। वह सत्य, अहिंसा एवं समता और स्वतन्त्रता की एकत्रयता पर आश्रित है। हमारी राष्ट्रीयता अनेकता में एकता लाने के लिए है- दूसरों को अपने से पृथक करने के लिए नहीं। हमारी राष्ट्रीयता ने 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु' का पाठ पढ़ाया है और वह विश्व-मंत्री पर आधारित है।'

राष्ट्रीयता समष्टि के स्वरों का उद्घोष है-प्रबुद्ध जनता के हर्ष-शोक आदि का मांगलिक एकात्म भाव-निनाद है। इसके मूल में रहता है राष्ट्र के विकास का एकनिष्ठ भाव-यह भाव चाहे विदेशियों के प्रत्याक्रमण के रूप में व्यक्त हो, या देश के नृशंस अधिपति के विरोध में वीरगाथाकाल में वीर रस से परिपूर्ण छप्पयों और छन्दों में वीरता की ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ती है। 'राष्ट्रनायकों' की चारित्रिक महता का गान मिलता है, विदेशी आक्रमण से देश की रक्षा के निमित्त सैनिकों के चित्र भी उपलब्ध होते हैं। पर यह सब होते हुए भी इस युग में राष्ट्रीयता की व्यापक चेतना के दर्शन दुर्लभही है।

भक्तिकाल का मूल स्वर लोक-मंगल का स्वर है, पर कबीर के व्यंग्यों में समाज की जो कट्टर आलोचना प्राप्त होती है, युग की धर्मान्धता के प्रति जो निर्दय भर्त्सना का स्वर दिखलाई पड़ता है उसे राष्ट्रीय चेतना का एक भाव-स्पन्दत कहा जा सकता है। भक्तिकाल के कवियों की काव्य-साधना में जिस विराट सांस्कृतिक निष्ठा ओर चेतना के दर्शन होते हैं वह शत-प्रतिशत भारतीय है, राष्ट्रीय है किन्तु इस युग में भी राष्ट्रीय भाव-धारा का विपुल विस्तार उपलब्ध नहीं राष्ट्रीय जागरण एवं व्यापक लोक भावना के प्रथम वैतालिक के रूप में हमें 'भारतेन्दु' उपलब्ध हुए राष्ट्र की दुर्दशा पर आंसू बहाने के लिए इन्होंने ही सर्वप्रथम युग को आह्वान किया-'आवद्ध सब मिलिक, रोबहु भारत भाई, हा। हा। भारत-दुर्दशा न देखी जाई।' समष्टि के इस उद्घोष के साथ-साथ भारतेन्दु ने साहित्य की अनेक विधाओं के द्वारा उस कुरूप अन्धकार को चीरने का प्रयास किया है। सबसे समर्थ विधा रही नाटक रचना। इनकी राष्ट्रीय चेतना में समाज का यथार्थवादी चित्रण है, देश की दुर्व्यवस्था का करुण चित्रण है और है एक सुलगता हुआ अन्तर्दाह जो प्रत्येक भारतीय के हृदय में धीरे-धीरे सुलग रहा था। जन-जागरण की विराट हलचल का नेतृत्व करते हुए भारतेन्दु ने राष्ट्रीय भावना के व्यापक यथार्थ को स्वर प्रदान किया। ऐसे तो इन्हें हिन्दी काव्याकाश का 'इन्दु' कहा गया है पर व्यावहारिक कौशल की दृष्टि से इनमें ग्रीष्म के तपते सूरज का प्रचण्ड पौरुष था, जागरण की तीव्र आलोक किरणें थीं। इनका युग लाख-लाख समस्याओं से कांपते हुए देश का युग था। एक ओर अंग्रेजों के अनाचार परिपूर्ण नृशंस पैर हमारी सभ्यता और संस्कृति के हरे-भरे पौधों को रौंद रहे थे और फिर दूसरी ओर हम अपने सांस्कृतिक अतीत के गौरव को भूलकर अकर्मण्यता, फूट, द्वेष, अशिक्षा आदि दुर्गुणों के अंधकार की जड़-निद्रा में बेहोश से हो गये थे। चारों ओर अशान्ति का वातावरण था पर युग पुरुष एवं सक्षम कलाकार समस्याओं से भीत नहीं होता अपितु बादलों को चीरता बिजली की तरह समाधानालोक का संकेत देता है। हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रथम उन्नायक भारतेन्दु एक ऐसे ही कलाकार थे। दरबारी संस्कृति और

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

रीति के बन्धन टूटे, अंग्रेजों के विरुद्ध राष्ट्र-प्रेम का जागरण संघर्ष के लिए प्रस्तुत होने लगा तथा सम्प्रदायवाद के घिनौने चेहरे पर व्यंग्य और आघात के गहरे धक्के लगे कुरीतियों को ध्वस्त किया गया. अन्धविश्वासों की होली जलायी गयी तथा शिक्षा और जागरण के त्योहार में दीपावलियां सजाई गई।

भारतेन्दु की राष्ट्रीय भावना में अतीत की सांस्कृतिक गौरवपूर्ण परम्परा के प्रति सहज आसक्ति का भाव तथा पुनर्मूल्यांकन एवं परिष्कृत ढंग से पुनः स्थापन की विवेक- संगत योजना मिलती है। यह राष्ट्र के सर्वतोमुख कल्याण का प्रेरक है, प्रतीक है और इसलिए इसमें व्यापकता है- युग-जीवन की व्यापकता और गहराई। फैलाव की यह गरिमा तब तक नहीं आ सकती जब तक कवि लोक-जीवन की धड़कनों में ध्वनित होने वाला कवि न हो और उसमें युग की समस्याओं को देखने, समझने और परखने की गहरी आस्था न हो, क्षमता न हो भारतेन्दु की राष्ट्रीय चेतना के पीछे सांस्कृतिक गौरव की उभरी स्पष्ट रेखाएं तो हैं ही, साथ ही उसमें यथार्थ का ठोस आग्रह है जिसे कल्पना और स्वप्न की रेशमी जाली में भर पाना सम्भव नहीं। निर्वेद के अन्तर्गत जिस भक्ति के माहात्म्य की चर्चा आज तक चली आयी उस भक्ति को देश-विषयक प्रेम के भावात्मक रंग में रंगकर भारतेन्दु ने धर्म और नीति का एक नया संस्कार सौंपा। समष्टि के प्रांगण में अपनी काव्य-वीणा के तारों को झंकृत करते हुए भारतेन्दु ने राष्ट्र की नयी रूपरेखा की योजना प्रस्तुत की, संस्कृत की असामयिकता और उर्दू-अंग्रेजी की साम्प्रदायिकता से अलग राष्ट्र-भाषा के नूतन स्वप्नों और संसार को सहेज ने का प्रयास किया।

इनकी राष्ट्रीय चेतना विवेकशून्य, अत्यधिक भाव-विहुल एवं अन्धी नहीं थी। इन्होंने उसे एक तर्कसंगत आधार दिया, एक सामाजिक सन्तुलन सौंपा ऐसा नहीं कि विरोध और विध्वंस के कोलाहल में डूबकर सूजन और संगत विवेक का स्वर ही नहीं सुन पाएं। इसी कारण कहीं-कहीं उनकी कविता की पंक्तियों में अंग्रेजी राज सुख-साज सजे सब भारी' की ध्वनि भी मिलती है पर इसके साथ ही पै धन विदेश चलि जात इहे अति सवारी' की आवाज भी मिलती है। हम इसे 'भारतेन्दु की देश के प्रति मौखिक सहानुभूति' का नाम नहीं दे सकते। राष्ट्र की मंगल कामना और योजना में इस श्रेष्ठ पुरुष ने न केवल चिन्तन और विचारों के क्षेत्र में ही अपितु व्यावहारिक साधना की दिशा में भी अनेक प्रयास किए। सामाजिक संस्थाओं के निर्माण और युग-चेतना को ध्वनित कर सकने वाली पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में इस व्यक्ति ने अपने सेठ-परिवार की सारी सम्पदा लुटा दी। राष्ट्रीय चेतना के व्यापक प्रसार के युग में भारतेन्दु युग के शख थे और शास्त्र भी थे। उनमें मस्तिष्क का चिन्तन और हृदय की भावना ही नहीं, भुजाओं की साधना और निर्भीक पैरों की अधक गति भी थी। इस युग में भारतवर्ष की राजनीतिक दृष्टि स्पष्ट नहीं थी और दादाभाई नौरोजी जैसा समर्थ व्यक्ति भी अंग्रेजों की प्रशस्ति में, उनके द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान-विज्ञान के आलोक के प्रति सहानुभूति- शील वा कुछ हद तक इसे युग की राष्ट्रीयता की सीमा मानकर ही हम आगे बढ़ सकेंगे। भारतेन्दु ने राष्ट्रीय प्रेम-धारा का पुष्ट प्रवाह इस युग के साहित्य को दिया जिसमें कहीं देशी रजवाड़ों की मूर्खता पर व्यंग्य है, कहीं देश की दुर्दशा का करुण चित्र, कहीं 'कोमल कवियों के विचित्र दृष्टिकोण की खिल्ली उड़ायी गयी है, कहीं धार्मिक रूढ़ियों और अन्धविश्वासों पर समर्थ व्यंग्य किया गया है, कहीं आलस्य और अशिक्षा के 'दारुण प्रताप' को

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

देखकर देशवासियों के प्रति सम्बेदना प्रकट की गई है, और कहीं अंग्रेजों के शोषण और दमन का सशक्त विरोध किया गया है। 'भारत-दुर्देव' को आधा किस्तान और आधा मुसलमान बतलाकर भारतेन्दु सम्प्रदायवाद का प्रचार नहीं कर रहे थे अपितु देश की मुक्ति के लिए राक्षसों के खूंखार पंजों की भयानकता की पोल खोल रहे थे। धर्म को 'राष्ट्र-मंगल' की धरती पर प्रतिष्ठा देकर इन्होंने व्यापक जन-जीवन को एक धागे में, संगठन के महाव्रत में प्रतिष्ठित करने का बीड़ा उठाया था और आने वाले युग में इनकी साधना के सफल व्रत का पूरा फल देखा जा सकता है। भारतेन्दु के पश्वात् राष्ट्रीय भावना विविध रूपों में हिन्दी साहित्य में प्रकट हुई,

जिनमें निम्नलिखित प्रकार अत्यधिक प्रबुद्ध थे-

अतीत की सांस्कृतिक गरिमा का गौरव गायन देश के अतीत में 'चिरस्मरणीय चरित्र और अविस्मरणीय घटनाएं भरी पड़ी हैं। सांस्कृतिक गौरव के पवित्र छन्द तथा महर्षियों-महान् पुरुषों के तप त्याग की पावन गाथा का उद्घोषक भी राष्ट्र कवि है। 'भारत-भारती' में सभ्यता और संस्कृति का गान करके श्री मैथिलीशरण गुप्त इसी प्रकार के राष्ट्र कवि बन सके। प्रसाद के गीतों में भी 'वैभव और व्यक्तित्व' से भरी हुई संस्कृति का दिव्य रूप चित्रित हो पाया है। कलाकार अतीत से प्रेरणा का प्रसाद बटोरता है, उसे वर्तमान की समस्याओं के हेतु 'संतुलित आलोक' का यथार्थवादी रूप प्रदान करता है और तभी वह भविष्य के अनजान पथ का सफल सारथी बन पाता है। प्रगति के पथ पर अविश्रान्त बढ़ते रहने के लिए प्रयास की साधना चाहिए और इसके लिए प्रेरणा की अदम्य वहिह्नशिखा का होना अत्यावश्यक है। देश की दुर्व्यवस्था का यथार्थ चित्रण परतंत्रता अथवा पराभव के अंधेरे में ठोकर खाते हुए देश की विषम परिस्थिति का चित्रण भी राष्ट्रकवि का सफल मापदण्ड होता है। भारतेन्दु के स्वरों की पीड़ा और देश की दुर्दशा के करुण चित्रण, मैथिलीशरण गुप्त का वेदना-भाव तथा 'दिनकर' के छन्दों का दर्द, देश के मानवता के अभिशप्त जीवन के कारण ही सृष्ट है। कवि अन्तर में व्याकुलता और असंतोष का भाव लेकर उसे देश के कोने-कोने में बिखरा देता है। जागरण के सामाजिक सन्देश का शंखनाद दासता की रात में दर्द और विस्मृति में ऊंघते हुए देश को जगाने का प्रयास भी राष्ट्रकवि का प्रयास है। सुमित्रानन्दन पन्त का 'जागरण गीत', प्रसाद का 'हिमादि तंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' आदि इसके उदाहरण हैं। संघर्ष और त्याग का वरण-अनाचार की आंधी के विरोध से संघर्ष कवि का युग-धर्म है और संघर्ष का यह पक्ष कवि दिनकर की कविताओं में काफी स्पष्ट है। 'दिनकर' ने संघर्ष की भावना को व्यापक आधार प्रदान किया है-मात्र व्यक्तिगत वेदना, करुणा और असंतोष के घर में ही सीमित नहीं रहने दिया। त्याग के व्रती माखन लाल चतुर्वेदी बने । 'मैं हूँ एक सिपाही' और 'पुष्प की अभिलाषा' इसी व्रत की निष्ठा की सुन्दर प्रतिमाएं बन पायीं। देश की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन सौंदर्य से हरे-भरे देश की प्राकृतिक सुषमा का रसात्मक विचारक वर्णन भी राष्ट्रकवि की एक महत्त्वपूर्ण आधारशिला है। 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', 'हिमालय के आंगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार' आदि कविताएं इस दिशा के सफल प्रयास है। श्रीधर पाठक को कश्मीर सुषमा' तथा रामनरेश त्रिपाठी तथा अन्य कवियों की साधना इस दिशा की ओर उन्मुख रही हैं।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राष्ट्रीयता की यह जनवादी परम्परा भारतेन्दु से पुष्ट हुई और पल्लवित-पुष्पित होती हुई बढ़ती गई। समस्या के चौराहे पर इसे समर्थ सारथी प्राप्त हुए और इन सारवियों ने साहित्य के महारथियों ने अपने योगदान से उसे और भी विकसित किया। श्री श्रीधर पाठक और श्री रामनरेश त्रिपाठी-हिन्दी काव्य के स्वच्छन्दतावाद के प्रारम्भिक चरण माने जा सकते हैं और इन लोगों ने राष्ट्रीय चेतना को अन्य विधानों एवं प्रकारों रूपों से सज्जित किया। कवि श्रीधर पाठक प्राकृतिक सुषमा के अंक में विचरण करते हुए राष्ट्र के स्वस्थ सौन्दर्य का आकर्षक चित्र अंकित करते रहे और उनकी स्वच्छन्दता की धारा को दो कदम और आगे बढ़ाकर श्री रामनरेश त्रिपाठी ने राष्ट्रीय चेतना को अधिक शक्ति और समृद्धि दी, भारतेन्दु की राष्ट्रवादी परम्परा को गति दी, सिद्धान्त और व्यवहार को नया मोड़ दिया तथा प्रयोग के क्षेत्र में उसे व्यापक

संवेदना वाला सोना उन्होंने बड़ी बोली में कीट करके राष्ट्र के अपने प्रेम और सेवा-भाव का सुन्दर परिचय दिया। काल्पनिक कथानकों का युग की राजनीति का आंकते हुए, उन्होंने जिस राष्ट्रीयता को उभारने का प्रयास किया वह मंगल की आराधिका है, सामाजिक न्याय तथा विश्व-मानववाद उसका ध्येय है। समूह शक्ति है, श्रृंखला सामर्थ्य है और संगठन है रचनात्मक प्रयास। आंदोलन चाहे वह सशक्त क्रांति की लपटों में धू-धू करके जलने वाला हो या असहयोग और अहिंसा के पवित्र पथ से होकर चलने वाला की सफलता लिए समष्टि का समवेत स्वर चाहिए ही, जो 'पथिक' काव्य में उपस्थित है। व्यक्तिवादी 'क्रांति' की दिग्श्वमित ज्वाला का जागरण यहां नहीं मिलता क्योंकि राष्ट्रीयता व्यक्ति की समुदाय का विश्वास है

त्रिपाठी जी की राष्ट्रीयता हिंसा और रक्तपात की राजनीति कलुषित नहीं वरन् शान्ति और सद्भावना की संस्कृति से पवित्र है। भारतवर्ष की राजनीति में बहिंसा- मूर्ति बापू का अभ्युदय हो चुका था। हिंसा की धधकती ज्वाला में विद्वेष और प्रतिहिंसा घृत बूंदें नहीं, सहानुभूति और स्नेह की अमृत-धार पढ़ रही थी जहिंसा प्रयोग से विध्वंस के बबण्डर को रोक सकने की सामर्थ्य इनकी राष्ट्रीयता की शक्ति है अनाचार का विरोध अनाचार नहीं, सदाचार की मंत्रणा होना चाहिए, विकृति बुरे, मनहूस धब्बे धोने के लिए अपवित्र राजनीति का गंदा जल नहीं, नेह और भाईचारे स्वच्छ, निष्कलुष अरना चाहिए। सक्रिय साधना, विश्व की भावना, व्यापक असंतोष के होते हुए भी अहिंसात्मक मार्ग का अनुसरण तथा सफलता की उपलब्धि त्रिपाठी जी की राष्ट्रीयता की विशेषताएं हैं। प्रकृति की सुषमा मनोहर-आकर्षक चित्र यहां हैं, अहिंसा की नीति का नैतिक आधार है, शान्ति और सद्भावना के मधुर गीत है, समूहका विश्वास है और सबसे बढ़कर तो विश्वबन्धुत्व-लोक-मंगल की कामना की ईमानदार भावना, सक्रिय साधना इन्होंने केवल युग और उक्तियों पर तथा कल्पना की अपेक्षा इतिहास पर अधिक जोर दिया गया है। अपने समय की यह एक ही रचना है। जिसने उस युग के प्रत्येक भारतीय के हृदय में खलबली मचा दी। संस्कृति का विस्मरण, जातीय गौरव का विस्मरण, अपनी अर्जित, समृद्ध, सुविकसित परम्परा का विस्मरण किसी भी देश के लिए हास्यास्पद और घातक है- मानो बादल के उसी घने कुहरे को चीरने के लिए गुप्त जी की काव्य-साधना 'भारत 'भारती' में प्रचण्ड आलोक बनकर उपस्थित हुई हो। कहना नहीं होगा कि जनता का कण्ठहार बनकर वह पुस्तक गौरांग महाप्रभुओं की कु कृपा का भाजन ही बनी।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

यह एक ऐसी रचना है जिसके द्वारा उस युग के यथार्थ और आशावाद को, सीमा और स्वप्न को, विवाद और आकांक्षा को राष्ट्र के जीवन की गहराई के प्रसंग में पहचान लिया जा सकता है। उन्माद और संघर्ष की विषम ज्वाला की भावोत्तेजक चिनगारियां गुप्त जी के काव्य में भले ही प्राप्त न हों, पर भारतीय संस्कृति की अभूतपूर्व निष्ठा के बेग से उन्होंने युग राजनीति का व्यापक स्पर्श किया है, उसकी गहराई में धंसकर उसे अत्यन्त दिव्य रूप प्रदान किया है। तथ्य यह है कि भारतीय राष्ट्रीयता की धारा जब तक संस्कृति के परिवेश में अपना स्वरूप और स्वर स्थिर नहीं करती तब तक उसमें मांगलिकता, उदात्तता, युग की व्यापकता का संस्पर्श, गहरी अन्तर्दृष्टि, पवित्र साधन-व्रत आदि नहीं आ सकते । मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति के समर्थ पुजारी थे और इनकी काव्य-धारा इसी संस्कृति की निष्ठा से अधिक प्रसाधित है। राष्ट्रीय शंख-ध्वनि' के साथ काव्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होने वाले गुप्त जी की आंखों के आगे से इसी कारण भारतीय संस्कृति के दिव्य नक्षत्र ओझल नहीं होते। संस्कृति का पवित्र आलोक लेकर देश-दुर्दशा और युग की हलचल देखने के क्रम में गुप्त जी ने न तो भारतीय दृष्टिकोण की ही उपेक्षा की है और न युग के उस जलते हुए यथार्थ की जिसकी लपटों में सारा देश झुलस रहा था। वे पुनरुत्थान के कवि निश्चित रूप से हैं, पर वह पुनरुत्थान किसी संकीर्ण मतबाद की संकरी अकेली धारा का न होकर भारतीय संस्कृति के विशाल प्रवाह का है। वे राष्ट्रीय संस्कृति के विज्ञान समन्वयवादी विचारों-आदर्शों के कवि है जिन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय राजनीति की सही गतिविधि का सच्चा प्रारूप प्रस्तुत किया। वे भारतीय नवोत्थान के कवि है, पर वे वैदिक संस्कृति, बौद्ध संस्कृति जैन संस्कृति, इस्लामी संस्कृति हिन्दू संस्कृति, आंग्ल संस्कृति आदि के कृत्रिम भेदोपभेदों में जाकर किसी एक स्वरूप का समर्थन और प्रतिपादन नहीं करते। उनका 'भारत-भारती' का हिन्दू पुनरुत्थानवाद भी इस्लाम विरोधी नहीं है। हिन्दवासी को उन्होंने हिन्दू मान लिया है। वे भारतीय संस्कृति के उत्थानमूलक तथा गतिवान स्वरूप को ग्रहण करते हैं, जिसे मानवता के चरम उत्कर्ष का पर्याय माना जा सकता है। इनकी कविताओं में हिन्दू पुनरुत्थानवाद की पृष्ठभूमि का रूप देखने वाले डॉ0 के शरीनारायण शुक्ल का निष्कर्ष है - हिन्दू होते हुए भी ये कवि भारतीय थे। इनमें जातीयता थी, पर साम्प्रदायिकता न थी।' सांस्कृतिक समन्वय को विराट प्रक्रिया की यही जागरूक साधना गुप्त जी की कविताओं की प्राण-शक्ति है। वे उदात्त कला और मानवीय संस्कृति में एक घनिष्ठ संबंध मानते हैं और विचार के उसी उच्चासन पर उनकी कलानिष्ठा टिकी हुई है। संस्कृति के प्रति यह थढाजन्य भावना मानवीय धरातल पर व्यावहारिक परिवेश में, कविता के माध्यम से व्यक्त हुई है- आध्यात्मिक विश्वास, धार्मिक मतवाद आदि व्यापात नहीं उपस्थित करते। यही नहीं, गुप्त जी ने भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति के जिस समय की चर्चा अपनी कविताओं में की है. वह एक प्रगतिशील दर्शन है। संस्कृति का यह व्यापक समन्वय विरोध और कट्टरता की वाणी नहीं है, साम्प्रदायिक अनैक्य में टूटकर बिखर जाने वाला विश्वास नहीं है और न यह मात्र हिन्दू को लेकर गतिशील तथा व्यावहारिक बनने का स्वप्न ही रचता है। कवि ने जहां भी उपयुक्त अवसर पाया है, अपनी इस राष्ट्रीय संस्कृति का रूप पाठकों के समक्ष उपस्थित किया है- 'हिन्दू-मुसलमान सब भाई, निज नवीन जय गान। वैष्णव, बौद्ध, जैन आदिक हम उस पर हिंसा करें कि प्यार।'-

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

स्वदेश-संगीत' उनकी यह संस्कृति भावना विश्वजनीन है और इसी संस्कृति के फोड़ में कवि की राष्ट्रीय भावना प्रभात की किरणों की तरह विकीर्ण हुई है। इसमें सजग सज्जन की, आदर्श पुरुष की, महती चरित्र की रूपरेखा है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान। गुप्त जी भारत की राष्ट्रीय संस्कृति के अतीत के भव्य भावों और परियों के कुशल राष्ट्रीय चित्रकार कहे जा सकते हैं। कभी पौराणिक आधार पर और कभी बौद्ध कालीन भव्य आदर्शों के आधार पर, चित्र बड़ा करना, उनमें चेतना अतीतोन्मुखी है, पुनरुत्थानवादी है। भारतीय इतिहास इनकी तुलिका का सहारा लेकर एक नूतन आकर्षण के साथ उपस्थित हो जाता है। कभी अशोक की रक्त रंजित तलवार की कहानी सुनाकर और कभी कुणाल के गीतों की ध्वनि बटोरकर ये भारतीय इतिहास और संस्कृति के सफल उपासक बने। वर्तमान की दुर्व्यवस्था का उपचार अतीत की प्रेरणा के रागों में है। कलाकार के लिए आवश्यक है कि वह अतीत से प्रेरणा और दृष्टि लेकर वर्तमान को सुव्यवस्था, सन्तुलन और सौन्दर्य देने का प्रयास करे। गौरव से ओत-प्रोत अतीत के प्रति लालसा का रंजित भाव लेकर आसक्त होना अगति का प्रतीक नहीं होता। यह ध्यान रखने की आवश्यकता सदैव रहती है कि कहीं वह अतीत अपने में कटा हुआ, विच्छिन्न और वर्तमान से सर्वथा अलग रहकर, कवि के जीवन-दर्शन पर भार नहीं बन जाय । गुप्त जी ने जब कभी और जहां कहीं अतीत को छूने का प्रयास किया है, वहां वर्तमान के साथ उसकी सन्धि स्वीकार की है। अतीत उनके काव्य में वर्तमान को प्रेरणा और सशक्त संघर्ष-भाव सौंपता है इसलिए कि दुव्यवस्था में तड़पता हुआ वर्तमान कोई नया अध्याय पा सके, स्वस्थ समाधान की राह पा सके। दर्शन और संस्कृति से ओत-प्रोत 'चिरस्मरणीय चरित्रों और अविस्मरणीय घटनाओं' से भरा-पूरा अतीत राष्ट्र के सुन्दर आदर्शों और रागात्मक संवेदनाओं से पूर्ण है। आदर्श, दर्शन, समृद्धि, सभ्यता और संस्कृति की ऊंची चोटी पर विराजमान अतीतकालीन भारतवर्ष कवि के अनुसार, विश्व के सभी से ऊंचा, गर्यो भय और महत्त्वपूर्ण था-

"हां, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है,
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।"
'भारत-भारती'

आर्य जाति और आर्य-संस्कृति का वह गौरव युग मानवता के कल्याण का स्वर्णिम युग या जहां स्वार्थ और हिंसा के साम्राज्य विस्तारवादी लिप्सा के, अन्य के प्रति घृणा और शोषण के गीत नहीं गाये जाते थे। लोक-मंगल की भावना से ज्योतित वैयक्तिक भोगवाद की महित लालसा के बदले 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' को विश्वजनीन चेतना से भरी-पूरी यह संस्कृति देवताओं की संस्कृति के समान ही दिव्य थी कवि इसे राष्ट्रीय सम्पत्ति और उत्तराधिकार के रूप में स्वीकार करता है-

"वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे।
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

संसार के उपकार हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी ।'

उसी उदात्त संस्कृति की किरणों से उसकी राष्ट्रीय भावना के पौधे लहलहाते हैं। उसे, सच्चे अर्थ में, न हिन्दुओं से अगाध प्यार है और न मुसलमानों से उत्कट घृणा। वह उस मनुष्य की पूजा और आकांक्षा करता है जो 'मनुष्य के लिए मरे। देश की स्वतन्त्रता की साधना में ऐक्य सबसे महत्वपूर्ण तथ्य था और इसे एक प्रगतिशील राष्ट्रीय चिन्तक की तरह कवि ने अनुभव किया था। संस्कृति, धर्म, समाज, जातीय भावना सभी दृष्टियों से गुप्स जी ने इस भावात्मक, व्यावहारिक एकता का झण्डा ऊंचा किया है। मूल रूप से ऐक्य और समन्वय की इस भावना के पीछे एक विराट संस्कृति का सोद्देश्य स्वर ही है। पर राजनीति के क्षेत्र में उतरकर भी वह अपनी प्रत्यक्ष संलग्रता और समप्रभुविष्णुता नहीं खो देती। गुप्त जी ने गहराई में डूबकर यह अनुभव किया था कि धार्मिक आडम्बरों के कारण ही मतवाद की कट्टर विभीषिका फैली हुई है और एकता के प्रयास बालू पर खींची गई लकीर की तरह निष्फल हो रहे हैं। हां, गुप्त जी, साथ ही साथ यवनों की विशिष्ट हिस्र नीति के विशिष्ट रूप से विरोधी थे। वैष्णव धर्म के उपासक होने के नाते करुणा, दया, प्रेम, अहिंसा आदि उनके विश्वास के अटूट संबल थे और गुप्त जी को इन्हें विश्व मानव के शाश्वत धर्म-कर्म के साथ संतुलित कर देने में थोड़ी-सी भी कठिनाई नहीं हुई। अतीत और धर्म यदि विवेक की संगत कसौटी पर सामाजिक, युगीन और प्रगतिशील नहीं सिद्ध हुए तो कवि ने उन्हें भी परित्याग कर देने का स्पष्ट आदेश दिया है। धर्म के नाम पर ऊपरी मतभेदों के अलग-अलग आवरण ओढ़कर राष्ट्रीय आन्दोलन और सांस्कृतिक निष्ठा को कलंकित करने वाले, कवि की आंखों में हेय और नीच पुरुष थे। धर्म का वह कृत्रिम आकर्षण निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति का पक्ष नहीं-'हम आइ लेकर धर्म को अब लीन है विद्रोह में। मत ही हमारा धर्म है, हम पड़ रहे हैं मोह में। - 'भारत-भारती' नवोन्मेष युग के कवि भारतेन्दु ने राष्ट्रीयता के झण्डे के नीचे समष्टि का आह्वान किया था देश के दुर्भाग्य पर आंसू बहाने के लिए, गुलामी के बन्धनों के विरोध में संघर्ष करने के लिए। इस दृष्टि से गुप्त जी भारतेन्दु की परम्परा के सीधे विकास हैं। जिस प्रकार गुप्त जी की वैष्णव-भावना किसी सम्प्रदायवाद की हिंस्र कटुता का सहारा लेकर नहीं बड़ी होती उसी प्रकार उनकी राष्ट्रीय चेतना को भी संकीर्ण मतवाद की लकीरें विभक्त नहीं कर देतीं। नीचता अथवा उच्चता की कसौटी जाति, वर्ग या सम्प्रदाय नहीं, अपितु राष्ट्रीय आचरण और सांस्कृतिक निष्ठा है। उन्होंने स्वार्थ प्रवृत्तिको संकीर्ण मतवादों की, साम्प्रदायिक विद्वेषों की ऊंच-नीच के खोखले अप्राकृतिक भेद-भाव की गहरी आलोचना की है। विश्व बन्धुत्व उनका उदात्त आदर्श था और उनका समस्त काव्य इसी अनुभूति से दीप्त, इसी विराट् मानवतावाद से भरा-पूरा है। आर्य-संस्कृति के पराभव से इसी कारण कवि की आंखें आई हो उठती हैं। अपनी प्रसिद्ध राष्ट्रीय रचना 'भारत- 'भारती' के मुख पृष्ठ पर ही कवि की सघन वेदना मूर्त हो उठती है-

'हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएं सभी ।'

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

शोध निष्कर्ष : जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी वही आज पद-पद पर पराया मुंह ताक रही है। उद्योग के लिए उत्साह की आवश्यकता है। बिना उत्साह के उद्योग नहीं हो सकता। इसी उत्साह को, इसी मानसिक वेग को, उत्तेजित करने के लिए कविता एक उत्तम साधन है परन्तु बड़े खेद की बात है कि हम लोगों के लिए हिन्दी में अभी तक इस ढंग की कोई कविता पुस्तक नहीं लिखी गई जिसमें हमारी प्राचीन उन्नति और अर्वाचीन अवनति का वर्णन भी हो और भविष्यत के लिए प्रोत्साहन भी स्पष्ट है कि कवि अतीत की गौरव गरिमा में खोये रहना ही पसंद नहीं करता और न उसके पराभव की करुणा में अपने गीतों को मात्र आई बनाना ही उसका लक्ष्य है। राष्ट्र और संस्कृति के प्रति अपार अनुराग के चलते वह एक सुधी चिन्तक और तत्वदर्शी विचारक की तरह युगीन समस्याओं और देश के बन्धनों, को जानने पहचानने का आतुर प्रयास भी करता है। देश और विश्व विषमता की दुर्दान्त वहिन में झुलसते रहे और कलाकार रसमयी व्यंजना के आकर्षण तथा चमत्कार के चक्कर में पड़े रहें, यह अनुचित है। उस युग में उपदेशात्मकता की वृत्ति एक जानी पहचानी ध्वनि है। सुमजी कला में सोद्देश्यतावाद की अमन्द दीपशिखा का महत्व मानते हैं। और इसी कारण अपने युग के उन कवियों पर व्यंग्य किया है जो राष्ट्रीय संकट की स्थिति में भी श्रृंगार के बेल-बूटे उगाते जा रहे थे। कविता श्रृंगार-प्रसाधन में दूबी हुई विलासिनी नहीं होती, अपितु अपने स्वरों से सुषुप्त पौरुष की जगाने, उसे संघ पथ पर आरुढ़ करने तथा आशा का मंगल दीप सौंपने वाली सामाजिक सञ्चाई है। राष्ट्रीय भावना के प्रसार-पब पर गुम जी की कविताएं इस तथ्य की सबल पुष्टि हैं। शत-प्रतिशत राष्ट्रीय दृष्टिकोण लेकर कवि ने उस युग में 'भारत-भारती' जैसे काव्य की रचना की और देश के प्रति अपनी विचारधारा को एक बहुत व्यापक पट पर संवारा। इसे तीन खंडों में कवि ने विभाजित किया है अतीत खंड, वर्तमान खंड खंड अतीत खंड में भारतवर्ष की अतीतकालीन उच्चता और महत्ता का विशद बोध है। भाषा और व्याकरण, वैद्यक, कवि और काव्य, इतिहास, शिल्प, चित्रकारी, संगीत, मूर्ति-निर्माण के साथ-साथ वेद, उपनिषद, सूत्रगंध, दर्शन, गीता, धर्मशास्त्र, नीति, अंकगणित, सामूति और फलित ज्योतिष सभी क्षेत्रों में प्राचीन भारत की ऐतिहासिक दृष्टि से सिद्ध महत्ता का गुणगान कवि ने किया है पृष्ठभूमि में ऐतिहासिक और वैधानिक दृष्टिकोणों का समर्थ संबल है। वर्तमान खण्ड में राष्ट्रीय आपदा के प्रेरक और साधक उन समस्त सामाजिक समस्याओं के पहलुओं का कवि ने उद्घाटन किया है जो विषम ज्वाला में प्रत्येक गौरव चिह्न को लील गई। भविष्यत् खण्ड उद्बोधन, शिक्षा और नीतिपरक उपदेशों को पवित्र भावना से भरा-पूरा है। अनेक स्थलों पर हमें नवोन्मेष युग के प्रतिनिधि कवि भारतेन्दु की याद हो आती है। इस प्रकार 'राजनीति क्षेत्र में सक्रिय' न होते हुए भी उन्होंने राजनीतिक दृष्टि से भी अतीत, वर्तमान और भविष्य को प्रेरणा, प्रयास और प्रगति की एकसूत्रता में गूंथा है। अतीत आस्था का दुर्ग है, वर्तमान संघर्ष की श्यामल, धूल-धूसरित पगडण्डी और भविष्य आशा तथा विश्वास का भाव भरने वाला । राष्ट्रकवि की क्षमता और सफलता का यह एक प्रबुद्ध प्रमाण है कि वह अतीत, वर्तमान और भविष्य के व्यापक फलक पर राष्ट्र का सच्चा और सम्भावित चित्र उपस्थित करने का प्रयास करे। धर्माध्यात्म की दृष्टि से राष्ट्र के सांस्कृतिक दर्शन की विवेचना उस युग में युग-जीवन की दृष्टि से अभीष्ट नहीं हो सकती थी अतः कवि ने समय के साथ चलने का नारा देते हुए

राष्ट्र की दुर्दशा की ओर लोक का ध्यान आकर्षित किया। यथार्थ-द्रष्टा की तरह कवि ने दुर्गत देश को निहारा, वेदना से क्लान्त पड़कर उसने उसके पराभव के मूल कारणों की ओर दृष्टि फेरी और समस्या के अनेक कारणों का मार्मिक वाणी में उद्‌घाटन किया।

संदर्भ ग्रंथ

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ,हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 883
2. आचार्य वाजपेई नंददुलारे ,आधुनिक साहित्य पू. 5
3. सं. जोशी शंभूनाथ अशोक भारतेंदु और भारतीय नवजागरण,
4.गुप्त मैथिलीशरण, भारत- भारती, साहित्य सदन,चिरगॉव -१९८४

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

११. आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

श्री. ज्ञानेश्वर रामकिशन हालसे
शोधार्थी
सहाय्यक अध्यापक
जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा
मांगवाडी ता. रिसोड जि. वाशिम
Email ID:- drhase१०@gmail.com

डॉ. विजय गणेशराव वाघ
शोध-निर्देशक
हिंदी विभाग सहयोगी प्राध्यापक
तोष्णीवाल कला, वाणिज्य और विज्ञान
महाविद्यालय, सेनगांव जि. हिंगोली
Email ID:- dr.vijay.g.wagh@gmail.com

शोध सार: इस भूमि पर सदियो से आदिवासीयो का निवास रहा है। आदिवासी प्रकृति पूजक है। 'प्रकृति से हम और प्रकृति के लिए हम' । यह आदिवासी जीवन है। आदिवासी का जल, जंगल, जमिन और जीवन यह उनकी जान है। इसी लिए कोई दुसरा इस प्रकृति को छेडता है। तो वो आदिवासीयो का दुश्मन बन जाता है। क्योकि आदिवासी प्रकृति को देवता मानते है। उसकी रक्षा के लिए, उसकी अस्मिता और आस्तित्व के लिय आदिवासी हर दम तयार रहते है। यह आदिवासीयो का पूरे विश्व में इतिहास रहा है। हिंदी साहित्य में आदिवासी समाज का साहित्य अब विपूलता से आ रहा है। पहले बहूत कम साहित्य था। आदिवासी का व्यवस्था से अब संघर्ष जैसे बढ़ता जा रहा है। वैसे ही हिंदी साहित्य में भी आदिवासी साहित्य बढ़ता जा रहा है। आदिवासी साहित्य और गैर आदिवासी साहित्यीक यह आदिवासी साहित्य की दो विधाएँ आदिवासी समाज को साहित्य से न्याय देना चाहती है। आदिवासी संस्कृती, मूल्य, परंपरा, रिति रिवाज, प्रकृति पूजा, प्रकृति प्रेम, सभ्यता और आदिवासी इतिहास साहित्य से वैश्विक स्तर पर सभी लोंगो के लिए साहित्यीक साहित्य से दुनिया के दिखाते है । विश्वस्तर पर बदलती परिस्थितीयो में औद्योगिकरण, भूमंडलीकरण, विज्ञानवाद, वैश्विकरण, विकासवाद राजनितीक बदलती भूमिका, पर्यावरण बदलाव और धर्मवादी ताकतो की बढ़ती नजरीया इस कारण आदिवासी समाज में प्रकृति में छेडछोड बढती जा रही है।

यह वास्तव चित्रण साहित्यकारो नें आपने आदिवासी साहित्य में चित्रित किया है। लिखा है। आदिवासी साहित्यीको में हरिराम मीणा, रणेन्द्र, वंदना टेटे, महादेव टोम्पे, जयपालसिंग मुंडा, तेलसूला आओ, ममांगदाई, रामदयाल मुंदडा, जसिंता केरकेटा अन्य में रमणिका गुप्ता, संजीव और बहुत सारे साहित्यीक जो आदिवासी साहित्य को वैश्विकस्तर पर हिंदी की राष्ट्रीय चेतन बढ़ने के लिए सफलतापूर्वक प्रयास कर रहे है। हामे पृथी और प्रकृति को बचाना है। तो आदिवासीयो के प्रकृति मूल्य, जीवन मूल्ये, प्रकृति जीवन पदधती, विश्वमूल्य, प्रकृति मूल्य, प्रकृति प्रेम और प्रकृति के लिए जीने और उसके लिए मरना, प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना ना करना यह हमे आपनाना पडेंगा। तभी पृथ्वी और प्रकृति, जीवन आनेवाली पिढीयो का सुरक्षीत रहेंगा।

बीज शब्द : प्रकृति, औद्योगिकरण, अस्मिता, आस्तित्व, प्रकृतिपूज शोषण, विकासवाद, विश्वमूल्य,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

प्रस्तावना:-

विश्व में सदियो से आदिवासीयो का निवास रहा है। आदिवासी आदिम जनजाती है। जो प्रकृति को आपना भगवान मानते है। प्राचीन काल से आदिवासीयोने पृथ्वी के जल, जंगल, जमिन और जीवन की रक्षा की है २१ वी सदी से बढते औद्योगिकरण, विज्ञानवाद, भूमंडलीकरण, भौतिकवाद, बदलती जीवन पद्धती, बढ़ती जनसंख्या और विकासवाद के नाम पर यह के जल, जंगल, जमिन और जीवन पर आक्रमण होणे लगे तो इसका पहला विरोध्द आदिवासी करते है। आदिवासी यह की प्रकृति संसाधन, जैवविविधता, पर्यावरण, और जीवन प्रकृति के साथ जीना चाहते है। लेकिन सभ्य समाज विभिन्न तरहा के विकासवाद के मुखोटो से प्रकृति को फसाना चाहते है इस कारण हमारी पृथ्वी के पर्यावरण सबसे बडा खतरा मंडरा रहा है। यह अशिक्षीत आदिवासीयो को समजता है। लेकिन सभ्य समाज को शिक्षीत लोगो को समझाने की नौबत आ रही है। 'प्रकृति से जीवन और जीवन प्रकृति के लिए ' यही आदिवासी समाज के जीवन जीने का तरीका है।

विश्व में आदिवासीयो की पहचान दुनिया को संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) ने करके दी है। जब दुनिया में १९३९ को दुसरा महायुध्द हुवा। तो इस युध्द में बहूत बडी मानवीय जीवो की हानी, मणुष्यो का नाश हुवा था। जब युध्द खत्म होने के बाद पूरी दुनिया का युध्द का मानवी जीवने पर आसर का सर्वे किया गया। उस सर्वे में संयुक्त राष्ट्र संघ ने देखा की इस धरती पर ऐसी भी बहुत सारी मानवी प्रजाती है। जो विकास से कोसो दूर है। पर जंगला में प्रकृति के साथ जीते है। उनकी कला, संस्कृती, जीवन पद्धती, भाषा, खान्ना, बहुत ही आलग है। दूसरी सभी सभ्यतायो से बिलकूल आलग तरहा की है। लेकिन इन समूह को जीवन जीने के लिए गाँव, रस्ता पाणी, बिजली, दवाईया, शिक्षा और जीवन जीने के विभिन्न संसाधन मिले ही नही है। यह समूह बहुत ही समस्या से लढके जीते है। प्रकृति ही उनकी सारी जरूरत पूरी करती है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने पूरी दुनिया के ऐसे समुह के अंक जुटा लिए और समूहों को उनकी आदिम, प्राचिन सभ्यता के कारण उन्हें "Indgenous Peop" आदिम आदिवासी की पहचान पूरे विश्व को हो गयी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने ९ ऑगस्त १९९४ को विश्व आदिवासी दिवस रूप में मनाने को सर्वसम्मति से प्रत्येक वर्ष विश्व के आदिवासायो का 'अंतरराष्ट्रीय दिवस' 'Word Indigenous Day' रूप में घोषित किया।

पूरे विश्व में लगभग ५६ करोड आदिवासी रहते हैं है। १३ सितम्बर २००७ को विश्व भर के आदिवासी ले लिए एक अत्यंत महत्वपुर्ण दिन था। इसी दिन संयुक्त संयुक्त राष्ट्र संघ के 'घोषणा पत्र' (UNDP) को अंगीकृत किया था। घोषणा पत्र में शुरुवात में लिखा गया की आदिवासीयो को अन्य सभी समुदायों की भाँति ही बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए।

आदिवासी इस धरती का पहला निवासी कहा जाता है। वही इसका हक्कदार भी है। क्योकि जीस धरती पर वो निवास करता है। आज भी उस प्रकृति वो आपनी आस्मिता और आस्तित्व मानता है। इस धरती प्रकृति के कारण ही हाम है। यह आदिवासी भावना और भूमिका सदियों से रही है। प्रकृति आदिवासी के लिए माँ और भगवान के समान है। एक माँ आपने बच्चों को कभी किसी भी हालत में दूर नही करती उसी ही उसी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

ही तरहा से यह प्रकृति आपने बच्चो को कभी दूर नहीं करेंगीं यह विश्वास आदिवासीयो को पूर्वजनोने आपने आगिली पिढी को सिखाया है। आदिवासी लोग सदियो से इस धरती पर निवास करते है। सदियो से यह प्रकृति, आपनी सभ्यता, जल, जंगल, जमिन और जीवन बचने के लिए उन्होने अब तक बहुत सारा संघर्ष किया है। यह संघर्ष ही आपनी आस्मिता और आस्तित्व बचने के लिए जंगल में बहुत सालो तक रूकने का कारण भी है। यह इतिहास, संघर्ष और सभ्यता आदिवासी साहित्यीकारो नें साहित्य में चित्रित की लेखन की है।

आदिवासी सभ्यता में आदिवासीयो पूर्वजनो की ज्ञान परंपरा, प्राचिन आदिम कला, संस्कृती आज भी आदिवासी समाज में देती है। आदिवासीयो में बहूत सारा ज्ञान मौखिक रूप में कहानी, गीत, उनकी भाषा में पाया जाता है । आब भी यह भी बहुत कुछ लिखना बाकी है। यह भी नाकारा नही जात सकता। नहीं जा सकता। आदिवासी आपना सामाजिक, आर्थिक राजनितीक और संस्कृती विकास चाहता है। लेकिन अभी आदिवासी वह तक स्वांतत्रता के ७५ सालो के बाद भी पहूचा नही सका यह हमारी हार है। आदिवासी आज भी शिक्षा, रोजगार, आरोग्य सुविधा, से बहूत दुर है। आज भी उनको सरकारी सारी सुविधा नही मिल पाती यह उनकी अशिक्षा और सरकारी नितीया का कारण है। आदिवासी साहित्यकार आदिवासी साहित्य के बारे में वंदना टेटे लिखती है।

वंदना टेटे लिखती है।

आदिवासीयो पर रिसर्च करके लिखा जा रही रचनाए शोध साहित्य है। आदिवासी साहित्य नही, आदिवासीयत को नही समझने वाली हिंदी के लेखक आदिवासी साहित्य लिख भी नही सकते। - वंदना टेटे

राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी मे आदिवासी साहित्य की स्थिती :-

आदिवासी साहित्य में आदिवासीयो के जल, जंगल, जमिन और जीवन उनके प्राकृतिक अभिव्यक्ती उनकी भावना, विचार, सोच, कला, संस्कृती, और सभ्यता का साहित्य कहा जाता है। उनके साहित्य में नाटक, उपन्यास, कविताएँ, रंगमंच, नृत्यकला, मौखिक गीत और उनका अनुवाद पूर्वजनो का संवाद, ज्ञान और आन्य रचनाएं भी शामील है। आदिवासी साहित्य को विभिन्न देशो में उसे विभिन नाम से जाना जाता है। जैसे की यूरोप और अमेरिका में इसे नेटिव अमेरिकन लिटरेचर, कलर्ड लिटरेचर स्लेव लिटरेचर नाम से जाना जाता है। अफ्रिकन - अमेरिकन - लिटरेचर । अफ्रिकन देशो में ब्लैक लिटरेचर ऑस्टोलिया में एबोरिजिन लिटरेचर तो इंग्रजो में इंडीजिनस लिटरेचर, फर्स्ट पीपुल लिटरेचर अन्य आदिवासी भाषा में उसे आदिवासी साहित्या के नाम से परिचीत है। किसी भी समाज की आस्मिता और इतिहास उसकी पहचान उसके साहित्य में होती है। इसलिय कहा जाता है। जिस समाज का साहित्य नही वह समाज आज कितनी भी ताकतवर हो उसे भविष्य नही है। क्योकी उसे सदियो तक साहित्य जीवित रखता है।

साहित्यकार समाज की वेदना, संवेदना और अभिव्यक्ती आपने साहित्य में चित्रित करते है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पन भी कहा जाता है। किसी भी समाज का विकास उस समाज को शिक्षा व्यवस्था एंव शिक्षा से लगाव और शिक्षा में मेहनत पर होती है। शिक्षा हमे सही गलत की पहचान करती है। हमे

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

विवेकशील, सर्जनशील, चिकित्सक, वैचारिक, विज्ञानवादी बनाती है। शिक्षा हमारी चेतना को बढ़ाती है। जिससे समाज के व्यक्ती और समाज का विकास और सुधार जल्दी हो जाते है। हमारे देश के बहुत सारे समाजसेवक, देशभक्त और संत ने भी इन्सान की चेतना बढाने की जानकारी दी है। आदिवासी सभ्यता में भी सच्चाई, आच्छे, संस्कार, बताये है। विवेकशीलता में ही चेतना का दुसरा रूप है। आदिवासी समाज पर बहुत सारा साहित्य लिखा गया है। लेकिन बहुत सारे विषयों पर लिखना बाकी है। आदिवासी सभ्यता और सामाजिक मूल्य, संस्कार साहित्य के माध्यम से वैश्विक स्तर पर वैश्विक स्तर बनता नजर आ रहा है।

आदिवासी हिंदी साहित्य को आवधारणाए :-

आदिवासी साहित्य लिखने वाले बहूत सारे साहित्यीक आज मिलते है। उनके दो भागो में भेद किये जाते है। - १) आदिवासी साहित्यीक २) गैर आदिवासी साहित्यीक

१) आदिवासी साहित्यीक :-

"जो जन्म से आदिवासी है। आपने स्वानुभूति के आधार पर आदिवासीयो द्वारा लिखा गए साहित्य को ही आदिवासी साहित्य कहा जाता है" ।

आदिवासी साहित्यीक :-

हरिराम मीणा, वंदना टेटे, महादेव टोप्पे, रणेन्द्र, मंगलसिह मुंडा, रूपलाल बेदिया, ॲलिस एक्ला, पीटर पॉल एक्का, वाल्टर भेंगर तरुणा रोज केरकेहा, रामदयाल मुंडा, सुशील सामद, तेलसुला आओ, ममांग दाई, जयपालसिंग मुंडा, वाहरू दादा सोनवणे, निर्मला पुतुल, सुषमा आसूर, अनुज लुगुन, डॉ. गोविंद गारे, माधव सरकुंडे और अन्य बहूत सारे आदिवासी साहित्यकार है। जिन्होने हिंदी में आदिवासी साहित्य लिखा है। आदिवासी सभ्यता, इतिहास, जीवन वैश्विक स्तर पर साहित्य के माध्यम से चित्रीत किया है।

२) गैर आदिवासी द्वारा लिखा साहित्य :-

जो साहित्यकार जन्म से आदिवासी नहीं है। लेकिन उनके द्वारा लिखा गया साहित्य आदिवासी साहित्य है। उन साहित्यकारो को गैर आदिवासी साहित्यकार कहा जाता है। उनका साहित्य आदिवासी समाज के लिए सहनुभूती का साहित्य कहा जाता है। इसपर आदिवासी साहित्यीक वंदना टेटे लिखती है। आदिवासी साहित्यीक कहा वंदना समाज के लिए जाता है । वंदना टेटे लिखती है।

गैर आदिवासी साहित्यीको का साहित्य हमारी अनुभूती, संवेदना सिर्फ हाम ही जानते है। जो रिसर्च चल रहा है। आदिवासीयों पर वह तो सिर्फ आदिवासी शोध साहित्य है। आदिवासी साहित्य नही है। अन्य आदिवासी साहित्यीको में रमणिका गुप्ता, संजिव, राकेश कुमार सिंह, महुआ माजी, बजरंग तिवारी, गणेश देव और अन्य बहुत इनका आदिवासी राहित्यीक है। इनका आदिवासी साहित्य समाज को विभिन्न सामाजिक मुद्दो को समर्पन की दृष्टी से लिखा गया सहनुभूतिपरक साहित्य रहा है।

राष्ट्रीय चेतना :-

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ है, राष्ट्र के प्रति देशभक्ती जगना तथा राष्ट्र के प्रति लोग एवं समाज में जागरूकता होना। जब लोग अपने देश की समस्या, संस्कृति इतिहास और विकास तथा सामाजिक, आर्थिक,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राजनैतिक संस्कृतिक, धार्मिक बातो की गहराईसे विवेक से उसे बेहतरीन बनाने के लिए एकजुट होते है, तो उसे राष्ट्रीय चेतना कहते है। यह भावना देश वासियो को एक साथ जोडने और देश की भलाई के लिए काम करने की प्रेरणा देती है। इसी कारण लौंग में सामाजिक बंधूता, प्रेम, मानवता, सेवभाव की भावना का निर्माण होता है। यह हामे एकता और भाईचारा का एहसास कराती है।

इसी कारण आपने देश की भलाई के लिए काम करने की प्रेरणा है। यह अपने देश के विकास और सुरक्षा में योगदान करने का उत्साह पैदा करती है। राष्ट्रीय चेतना को दूसरे शब्दो राष्ट्रीय चेतना का मतलब है। अपने देश से प्यार करना, उसकी मदद करना, सच्चे और आच्छे नागरीक होने का फर्ज अदा करना, आपनी आच्छी चेतना से समाज और देश की उन्नती करने के लिए देश की सेवा करना उसे कुछ तो देने की भावना रखना और उसे आगे बढाने के लिए मिल-जुलकर काम करना इस भावना का समाज और देश में सभी दल, संघटन, समाज राष्ट्रीय चेतना बढाने के लिए सकारात्मक सोच के साथ सभी साथ लेकर काम करना राष्ट्रीय चेतना बढ़ाने की और एक सकारात्मकता से आगे बढना चाहिए।

चेतना :-"कुछ जीवनधारियो में स्वंय के और कुछ आपने आसपास के वातावरण के तत्वो का बोधे होणे उन्हे समझने तथा उनकी बातो का मुल्यांकन की शक्ती का नाम है" ! चेतना और चरित्र मनुष्य के लिय बहूत महत्वपूर्व संबंध दर्शशाता है। मनुष्य की संवेदना को चेतना जागृत रखती है। चेतना मनुष्य को जीवित बनाती है। जीव जीते समय बहूत सारे अनुभव आते है। जिससे इन्सान के चरित्र निर्माण होता है। यह सब चेतना और संवेदना महत्वपुर्ण बात से संबंधीत है। जो हमारे विचार, व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

किसी मनुष्य की चेतना और चरित्र उसकी व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है। मनुष्य के निर्माण में, चरित्र के निर्माण समाज की बहुत बड़ी भूमिका होती है। हम बचपण से जिस समाज में पले बढे है। उसको हमारे चरित्र, जीवन और व्यक्तित्व पर बहूत बडा प्रभाव होता है। उसी कारण हमारा चरित्र को व्यक्तिगत संपत्ति नहीं कहा गया है । जब मनुष्य का चेतना विकास हो जाता है। तो उसके अंदर की प्राकृतिक मूल्य, चेतना चली जाती है। वह स्वातंत्रतासे सामने नही आता यह कृतित्व के दबाव में आ जाते है।

इसी प्रकार मनुष्य चेतना अथवा विवेक, अवचेतन मन अथवा प्राकृतिक मन पर आपना नियंत्रण राख सकता है। मनुष्य और प्राणीयो में बस यही तो भेद है। मनुष्य घटना, सोच की आच्छा, बुरा समझ सकते मतलब उसके पास चेतना है। लेकिन प्राणियो, पक्षियों के पास चेतना नही रहती.

चेतना के तीन भेर माने जाते है।

१) चेतना २) अवचेतन ३) अचेतन

लेकिन जीनकी चेतना, वेदना, संवेदना की जागृती होती है। जिस मनुष्य ने आपनी चेतना जागृत रख वह खुद पर नियंत्रण कर सकता है। चेतना की बाते, अनुभूती, अवचेतन मन और अचेतन मन के अंदर चल्ली जाते है। वह कभी निष्क्रिय नही होती. चेतना यह वैश्विक ऊर्जा का ही अलग तरह का रूपांतरण है। चेतना मन की स्थिती है। विभिक अनुभूतिया, अवस्था, (हर क्रिया मतलब अनुभूती) मनुष्य सुख, दुःख अनुभूति इसी चेतना के कारण होती है। जिसके पास चेतना है. चेतना मुक्ती पाने के लिए हर दम बदलती रहती है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

यह चेतना से कभी खुशी होती है। कभी गम, कभी रोना, हसना, खोना, चाहना, देखना यह सब चेतना क बदलती स्थिती या हम इसे चेतना का रूपांतर कह सकते है। चेतना का मतलब व्यक्ती की जागृता है। मनुष्यों को हाम है। हमारी विभिन्न आवस्था चेतना से होती है । मन जिने वाले लोंगो में जीते समय डर रहता है। यह डर चेतना है।

इन्सान की चेतना जब शुध्द होती तब वह द्वैवी चेतना कहते है। दिव्य चेतना वाले व्यक्ती में डर, घबराहट नही रहता वह निर्भय हो जाता है द्वैवी चेतना वाले बयकी में नही रहना वह निर्भय हो जाता है । चेतना में यह भावना होती है की वह आत्मा तक पोहच जाय । मन ही चेतना है। जागृती व्यक्ती में बोध हो जाये तो वह आत्मगत व्यक्ती रहते है। चेतना कभी दुख, तो कभी खुशी रहती लेकिन आत्मा हामेशा आनंदी रहती है। क्योंकी वह परिपूर्ण है । रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण सब चेतना के तट पर आते है। लेकिन आत्मा इनसे उपर है। इसमें आत्मा को परिपूर्ण स्थिती कहा जाता है।

चेतना की सुद्ध आवस्था को आत्म चेतना कहा जाता है। चेतना बच्चे की तन्हा ही होती है। चेतना हमेशा बडा और बडा होना चाहती है। इस लिय चेतना स्तर उंचा उठाना पडता है। ताकी वह बंधनों से मुक्त हो जाये। जब मन से घुसा, आलस, लालच, बुराई जैसी गंधी बाते, खत्म होती तो चेतना से आत्मा में विलीन हो जाती है। आत्मा पवित्र होती है।

आदिवासी साहित्य :-

आदिवासी समाज पर पहिला उपन्यास वाल्टर भेंगरा 'तरुणा' ने भादिवासी पर लिखा पहिला उपन्यास है। 'शाम की सुबह' इस उपन्यास में एक आदिवासी 'स्त्री' नर्स है। जो आपने जीवन के चढउतार में बहुत परेशान होती है। लोकिन हार नही मानती। इसका बहूत आच्छा नारी चित्रीण वाल्टर भेंगरा ने किया है। यही से आदिवासी की हिंदी चित्रीन, हिंदी साहित्य लेखन सरूवात होती है। उसके बाद पिटर पाल एक्का का उपन्यास 'जंगल के गीत' यह उपन्यास उस वक्त काफी चर्चा में रहा था। इस उपन्यास में पीटर पाल ने आदिवासी का प्रकृती प्रेम, प्रकृती चित्रण आदिवासी सभ्यता, और जीवन पर बहूत सारे गीत और जाणकारी इस उपन्यास में चित्रीत की थी।

आदिवासी हिंदी साहित्यीक उनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की अनुभूती :-

१) रणेन्द्र:- झारखंड के आदिम जनजाति पर रणेन्द्र मे जो साहित्य लिखा वह विश्वभर में उन मुद्दो को लेकर चर्चत रहा जो इस उपन्यास में रणेन्द्र ने उढाये है। पूरे विश्व में प्रकृती, पर्यावरण, जल, जंगल, जमिन, जीव और जीवन बचाने की बात चल रही है। यह मुद्दा रणेन्द्र साहित्य चित्रित है। रणेन्द्र का पहिला उपन्यास "ग्लोबल गॉव के देवता" जो झारखंड की आदिम जनजाती असूर है। उनपर लिखा गया यह उपन्यास है। असूर समाज झारखंड के अति प्राचीन, आदिम जनजातियों में पहिले स्थान पर पाया जाता है। "असुरो ने आग और लोहा की खोज की है।" मिट्टी से लोहा निकालकर उसे गलाना औजार और उपयोग हत्यार, वस्तु बनाना असूर की इतिहास रहा है। यह असुर लोग प्रकृती पुजक है। प्रकृती को ही आपना भगवान मानते है। भारत में ४२८ जनजाति अधिसुचित है। जबकि वास्तविक यह संख्या ६४२ है। एशिया

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

में सबसे जादा आदिवासी भारत में निवास करते २०११ जनगणना में असूर भारत की कुल जनसंख्या का ८.६ प्रतिशत आदिवासी समुदाय है।

वेदांत, हिडाल्फो, जैसी बहुराष्ट्रीय कपंनीयोने झारखंड के असूर आदिवासी जमिन बॉक्साइट निकालने के लिए कब्जा किया है। सरकार कंपनीयो के साथ है। इन कंपनीयो के लोंगो ने असूर समुदाय का शोषण, अन्याय, आत्याचार किये है। साथ ही आदिवासी स्त्रियो को बहला-फुसलाकर फसाया है। उनका शोषण किया है। इसके विरूध्द में असूर आदिवासी वैश्विक जनजाति समाज का संघर्ष, आंदोलन खडा किया जाता है। ग्लोबल गॉव के देवता तब हिल जाते असूरो को फुसलाने, बहकाने का काम शिवदास बाबा जैसे पाखंडी लोग करते आ रहे है। इस उपन्यास में आदिवासी असूर स्त्री भी इस संघर्ष, आंदोलन, प्रतिरोध में क्रियाशिलता के साथ भाग लेती है। बेडिया अभयारण्य, बांध परियोजना जैसे असूरो का विस्थापन करनेवाले सरकारी योजनाओं का असुर मुतोड जबाब देते है। लेकिन अंत में भुस्फोट करके असुर के नेतृत्व को यह ग्लोबल देवता उडा देते है। फिर नये पढे लिखे लोग संघर्ष के लिए सामने आते है।

'गायब होता देश' यह उनका उपन्यास वैश्विक स्तर जमिन, खदान, संसाधन, बिजनेस, जमिनो के सौदे ऐसे वैश्विक मुद्दों पर यह उपन्यास झारखंड के मुंडा जनजाति का चित्रण करता है। रणेन्द्र इस उपन्यास में 'किशन' नामक पत्रकार के पात्र के माध्यम से झारखंड के मुंडा जनजाति की संघर्ष प्रताडना, पिडा, अन्याय और वास्तव परिस्थिती का चित्रण किया है।

भू-माफिया,बिल्डरो, रियल इस्टेट सेक्टर को बड़ी कंपनियो सरकार को मुंडा आदिवासी जमिनो की निचे का प्लेटिनय, डायमन्ड, सोना, चांदी जैसे मुल्यवान धातु के लिए जमिन चाहिए इसकिय रियल इस्टेट के लोंग जो खुद को सर्वव्यापी और सर्व शक्तिमान मानते है। वह आदिवासी लोगा का साथ देने लोगो को गुमराह करते है। और कोई प्रतिरोध करता है। तो उसे मार डालते है। किशन पत्रकार ने इन लोंगो के काले धंदे, काले काम समाचारपत्र, मॅगझीन छापने लगे लोंगो को समझाने लगे तो भु-माफिया ने उसका खून कर दिया यही इस उपन्यास की चरम बिंदू है। अन्य समाज के लोंग आदिवासायो को कमजोर समजते है, अनपढ, गवार समझते है। लेकिन मुंडाओ के प्रकृती से गहरा लगाव था। उनके जन्म से मृत्यतक लेमुरिया महाद्वीप की कहानिया मुंडाओ के पूर्वजो प्रारम्भ है। ज्ञान को फ्रिस्टिलाईज करने के मुंडाओ के पुर्वजो की कहानी भुमाफिया, रियल-इस्टेट और मुंडा आदिवासी का चित्रण यह इस उपन्यास का मुख्य विषय रहा है।

रणेन्द्र का काव्य संग्रह "थोडा सा स्त्री होना चाहता हूँ। में रणेन्द्र आदिवासी स्त्री की चित्रण प्रकृति से जुडी हूवी स्त्री करते है। आदिवासी स्त्री आपने आस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्ष करती है। यर की पूँजीपाती व्यवस्था, ठेकेदार, जमिनदार, कंपनियों से, सरकार से अन्याय शोषण करती है। कभी न हार माननेवाली आदिवासी स्त्री का चित्रण साथ ही प्रकृति को भगवान बनकर पुंजने वाली स्त्रि का चित्रण किया है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

रणेन्द्र आपने साहित्य से वैश्विक स्तर पर आदिवासी को संघर्ष, संघटना, सरकारी नितीयो से प्रतिशोध, कंपनियों से संघर्ष का चित्रण आपने साहित्य में वास्तविकता पर लेखन कार्य किया है। आदिवासी समाज को न्याय, हक्क और सम्मान देने के लिए रणेन्द्र का साहित्य आदिवासीयो के लिए प्रेरणादायी रहा है।

२) निर्मला पुतुल :-

निर्मला पुतुल का जन्म १९७२ झारखंड राज्य के दुमका जिल्हे दुधनी कुरूवा ग्राम में संभाल आदिवासी गरीब परिवार में हुवा। निर्मलाजी ने आदिवासी मैखिक गीत, कविता के मध्यम से समाज के संधर्ष करने के लिए प्रेरीत किया उन्होने आदिवासी महिलायो के विस्थापन, अन्याय, आत्याचार, लैगिंक भेदभाव, उत्पीडन, जैसे मुद्दो पर लेखन किया। समाज में अपनी कविताओं से विद्रोह स्वर छेड दिया। आपनी अनुभूती, संवेदन और अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से चित्रित किया उनका साहित्यीक सामग्री है।

निर्मला पुतुल ने २००४ में उनका पहिला कविता संग्रह 'आपने घर की तलाश में' संथाली-हिंदी इन दोनो भाषाओ में प्रकाषात हुवा। उसके बाद उन्होने 'नगाडे की तरह बजते शब्द (२००५) को कविता संग्रह प्रकाशित हुवा। इन कविता संग्रह के माध्यम से पहिली बार किसी आदिवासी स्त्री ने शहरी स्त्री और समाज को आदिवासी स्त्रि द्वारा रचित कविता से शब्दो ढोल बजाने से आवाज शहर तक जा चुकि थी। निर्मला पुतुल ने आपनी अनुभूती से 'स्व' रचित कविता के माध्यम से पुरूष व्यवस्था का विरोध्द, स्त्री की वेदना, समाज के गुण-दोष, सभ्य समाज पर व्यंग स्त्रि का संघर्ष, व्यवस्था और अन्याय खिलाफ विद्रोह शुरूवात कविता के द्वारा निर्मला जी करते है।

इस कविता के माध्यम से निर्मलाजी ने आदिवासी स्त्री की वेदना और संवेदना को वैश्विक सार पर लाया। सभ्य समाज तक आदिवासी स्त्री की कविता विद्रोह के रूप में जाकर उन्हे कहता है। अब नही में आदिवासी स्त्री हु। अब कोई शोषण, अन्याय नही सहेंगे। उनकी कविता विभिन्न पाठ-पुस्तको में भी शामील की गयी है। उनके जीवन पर आधारित एक फिल्म बनी जीसमे उन्होने निर्मला जी का जीवन दिखाय फिल्म का नाम है 'बुरू-गारा' इस फिल्म को २०१० का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिला. निर्मला जी ने झारखंडी संथाली स्त्री का अभिव्यक्ति साहित्य। कविता के माध्यम से चित्रित की आदिवासी स्त्री का प्रकृती प्रेम, प्रकृती पूजा, अन्याय, शोषण से प्रतिरोध और आपनी लेखनी से उन्होने झारखंडी संथाली आवाज वैश्विक स्तर तक पहूचायी।

३) वंदना टेटे :-

वंदना टेटे का जन्म १३ सितम्बर १९६९ में झारखंड राज्य के सामटोली, सिमडेगा नामक गॉव में हुवा है। वंदनाजी ने आपने साहित्य को 'प्रतिरोध का साहित्य की बजाय रचाव और बचाव' का साहित्य कहा है। आदिवासी की दृष्टि समतामूलक है। उनके समाज में व्यक्ति केंद्रित और शक्ती संरचना को कोई स्थान नही है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

आदिवासी समाज में मौखिक गीत, कहानिया और कथा विपूलता से उपलब्ध है। लेकिन उनको लिखीत रूप ना के बराबर है। सदियों से इसी तरहा से मौखिक रूप में यह गीत, काहानियाँ और कथा चला आ रही है। जब यह मौखिक गीत, कथा, कहानिया लिखीत रूप में समाज के सामने आते है। तो उन्हें ओरेचर कहा जाता है! वंदना टेटे ने आपने हिंदी साहित्य में गीत, कहानियो, की जगहा दि है। आदिवासी आस्तित्व के लिए वंदना टेटे की कविता समाज और देश के लिए प्रेरणादायी रही है। बदलते जीवनमुल्य बदलती परिस्थिती और सभ्य समाज की भूमिका इन सभी विषयो पर व्यापकता से वंदना टेटे जी आपनी विचारधारा, वेदना, संवेदना और अभिव्यक्ती कविता ओ के माध्यम से व्यक्त होती है।

वंदना टेटे की साहित्यीक सामग्री में पुरखा लडांके(२००५) किसफा राज है (२००९) झारखंड एफ अंतहीन समरगाथा (२०१०) असूर सिरिंग (२०१०) आदिम राग (२०१३) आदिवासी साहित्य: परंपरा और प्रयोजन (२०१३) आदिवासी दर्शन कथाएँ (२०१४) और उनका विविध विधा में लेखन कार्य राष्ट्रीय एंव वैश्विक स्तर पर भी प्रसिध्द हुवा है। उनकी कविता में और पुरखा (लोक) साहित्य, आदिवासी सभ्यता इनके साहित्य मानवता: विश्वमुल्य और प्रकृती का मुल्य उनके साहित्य से समस्ता मानवता के लिए उपयोग रहा है। इस कारण भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय द्वारा २०१३ में सीनिअर फेलोशिप से नवाजा गया है। आपकी कविता एव साहित्य सभी के लिए प्रेरणादायी है।

४) हरिराम मीणा:-

हिंदी साहित्य जगत में आदिवासी साहित्यीक के विश्व में उनका प्रसिध्द उपन्यास 'धुणी तपे तीर' कारन आदिवासी साहित्य में उनको नयी पहचान मिली। हरिराम मीणा का जन्म राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर, जिल्हे के बामनवास गाँव में १ मई १९५२ को हुवा। उनका शिक्षा के बाद वो भारतीय पुलिस सेवा में कार्यरत रहे। पुलिस का कर्तव्य बजाते । हिंदी साहित्य में रूची रखना बहूत ही कमी इन्सान मिलेंगे।

उनकी साहित्य सामग्री में तीन कविता संग्रह है। 'हाँ चाँद मेरा है' (१९९९) 'सुबह के इंतजार में' (२००६) जंगल जालियाँवाला एवं अन्य कविताएँ २००८ और दो आदिवासी विमश पुस्तके प्रकाशित हो गयी है 'धुणी तपे तीर' (२००८), डांग (२०२०) उपन्यास प्रसिध्द हुवे है।

उनका प्रसिध्द उपन्यास धुणी तपे तीर (२००८) में आपने मीणा आदिवासी समाज को जागृत करने उन्हे अन्याय शोषण के विरूध्द संघर्ष करने के लिए गोविंद गुरू द्वारा भीलो-मीणा आदिवासी समाज जागृति करते है। संगठन बनाकर लढना, बलिदान देना सिखाते है। हरिराम मीणा खुद पुलिस ऑफिस रहकर भी आदिवासी होने के कारण उनके स्वनुभव से उन्होने समाज की वेदना, संवेदना जानी थी। स्वनुभव से उन्होने आपने साहित्य रचना की, 'धुणी तपे तीर' उपन्यास वास्तविक परिस्थिती की रचना है। जिसमें १९१३ में राजस्थान में बांसवाडा ऑचल में स्थित मानगढ पहाडी आदिवासीयो के विरूध्द वहाके सांमतो और औपनिवेशक शक्तियो सत्ता के विरूध्द गोविन्द गुरू ने सभी आदिवासी के नेतृत्व में शांतिपुर्ण विद्रोह किया। लेकिन इंग्रजो के साथ देनेवाले भारतीय द्वारा औपनिवेशिक दमन की सें हिंसक हमला किया। हजारो आदिवासी एक हिंसा में धोके से हमला किया गया जिसमें हजारो आदिवासीयो की जान गयी। राजस्थान के

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

आदिवासीयो के बलिदान की यह सच्ची घटना है। इस उपन्यास में राजस्थान के भील और मीणा आदिवासीयो का प्रस्थापित व्यवस्था के खिलाप का अन्याय, शोषण, आत्याचार के विरूध्द संघर्ष किया। जो देश के इतिहास में एक काली घटना के रूप में लिखा गया। राजस्थान के आदिवासीयो का यह इतिहास घटना इस उपन्यास से हरिराम मीणा ने सजीव चित्रण लेखन किया है।

हरिराम मीणा का साहित्य वैश्विक स्तर पर सभी आदिवासीयो को आदर्श के रूप में इतिहास में दर्ज हुवा है। इस उपन्यास से मानगढ को हिंदी आदिवासी साहित्य जगत में मान-सन्मान दिया। पुलिस सेवा में रहते हिंदी साहित्य जगत में काम करना कोई आसान काम नही था। फिर भी हरिराम मीणा ने आपने भोले भाले समाज का सत्य इतिहास, वास्तव देश और दुनिया के सामने लाने के लिए और आपनी सोच, विचार की अभिव्यक्ती होने के लिए, आपनी रूची और सामाजीक उत्तरदायित्व निभाने के लिए समाज का साहित्य निर्माण किया।

आपने कविता के माध्यम सामाजीक चेतन जगाने का काम किया है । उनकी कविता राजस्थान के आदिवासी समाज, सभ्यता, आदिवासी जीवन, प्रकृती, सभ्यता का चित्रण करते है। हरिराम मीणा पुलिस सेवा में कार्यरत रहकर १५ साल तक आदिवासी संबंधी विविध इतिहासीक घटनाओं को साहित्य में लिखकर समाज का सन्मान बढाया। समाज को नयी चेतना वैश्विक स्तरपर देने का हरिराम मीणा ने किया है। इस लिए उन्हे विभिन्न पुरस्कार मिले.

५) ममांग दाई:-

भारत के पुरब दिशा के अरूणाचल राज्य में २३ फरवरी १९५७ में पासीघाट, पुर्वी सियांग राज्य अरूणाचल प्रदेश में उनका जन्म हुवा है। शिक्षा होने समय उन्होने समाज की स्थिती देखकर बहूत मेहनत की और IAS क्वालीफाई किया लेकिन उन्होने इस भारतिय सेवा में जाने के बजाये पत्रकारिता और लेखन साहित्य के आपने जीवन के पेशा बनाया। यह आदिवासी साहित्यीक अंग्रेजी भाषा में लिखन करते थे । उन्होने हिंदुस्थान टाइम्स द टेलीग्राफ और सेंटिनल समाचार जैसे वैश्विकंस्तर की पत्रकारिता की समाज की वेदना, शोषण, अन्याय आपनी साहित्य मे जगा बनायी। (उनका साहित्य सामग्री में द ब्लैक हिल (२०११),) उनका पहिला उपन्यास ऐअलुक (१९९३) में अरूणाचल प्रदेश के पहिला लिखा गया उपन्यास है द मैन एंड टाइगर (१९९९) ममांग दाई के द लीजेंड आॅफ पेनसम (२००६) अरूणाचल प्रदेश की सीमाओ से उन्हे बाहर जाने इस साहित्य से पहचान निर्माण हुवी। बाद में द हिडेंन लैंड, द स्काई कीन, स्टुपिड क्युपिड और माउंटेन हार्वेस्टः द फुड ऑफ अरूणाचल प्रदेश साहित्य रहा है। द ब्लैक हिल (२०११) में प्रसिध्द हुवा। इनकी साहित्य सामुग्री रही है।

ममांग दाई ने अरूणाचल प्रदेश के पहाड, नदिया, झरने, पेड, पौधे, पक्षी, हवा के आपने साहित्य में कविता से अभिव्यक्ती की। उनकी 'छोटे शहर और नदी' कविता हामे नदी की आत्मा की पुनरावृत्ती मानवीय चिंता की दिखाई देती है। वह आपने सह-अस्तित्व को जोडती है।

६) तेमसुला आओ:-

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

डनका जन्म २५ आक्टुबर १९४५ को जोरघाट असाम में हुवा। तेमसुला आओ पुर्वोत्तर भारत की एक प्रमुख आओ आदिवासी अंग्रेजी साहित्यकार रही है। उनके ६ काव्यसंग्रह प्रकाशित हुवे है। कहानी संग्रह, उपन्यास, संस्मरण, पाचिक साहित्य जैसे विभिन्न साहित्यीक विधायो में साहित्य का लेखन किया है। उनका पहिला काव्य संग्रह 'सोंग्स दैट टेल' (१९८८) प्रकाशित हुवा था। वह से उनका साहित्यीक कृतीया समाज को चित्रण साहित्य में लाती गयी। उनको रचना का अनुवाद जर्मन, फ्रेंच, असमिया, बंगाली और हिंदी में अनवादित किया गया है।

आदिवासी साहित्यीको में और बहुत सारे साहित्यीक है। जिनकी रचना हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना जागती है। उसमे जयपालसिंग मुंडा, महादेव टोप्पो, एलिस एक्का, जसिंता केरकेटा, सुशिला सामद, रामदयाल मुंडा, अनुज लुगुन, गंगासहाय मीणा और अन्य बहुत सारे आदिवासी साहित्यीक लोंगो ने आदिवासी समाज का सामाजिक आर्थिक, राजनितीक, सांस्कृतीक, धार्मिक, विचार, कार्य, कृती और विचारधारा को इस साहित्य के माध्यम से समाज में जो शियो के विरूध्द शोषण, अन्याय, अत्याचार, पिडा, हिंसा, दिखाई देती है। समाज की प्रस्थापित व्यवस्था, पुँजीपाती व्यवस्था, साहुकार, ठेकेदार, कंपनीयो सरकार नितीयो से संघर्ष इन सभी को साहित्यकारो ने इनका चित्रण आपने साहित्य में चित्रीत किये है।

यह सब आदिवासीयो का इतिहास, घटना, प्रकृती, सभ्यता, जीवन, मुल्य, जल, जंगल, जमिन और जीवन साथ आदिवासीयो का जीवन लेखको, साहित्यकारों कवियो का विषय रहा है। यही आपने साहित्य में चित्रन करते आ रहे है। गैर आदिवासी साहित्यीको में संजीव और रमणीका गुप्त का साहित्य बहुत सारे चर्चीत और प्रसिद्ध रहा है। हालंकी बहूत सारे साहित्यक कृतिमा उपलब्ध है। लेकिन हाम इन दो की जाणकारी लेंगे!

१) संजीव कुमार

उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के बाँगर गाँव में उनका जन्म ६ जुलाई १९४७ हुवा है। प्रारंभीक शिक्षा और नौकरी खोज में उन्होने विजिटिंग प्रोफेसर रहे। कुछ साले 'हंस' नामक प्रकाशक के संपादक का काम किया। बाद में वो स्वातंत्र रूप से लेखन करने लगे। उनकी साहित्यीक सामुग्री विपूल है। लगबघ दो सौ कहानियाँ और अहेर, सर्कस, सावधान। नीचे आग है।, धार, पाँव तले की दुब, जंगल जहाँ शुरू होता है।, आकाश चंपा, सुत्रधार, मुझे पहचानो और अन्य उपन्यास प्रसिद्ध है। संजिव का साहित्य आदिवासी समाज का यर्थाथ दर्शन, का चित्रण उनके साहित्यीक अभिव्यक्ती रही है। उनके साहित्य पर कुछ फिल्मे भी बनी है। साथ ही उन्हे उसके लिय पुरस्कार भी मिले है। उनका लेखन कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा साहित्य, बाल साहित्य के विविध
विधाएँ में लेखन किया है।

"संजीव का साहित्य के बारे में डॉ.रवि भुषण लिखते है। "संजिव की कहानिया का फलक व्यापक है प्रेमचन्द और यशपाल को छोडकर इतने बडे कथा-फलक का अन्य कोई कथाकार हिंदी मे नही है"

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

संजीव के साहित्य में आदिवासी के जल, जंगल, जमिन और जीवन का साहित्य चित्रण रहा है। साथ आदिवासी सभ्यता, प्रकृति पुजक समाज, मानपताओ से भरे विश्वमुल्य, भावना, प्रकृती प्रेम, मुल्य आदिवासी जीवन, परंपरा अन्य विभिन्न मुद्दो पर उनका साहित्य आदिवासी समाज का न्याय देने का काम करता है। आदिवासी की वेदना, अभिव्यक्ती संजीव ने आपने साहित्य चित्रित की है।

७) रमणिका गुप्ता:-

उनका जन्म २२ अप्रेल १९३० मे पंजाब में हुवा। उनके पिता सेना अधिकारी थे। और उनके पति एक सिविल सेवक थे। उन्हे दो बेटियाॅ और एक बेटा था। उनका निधन २०१८ मे ८८ वर्ष आयु में दिल्ली मे हुवा । रमणिका गुप्ता रमणिका फाउंडेशन की अध्यक्ष, नेता, राजनितिज्ञ, लेखिका, संपादक भी रही है। साथ बिहार विधानसभा की १९७९-८५ सदस्य भी रही है।

उनका हिंदी साहित्य में बहूत बडा योगदान रहा है। उनकी सबसे प्रसिध्द रचना रही उनकी खुद की आत्मकथा जो दो भागो में बटी है। हादसे (२००५) आपहुदरी (२०१५) यह भारतीय राजनीति के संघर्ष, सत्तावादी प्रवृत्तियों का प्रखरता से चित्रित किया है। रमणिका का साहित्य 'स्त्री' योके विविध विधाओं में अलग नजरिये से लेखन किया है। आत्मकथा, ईमानदारी मांगती है। वह इमानदारी रमणिका गुप्ता आपने आत्मकथा में दो भागों में देती है। रमणिका गुप्ता का जीवन संघर्ष शोषण खिलाफ लढाई का था। इस लिय वह कहती है। इस राजनितीक, पुरूषी व्यवस्था की बली मत चढो, संघर्ष करो, अन्याय, शोषण के खिलाफ आवाज उठावो, उन्होने आदिवासीयो के महिलायो को बताया की यह की पुंजीवारी व्यवस्था साहुकार, ठेकेदार, जमिनदार, खदानान के खिलाफ अन्याय का विरोध्द करो, जुल्म सहन मत करो। यह लोक पॉव के अंगूठे के निशान लगाकर मजुर के पैसे लेते है कोयला खदान से १०-११ साल संघर्ष करते १९७० में खदानो का राष्ट्रीयकरण हो गये। अब खदान सरकारी बन गयी। शोषण रूका लेकिन ११ साल अन्याय सहने के बाद रमणिका जी एक बार मजदुरो के लिए बिहार काँग्रेस से भी लढी थी। यह मजदुर सब आदिवासी थे। रमणिका जी हरिये की आवाज के न्याय देना चहती थी। उन्होने स्त्रियो के मुद्दो को समस्त भारतीयो के सामने लाया। स्त्रीया का शोषण अत्याचार, पिडा को रोके। नही तो समाज व्यवस्था खत्म हो जायगी। स्त्रीयो को कभी अन्याय सहना नही हिमत्तवान बनो,संघर्ष करो का मंत्र वो देती है।

निष्कर्ष:-

सदियो से इस भूमी पर आदिवासीयो का निवास रहा है। आदिवासी समाज आपनी, सभ्यता, परंपरा, रितिरिवाज, प्रकृती पूजा, जल, जंगल, जमिन और जीवन में रहना चाहते है। लेकिन बदली परिस्थिती भूमंडीलीकर, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकीकरण, विज्ञान का हक्क से जादा उपयोग इन दुष्कर्म में आदिवासी की प्रकृती पूजा और आदिवासी जीवन फसा है। प्रस्थापित व्यवस्था, सरकारी नितीय, ठेकेदार, कंपनीदार, जंगल, जल, जमिन पर कब्जा करना चाहती है। आदिवासी उसे पूजते है। इन दो समुह में संघर्ष होता आ रहा है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

यह हिंदी साहित्यकारो का लेखन का विषय रहा है। यह की व्यवस्था साथ ही 'स्त्री' का शोषण भी कर रही है। इस लिए संघर्ष की गती और बढती चली जा रही है। आदिवासी के पूर्वजनोने सदियो से जंगल, पहाड, पेड, नदिया, जमिन पर उनका निवास रहा है। उनको कोई छेडता है। तो वह आदिवासीयो का दुश्मन हो गया। हिंदी साहित्य में यह संघर्ष का चित्रण किया गया है।

इस धरती, प्रकृती, पर्यावरण, वातावरण, जल, जंगल, जमिन को अगर बचाना है। प्रकृती की विभिन्न समस्या से मानव को बचना है। तो उसे आदिवासी सभ्यता से प्रकृती मुल्य, मानवी मुल्य, पर्यावरण मुल्य सिखने होंगे। और उसे साहित्य के माध्यम से दुनिया के 'मानवता' के लिए आदिवासी सभ्यता, प्रकृती, पर्यावरण के लिए आदिवासी संस्कृती, आपनावो उसे साहित्य से राष्ट्रीय चेतना जगाओ का संदेश देते है।

संदर्भ:-

१) 'ग्लोबल गाँव के देवता' - रणेन्द्र भारतीय ज्ञानपीठ वानी प्रकाशन — २००९
२) जंगल जॅहा शुरू होता है — संजीव राधाकृष्ण पेपरबॉक्स प्रकाशन — २०१०
३) आदिवासी आस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल - डॉ. रामदयाल मुंडा
प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली सन २००२
४) आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन - वेदना टेटे Nation Press India Singapore, malaysia-२००२
५) 'आदिवासी विमर्श' (रणेन्द्र के उपन्यासे में)विनोद विश्वकर्मा, प्रलेक प्रकाशन
६) आपहुदरी - रमणिका गुप्ता Samayik Prakashan-२०१६
७) गायब होता देश - रणेन्द्र पेंगुइन बुक्स - २०१४
८) धूणी तपे तीर - हरीराम मीणा भारतीय साहित्य - २००८

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

१२. राष्ट्रीय चेतना और छायावाद युगीन काव्य

डॉ. दिलीप सिंह राजपूत,
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
रानी पद्मावती महाविद्यालय लोरमी, जिला- मुंगेली(छ.ग.) 495115,
मो.नं.- 9098771548, Email- dilip61286@gmail.com

शोध सारांश:-
हिंदी साहित्य का इतिहास एक समृद्ध और गौरवशाली ज्ञान परंपरा को लिए हुए आगे बढ़ रही है। इसका गहराई से अध्ययन करने पर पता चलता है कि भारतेंदु युग से ही हिंदी गद्य लेखन परंपरा की शुरुआत हुई। इस युग के साहित्य में अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह के स्वर मुखरित होने लगे थे। यह द्विवेदी युगीन जागरण सुधार काल से होते हुए जब छायावादी युग में प्रवेश करता है, तो इसका उद्देश्य राष्ट्रवाद, देशप्रेम से होते हुए राष्ट्रीय चेतना के जागरण तक पहुंचकर जनता में स्वातंत्र्य की भावना को जागृत करना हो जाता है। इस युग के साहित्य ने लोगों में पराधीनता की बेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्रता के उन्मुक्त आकाश में विचरण करने हेतु प्रेरित करते हैं। इस युग में छायावाद के चार स्तंभों के रूप में सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा इत्यादि हुए, इनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर दिखाई देते हैं। इनके अलावा माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, उदय शंकर भट्ट, मुकुटधर पांडे इत्यादि द्वारा लिखे गए राष्ट्रीय चेतना जागरण से ओत-प्रोत काव्य को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। इस प्रकार कहा जा सकता है कि छायावादी युगीन काव्य ने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना के संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीज शब्द: छायावाद, राष्ट्रीय चेतना, पराधीनता, स्वतंत्रता, स्वच्छंदता, रहस्यवाद, आध्यात्मिकता, प्रतीकात्मकता, मानवतावाद, राष्ट्रीयता, आत्मविश्वास, आत्मगौरव इत्यादि।

मूल आलेख:-
हिंदी साहित्य के गौरवशाली इतिहास अध्ययन परंपरा में हम पाते हैं, कि भारतेंदु युग ही हिंदी गद्य साहित्य का प्रवेश द्वार है। क्योंकि इस युग से ही हिंदी साहित्य का गद्य रूप में लेखन प्रारंभ हुआ था। यह काल अंग्रेजों के दमनकारी नीति व कुशासन का युग था, अतः अंग्रेजों के इस रवैये से निजात हेतु राष्ट्रभक्ति की भावना को जागृत करने की आवश्यकता महसूस हुई। इस महानतम् कार्य का बीड़ा भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने उठाया। उन्होंने 'भारत-दुर्दशा' जैसे नाटक लिखकर लोगों में राष्ट्रीय-भावना व राष्ट्रीय-चेतना के जागरण का कार्य किया।

अंग्रेजी शासन व्यवस्था के प्रति लोगों में जो आक्रोश था, वह भारतेंदु युगीन साहित्य में परिलक्षित होने लगी थी। इसी भावना रूपी डोर को पकड़कर द्विवेदी युग भी चलता रहा। द्विवेदी युगीन काव्य में

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना मुखरित होने लगी थी। द्विवेदी युग में ऐसे अनेक प्रबंध-काव्यों की रचना हुई, जिसमें राष्ट्र प्रेम की भावना स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित हो रही थी।

भारतीय राजनीति के क्षेत्र में जिस युग को गाँधी युग के नाम से जाना जाता है, वही काव्य में छायावादी युग का प्रतिनिधित्व करता है। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि छायावादी काव्य, गाँधी युग की मिट्टी में अंकुरित होकर पुष्पित व पल्लवित हुआ। छायावादी युग राष्ट्रीय चेतना जागरण का चरमोत्कर्ष युग था। इस समय आम जनमानस स्वतंत्रता की भावना लिए हुए, पराधीनता से मुक्ति के लिए बहुत अधिक प्रयासरत था। अतः इस भाव के प्रकटीकरण व उसके पोषण में छायावादी काव्य साहित्य ने अमृततुल्य कार्य किया। परंतु कुछ लोगों का मानना था, कि छायावादी काव्य अपने युग का प्रतिनिधित्व करने के बजाय उसकी उपेक्षा करते हुए स्वप्नलोक में जी रहा था अतः उसका रवैया पलायनवादी था। किंतु ऐसे लोगों द्वारा छायावादी काव्य को एक सिरे से पलायनवादी काव्य कह देना उचित न होगा। क्योंकि ऐसा वही कह सकता है, जो छायावाद को अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का अनुकरण मानकर स्वच्छंदतावाद की संज्ञा देते हैं। यह बात पूर्णतः सत्य है कि छायावाद में प्रतीकवाद, रहस्यवाद, ध्वन्यात्मकता, आध्यात्मिकता, लाक्षणिकता, कल्पना की अभिव्यक्ति, प्रतीकात्मकता तथा स्वच्छंदतावाद, प्रेम की उन्मुक्तता, सौंदर्य की ललक, रूढ़ियों व बंधनों का विरोध और विस्मय की भावना का समावेश है, किन्तु साथ ही उसमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर का बंधुत्ववाद, विवेकानंद व रामतीर्थ जैसे योगियों का अद्वैतमूलक भक्तिभावना, विदेशी शासन का विद्रोह, राष्ट्रीयता की भावना तथा गाँधी जी का मानवतावाद भी समान रूप से समाविष्ट था। इस प्रकार, छायावादी काव्य की मुख्य भाव-धारा राष्ट्रीय, सांस्कृतिक व मानवीय है।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी जी के शब्दों में "छायावादी काव्यधारा का भी एक आध्यात्मिक पक्ष है, किंतु उसकी मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय व सांस्कृतिक है। उसे हम बीसवीं शताब्दी की मानवीय प्रगति की प्रतिक्रिया भी कह सकते हैं।" छायावादी युग रहस्यवाद, स्वच्छंदतावाद, राष्ट्रीयता, मानवतावाद, आध्यात्म और सूक्ष्म सौंदर्यबोध का अद्भुत संगम है। किन्तु छायावाद के मूल में रचनात्मक है, जो राष्ट्रीयता की सशक्त आकांक्षा लिए हुए, भारतीय संस्कृति की जीवन परंपरा व नवीन मानवतावाद के आदर्श की प्रेरणा से ओत-प्रोत है।

सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक दृष्टि से छायावादी युग उथल-पुथल से भरा हुआ था। आंदोलन, संघर्ष, विभ्रम, द्वंद आदि इस युग की प्रमुख विशेषताएं थी। ये सभी प्रवृत्तियाँ कहीं न कहीं छायावादी काव्य को परोक्ष रूप से प्रभावित कर उसे अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति देता है। किसी भी काव्यधारा का आविर्भाव अनायास ही नहीं होता, अपितु यह उस युग के कवियों का क्रमशः योगदान होता है। छायावाद के आविर्भाव में इसके चार स्तंभ कवियों सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद व महादेवी वर्मा की रचनाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन कवियों ने छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के भाव को मुखरित किया। लेकिन छायावादी काव्य के विकास में इन्हीं चार कवियों को सर्वस्व मान लेना उचित नहीं होगा, इस बात की पुष्टि करते हुए सुमित्रानंदन पंत जी कहते हैं कि "छायावादी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

काव्य को कवि चतुष्ट्य तक सीमित कर देना मुझे विचार की दृष्टि से संगत प्रतीत नहीं होता। अभिव्यंजना शैली, भाव-संपदा, सौंदर्य बोध तथा काव्यवस्तु आदि की दृष्टि से उस युग के आगे-पीछे भी अन्य अनेक ऐसे समृद्ध कवि हुए हैं, जो छायावाद के उद्भव व विकास में सहायक हुए हैं। इन कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, उदयशंकर भट्ट, मुकुटधर पाण्डेय, सियारामशरण गुप्त, डॉ.रामकुमार वर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', इलाचंद्र जोशी आदि अनेक लब्ध-प्रतिष्ठित कवियों के नाम गिनाए जा सकते हैं।" अतः पंत जी द्वारा सुझाए गए इन समस्त कवियों को छायावादी विचारधारा से युक्त मानकर छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर का मूल्यांकन करना सर्वथोचित प्रतीत होता है।

छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति जिन तीन मुख्य भावभूमियों में हुई है, वे हैं- भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरवगान, भारत के वर्तमान दयनीय दशा का चित्रांकन तथा भारत के उज्ज्वल भविष्य का रूपांकन। इन तीनों भावभूमियों को एक सूत्र में बांधने का काम जिन्होंने किया, वे इस युग के कवि ही हैं। वर्षों तक गुलामी की मानसिकता से जकड़े हुए देशवासियों को इस मानसिकता से निकलकर उनमें आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव के संचार हेतु भारतभूमि के स्वर्णिम इतिहास का वंदन, स्मरण व गौरवगान आवश्यक था। अतः छायावादी कवियों ने इन्हीं तथ्यों को लक्ष्य में रखकर अपना काव्य लेखन जारी रखा।

छायावादी कवियों के काव्यों में देशप्रेम व मातृभूमि वंदना की जो अभिव्यक्ति हुई है, उसे प्रसाद जी के निम्नलिखित पंक्तियों से समझा जा सकता है-

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोंच लो।
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।।"

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी कविता 'खंडहर के प्रति' में भारत के महामानव का स्मरण करते हुए कहते हैं कि-

"आर्त भारत! जनक हूं मैं
जैमिनि-पतंजलि-व्यास ऋषियों का,
मेरी ही गोद पर शैशव-विनोद कर
तेरा है बढ़ाया मान
राम-कृष्ण-भीमार्जुन-भीष्म-नरदेवों ने।"

डॉ. रामकुमार वर्मा ने लोगों में देशप्रेम की भावना जागृत करने हेतु अपनी कविता 'चित्तौड़ की चिता' में राजपूतों के शौर्य, बलिदान व स्वदेश प्रेम को निम्नांकित पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त किया है-

"कभी थे राजपूत अति न्यून,
किन्तु था प्रिय स्वदेश अभिमान,
नारियों ने भी ली असि तान,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

चढ़ाये रण में आत्म-प्रसून।"

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने लोगों में राष्ट्रीय चेतना के जागरण हेतु जागरण गीत गाए, जिसे 'जागो फिर एक बार' कविता के निम्नलिखित पंक्तियों से समझा जा सकता है-

"योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं,
गीता है, गीता है,
स्मरण करो बार-बार,
जागो फिर एक बार।"

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविता 'उर्मिला' में भारत के अतीत का गौरवगान किया है, वे कहते हैं कि-

"पर चलने के पूर्व यहां से कर ले तू वंदन अभिराम,
इस सरयू सरिता का जिसकी बालू में खेले हैं राम,
रघु ने तपस्या करके आर्य धर्म पाला जी भर के,
जहां दिलीप सुधन्वा विचरे राजदंड शुभ कर में घर के।"

इस प्रकार प्रमाण स्वरूप हम कह सकते हैं कि छायावादी कवियों ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने हेतु मातृभूमि की वंदना की, जिसे प्रसाद जी के निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से प्रमाणित किया जा सकता है-

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।"

इसी प्रकार, निराला जी मातृभूमि को देवी मानकर उसे प्रतिष्ठित करते हुए कहते हैं कि-

"भारति जय विजय करे!
कनक-शस्य-कमल धरे!
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता-शुचि चरण-युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे।"

माखनलाल चतुर्वेदी ने भारतीय जनमानस को जागृत कर बलिदान हेतु आह्वान किया, इस निम्नांकित पंक्तियों द्वारा समझा जा सकता है-

"चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।।"
इसी प्रकार, अपनी कविता 'कैदी और कोकिला' में पराधीनता का वर्णन करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी जी कहते हैं-
"तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली।
तेरा नभ भर में संचार,
मेरा दस फुट का संसार।"
इस पंक्ति के माध्यम से कवि बताना चाहता है, कि पराधीनता में जीवन जीने वाले भारतीयों से कहीं ज्यादा अच्छे तो वे पशु-पक्षी हैं, जो पराधीनता की बेड़ियाँ रूपी पिंजड़े को तोड़कर स्वतंत्रता रूपी खुली हवा में सांस ले रहे हैं।
सुभद्रा कुमारी चौहान भी छायावादी युग की एक प्रमुख कवयित्री रही है, उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के जागरण हेतु निम्नलिखित प्रकार की पंक्तियों का सहारा लिया-
"चमक उठी सन् सत्तावन में,
वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह,
हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी,
वह तो झांसी वाली रानी थी।"
भारतीयों की पराधीनता से मुक्ति की कामना हेतु निराला जी ने जिन पंक्तियों को अपने काव्य में स्थान दिया, वह है-
"अयोगी भाल पर भारत की गई ज्योति,
हिंदुस्तान मुक्त होगा घोर अपमान से,
दासता के पाश कट जावेंगे।"
'आशा की दीपक' नामक कविता में भारत के आशावादी उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए रामधारी सिंह दिनकर जी कहते हैं कि-
"दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य-प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनल-अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी में लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही,
अम्बर पर घन बन जाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

थककर बैठ गये क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।"

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि भारत की स्वतंत्रता की कामना करते हुए अपनी आशावादी विचारों को व्यक्त किया है तथा कहा है कि भारत की स्वतंत्रता का फूल खिलकर रहेगा।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त सभी तथ्यों के आलोक में इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की समुचित अभिव्यक्ति हुई है। छायावादी कवियों के केंद्र में राष्ट्र-प्रथम का भाव था। उन्होंने गुलामी की जंजीरों से जकड़े भारतीय मन:स्थिति को स्वतंत्रता रूपी स्वच्छंद आकाश में विचरण हेतु पथ प्रदर्शन का कार्य किया। लोगों में आत्मविश्वास व आत्मगौरव के भाव को पुष्ट कर उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन हेतु जागृत करने का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि छायावाद युगीन काव्य लेखन का मुख्य ध्येय राष्ट्रीय चेतना का जागरण कर आम जनमानस के विश्वास को पुष्ट करना तथा आत्मबोध से राष्ट्रबोध तक की कड़ी को जोड़ना था।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मिनाल एजुकेशनल बुक प्रकाशन, संस्करण-२०१७, पृष्ठ-४०७-५०२.

पाण्डेय गर्ग, डॉ.माधुरी, आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना, नमन प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०२२, पृष्ठ-१९३-२०१.

त्रिपाठी, विश्वनाथ, हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, दशम संस्करण-२०१८, पृष्ठ-७७-१४३.

कुलकर्णी, प्रो.सुनील बाबूराव, हिन्दी काव्य संग्रह, केंद्रीय हिन्दी संस्थान प्रकाशन आगरा, संस्करण-२०२५.

शर्मा, रामविलास, राग विराग:सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण-२०१४, पृष्ठ-५९.

पंत, सुमित्रानंदन, रश्मिबंध, राजकमल प्रकाशन, अठ्ठाइसवाँ संस्करण-२०१५, पृष्ठ-९-३२.

कुलकर्णी, प्रो.सुनील बाबूराव, हिन्दी काव्य संग्रह, केंद्रीय हिन्दी संस्थान प्रकाशन आगरा, संस्करण-२०२५, पृष्ठ-१४१.

गुप्ता, डॉ.मनोज कुमार, हरिश्चंद्र कृत भारत दुर्दशा, मलिक एण्ड कंपनी जयपुर, संस्करण-२०१६, पृष्ठ-७-४८.

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

१३. आधुनिक हिंदी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना

प्रा.कापावार.व्ही.डी

सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष

राजमाता जिजाऊ महाविद्यालय,किल्ले धारूर जि .बीड

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं, खासकर महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों पर भी गहरी दृष्टि डाली है। राष्ट्रीय चेतना, जो भारतीय समाज में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरूकता का प्रतीक है, महिला लेखन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से लेकर वर्तमान समय तक, इन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में महिलाओं के संघर्ष, उनकी सामाजिक स्थिति और उनके अस्तित्व के प्रश्नों को उजागर किया है। इन उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के न केवल व्यापक संदर्भ बल्कि स्त्री विमर्श और समाज सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राष्ट्रीय चेतना वह मानसिकता या जागरूकता है, जो एक समाज को अपने अधिकारों, स्वतंत्रता और सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सुधारों की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील बनाती है। यह चेतना केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह समाज के भीतर व्याप्त असमानताओं, भेदभाव और मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता को भी प्रकट करती है। भारतीय हिंदी साहित्य में महिलाओं का योगदान न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को जागरूक करने के साथ-साथ समाज में बदलाव की दिशा में भी अहम भूमिका निभाई है। महिला उपन्यासकारों ने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय समाज की जड़ताओं और कुरीतियों को चुनौती दी है, साथ ही महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों के प्रति अपनी आवाज़ उठाई है।

राष्ट्रीय चेतना और महिलाओं की भूमिका :

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान केवल क्रांतिकारी गतिविधियों तक सीमित नहीं था। भारतीय महिलाओं ने समाज सुधारक आंदोलनों में भी भाग लिया, जैसे ब्राह्मो समाज, आर्य समाज, और हिंदू धर्म सुधार आंदोलन। महिलाओं ने शिक्षा, वोट देने का अधिकार और संपत्ति पर अधिकार जैसी मूलभूत चीजों के लिए संघर्ष किया। ये संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं थे, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण थे। जब हम साहित्य के संदर्भ में राष्ट्रीय चेतना की बात करते हैं, तो यह केवल राजनीति या स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सामाजिक सुधारों, शिक्षा, और महिलाओं के अधिकारों के लिए भी एक मंच बन जाता है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

आधुनिक हिंदी महिला उपन्यासकार:

आधुनिक हिंदी महिला उपन्यासकारों में शिवानी, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्गल, विमला ठाकुर, सुरेखा सक्सेना, और निधि श्रीवास्तव जैसी लेखिकाओं का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इन लेखिकाओं के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना और समाज की उन्नति के विभिन्न आयाम प्रस्तुत किए गए हैं। हालांकि, इन लेखिकाओं के विषय, लेखन शैली और दृष्टिकोण अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन उनका उद्देश्य समाज में व्याप्त असमानता, भेदभाव, और अनियंत्रित संरचनाओं को चुनौती देना था।

राष्ट्रीय चेतना का परिपेक्ष्य:

राष्ट्रीय चेतना का संबंध उस सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक जागरूकता से है जो किसी समाज या देश के विकास और उसकी पहचान के निर्माण में योगदान करती है। यह चेतना न केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष से संबंधित है, बल्कि यह समाज की संरचना, वर्गभेद, जातिवाद, और लिंग आधारित असमानताओं के खिलाफ भी सक्रिय होती है। महिला उपन्यासकारों के लेखन में यह चेतना अक्सर एक सशक्त महिला के रूप में प्रकट होती है, जो अपनी सामाजिक स्थिति से संघर्ष करती है और समाज की बदलती सोच का हिस्सा बनती है।

शिवानी के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना:

शिवानी (१९२३-२०००), जिन्होने ने हिंदी साहित्य में एक खास स्थान बनाया है। उनके उपन्यासों में खासतौर से महिलाओं के आत्मनिर्भर होने, सामाजिक बाधाओं को तोड़ने और राष्ट्रीय एकता के विचारों को उजागर किया गया है। उनका उपन्यास "तितली" विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें एक महिला पात्र की स्वतंत्रता की इच्छा और उसकी व्यक्तिगत यात्रा को केंद्रित किया गया है। शिवानी का लेखन राष्ट्रीय चेतना के साथ महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके संघर्ष को जोड़ता है, जो भारतीय समाज के परिवर्तन की ओर संकेत करता है।

मन्नू भंडारी का साहित्य और राष्ट्रीय चेतना:

मन्नू भंडारी (१९३१-) हिंदी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका हैं। उनके उपन्यासों में महिलाओं की मानसिकता, उनके आत्म-संघर्ष, और समाज की असमानताओं के खिलाफ एक प्रतिबद्धता दिखाई देती है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास "आपका बंटी" में महिला पात्र का संघर्ष और उसे अपनी पहचान बनाने की प्रक्रिया को दर्शाया गया है। भंडारी के लेखन में महिलाओं की सामाजिक सशक्तिकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उनका लेखन भारतीय समाज की जड़ताओं और परंपराओं को चुनौती देने का एक प्रयास है, जो राष्ट्रीय चेतना से जुड़ा हुआ है।

चित्रा मुद्गल और राष्ट्रीय चेतना:

चित्रा मुद्गल (१९४४-) का लेखन भारतीय समाज में व्याप्त असमानताओं, विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने का काम करता है। उनके उपन्यास "आवाज़" और "चंद्रमुखी" में महिलाओं के संघर्ष, उनके अधिकारों के लिए खड़ी होने की प्रेरणा और समाज में समानता की आवश्यकता

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

को प्रमुखता से रखा गया है। मुद्गल के उपन्यासों में महिलाओं की सामाजिक चेतना और उनकी स्वतंत्रता की ओर बढ़ता कदम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। निर्मला श्रीवास्तव :

निर्मला श्रीवास्तव के उपन्यासों में महिला जीवन की त्रासदी, उनके संघर्ष, और उनके अस्तित्व के सवालों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उनका लेखन महिलाओं की स्थिति, समाज में उनके स्थान, और उनकी पहचान के बारे में महत्वपूर्ण सवाल उठाता है। निर्मला के लेखन में राष्ट्रीय चेतना का एक अनोखा रूप देखने को मिलता है, जिसमें महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक अधिकारों के लिए आंदोलन को प्रकट किया गया है।

वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीय चेतना:

आज के समय में, महिला लेखकों के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना न केवल सामाजिक सुधारों के रूप में प्रकट होती है, बल्कि यह एक व्यापक दृष्टिकोण से समाज की गतिशीलता, धर्म, जाति और वर्गभेद के खिलाफ जागरूकता पैदा करने के रूप में भी उभरती है। महिला लेखकों के द्वारा लिखे गए उपन्यासों में महिलाओं का आत्मसाक्षात्कार और उनके अधिकारों के प्रति सजगता का संदर्भ वैश्विक रूप से महत्व रखता है।

महिला उपन्यासकारों ने न केवल राष्ट्रीय चेतना को जागरूक किया है, बल्कि उन्होंने समाज में व्याप्त असमानता, भेदभाव, और महिलाओं के अधिकारों को लेकर गहरी चर्चा की है। उनके उपन्यासों में देखा जा सकता है कि समाज में व्याप्त पुरानी धारणाओं, परंपराओं और संरचनाओं को तोड़ने का प्रयास किया गया है। महिलाओं का आत्मनिर्भर बनना, समाज में समान अधिकारों की प्राप्ति, और सामाजिक बदलाव की दिशा में कदम बढ़ाना इन लेखिकाओं का केंद्रीय विषय रहा है।

निष्कर्ष:

आधुनिक हिंदी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इन लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों को प्रमुखता दी है। उनके उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना की भावना केवल राजनीतिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह समाज में व्याप्त असमानताओं, भेदभाव और महिलाओं के संघर्ष के परिपेक्ष्य में उभरी है। इन उपन्यासों ने महिलाओं के आत्म-साक्षात्कार, स्वतंत्रता, और समाज में समानता की आवश्यकता को प्रमुखता से उजागर किया है। इस प्रकार, आधुनिक हिंदी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों ने न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि भारतीय समाज को जागरूक करने में भी अपनी भूमिका निभाई है।

राष्ट्रीय चेतना और महिला उपन्यासकारों का योगदान एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। इन उपन्यासकारों ने अपने लेखन के माध्यम से न केवल महिलाओं के संघर्ष और उनके अधिकारों को उजागर किया, बल्कि समाज में बदलाव की आवश्यकता और समानता की भावना को भी प्रस्तुत किया है। इन लेखिकाओं का लेखन भारतीय समाज में स्त्री मुक्ति और समान अधिकारों के आंदोलन को प्रोत्साहित

करता है, साथ ही यह राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी सहायक रहा है। उनका योगदान साहित्य, समाज और राजनीति के विभिन्न क्षेत्रों में एक सकारात्मक बदलाव की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ:

शिवानी, "तितली", [साहित्य अकादमी, १९६३].
मन्नू भंडारी, "आपका बंटी", [राजकमल प्रकाशन, १९७१].
चित्रा मुद्गल, "आवाज़", [प्रभात प्रकाशन, १९९६].
"महिला और समाज: हिंदी साहित्य में महिला लेखन", [हिंदी साहित्य का इतिहास, २०१०].
"राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य", [संपादित पुस्तक, २०१५].

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

१४. आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

प्रा.डॉ.भारत बा.उपाध्य
सहयोगी प्राध्यपक,हिन्दी विभाग
वारणा महाविद्यालय,ऐतवडे खुर्द, जिला. सांगली (महा.)
9921808286 dr.bharatupadhya@gmail.com

सारांश

आदिवासी साहित्य और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के बीच गहरा संबंध है, जहाँ आदिवासी साहित्य ने स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी संघर्षों और प्रतिरोधों को दर्शाया है। आदिवासी साहित्य में देश के प्रति प्रेम, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय एकता के प्रति जागरूकता दिखाई देती है। आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अर्थ - के प्रति प्रेम, शोषण व अन्याय के खिलाफ संघर्ष की भावना से जूडा है जीसका उहापोह अपनी कविता,कहानी,उपान्यास,नाटक साहित्य में आ गया है। आदिवासी साहित्य एक महत्वपूर्ण साहित्यिक धारा है जो समाज में अन्याय, शोषण और पहचान के प्रश्नों को उभारता है। आदिवासी विमर्श और उनके साहित्य का हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। आदिवासी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों, परंपराओं और जीवन दृष्टिकोण का साहित्य में श्रेष्ठ चित्रण हुआ है। आदिवासी साहित्य एक ऐसा साहित्यिक आंदोलन है, जो आदिवासी समुदायों के अनुभवों, संघर्षों, संस्कृति और सामाजिक स्थिति को उजागर करता है। आदिवासी साहित्यकारों द्वारा लिखे गए साहित्य और उनके जीवन संघर्ष पर केंद्रित है। प्रो0 वामन शेलमार्क आदिवासियों के जीवन संघर्ष ,आदिपुत्रों का शोषण का चित्रण करते हुए कहते है कि- "हे वनपुत्रों, यहाँ जीवन / सजाना पड़ता है/आँख को मत्यु की दिशा दिखवाकर / जिन्होंने समस्त आदिपुत्रों का किया शोषण / उनके रक्त से ही लिखना होगा / रक्त रंजित इतिहास।"१

बीजशब्द-आदिवासी,राष्ट्रीय चेतना,शोषण, संघर्ष, विस्थापन,राजनीति,पीडा,वेदना.विद्रोह,स्त्री

प्रस्तुत शोध पत्र में आदिवासी साहित्य में उनके जीवन के यथार्थ और उनके संघर्षों को विश्लेषित करते हुए राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डाला गया है। आदिवासी साहित्य, आदिवासी जीवन को समझने, उनकी समस्याओं को उजागर करने और उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आदिवासी साहित्य विमर्श जिसमें देश के प्रति प्रेम, साहित्यिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक प्रतीक और सामाजिक न्याय के मुद्दे शामिल हैं। आदिवासी साहित्य और संस्कृति भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंश है। आदिवासी साहित्य आदिवासी समाज की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, राष्ट्रीय प्रेम,संघर्षों और उनके आत्मसम्मान की अभिव्यक्ति है। आदिवासी समुदाय के साहित्य को मुख्यधारा में लाने और उनके राष्ट्रीय योगदान को मान्यता देने पर केंद्रित है। आदिवासी विमर्श साहित्य में उन विषयों पर केंद्रित है जो आदिवासी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

समाज की समस्याओं, संघर्षों और सांस्कृतिक के साथ-साथ् राष्ट्रीय प्रेम पहचान को उजागर करते हैं। यह विमर्श उनके जीवन, अनुभवों और समाज में उनके हाशिए पर होने की स्थिति को साहित्यिक समग्र है।

आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख बिंदू :-

राष्ट्रीय स्तर पर आवाज :-

आदिवासी साहित्य, राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासियों की भागीदारी और उनके अधिकारों के लिए आवाज उठाता है । किसी भी समाज की समझने के लिए उस समाज का लिखित साहित्य होना आवश्यक है। लिखित परम्परा से उस समाज की प्रथाएं, मूल्य संस्कृति , रूढियाँ एंव राष्ट्रीयता का पता चलाता हे । "आदिवासी दर्शन व साहित्य का मूलाधार पुरखा साहित्य ही है। पुरखा साहित्य आदिवासी समाज में हजारों वर्षों से जारी मौखिक साहित्य की परंपरा है।" २. हमारा भारत देश सब धर्म समुदाय का देश है । इस देश मे सबको समता,स्वतंत्रता और सबको न्याय मिलना चाहिए । सभी जातियाँ एक समान होती है । कोई बडा कोई छोटा नहीं होता है । सब एक समान होते है ।

शोषण, विस्थापन, अन्याय संघर्ष और प्रतिरोध :-

आदिवासी साहित्य में, शोषण, विस्थापन, और अन्याय के खिलाफ संघर्ष और प्रतिरोध की भावना प्रबल रूप से दिखाई देती है । आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना को समझने के लिए उनके जल, जंगल, जमीन की रक्षा को समझना बहुत जरूरी है । वह जल, जंगल और जमीन को बचाने के लिए संघर्ष और प्रतिरोध करता है। उनका अस्तित्व संबंधी संकटों और उनके खिलाफ जारी प्रतिरोध को साहित्यकारो ने दर्शाया गया है। साथ ही साथ् आदिवासी के साथ भेदभाव का होना । राष्ट् के लिए हानीकारक होता है,इससे ही राष्ट्रीय चेतना का जन्म् होता है। आदिवासी साहित्य मौखिक परंपरा से शुरू होकर लिखित रूप में विकसित हुआ है।, आदिवासी दुनिया - मीणा हरिराम ने लिखा है कि "आदिवासियों के जीवन की दशा को गहराई से देखने पर राष्ट्रीयता, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, समानता, सभ्यता, सर्वांगीण विकास जैसे शब्दों के अर्थ खोखले लगते हैं। ३ अपने सरकार की नई नीतिया जैसे खाजगीकरण,उदारीकरण और भूमंडलीकरण के कारण आदिवासी समाज में शोषण - उत्पीड़न की प्रक्रिया तेज हुई और सरकार का पूरजोर प्रतिरोध हुआ । उसके प्रतिरोध का स्वरूप राष्ट्रीय था इसलिए प्रतिरोध से निकली रचनात्मक उर्जा का स्वरूप भी राष्ट्रीय स्त्र का है ।

आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना, शोषण, विस्थापन और अस्मिता के सवालों के साथ-साथ, आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान और संघर्ष को उजागर करता है, समकालीन हिंदी कवयित्रियों में श्रीमती निर्मला पुतुल एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। आदिवासी जीवन का यथार्थ चित्रण करती उनकी रचनाएँ सुधीजनों में विशेष लोकप्रिय हैं। नारी उत्पीड़न, शोषण, अज्ञानता, अशिक्षा आदि अनेक विषयों पर उनकी लेखनी चली है। समाज में अपनी अस्मिता और अधिकारों के लिए नारी सदैव संघर्षरत रही है।" कैसा बिकाऊ है तुम्हारी बस्ती का प्रधान,जो सिर्फ एक बोतल विदेशी दारू में रख देता है, —"पूरे गाँव को गिरवी और ले जाता है,कोई लकड़ियों के गट्ठर की तरह,लादकर अपनी गाड़ियों में ,तुम्हारी बेटियों को हजार पाँच

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

सौ हथेलियों पर रखकर ।" राजनीति के क्षेत्र में नेता अपने गाव को गिरवी रख् लेता है कुछ दामो के लिए सब कुछ बेचता है। आदिवासी समाज में आज भी एक बोतल दारु के लिए अपने को गिरवी रख् देता है यह उनकी पीडा आज भी दिखाई देती है। लोगों को पहचानने और उनके चंगुल में न फँसने की हिदायत देते हुए कवयित्री कहती हैं-

'वे लोग हैं जो
हमारे ही बिस्तर पर करते हैं
हमारी बस्ती का बलात्कार
और हमारी ही जमीन पर
खड़ा हो पूछते
हमसे हमारी औकात" ४

पहचान, संस्कृति परंपरा और अस्मिता :-

यह साहित्य आदिवासी समाज की अपनी पहचान, संस्कृति और परंपराओं को बचाने और मजबूत करने के लिए आवाज उठाता है । अपनी अस्मिता और अधिकारों के लिए नारी सदैव संघर्षरत रही है आदिवासी को जंगल अपना घर लगता है पर उसकी जमीन उससे छीन ली जा रही हैं जिसकी पीड़ा इन पंक्तियों में साफ दिखाई देता हैं -

"पेट भर रोटी के नाम पर छीन ली गयी हमसे
हमारे पुरखों की जमीन
क्हा जमीन बंजर है।" ५

जंगल, पहाड़, नदी, पेड़ प्रकृति के साथ संबंध :-

आदिवासी साहित्य में प्रकृति, जंगल, पहाड़, नदी और पेड़ कई रूपों में आते हैं. आदिवासी संस्कृति पर्यावरणीय संस्कृति है। आदिवासी साहित्य में, प्रकृति के प्रति सम्मान और उसके साथ सामंजस्य की भावना दिखाई देती है आदिवासी हमेशा से ही प्रकृति की गोद में रहे है। आदिवासी संस्कृति सहअस्तित्व की संस्कृति है। प्रकृति के बिना आदिवासी अपने अस्तित्व की कल्पना नहीं कर सकता। आदिवासियों ने प्रकृति को न तो छेड़ा है और न ही उसका दोहन किया। उसके हर व्यवहार व संस्कार में प्रकृति का संरक्षण व पोषण की भावना निहित है। "आदिवासी समुदाय अपने स्थानीय पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करके उसी के अनुकूलित जीवनयापन करते हैं, ये पर्यावरण जैस घटकों व प्राकृतिक संसाधनों के साथ छेड़छाड़ नहीं करते हैं। इसके विस्थापन से पर्यावरण के हित में सोचना असंगत है। ६.

एकजुटता और सामूहिक संघर्ष :-

आदिवासी साहित्य में, समुदाय की भावना, एकजुटता और सामूहिक संघर्ष पर जोर दिया जाता हैं।आदिवासी साहित्य जीवन के अनेक पहलुओं से रू-ब-रू कराता आदिवासी लेखन संघर्ष, उल्लास और आक्रामकता का साहित्य है। सदियों तक साधी गई चुप्पी को तोड़कर प्रास्थापितों द्वारा बनाए दायरे को

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

तोडकर वर्तमान मे आदिवासियों में चेतना जन्म लेती है। बदलते परिवेश में वो अपने विस्थापन और सफलता से दूर रखे जाने के षड्यंत्र को भलीभाँति पहचान चुके हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर आदिवासी जीवन की वास्तविकता से रू-बरू कराते हुए शोषण, विस्थापन, वर्ग-विषमता, अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध विद्रोह, त्याग, बलिदान, अपनी जमीन से जुड़े रहने की ललक आदिवासियों का जीवन स्तर है। समकालीन हिन्दी कहानी में आदिवासी चेतना-नन्हकू प्रसाद यादव जी ने अपने शोधालेख मे सुंदर शबदो में लिखा है – '" दिवासी साहित्य को देखने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आदिवासी समुदाय अपनी भूमि से जुड़ा होता है, वैसे ही वह अपनी संस्कृति तथा अपनी श्रद्धा के साथ भी जुड़ा होता है। हमारा सभ्य समाज इसे अंध-श्रद्धा मानता है। पर वह उनकी दृष्टि में श्रद्धा है। विकास की अज्ञानता ने उन्हें आज भी पिछड़ा हुआ रखा है।" ७ वर्तमान में आदिवासी वर्ग अपने-आप में खुशहाल हैं, परन्तु दूसरे समुदाय की तुलना में तथा संवैधानिक अधिकारों की तुलना में निश्चित रूप में वह पिछड़ेपन है।

निष्कर्षः आदिवासी साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो देश के मूल निवासियों के जीवन, संस्कृति और संघर्ष को दर्शाता है और उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने में मदद करता है। आदिवासी साहित्य-यात्रा के विभिन्न पड़ावों को विभिन्न लेखकों-विशेषज्ञों ने अपने-अपने ढंग से लिखे लेखों में व्यक्त किया है ।आदिवासियों की ज़िन्दगी और उनकी राष्ट्रीय चेतना का सटीक और सही चित्रण रमणिका गुप्ता ने किया है। जीवन में हो रहे छल-कपट, भेदभाव, ऊँच-नीचता तथा सामाजिक न्याय का पक्षधर प्रस्तुंत साहित्य रहा है । आदिवासियों की संस्कृति, भाषा, इतिहास, भूगोल तथा उनके जीवन की अनेक समस्याओं और प्रकृति समवेत राष्ट्रीय चेतना के प्रति उनका गहरा लगाव देखने को मिलाता है।

संदर्भ सूची-

१. डॉ0 राजेन्द्र ठाकरे 'आदिवासी कविता शीर्षक लेख से, गुप्ता रमणिका (सं0) आदिवासी साहित्य यात्रा, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण-२०१६, पृष्ठ-६३-६४
२. https://egyankosh.ac.in/bitstream/१२३४५६७८९/८२७४१/१/Unit-३.pdf
३.. मीणा हरिराम, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, संस्करणः २०१२, पृ0-१९१
४. पुतुल, निर्मला. नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द, भा ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ ५४
५. नीर, नीरज जंगल में पागल हाथी और ढोल, रमि प्रकाशन लखनऊ, २०१७ पृष्ठ ३८
६. स्मारिका, सम्पादक डॉ. रमेशचन्द मीणा, डॉ.ओ.पीशर्मा का लेख 'पर्यावरण को बचाने के लिए संघर्षरत आदिवासी ७-८ दिसंबर २०११ को राजकीय महाविद्यालय, बूंदी में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी पृ. स. ११९
७.International Journal of Scientific & Innovative Research Studies-Vol(६)No.७ July,२०१८ पृष्ठ १०

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

१५. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना

प्रा.डॉ.हनुमंत दत्तु शेवाळे
हिंदी विभाग, शारदा महाविद्यालय, परभणी- ४३१४०१ (महाराष्ट्र)

हिंदी काव्य साहित्य का इतिहास भारतेंदु युग, व्दिवेदी युग, छायावाद, हलावाद, प्रगतिवाद, राष्ट्रिय काव्य धारा, प्रयोगवाद, नई कविता, गीतिकाव्य, नवगीत इन भागों में विभाजित है। इस हर युग की परिस्थितियाँ अलग थी। कवि और काव्य प्रवृतियाँ अलग-अलग है। हिंदी काव्य ने समाज के उत्थान में हमेशा सहयोग दिया है। हिंदी काव्य हमेशा प्रेरक रहा है। आदिकाल में महाकवि चंदबरदायी रहे। उन्होंने वीरों के साथ जनता को भी देश रक्षा के लिए प्रेरित किया। भक्तिकाल में सूरदास, तुलसीदास ने धर्म रक्षा का कार्य किया। हिंदी राष्ट्रिय काव्य धारा निरंतर जाग्रत और प्रवाहमान रही है। भूमि, भूमि निवासी लोग, उनकी संस्कृति इन तीनों के एकता से राष्ट्र बनता है। ‘‘राष्ट्र में भौगोलिक, सांस्क्रतिक और राजनीतिक एकता पूँजीभूत रहती है। इन तत्वों के कम या अधिक होने से राष्ट्र और राष्ट्रियता के स्वरूप में अंतर आता है। भारत में तीनों तत्व जनता के स्तर पर सदा विद्यमान रहे हैं। यद्यपि राजनीतिक एकता यहाँ बहुत कम युगों में रही किंतु यहाँ के जन को राजनीति की अपेक्षा धार्मिक एकता ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक सूत्र में बाँधे रखा।’ ’ १ हिंदी की राष्ट्रिय काव्यधारा की शुरूआत भारतेन्दु से हो जाती है। भारतेन्दु के पहले भी वीरों की जीवन गाथाएँ लिखकर राष्ट्रिय भावना को जाग्रत रखने का अथक प्रयत्न किया है लेकिन उन कवियों की कुछ मर्यादाएँ थी। भारतेन्दु की कविता में पहली बार राष्ट्र विषयक विविध समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। भारतेन्दु युगीन राष्ट्रिय कविताओं में स्वभाषा, स्वदेश, स्वधर्म, किसान, मजदूर का चित्रण, राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति प्रेम, मातृभूमि के प्रति प्रेम, स्वर्णिम अतीत, विदेशी शासन की निंदा,समाज सुधार का आग्रह आदि का चित्रण है। इस काल में भारतेन्दु,प्रतापनारयण मिश्र, बालकृष्ण भटट, बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमघन’ आदि प्रमुख कवि है। इस काल के कवि की हर रचना में राष्ट्रियता का स्वर किसी न किसी रूप में व्यक्त हुआ है,भले ही वह स्वर प्रखर न हो लेकिन लोगों को गुलामी का अहसास होता रहा, समाज के पिछडेपन का आक्रोश था। राष्ट्रियता की संकल्पना स्पष्ट हुई। आधुनिकता को स्वीकार करने का आग्रह रहा। इस प्रकार राष्ट्रिय कविता का प्रारंभ यहाँ से मान सकते हैं। व्दिवेदी युग पुनर्जागरण का युग है। आगे राष्ट्रिय काव्य धारा में राष्ट्रियता का स्वर ओर प्रखर हो गया। राष्ट्रिय काव्य धारा के प्रमुख कवि माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त,पं.रामनरेश त्रिपाठी आदि इस धारा के प्रतिनिधि कवि हैं,जिन्होने राष्ट्रिय चेतना की कविताएँ लिखी।

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रिय चेतना के अग्रदूत माने जाते हैं। देश प्रेम,राष्ट्रभक्ति एवं अतीत का गौरवगान आदि इनके काव्य की मुख्य विशेषताएँ है। उनकी सर्वाधिक लोकप्रिय कृति ‘भारत-भारती’ है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रिय भावना को जगाने के लिए स्वर्णिम अतीत की स्मृतियों को उजागर करते हैं। जनता को जगाने के लिए श्रेष्ठ, समृदध और प्रजातांत्रिक भारत के चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति की भावना सर्वोपरि है। मातृभूमि के प्रति की भावना 'मातृभूमि' कविता में व्यक्त होती हैं —

"निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है।
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है।
षटऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है।
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है।' ' २

मैथिलीशरण गुप्त की 'किसान' कविता में कर्मरत स्वाभिमानी किसान का चित्रण है। प्रस्तुत कविता में किसानों के परिश्रमी, ईमानदार, निस्वार्थि, कर्तव्यतत्पर, प्रकृति प्रेमी कई गुणों का चित्रण है। 'किसान' कविता का पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

"बरस रहा है रवि अनल,भूतल तवा सा जल रहा।
है चल रहा सन-सन पवन,तन से पसीना बह रहा।
देखों कृषक शोषित,सुखाकर हल तथापि चला रहे।
किस लोभ से इस आँच में,वे निज शरीर जला रहे।' ' ३

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में राष्ट्रीयता के साथ-साथ क्रांति की भावना दिखाई देती है। नवीन जी की 'आज खड्ग की धार कुंठित है' और 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ' कविताएँ प्रसिद्ध है। 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ' कविता क्रांति से ओतप्रोत है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने भारतियों को अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने का आह्वान किया है। अंग्रेजों की शोषण वृत्ति तथा देश की गुलामी को लेकर कवि के मन में विद्रोह की भावना थी और यही भावना कविता के माध्यम से आक्रोश के रूप में व्यक्त हुई है। काव्य पंक्तियाँ-

"कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ-जिससे उथल-पुथल मच जाए ।
एक हिलोर इधर से आए-एक हिलोर उघर से आए ।
प्राणों के लाले पड जाएँ त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए ।
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाए।' ' ४

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय काव्यधारा के श्रेष्ठ कवि है। इनके 'हिमतरंगिनी' , 'माता' , 'युगचरण' , 'समर्पण' , 'वेणु लो धरा गूंजे' आदि काव्य-संग्रह प्रसिद्ध है। माखनलाल चतुर्वेदी की 'कैदी और कोकील' हिंदी की सर्वश्रेष्ठ और दिर्घ कविता है। चतुर्वेदी कविताओं में देशप्रेम, स्वतंत्रता की उत्कट भावना की अभिव्यक्ति है। इनके काव्य के संदर्भ में डॉ.सूर्यनाराण रणसुभे ने सटिक लिखा है- ''इनके काव्य में ज्वालामुखी की धधकती हुई आग है,विराट पौरूष की हुंकार है।' ' ५ माखनलाल चतुर्वेदी के बारे में रणसुभे लिखते हैं- ''हिंदी राष्ट्रिय काव्यधारा के अधिक जीवंत, यथार्थ, ओजस्वी, विद्रोही और क्रांतिकारी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

बनाने का श्रेय इस 'भारतीय आत्मा' को है।' ' ६ माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पडे। उन्हें कई बार जेल जाना पडा था। १९२२ में भडकाऊ भाषण के कारण उन्हे बिलासपुर जेल में जाना पडा। इसी दौरान उन्होंने 'पुष्प की अभिलाषा' कविता लिखी। उनके लेखन ने अंग्रेज सरकार की नीद उडा दि थी। देश प्रेम से ओत-प्रोत उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' की पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

"चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, पे्रमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाल जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृ भूमि पर शीश चढाने,जिस पथ पर जावे वीर अनेक।' ' ७

माखनलाल चतुर्वेदी में देश प्रेम इतना था कि वे अपने आपको और सभी जवानों को सिपाही मानते थे। इस संदर्भ में उनकी 'सिपाही' कविता है,उस कविता की पंक्तियाँ-

"बोल अरे सेनापति मेरे।
मन की घुंडी खोल,
जल, थल, नभ, हिल-डुल जाने दे,
तू किंचित् मत डोल। --
मैं हूँ एक सिपाही।' ' ८

कवि माखनलाल चतुर्वेदी आजादी के लिए चिंतित थे,वे भारतियों को जाग्रत करने का कार्य करते रहे। उन्होंने 'दीप से दीप जले' कविता में एकता का संदेश दिया है -

"युग के दीप नए मानव, मानवी ढलें
सुलग-सुलग री जोत। दी से दीप जलें।' ' ९

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रिय आंदोलन में सक्रिय रही। राष्ट्रिय काव्यधारा को विकसित करनेवाली सुभद्रा कुमारी चौहान के 'त्रिधारा' और 'मुकुल की राखी' नामक दो काव्य संग्रह प्रसिद्ध है। 'झांसी की रानी' इनकी बहुत चर्चित कविता है। इनकी कविताओं में राष्ट्रिय भावना ओतप्रोत है, तत्कालिन इतिहास और संस्कृति की छाप है। उनकी 'जलियाँवाला बाग में बसंत' कविता में हत्याकांड का करूण क्रंदन, मूक वेदना अभिव्यक्त है-

"ओ,प्रिय ऋतुराज किंतु घीरे से आना,
यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना।
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर,
कलियाँ उनके लिये गिराना थोडी ला कर।
तडप-तडप कर वृदध मरे हैं गोली खा कर,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जा कर।
यह सब करना,किंतु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोक स्थान बहुत धीरे से आना।' ' १०

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता बहुत लोकप्रिय रही। कविता सरल, मार्मिक, भाषा प्रवाहमय और ओज गुण है। बच्चन सिंह लिखते हैं ''बलिदान और युद्ध का आह्वान उनकी रचनाओं में भी है। बुंदेलखंडी लोकशैली में लिखी गई उनकी कविता 'झांसी की रानी' अपने समय में काफी प्रसिद्घ हुई।' ' ११ सुभद्रा कुमारी चौहान स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रही है। उनकी कविताओं में देश भक्तों का गुणगौरव है। 'झांसी की रानी' कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढे भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने सबने मन में ठानी थी।
खूब लडी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।' ' १२

रामधारीसिंह 'दिनकर' विद्रोही और ओजस्वी कवि के रूप में प्रसिद्ध है। दिनकर जी के 'रेणुका' , 'हुंकार' , 'रसवंती' इनकी प्रारंभिक रचनाएँ है। 'कुरूक्षेत्र' ,'रश्मिरथी' , 'उर्वशी' उनके प्रबंघ काव्य है, 'विपथगा' एक क्रांतिकारी रचना है। दिनकर जी की 'नयी दिल्ली' , 'हिमालय' , 'तांडव' , 'इतिहास के आँसू' नामक कविताएँ बहुत चर्चित रही। दिनकर जी कविता के क्षेत्र में स्पष्टता तथा सरलता के आग्रही थे। उनकी कविताओं में अंग्रेजों के विरूद्ध प्रखर क्रांति के स्वर दिखाई देते हैं। आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में उनकी पहचान है। राष्ट्रीयता इनके काव्य की मूल भूमि है। ''भाषा की ओजस्विता, स्पष्टता, क्रांतिकारिता, विद्रोह की भावना, दलितों, पीडितों और श्रमिकों के प्रति उत्कट, आत्मीयता दिनकर काव्य की प्रधान विशेषताए है। इसी कारण राष्ट्रिय काव्यधारा में उनका स्थान सर्वोपरि है।' ' १३ चीनी आक्रमण के संदर्भ में रची उनकी राष्ट्रिय उद्बोधक कविताओं का संकलन 'परशुराम की प्रतीक्षा' इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसमें कवि का हुंकार और कुरूक्षेत्र का तेजस्वी रूप व्यक्त हुआ है। एक-एक कविता ओज, वीरता और देश प्रेम के भावों से संपन्न है-

"अब भी पशु मत बनो कहा है वीर जवाहर लाल ने।
जहा शस्त्र बल नहीं, शास्त्र पछताता या रोता है।
ऋषियों को भी सिद्धि तभी तप से मिलती है,
जब पहरे पर स्वयं धनुर्धरराम खडा होता है।' ' १४

रामधारीसिंह दिनकर सन १९४२ के स्वातंत्रता संग्राम में जेल गए थे। दिनकर की क्रांतिकारिता को सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है। उनकी इस संदर्भ की 'हिमालय के प्रति' कविता है, उसकी पंक्तियों में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि दिखाई देती है-

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

"कह दे शंकर से आज करें,
वे प्रलय नृत्य फिर एक बार,।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर-हर-बम का महोच्चार।' ' १५

डॉ.इन्दु वशिष्ठ रामधारीसिंह दिनकर बारे में लिखते हैं- "वे धनिकों के विरूदध अथवा पूँजीपतियों के विरूदध थे और किसानों तथा अभावग्रस्तों का पक्ष ले रहे थे। ताण्डव का आग्रह करते हुए वे असहायों का शोषितों, शोषण तथा वैभव और आडंबर में आग लगाने की बात अवश्य करते हैं।' ' १६ दिनकर जी अपनी कविता 'कविता की पुकार' में असहाय कृषकों और उन पर अत्याचार करते धनपतियों की बात करना नहीं भूलते।

"सूखी रोटी खायेगा जब कृषक खेत में धर कर हल,
तब दूँगी मैं तृप्ति उसे बन कर लोटे का गंगाजल।
उसके तन का दिव्य स्वेदकण बनकर गिरती जाऊगी,
और खेत में उन्हीं कणों से मैं मोती उपजाऊगी।' ' १७

"दिनकर युग कवि है, समकालीन जन जीवन के कवि है। धरती और धूल के कवि हैं, ज्वाला और तूफान के कवि हैं। दिनकर जोश है, होश भी है। अंगार और श्रृंगार भी, कर्म का तेज और धर्म का मर्म भी है।' ' १८

सियाराम शरण गुप्त स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख कवि थे। प्रगतिशील विचारधारा के सियाराम शरण गुप्त मानवतावादी थे, वे गांधी विचार से प्रभावित थे। खादी की चादर, आत्मोत्सर्ग, पाथेय, मृण्मयी, बापू, उन्मुक्त, जयहिंद उनके काव्य संग्रह है। 'एक फूल की चाह' इनकी प्रसिद्ध कविता है। इनकी कविता में मानवतावादी स्वर की प्रधानता रही है। "इनमें सत्य, अहिंसा, करूणा, विश्वबंधुता, क्रांति और गाँधीवाद में कवि ने अपनी अटूट निष्ठा व्यक्त की है।" १९ मुक्तछंद का सफलता से प्रयोग करना सियाराम शरण गुप्त की विशेषता रही है-

"चल पडे जिधर दो डग मग में।
चल पडे जिधर कोटि पग उसी ओर।
पड गई जिधर भी एक दृष्टि ।
झुक गए कोटि डग उसी ओर।' ' २०

सियाराम शरण गुप्त अपनी कविता में शोषितों के प्रति असहाय करूणा न दिखाकर वह संघर्ष का आवाहन करते हैं।

"ज्वाला गिरी के बीज, क्रुर शोषण से जमकर
फूअ पडे हैं ठीर-ठीर आग्रेय विकट तर।' ' २१

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राष्ट्रीय काव्य धारा के अन्य कवियों में रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक आदि कवि है। साथ ही निराला की 'जागो फिर एक बार,' सोहनलाल व्दिवेदी की 'जाग साये देश में, श्यामनारायण पांडेय की 'हल्दी घाटी' कविताएँ इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इनकी कविताओं के मुख्य विषय देश प्रेम और राष्ट्रियता रहे है।

"आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना इस विषय का विवेचन और विश्लेषण करने के पश्चात हम बडी विनम्रता के साथ कह सकते हैं कि हिंदी काव्य आदिकाल से लेकर आज तक राष्ट्रिय चेतना से भरा दिखाई देता है। पराधिनता के प्रति क्षोभ, अतीत का गौरवगान, विद्रोह, उद्बोधन, देश प्रेम, सुधारवाद, स्वाधीनता का महत्व आदि राष्ट्रिय काव्य धारा की प्रमुख विशेषताएँ परिलक्षित होती है। हमारा देश कई साल गुलामी में था, यहाँ कई परकियों ने शासन चलाया। इस कारण उनको गुलामी का अहसास दिलाना जरूरी था, सदियों से गुलामी की मानसिकता को बदलना कठिन था, गुलाम को गुलामी का अहसास दिलाकर स्वाधिनता के लिए जाग्रत करने का कार्य हिंदी राष्ट्रिय काव्य धारा ने किया है। तत्कालिन परिस्थितियों में यह कार्य करना लढने से कम नहीं था। जब कवि अपनी कविता के माध्यम से लोग जाग्रति करते थे, तो अंग्रेज उन्हें जेल में बंद करते थे। हर कवि अपने तरीके से स्वाधिनता आंदोलन में योगदान देते रहे थे। कोई कवि अपनी कविता में देश के अतीत का गुनगान करते थे, तो कोई कवि क्रांति का आह्वान करते थे। कवि कविता के माध्यम से लोगों में आत्मविश्वास जगाते थे। जनता को उनकी खोई हुई क्षमताओं का अहसास दिलाते थे। उन्हे एकता का संदेश देते थे। मातृभूमि का महत्व बताते थे। राष्ट्रिय काव्य धारा का मुख्य लक्ष्य मातृभूमि को पराधिनता से स्वाधिनता प्राप्त करना था। अब स्वतंत्र राष्ट्र में राष्ट्रीय काव्य का अर्थ विस्तार हो गया है। राष्ट्र की विभिन्न समस्याएँ उसमें व्यक्त होने लगी है। आज अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, असमानता का विरोध करके समाजवादी समाज का निर्माण करना राष्ट्रियता है। इस संदर्भ में लिखनेवाले सभी कवि राष्ट्रिय कवि कह सकते है संक्षेप में आज राष्ट्रिय काव्य का अर्थ अत्यधिक व्यापक बन गया है।

संदर्भ ग्रंथ

१.डॉ.लक्ष्मीनारायण चातक- आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास, पृष्ठ ९२
२.http://kavitakosh.org/kk
३.संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल- काव्य तरंग, पृष्ठ ८२
४.संपा.डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल- काव्य तरंग, पृष्ठ ८८
५.डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ७७
६.डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ७८
७.http://kavitakosh.org/kk
८.http://kavitakosh.org/kk
९. http://kavitakosh.org/kk
१०. http://kavitakosh.org/kk

११.बच्चन सिंह- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २३८
१२.http://kavitakosh.org/kk
१३.डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ७९
१४.डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल- आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास, पृष्ठ १०३
१५.http://kavitakosh.org/kk
१६.डॉ.इन्दु वशिष्ठ- दिनकर काव्य में वस्तु-विधान, पृष्ठ २४९
१७.http://kavitakosh.org/kk
१८.डॉ.नादेव उतकर- हिंदी साहित्य की युगीन प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ ३००
१९.डॉ.लक्ष्मीनारायण 'चातक' - आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास, पृष्ठ १००
२०.डॉ.लक्ष्मीनारायण 'चातक' - आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास, पृष्ठ १००
२१.डॉ.बच्चन सिंह- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २३६

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

१६. स्वतंत्रता पूर्व हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. संजीवकुमार नरवाडे
प्रोफेसर, आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली
Email- svnarwade1670@gmail.com Mob- 9422877573

शोध सारांश
हिंदी साहित्य में सन १८५७ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक अर्थात १९४७ तक का साहित्य राष्ट्रीय चेतना की भावना से प्रभावित साहित्य माना जाता है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रवाह में विकसित राष्ट्रीय चेतना में स्वतंत्रता, न्याय, समानता और मानवीय कल्याण नव राष्ट्र निर्माण का मूलमंत्र निहित था। स्वतंत्रतापूर्ण हिंदी काव्य की पृष्ठभूमि में अंग्रेजी सत्ता का शोषण, अन्याय एवं अत्याचार है, स्वतंत्र राष्ट्र निर्माण की चाह है। सन १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भारत को पराजित होना पड़ा था, परंतु यही हार स्वतंत्रता तक पहुँचने का मार्ग बना। उसके बाद देश में नवजागरण का दौर चला। ब्रह्मो समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन आदि संस्थाओं के माध्यम से देश में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ज्ञान आदि क्षेत्रों में नई चेतना का अविर्भाव हुआ। ऐसे में एक ओर अंग्रेजों का दमण-शोषण बढ़ने लगा था, जिसके परिणाम स्वरूप स्व-राष्ट्र निर्मिती हेतू चल पडे स्वाधीनता आंदोलन में त्याग, बलिदान एवं समर्पण का नया मार्ग खुल गया । व्यवस्था में परिवर्तन के लिए क्रांतिकारी भावनाओं को प्रस्फुटित करनेवाली कविताएँ लिखी जाने लगी। राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त करने वाले असंख्य कवियों की कविताएं राष्ट्रीय भावना को जागृत करने लगी। इस दौर में भारतेंदु हरिशचंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह, दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, दिनकर, सोहनाबल द्विवेदी आदि कवियों ने अपनी कविताओं से देशवासियों में देश के प्रति प्रेम, त्याग एवं समर्पण की भावना को जागृत कर स्वाधीनता आंदोलन को प्रभावित किया है।

बीज शब्द : राष्ट्र गौरव, बलिदान, समर्पण राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति, स्वतंत्रता, मातृभूमि प्रेम, संस्कृति प्रेम, भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, एकता एवं अखंडता ।

प्रस्तावना:
हिंदी साहित्य में सन १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर भारत देश की स्वतंत्रता प्राप्ति तक की पृष्ठभूमि पर लिखा गया साहित्य राष्ट्रीय चेतना से अविर्भूत है। साहित्य की पद्य और गद्य की सभी विधाओं -कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि सभी में समकालीन परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से स्तंत्रतापूर्व हिंदी कविता का विशेष महत्व है। असल में भारत में चल पड़ा स्वाधीनता आंदोलन इसकी पृष्ठभूमि में है। जिस तरह स्वाधीनता आंदोलन जनमानस मे जोर पकड़कर व्यापक बन रहा था उसी तरह राष्ट्रीय चेतना विकसित होकर जनमानस की

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

अभिव्यकित बनती गई। राष्ट्रीय चेतना के मूल में स्वतंत्रता, समानता, न्याय, मानवता, मानव की समृद्धि का भाव, नव राष्ट्र निर्मिती एवं प्रगति के मूल मंत्र निहित थे।

हिंदी काव्य विशेषतः स्वतंत्रता पूर्व काव्य में जिस राष्ट्रीय चेतना के दर्शन होते हैं, उसका स्वरूप व्यापक एवं विस्तृत है। इसमें तत्कालिन राजनीतिक संदर्भ या स्वतंत्रता आंदोलन और स्वशासन की भावना मात्र ही परिलक्षित नहीं होती है, अपितू भारत देश की जातिय अस्मिता, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में उत्थान की भावना निहित है। वास्तव में, कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो राष्ट्रीयता की परिधि की व्यापकता का बोध कराते है - "सामान्यत: भौगोलिक एकता, जातीय एकता, भाषायी एकता, धर्मगत एकता, राजनीतिक आकांक्षा की एकता, आर्थिक आकांक्षा विषयक एकता, सांस्कृतिक एकता, इतिहास और लक्ष्य की समानता, संस्कृति और राष्ट्रीयता का अटूट संबंध।" १ स्वतंत्रतापूर्व हिंदी साहित्य विशेषत: कविता में निहित राष्ट्रीय भावना अत्याधिक सधन, व्यापक एवं विस्तृत है। इसमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साधन, राष्ट्र-निर्माण एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की भावना आभिव्यक्ति हुई है। व्यक्तिगत रूप से ऊपर उठकर परिवार, समाज, जाति, धर्म आदि मान्यताओं को पार करती हुई जनमानस की चेतना राट्रीयता के उच्च शिखरों को स्पर्श करती हुई राष्ट्र की स्वतंत्रता, अखंडता और प्रभुता को अक्षुण्ण बनाये रखने में पूरे वेग से जब गतिमान होती है तब वह राष्ट्रीय चेतना का रूप धारण करती है। स्वतंत्रता आंदोलन के द्वारा भारत में राष्ट्रीय चेतना व्यापक स्तर पर उभर कर सामने आई है। इसमें देशभक्ति वा राष्ट्रप्रेम, भारत की स्वर्णीम गौरवमयी अतीत के प्रति आस्था, स्वतंत्रता-प्राप्ति एवं नव राष्ट्र निर्माण जैसे तत्व निहित है।

भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के समकालिन कवियों ने राष्ट्रीय चेतना की काव्य परंपरा को आगे बढाया है। देश-प्रेम की भावना अथवा विदेशी दासता की प्रतिक्रिया स्वरूप लिखा गया स्वतंत्रतापूर्व हिंदी काव्य राष्ट्रीय चेतना का काव्य है। इस कविता में देशप्रेम के विविध आयाम परिलक्षित होते हैं, जिनमें प्रमुख है - स्वतंत्रता / आज़ादी की आकांक्षा, देश का गुणगाण, देशप्रेम, देश के लिए बलिदान एवं समर्पण, वीरों के प्रति सम्मान आदि । सन १८५७ से लेकर १९४७ तक क्रांतिकारियों, आंदोलनकारियों के साथ ही कवियों ने राष्ट्रीय चेतना को अपनाया है। हिंदी में' भारतेंदु हरिश्चंद्र, हरिऔंध, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' , रामधारी सिंह 'दिनकर' , श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' , व्दारिकाप्रसाद माहेश्वरी, गोपालप्रसाद न्यास, सोहनलाल व्दिवेदी, आदि स्वतंत्रतापूर्व हिंदी कविता के राष्ट्रीय चेतना के महत्वपूर्ण कवि है।

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना :

अंग्रेजी शासन की स्थापना के मूल में भारतीयों की दास्यता थी, जिससे प्रतिकार करने की भावना देश में व्याप्त हो रही थी। सन १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में दुर्भाग्य से भारत को पराजित होना पड़ा था जिसमें अंग्रेजों ने अन्याय, अत्याचारों से इसका दमन किया, परंतु यह आंदोलन स्वतंत्रता की देवी तक पहुँचने के लिए प्रेरणा बन गया था। इस पराजय ने भारतीय जनमानस की आँखे खोल दी थी और हमें सोचने पर विवश किया कि हम क्या है, हम क्यो गुलाम है और हमारी मुक्ति का मार्ग क्या हैं? ये सारे प्रश्न भारतीयों

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

को राष्ट्र प्रेम की ओर ले जाने लगे। ऐसे में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, तत्वबोधिनी सभा जैसी संस्थाओं के माध्यम से देश में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, बौद्धिक एवं ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में एक नई चेतना का अविर्भाव हो रहा था। एक ओर अंग्रेजों का दमन तंत्र, शोषण तेज हो रहा था तो दूसरी ओर स्वाधीनता आंदोलन क्रांति, त्याग, बलिदान एवं राष्ट्रप्रेम की राह पर आगे बढ़ रहा था, जिसकी अभिव्यक्ति हिंदी कविताओं में होने लगी थी। इस स्थिति का चित्रण हिंदी साहित्य के भारतेंदुयुग, व्दिवेदीयुग, छात्रावाद एवं राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के कवियों ने अपनी कविताओं में समय-समय पर किया है।

भारतेंदु युग से हिंदी साहित्य में नवजागरण प्रारंभ होता है। इस काल के कवियों ने अपनी परंपरागत संकुचित राष्ट्रीय भावना से ऊपर उठकर भारत के गौरवशाली अतीत का गौरवगान कर देश की वर्तमान दुर्दशा का चित्रण कर अंग्रेजी सत्ता का विरोध कर लोगों में समाजसुधार एवं आत्मगौरव का भाव जागृत किया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'भारत दुर्दशा' लिखकर अंग्रेजों की शोषण नीति के प्रति करारा व्यंग्य किया है -

"भीतर-भीतर सब रस चूसै, हंसि-हंसि के तन-मन-धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखी साजन नही अंगरेज।।" २

भारतेंदु युग के अन्य कवियों – राधाचरण गोस्वामी (हमारो उत्तम भारत देश), बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (धन्य भूमि भारत.), प्रतापनारायण मिश्र (महापर्व, नया संवत), राधाकृष्ण दास (भारत बारहमासा, विनय) ने अपनी कविताओ में देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति की है। अंग्रेजों ने भारत को आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में बर्बादी के कगार पर ला खड़ा किया था। चारों ओर निराशा, आलस्य, उत्साहहीनता, शोषण, अन्याय-अत्याचार, भय एवं आतंक का साम्राज्य व्याप्त हो गया था, जिसका यथार्थ चित्रण भारतेंतु ने किया है -

"रोवहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई
हा हा ! भारत दुर्दशा देखी न जाई।
सबके पहिले जेहि ईश्वर धन-बल दीनों
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो।
सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो
सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनों।
अब सबके पीछे सोई परत लाखाई
हा ! हा ! भरत दुर्दशा देखी न जाई।" ३

भारत देश की कृषि, उद्योग-व्यवसाय अंग्रेजों की शोषणपरक नीति से नष्ट हो रहे थे और लोग रोटी के लिए तरस रहे थे। ऐसी भयावह स्थिति को देखकर इस पतन के प्रति अपना दर्द और क्षोभ व्यक्त करते हुए प्रतापनारायण मिश्र कहते है -

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

"तबहिं लख्यो जँह रह्यो एक दिन कंचन बरसत,
तहँ चौथाई जन रूखी रोटी को तरसत
जहाँ कृषि, वाणिज्य, शिल्प, सेवा सब याही,
देसिन के हित कछू तत्व कहुँ कैसेहुँ नाहीं।" ४

देश के लिए त्याग, बलिदान, उत्सर्ग की प्रेरणा और समाज एवं राष्ट्र की उन्नति की भावना व्दिवेदीयुगीन कविता के माध्यम से सामने आई थी। प्रखर एवं उन्मुक्त राष्ट्रीय चेतना व्दिवेदी युगीन हिंदी कविता की प्रमुख प्रवृत्ति है। नाथुराम शर्मा 'शंकर' , श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद व्दिवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' , गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' , मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी आदि कवियोंने देश की स्वतंत्रता, एकता, अखंडता, और उत्थान के लिए राष्ट्रीय चेतना से संम्पृक्त कविताओं की रचना की है। भारत के सांस्कृतिक गौरव की महिमा गान, पौराणिक और ऐतिहासिक वृत्तों का प्रासंगिक पुनर्राख्यान कर देश की हताशा और निराशा को दूर करने के लिए भारतीयों में स्वाभिमान जागृत कर अंग्रेजों के विरुध्द खडा होने के लिए इन कवियोंने प्रेरित किया है। रामनरेश त्रिपाठी देश के युवाओं को प्रेरित क्रुद्ध भाव में प्रेरित करते हैं दिखाई देते हैं -

"क्रुद्ध सिंह- सम निकल प्रकट कर
अतुलित भुजबल विषम पराक्रम
युद्ध-भूमि में भी वे वैरी का
दर्प दलन कर लेते हैं हम
या स्वतंत्रता की वैदी पर,
कर देते हैं प्राण निछावर।" ५

राष्ट्रीय चेतना का प्रखर स्वर मैथिलीशरण गुप्त के 'भारत-भारती' में दृष्टव्य है, जिसमें वे भारतीयों को देश की स्थिति और गति से सचेत हुए कहते है -

"हम कौन थे, क्या हो गए, और क्या होंगे अभी।
आओ विचार करे आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।।" ६

जयशंकर प्रसाद अपने काव्य में सांस्कृतिक जागरण, राष्ट्रप्रेम, भारत के अतीत का गौरव गान कर राष्ट्रीय चेतना का निर्देशन करते है। उनकी 'प्रथम प्रभात, 'अब जागो जीवन के प्रभात' , 'बीती विभावरी जागरी' , 'प्रयाण गीत' , 'भारतवर्ष' कविताएँ प्रखर राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण है। 'भारतवर्ष' कविता में राष्ट्रप्रेम का अभिमान भारतवासीयों को आत्मोसर्ग के लिए प्रेरित उरता है -

"वहीं है रक्त, वहीं है देश, वही साहस है, वैसा तान।
वही है शांति, वही है शक्ति, वही है हम, दिव्य आर्य संतान।
जिये तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे, यह हर्ष।
निछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।" ७

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राष्ट्रीय चेतना का प्रखर एवं उदात्त स्वर माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में देखने को मिलता है। राष्ट्रीय जागरण, त्याग-बलिदान, देशप्रेम और सांस्कृतिक गौरवाभिमान की अभिव्यक्ति की दृष्टि से उनका काव्य अजरामर है। स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए आत्म-बलिदान की कामना 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में दृष्टव्य है -

"चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में विंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शिस चढ़ाने जिस पथ पर जानें वीर अनेक।" ८

छायावादी एवं छायावादोत्तर युग के कवियों ने भारत की विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने के लिए एक ओर स्वतंत्रता का आह्वान किया था तो दूसरी ओर स्वतंत्रता आंदोलन में वे स्वयं कूद पड़े और जनता को प्रेरित किया था। परिणामत: माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी अनुभूति को 'कैदी और कोकिला' कविता में सकारात्मक मनोभूमि पर उतारा है -

"क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना
हथकडियां क्या? यह ब्रिटिश राज्य का गहना
कोल्हू की चरक चूं? जीवन की तान
मिट्टी पर लिखे अंगुलियों ने क्या गान?
हूं मोर खींचता लगा पेट पर जूआ
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूआ।" ९

रामधारी सिंह 'दिनकर' राष्ट्रीय चेतना के प्रबल कवि है। उनकी रचनाओं में पराधीनता के अभिशाप का प्रबल विरोध गर्जना बनकर उभरता है। उनके काव्य में मुख्यत: भारत का इतिहास, समसामायिकता, परिवेश में स्वचेतना की जागृति, राष्ट्रप्रेम मुखरित रोता है। वे अपने काव्यसंग्रह 'रेणुका' की प्रारंभिक कविता 'मंगल आह्वान' में श्रृंगी फूंक कर सोए हुए जनमानस को स्वतंत्रता के लिए जागृत करते हैं -

"दो आदेश फूँक दूँ श्रृंगी, उठे प्रभाती राग महान
तीनों काल ध्वनित हो स्वर में, जागे सुप्त भुवन के प्राण
गत विभूति भावी की आशा, ले युगधर्म पुकार उठे
सिंहो की धन-अंध गुहा में, जागृत की हुंकार उठे।" १०

सुभद्रा कुमारी चौहान 'झांसी की रानी' कविता के माध्यम से भारत की सन १८५७ की क्रांति का स्मरण करा कर युवकों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित कराती है। अंग्रेजों के अन्याय-अत्याचारों के खिलाफ 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता में 'वीरों को युद्ध के लिए प्रेरित करती है -

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

"गलबाँहे हो, या हो कृपाण,
चल-चितवन हो, या धनुष्य-बाण,
हो रस-विलास या दलित त्राण,
आज यहीं समस्या है दुरंत,
वीरों का कैसा हो बसंत?
कह दे अब अतीत अब मौन त्याग,
लंके, तुझमें क्यों लगी आग?
ऐ कुरुक्षेत्र ! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो, वसन्त?"११

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कवि और भारतीय स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उत्तरदायित्व निभानेवाले राष्ट्रीय चेतना के प्रस्तोता है। उनकी कविता में स्वच्छंदतावाद, स्वाधीनता आंदोलन, गांधी दर्शन और मानवी संवेदनाओं की सूक्ष्म झलकियाँ देखने को मिलती है। वे अपनी कविता 'बलिवेदी' के माध्यम से भारत के युवाओं को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़कर शहीद हरेने के लिए प्रेरित करते है -

"बलिवेदी, सखे प्रज्ज्वलित माँग रही ईंधन क्षण-क्षण
आओ युवक, लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन
भस्मसात हो जाने दो ये प्रलय उमंगे जीवन की
अरे सुलगने दो बलिवेदी, चढ़ने दो बली जीवन की।" १२

इतना ही नही कवि नवीन स्वाधीनता आंदोलन के परिणामों की ओर अंग्रेजों को सचेत करते हुए कवियों को क्रांति के गीत लिखने का आह्वान 'विप्लवगीत' के माध्यम से करते है -

"नियम और उपनियमों के ये बंधन
टूक - टूक हो जाएँ
विश्वंभर की पोषक वीणा के सब
तार मूक हो जाएँ
शांति-दंड टूटे उस महा रूद्र का
सिंहासन थर्राए
उसकी पोषक श्वासोच्छवास, विश्व के
प्रागण में घहराए;
नाश ! नाश !!. हाँ, महानाश !!! की
प्रलंयकारी आँख खुल जाए,
कुछ ऐसी तान सुनाओ,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

जिससे उथल-पुथल मच जाए!"१३

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी की राष्ट्रीय चेतना की कविता में अपनी प्रतिभा से लोगों में जागरण कर स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करनेवाले कवियों में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का नाम महत्वपूर्ण है। उन्होने 'उस धरा के अमर सपूतों' कविता में भारतमाता के अमर सपूतों को राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए जागृत होने का संदेश दिया है। गोपालप्रसाद व्यास अपनी कविता 'शहिदों में तुम अपना नाम लिखा रे' में भातृभूमि के लिए मर मिटने के लिए प्रेरित करते है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्वतंत्रतापूर्व हिंदी कविता ने भारत की स्वतंत्रता के लिए जो योगदान दिया है, वह किसी भी योद्धा या राष्ट्र-नायक से कम नही है। इस दौर के कवि स्वयं स्वाधिनता सेनानी थे, जिन्होने अपनी कलम से भारतवासीयों में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्र-समर्पण के भाव का पोषण कर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय होने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष: इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्वतंत्रतापूर्व हिंदी की राष्ट्रीय चेतना की कविता कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियों को लोकर चलती है, जिनमें भारत का अतीत गौरव-गान, वर्तमान दुर्दशा पर क्रोध, जागृति का संदेश, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रगौरव, बलिदान, स्वतंत्रता की प्रबल आकांक्षा, क्रांति का आहवान, समाज परिवर्तन की उद्घोषणा आदि । इन कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन मे सक्रिय सहभागिता कर जन-मानस में स्वतंत्रता की प्रेरणा भरकर एक नया उच्छवास दिया है।

संदर्भ ग्रंथ:-

१)झा अशोक कुमार (डॉ), प्रसाद के कहानी साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना के आयाम, गौतम बुक कंपनी, जयपुर, प्र.सं. २०११, पृ.सं ५७-५८
२)डॉ. मिथिलेश पाण्डेय, संपा, भारतेंदु ग्रंथावली, खण्ड -२, नमन प्रकाशन, सं. २०१६, पृ.सं. ८११.
३)भारतेंदु हरिश्चद्र, भारत दुर्दशा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. २००६, पृ.सं. ६०
४)त्रिपाठी रामनरेश, संपा कविता कौमुदी, हिन्दी मन्दिर आगरा, पहला संस्करण, होली १८८५ पृ.सं. ५६
५)त्रिपाठी रामनरेश, स्वप्न, हिंदी मंदिर आगरा, प्र.सं. सवंत १८८५, पृ.सं. ४५
६)गुप्त मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती पेपर बैक्स, प.सं. २०१४, प्र. स. ७९
७)नरेन्द्र सिन्हा, सं, देशभक्ति की कविताएँ, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, अक्तूबर १९८५, पृ.३५
८)आजादी के लड़ाई, जतरा तराने, पहला संस्करण १९९८ सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पृ.१११.
९)डॉ. नगेन्द्र, संपा, हिंदी लाहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैंक्स, २४ सं. १९९७, पृ.सं. ५३३.
१०)http:Kavitakosh.org, रेणुका - रामधारी सिंह 'दिनकर'
११)http://www.hindwi.org, सुभद्राकुमारी चौहान, वीरों का कैसा हो बसन्त?, कविता
१२)नगेन्द्र, डॉ, संपा- हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पैपर बैक, २४ वाँ, सं. १९९६, पृ.सं. ५३६
१३)https://www.hindwi.org, विप्लव गान - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

१७. **आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीयता**

प्रा.निर्मला ल.जाधव
हिंदी विभागाध्यक्षा, कै.सौ.कमलताई जामकर महिला महाविद्यालय, परभणी।
ई- मेल :- niljajadhav.2879@gmail.com

सारांश:- "जननी जन्म भूमिश्च,स्वर्गादपिगरीयसी। " अर्थात माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है यह पंक्ति हमारी वीरता की समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित करती है। राष्ट्रीयता की भावना मानव में अपने राष्ट्र तथा मातृभूमि के लिए गौरव तथा अभियान को हमेशा जागृत रखती है। यह भावना प्राचीन काल से दिखाई देती है। इस भावना से ओतप्रोत स्वर्णिम इतिहास हमारे देश को धरती का श्रेष्ठतम देश के रूप में प्रदर्शित करता है। साहित्य में राष्ट्रीयता के भाव का दर्शन आधुनिक काल में अधिक मात्रा में दिखाई देता है एक स्वतंत्र समृद्ध काव्यधारा के रूप में राष्ट्रीय काव्यधारा विकसित हुई है। तथा इसकाव्याधरा ने युवा वर्ग में अपने देश के प्रति अभियान तथा जोश भरने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

मूल शब्द :- राष्ट्रीयता राष्ट्रीय काव्यधारा नवजागरण मैथिली शरण गुप्त, हरिऔध , माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन, दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, मातृभूमि का गौरव गान।

भूमिका :- आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्यधारा एक महत्वपूर्ण काव्य धारा है यह काव्यधारा हमारे यहां प्राचीन काल से चली आ रही है आदिकाल तथा मध्यकाल में उसका स्वरूप कुछ अलग था परंतु आधुनिक काल में जैसे ही अंग्रेजों ने हिंदुस्तान में अपनीसत्ता स्थापना की और देश में अन्याय और अत्याचार से प्रभावित शासन प्रारंभ हुआ।अंग्रेजों के अन्य और अत्याचार से पीड़ित भारतीय जनमानस असंतोष से प्रभावित हुआ।देश में फेयरली अशांति के फलस्वरूप १८५७ की क्रांति हुई और देश में एक युगांतरकारी परिवर्तन हुआ ।इस क्रांति के फलस्वरूप अंग्रेजों द्वाराहो रहे अन्याय और अत्याचार का विरोध देश में व्यापक स्तर पर होने लगा इसी पृष्ठभूमि पर भारतीय राष्ट्रीयता का जन्म होता हुआ दिखाई देता है।इस भावना के विकास में पाश्चात्य शिक्षा तथा प्रेस का बहुत बड़ा योगदान रहा है।प्रेस द्वारा राष्ट्रीय नेतागणअपने विचारों को लोगों तक पहुंचाने में सफल होते थे।विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से देश के कोने-कोने में राष्ट्रीय चेतना प्रसारित होती हुई दिखाई देते हैं परिणाम स्वरूप जनमानस देश की स्वतंत्रता के लिए संगठित प्रयास के लिए तैयार होसका।साहित्य में राजनीतिक चेतन एवं देश प्रेम तथा राष्ट्रीय भावना का प्रसार एवं प्रचार भारतेंदु काल से माना जाता है भारतेंदु काल से होते हुए द्विवेदी युग तक आते-आते देश में नवजागरण के पद चिन्ह स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं साहित्यिक क्षेत्र में अनेक साहित्यकारों ने मातृभूमि कोपराधीनता से मुक्त करने के लिए अपनी कलम चलाई अपने विचारों से भारतीय जनमानस को प्रभावित किया छायावादी काल में भी देशभक्त राष्ट्रीयता तथा संस्कृति को उत्थान की बात हुई है और छायावादोत्तर काल में भी राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना की यह परंपरा प्रवाह मां होती हुई दिखाई देती है तात्पर्य राष्ट्रीयता का

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

उदय प्राचीन काल से होता हुआ आधुनिक काल तक आते-आते एक समृद्ध परंपरा मेंतब दिल होता हुआ दिखाई देता है।एनसाइक्लोपीडियाऑफ ब्रिटानिका में स्पष्ट किया है कि —"राष्ट्रीयता का उदय केवलअठारहवीं शताब्दी के अंत में हुआ जो आगे चलकर सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन को डालने वाली एक सर्वमान्य भावना और यदि सबसे बड़ी नहीं तो कम से कम इतिहास की एक अकेली प्रबल निर्णायक शक्ति बन गई। "-१

राष्ट्रीय काव्य से तात्पर्य :- सामान्यतः राष्ट्रीय काव्य से तात्पर्य है वह काव्य जिसमें राष्ट्र के प्रति निष्ठा, प्रेम, आदर,तथा गौरव का भाव शब्दबद्धहो।जिसकेपरिणाम स्वरूपजनमानस मेंअपने देश के प्रति अभियान तथा गौरव का भाव उत्पन्न हो।आधुनिक काल मेंअंग्रेजों के आगमन के बाद भारत देश पर जों अन्याय और अत्याचारका शासन प्रारंभ हुआ था। अंग्रेजों के विरोध में तत्कालीन राजनेताओं तथा साहित्यकारों द्वारा जनमानस को मातृभूमि की मुक्ति के लिए संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य जारी हुआ। राजनीतिक क्षेत्र में यह कार्य इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना से हुआ है और साहित्य के क्षेत्र में राजनीतिक चेतना एवं देश प्रेम तथा राष्ट्रीय भावना का प्रसार और प्रचार भारतेंदुतथा उनके समकालीन साहित्यकारों द्वारा हुआ है।आधुनिक काल में हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता के जनकभारतेंदु को मानते हैं। डॉ. लाल ने भारतेंदु को "राष्ट्रीय काव्य का जन्मदाता माना है। "-२ भारतेंदु ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावना से स्वराज और देश में सुधार का विचार प्रसारित किया है।उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना की सबसे अधिक अभिव्यक्ति की है अपने साहित्य के द्वारा काल बेकरी सामाजिक आर्थिक धार्मिक राजनीतिक अवस्थाओं का चित्रण आपने किया है जिसके द्वारा उन्होंने जनता के मन में देश प्रेम की भावना को प्रज्वलित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है । इस दृष्टि से उनकी 'भारत दुर्दशा' महत्वपूर्ण रचना है। भारतेंदु तथा समकालीन रचनाकारों ने अपने रचनाओं के माध्यम से देश के नवयुवकों में देश के प्रति राष्ट्राभिमान जागृत करने का सफलप्रयास किया है।

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि:- आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्यधारा एक महत्वपूर्ण काव्य धारा है।यह काव्य धारा भारतेंदुकालसे होते हुएद्विवेदी काल, छायावादी काल, इलाहाबाद के जनक हरिवंश राय बच्चन तथा प्रयोगवादी और नई कविता के प्रवाह तक समृद्ध होती हुई निरंतरप्रवाहमान रही है।इस भाव धार के प्रमुख कवियों में मैथिलीशरण गुप्त माखनलाल चतुर्वेदी अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध सुभद्रा कुमारी चौहान सुमित्रानंदन पंत सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जय शंकर प्रसाद रामधारी सिंह दिनकर आदि का नाम लिया जाता है।इनमें से कुछ महत्वपूर्णकवियों कायोगदाननिम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जाता है---

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त :-मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि कहा जाता है आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत का गौरव गान तथा हिंदू धर्म के उत्थान कोसराहाहैं।उनकी प्रसिद्ध रचना "भारत भारती" है।इस रचना में वे कहते हैं -

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी। "- ३

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में 'भारत भारती' यह रचना काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई ।प्रस्तुसात रचना के द्वारा गुप्त जी ने देश कीसमस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया तथा भारतीय स्वाधीनता संग्राम के लिए एक भूमिका प्रस्तुत की।जिससे भारतीय युवा वर्ग प्रभावित हुआ और देश की आजादी के लिए संगठित हुआ।इसी कारणमहात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से सम्मानित किया।

पं.माखनलालचतुर्वेदी :- "एकभारतीय आत्मा "उपाधिसेसम्मानित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय काव्यधारा केमहत्वपूर्णसाहित्यकाररहें हैं।उनकीरचनाओं में देशकागौरवतथा देशप्रेम व्यक्त हुआहैं।-४"एकफूल कीचाह "उनकीलोकप्रिय औरबेहदप्रशंसनीय रचनासिद्ध हुई।प्रस्तुत रचना में बलिदान कीभावना अभिव्यक्तहुईहैं।वे कहते हैं —

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।। " ५

इसप्रकारउन्होंने स्वाधीनता आन्दोलन में शहीद होने वाले वीरों की शहादत की प्रशंसा कवि करतें हैं।

·सुभद्रा कुमारी चौहान :-वीरांगना झांसी कीरानी कीवीरतासाहसकागुणगान करकेसुप्तपड़ें भारतियों केमनमें ऊर्जा भरनेकामहत्वपूर्ण कार्य सुभद्रा कुमारी चौहान नेअपनेकाव्यकेमाध्यम से किया है।उनकीलोकप्रिय रचना "झांसीकीरानी "रहीं हैं।साथही "जालियांवाला बाग में बसंत "रचना में भीअंग्रेजों केअत्याचार कीभयावहता बयानकिया हैं।

·सोहनलाल द्विवेदी:- राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख साहित्यकारों में से एक नाम सोहनलाल द्विवेदी का है।वे राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक और सशक्त कवि रहे हैं। "राणा प्रताप के प्रति" उनकी लोकप्रिय काव्य रचना रही है।इस कविता के द्वारा आपने महाराणा प्रताप के चरित्र के माध्यम से भारतीय नौजवानों के लिए शक्ति, साहस, बल, और पराक्रमआदि महाराणा प्रताप केगुणों काचित्रण करस्वाभिमानतथावीरता संदेश नौजवानों के सामनेप्रस्तुत किया है।आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश के गौरवपूर्ण कथाओं को आधुनिक युग के अनुरूप बनाकर रोचक शैली में प्रस्तुत किया है।

·रामधारी सिंह 'दिनकर' :- दिनकर जी राष्ट्रीय काव्यधारा के ओजस्वी प्रतिभा संपन्न और समृद्ध कवि रहे हैं।वे भारत की स्वतंत्रता के लिए वीरों की आवश्यकता को अनुरोध करते हुए देश की समस्याओं को उजागर करते हैं उनके राष्ट्रीय भावना काव्य के माध्यम से समृद्ध होती हुई प्रवाहित हुई वह कट्टर देशभक्त है। 'कुरुक्षेत्र' उनकी लोकप्रिय रचना है।जागो फिर एक बार रचना के माध्यम से दिनकर जी देश की स्वतंत्रता के लिए वीरों की आवश्यकता पर बल देते हैं। प्रस्तुत रचना युवा वर्ग को देश पर मर मिटने के लिए प्रोत्साहित तथा प्रेरित करने वाली रही है।

·पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' :- नवीन जी स्वयं स्वाधीनता संग्राम के सेनानी तथा वीर रस के लोकप्रिय कवि रहे हैं उनके काव्य में राष्ट्रीय ताकि प्रमुख धारा प्रवाहित हुई है उनके काव्य में स्पूर्ति बाल और रोजस्विता निखरती है। 'विप्लवगायन' उनकी लोकप्रिय रचना है। प्रस्तुत रचना क्रांति की आवश्यकता पर बल देती है। समाज परिवर्तन के लिए क्रांति के परिणामकारकताउन्होंने अपने काव्य के माध्यम से

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

प्रस्तुत की है। वे कहते हैं-"कभी कुछ ऐसीतान सुनो, जिससे उथल-पुथल मच जाए। " ६नवीन जी के काव्य ने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

निष्कर्ष रूप मेंयहकहाजासकता है किराष्ट्रीय कामधारा हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण काव्यधाराआहे इसका विधाराने देश के स्वाधीनता संग्राम मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।इसकाव्याधरा के फल स्वरुप भारतीय जनमानस को ब्रिटिशों के अन्य कार्य सत्ता के विरोध में प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया है, ऊर्जावान किया है। नौजवानों के लिए राष्ट्रीय काव्यधारा संजीवनी स्वरूप रही है। इसकाव्याधरा ने युवाओं के मन में देश के लिए मर मिटने की भावना निर्माण की। आजादी की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की भावना से युवा वर्ग प्रेरित हो सका।राष्ट्रीय काव्य धारा में देश के अतीत का गौरव गान संस्कृति का महत्व तथा भारतीयवीरों की वीरता का शौर्य का गुणगान हुआ है। जो हमें सदैव प्रेरित करता है।

संदर्भ सूची एवं आधार सामग्री:-

१-एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका:- पृष्ठ १४९
२-आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास:- ले.डॉ. श्रीकृष्ण लालपृष्ठ ८२
३-आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास :- ले.लक्ष्मीसागर
वार्ष्णेय पृष्ठ ३२२
४-वहीं….
५-एक फुल की चाह:- कविपं.माखनलाल चतुर्वेदी
६-कभी कुछ ऐसी तान सुनाओ :- कवि. पं. बालकृष्ण शर्मा नवीन

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

१८ स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य

प्रो. डॉ. संतोशकुमार यषवंतकर
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, षिवाजीनगर, गढी, त. गेवराई जि. बीड
महाराष्ट्र पिन ४३११४३ मो. ९४०४६४६७६८

भारत माँ को आजाद कराने के लिए कईयों ने अपने प्राणों की आहुती दी है। कईयों ने अपने लाल खोए है। कईयों ने अपने प्राण देश के लिए न्यौछावर किए। तब जाकर मिली है यह आजादी। आजादी के लिए जिस तरह हत्यार और तलवारे चली है उसी तरह रचनाकारों ने भी अपनी कलम के माध्यम से देश को आजाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कलम और तलवार दोनों में तेज धार होती है तथा दोनों से ही जंग लडी जा सकती है। साधारण सा दिखनेवाली कलम तलवार से छोटी जरूर है पर कलम की शक्ति तलवार से अधिक हैं क्योंकि कलम की शक्ति स्थायी और अपराजेय है। कलम की क्षमता उन चीजों को पूरा करने की होती है जो एक शक्तिशाली धार वाली तलवार नहीं कर सकती। कलम तलवार से प्रबल और ताकतवर होती है। कलम और तलवार में एक समानता यह है कि दोनों में भी समाज में बदलाव लाने की क्षमता होती है। भारतीय साहित्यकारों ने अपनी कलम की माध्यम से देशवासियों के दिलों में आजादी के लिए देश प्रेम की भावना जगाकर उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया है। इसमें हिंदी साहित्यकारों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना को रचनाकोरों ने कुट-कुट कर भरा है। हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में राष्ट्रीय भावना को निरूपित किया है। खासकर हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना उभरकर सामने आयी है। हिंदी कविताओं में राष्ट्रप्रेम,त्याग, बलिदान, आत्मसमर्पण की भावना को उजागर किया है। अतित का गौरवगाण और वर्तमान की दूर्दशा को चित्रित कर भारतीयों के मन में राष्ट्रीय भावना को जागृत कर आजादी के लिए संघर्ष को अनिवार्य बतलाते हुए बलिदानों, कुर्बानियों की आहुतियों के उदाहरणों के साथ देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित करने का काम हिंदी कवियों ने भी बखूबी निभाया है। यहा तक की भडकाऊ भाषण देकर जेल भी गए है। जेल में रहकर भी राष्ट्रीय भावाना को जागृत करने का काम निरंतर करते रहे।

हिंदी साहित्य में एक से बढकर एक दिग्गज देशभक्त कवि पैदा हुए है। देशप्रेम की भावना ही काव्यगत राष्ट्रीय चेतना का केंद्र बिंदू है। माखनलाल चतुर्वेदी जी की पुष्प की अभिलाषा और वीरव्रती, मैथिलीशरण गुप्त जी की भूमि भाग्य-सा, भारतवर्ष, मातृभूमि, भारत-भारती, मेरे प्यारे देश, मंगलमूर्ति तिरंगा, प्यारा, तो सुभद्राकुमारी चौहान की झांसी की रानी आदि कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को उजागर किया है। डॉ. बलदेव के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर दिखाई देता है। हिंदी बाल कविताओं में राष्ट्रीय चेतना देखने को मिलती है। डॉ. श्रीप्रसाद, प्रशांत अग्निहोत्री, डॉ. नागेश पांडेय, विमला जोशी, सोहनलाल व्दिवेदी, डॉ. मित्रेशकुमार गुप्त, प्रभाष मिश्र, रमेशचंद्र पंत, आदि कवियों के कविताओं में बालकों के मन में देशभक्ति की भावना का बीजारोपण करना और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के भावना को

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

विकसित करने का काम किया है। देशबंधु शाहजहॉपुरी की बाल कविताओं में राष्ट्रीय भावना मुखरीत हुई है। देश की आजादी के लिए दिए गए बलिदान की याद दिलाते हुए वे लिखते है कि

पंद्रह अगस्त आया है फिर से,
लेकर खुशियों का उपहार।
बलिदानों के गीतों से अब,
गूँज उठे ये गगन अपार। १

हिंदी साहित्य में एक से बढकर एक दिग्गज देषभक्त कवि पैदा हुए है। देष प्रेम की भावना ही काव्यगत राश्ट्रीय चेतना का केंद्र बिंदू है। माखनलाल चतुर्वेदी जी की 'पुश्प की अभिलाशा' और 'वीरव्रती' मैथिलीषरण गुप्त जी की 'भूमि भाग्य-सा', 'भारतवर्श, 'मातृभूमि', 'भारत-भारती' रामधारी सिंह दिनकर जी की 'प्रणति', 'हिमालय', 'मेरे प्यारे देष मंगलमूर्ति तिरंगा प्यारा', तो सुभद्राकुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' आदि कविताओं के माध्यम से राश्ट्रीय भावना को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

अंग्रेज सरकार के प्रति आक्रोष एवं विद्रोह का स्वर दिखाई देता है। राश्ट्र के प्रति स्नेह, प्रेम को जागृत किया है। सत्याग्रह के प्रति आस्था और बलिदान की भावना को पनपाने का काम किया है। सत्ता में बैठे स्वार्थी और पदलोलुप लोगों को ताने देकर उनकी निश्क्रियता को क्रियाषिलता में बदलने हेतु भरकस प्रयास अपनी कविताओं के माध्यम से किया है। देषभक्ति और राश्ट्रीय चेतना इन कवियों के काव्य का मानो मूल उदेष्य ही रहा है।

राश्ट्रकवि माखनलाल चुर्तवेदी जी आजादी क लिए बेहद चिंतित रहते थे। उन्होंने भारतीयों के मन में आजादी की चिनगारी को जलाने को काम अपनी कविताओं के माध्यम से किया है। आजादी के लिए न केवल लेखन किया बल्कि उन्होने कई भडकाउ भाशण भी दिए जिसके फलस्वरूप उन्हें बिलासपूर जेल में भेजा गया । वे वहां भी चूप नहीं बैठे अपनी कविताओं के माध्यम से देषप्रेम और राश्ट्रप्रेम की भावना को निरंतर जागृत रखा। इसी जेल में उन्होंने 'पुश्प की अभिलाशा' यह कविता लिखी है।

चाह नहीं मैं सुरबालाके, गहनों में गूथा जाऊ
चाह नहीं, प्रेमी माला में, विध प्यारी को ललचाऊ
चाह नहीं, सम्राटों के षव, पर हे हरि डाला जाऊ
चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढू भाग्य पर इठलाऊ
मुझे तोड लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर षीष चढाने जिस पथ पर जावें वीर अनेक।[२]

विदेषी षोशण और अत्याचार के खिलाफ लढकर ही आजादी को प्राप्त करना था इसके खिलाफ नवयुवको के मन में अंग्रेजों के प्रति लढने का मादा पैदा किया साथ ही व्यक्ति के हृदय में यह ज्वाला धधकने का भी काम किया जिसके हृदय में यह ज्वाला न धधके तो वो कैसा भारतीय है? उसका जीवन निरर्थक है वह मृत सदृष्य है।

व्दार बलि का खोल

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

चल भुडोल कर दे
एक हिम-गिरि एक सिर
एक मोल कर दे,
मसलकर अपने इरादोंसे उठाकर,
दो हथैली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें
रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी
जांच कर, तू सीस दे-देकर जवानी।[३]

भारत की आजादी के लिए लढ रहे वीरों का हौसलाफजाई करने हेतु यह कविता लिखी है। उनके कविताओं में बलिदान, त्याग समर्पण विद्रोह, देषप्रेम, देषभक्ति, गांधीवादी दृश्टि है। महात्मा गांधी जी के संर्पक में थे लोकमान्य तिलक जी से वे प्रभावित थे। 'पुश्प की अभिलाशा' है कि महान हस्ती के गले में जाना नहीं है और न हीं किसी आभूशणों में इस्तमाल होकर किसी के रूप की षोभा बढाना है। वह तो केवल षहिद होने के लिए जवान जिस पथ पर से जाते है उस पथ पर फैंकने के लिए कहते है। देष के लिए मर मिटने वाले या देष पर अपने प्राण न्यौछावर करनेवाले सभी वीरों के प्रिति सम्मान है। देषभक्ति का सर्वोपरी और सही स्थान बताते है इस कविता के माध्यम से त्याग और समर्पण का भाव जागृत होता है।

हिंदी साहित्य में व्दिवेदी युगीन कवि मैथिलीषरण गुप्त राश्ट्रीय कवि हैं। इनके काव्य में राश्ट्रीय चेतना प्रखर रूप में आई है वे राश्ट्रीय चेतना के प्रबल समर्थक कवि है। राश्ट्रप्रेम के उदात्त विचारों के महानायक कवि कहलाये जाते है। उनके काव्य मे राश्ट्र का गौरवगाण और वर्तमान की दूर्दषा देखने को मिलती है। उन्होंने अपनी 'भारत-भारती' इस रचना से राश्ट्रीयता का षंखनाद किया। राश्ट्रीय एकता, राश्ट्रप्रेम, और राश्ट्रीय चेतना को हिंदी कविता का प्रमुख विशय बनाने में गुप्त जी का योगदान सराहनीय है। भारतीय नवयुवकों को आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए 'भारत-भारती' इस रचना को आधार बनाया है। नवयुवकों के मन में ही नहीं बल्कि सभी मनुश्य के रग-रग में राश्ट्रीय चेतना के स्वर फूंके है। अतिथ का गौरवगाण और वर्तमान की दूर्दषा से उव्दविंन होकर वे भारतीयों से पूछते है किकृ

हम कौन थे क्या हो गये
और क्या होगे अभी
आओं विचारे बैठकर
ये समस्याऐं सभी।[४]

रामधारी सिंह दिनकर जी ने अपे काव्य में राश्ट्रीय चेतना को न केवल मुखरित किया है बल्कि देषवासियों में राश्ट्रीयता का भाव जागृत करने में वे सफल हुए। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जन-मानस में उर्जा का संचार भरने का काम किया है। उनकी अधिकांष कविताएं राश्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। दिनकर के काव्य में राश्ट्रीय चेतना अतीत का गौरव-गान, वर्तमान की दूर्दषा, क्रांति की भावना, बलिदान की भावना और एकता की भावना के रूप में

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

उजागर हुई है। जनता जगी हूई है कविता में मुक्ति की बाजी जितने हेतु जीवन को मरण के दॉव पर लगाने के लिए कहते है जैसे किकृ

खेल मरण का खेल, मुक्ति की यह पहली बाजी है।
सिर पर उठा वज्र, ऑखों पर से हरि का अभिषाप,
अग्नि-स्नान के बिना धुलेगा नहीं राश्ट्र का पाप।[५]

दिनकर के काव्य में राश्ट्रीय चेतना अतीत का गौरव-गान, वर्तमान की दूर्दषा के रूप में व्यक्त हुई है। जैसे कि...

'तू पूछ अवध से राम कहॉ
विद्यापति कवि के गान कहॉ।[६]

सुभद्राकुमारी चौहान राश्ट्रीय चेतना की एक सजग कवियत्री के रूप में जानी जाती है क्योंकि आजादी के लिए उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से भरकस प्रयास किया है। उनका काव्य राश्ट्रीय चेतना से भरा हुआ है। वे झॉसी की रानी इस कविता में देष प्रेम की भावना को उजागर किया है। जैसे किकृ

सिंहासन हिल उठे, राजवंषों ने भुकटी तानी थी,
बूढे भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सतावन में वह तलवार पूरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लढी मर्दानी वह तो झॉसीवाली रानी थी,।[७]

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

१ डॉ. देशबंधु शाहजहॉपुरी, बाल कविता पंद्रह अगस्त बालवाटिका मासिक पत्रिका, स्वातंत्र्य चेतना अंक , अगस्त २०१५, नंदनभवन कावॉखेडा पार्क, भीलवाडा राजस्थान पृ. संख्या १४
२.हिमकिरीटिनी-पुश की अभिलाशा - माखनलाल चतुर्वेदी पृश्ठ संख्या २७
३. हिमकिरीटिनी-सिपाही - माखनलाल चतुर्वेदी पृश्ठ संख्या ३८
४. भारत-भारती वर्तमान खंड- मैथिलीषरण गुप्त- पृश्ठ संख्या १०
५. परषुराम की प्रतिक्षा- रामधारी सिंह दिनकर पृश्ठ संख्या- ४२
६ रेणूका- रामधारी सिंह दिनकर पृश्ठ संख्या- ५१
७. सुभद्राकुमारी चौहान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व- डॉ.आर.पी. वर्मापृ.सं.६०

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

१९. हिन्दी नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे
हिंदी विभाग, माधवराव पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय
पालम जि. परभणी (महाराष्ट्र)

सारांश
जब कोई नयी विचारधारा अथवा प्रगति सम्बन्धी नयी तकनीक समाज में प्रविष्ट होती है और निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ती है तब उसे सामाजिक चेतना की संज्ञा प्रदान की जाती है। चेतना का अर्थ राजनीति, धर्म तथा संस्कृति आदि के विविध तत्वों से है। परिवर्तन संसार का नियम है इस नियम के अन्तर्गत समाज व्यवस्था, सांस्कृतिक आचार-विचार, व्यवहार, उद्देश्य, नये-नये आविष्कार, मानव जीवन, मानव स्वभाव, मानव कृत्य तथा मानवीय जीवन मूल्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। परिवर्तन की इस प्रक्रिया को चेतना के नाम से सम्बोधित किया जाता है। चेतना के निम्नलिखित तत्व होते हैं- 1. व्यक्ति, 2, शिक्षा, 3, प्रेम, विवाह, दहेज, तथा मानव का पारिवारिक व्यवहार। यही तत्व चेतना का स्वरूप ग्रहण करते हैं।

चेतना

हमारे देश भारतवर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जो मोहभंग की स्थिति उत्पन्न हुई उसका चित्रण हमें सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। "मानव में 'चेतना' एक प्रकार की प्रमुख विशेषता है। चेतना से तात्पर्य है-वस्तु स्थिति एवं व्यवहारों का ज्ञान।"1

चेतना का अर्थ

"चैतन्य, संज्ञा, सुध बुध, होश होश-हवास, जागृति, जागरण, उद्‌बोधन, बुद्धि अथवा बोध की वृत्ति या शक्ति, चेतनता, मनोवृत्ति, सावधान तथा चौकस आदि ।"2

"चेतना- बृद्धि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, सुधि, याद, चेतना, चैतन्य, संज्ञा तथा होश आदि ।"3

चेतना के संदर्भ में साहित्यिक विद्वत्जनों का कथन है कि किसी व्यक्ति से मिली उसकी अंतरंग नेक विचार प्रेरणा, व्यक्ति की आन्तरिक मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति एवं अपने आप के प्रति जाग्रतावस्था का, बौद्धिकता का उसके अंतरंग 'स्व' का ईमानदार निरुपण शैली में किया गया बयान या आत्मपरीक्षण कहा जाये तो अनुचित न होगा। अतः स्पष्ट है कि "चेतना मनुष्य का अनिवार्य अंग है।"4

चेतना की एक अन्य परिभाषा विनोबा भावे ने इस प्रकार व्यक्त की है- "वसुधैव कुटुम्बकं' अर्थात् वैश्विक सौहार्द सम्बन्धी विचार को चेतना की संज्ञा प्रदान की जाये तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए। चेतना का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत है। चेतना को हम परिभाषा की परिधि में नहीं प्रतिबन्धित कर सकते हैं।"6

चेतना की उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वत्जनों का मत है कि चेतना का जन्म मानव के जन्म के साथ ही हुआ है। माँ के गर्भ के बाहर आने के पश्चात् मानव में चेतना का उद्‌भव होता है। काँय-काँय की ध्वनि चेतना की

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

प्रथम सीढ़ी है। चेतना अपनी स्वतंत्र इकाई के साथ अपने विकास का उतना ही लम्बा मार्ग तय चुकी है जितना लम्बा मार्ग मानव ने अपने पद चापों के माध्यम से अभी तक तय किया है। "मनु द्वारा मानव संस्कृति की निर्माण की आकांक्षा और आदम की निषिद्धफल खाने की उत्कृष्ट कामना के साथ ही चेतना का सुन्दरम् एवं उज्ज्वल इतिहास प्रारम्भ होता है।"7

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाजीकरण की प्रक्रिया मानव को जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित करता है। समाज का हितैषी व्यक्ति ही सर्वाधिक जागरूक अथवा चेतनता से युक्त होता है। व्यक्ति की चेतना का प्रमाण समाज में प्रवर्त्तमान विभिन्न क्षेत्रों में उसके अपने सम्बन्धों की प्रबलता या निर्बलता पर निर्भर है। समाज का सम्बन्ध भी किसी देशकाल में प्रवर्त्तमान परिस्थितियों प्रवृत्तियों से जितना अधिक होगा समाज भी उतना ही प्रगतिशील एवं चेतना सम्पन्न होगा। हमारे देश भारतवर्ष में स्वतंत्रता के पूर्व जनमानस में जो राष्ट्रीयता विद्यमान थी, वह देश के स्वतंत्र होने के पश्चात शनैः शनैः क्षीण होने लगी। राष्ट्रीय चेतना हेतु राष्ट्र पुरुषों द्वारा जो कृत्य किये गये थे उनमें राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रप्रेम, मानव-मानव प्रेम, संकट के समय मानवीय सहायता तथा आपसी सौहार्द आदि के सद्गुण ओत-प्रोत थे यह सद्गुण देश के स्वतंत्र होने के पश्चात् दुर्गुणों में परिवर्तित हो गये। राष्ट्र के समक्ष दरिद्रता, भुखमरी, छीना-झपटी, अत्याचार, भूख, विषमता, काला बाजारी माफियाओं द्वारा अवैध रूप से धन संग्रह, स्वार्थ, देश की अखण्डता एवं सुरक्षा को खतरा तथा राष्ट्र विरोधी कार्यों आदि की भरमार हो गयी।

राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्रीय शब्द को जानने के पूर्व हमें 'राष्ट्र' शब्द को ज्ञात करना अत्यंत आवश्यक है। "जिस देश, प्रदेश एवं स्थान के लोग विशिष्ट भाषा द्वारा विचार विनिमय करते हैं उस स्थान को राष्ट्र की संज्ञा प्रदान की जाती है।"8 इसके अतिरिक्त राष्ट्र को समझने के लिए विद्वत्जनों ने यह भी कहा है कि-एक राष्ट्र सांस्कृतिक समानता का एक सामाजिक समूह है जो अपने मानसिक (Psychic) जीवन और अभिव्यक्ति की एकता के विषय में पूर्ण चेतन और दृढ़ निश्चयी है। राष्ट्र बनने के लिए सांस्कृतिक, मानसिक तथा अभिव्यक्ति की एकता के लिए दृढ़ निश्चयी और पूर्ण रूप से सचेत होना आवश्यक है। भूमि, भूमिवासी और जन संस्कृति तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र के स्वरूप का निर्माण होता है। राष्ट्रीयता राजनीतिक एकता तथा सत्ताधारी स्वतन्त्रता को प्राप्त करके ही राष्ट्र की निर्मिति सम्भव है।

आज मानव को उसकी बढ़ती हुई आवश्यकताओं ने उसे अधिकाधिक धनलोलुप बना दिया है। विगत युग जीवन और आधुनिक जीवन स्तर में परिवर्तन के अन्तर ने धन की आवश्यकता में वृद्धिकर दी है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में मानव जीवन का आधार केवल एकमात्र अर्थ (धन) ही हो गया है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि मानव चेतना का मानदण्ड अर्थतन्त्र एवं उसकी तीव्र प्रबलता ही है। अर्थ की महत्ता को स्वीकार करते हुए महान अर्थशास्त्री कौटिल्य ने धनभोग तथा उसके उपार्जन की सीमा रेखा भी निर्धारित की है। आज आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अर्थ-धर्म काम इस त्रिवर्ग का संतुलित

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

उपयोग करे। समाज का विभाजन भी इसी कारण तीन वर्गों उच्च मध्य और निम्न में विभाजित है। आज के समय में मानव जीवन में अर्थ के कारण ही अनेक आन्दोलन समस्याएँ एवं विषमताएँ दृष्टिगोचर हो रही हैं। हमारे देश भारतवर्ष में राष्ट्रीयता का अभाव नजर आ रहा है। जनता पूरे जोश के साथ राष्ट्रीयता का आन्दोलन नहीं खड़ा कर पा रही है। भारतवर्ष के अधिक से अधिक नागरिक आज पहले अपना स्वार्थ देखते हैं और बाद में देश के विषय में सोचते हैं, यही समस्त समस्याओं के जड़ में है। स्वार्थ की प्रवृत्ति के कारण देश की अखण्डता एवं सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। हमारे देश में राष्ट्रीयता का अभाव है क्योंकि प्रभुता सम्पन्न एवं राजनीतिक लोग सत्ता हथियाने के लिए राष्ट्र विरोधी कृत्य करने में किसी भी प्रकार की शर्म नहीं महसूस कर रहे हैं। राजनीतिक दलों में भ्रष्ट लोगों की भरमार है। वे एक दूसरे की काली करतूतों एवं भ्रष्ट कार्यों को नजर अंदाज कर रहे हैं तथा जनता को भुलावा देने के लिए एक दूसरे के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप करने का नाटक कर रहे हैं। समस्त समस्याओं का निदान यह है कि जनता जनार्दन में राष्ट्रीयता का भाव जाग्रत करना।

नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

सैद्धान्तिक दृष्टि से देखा जाये तो आजादी के पश्चात् का समय युग की दो प्रधान विचार धाराओं का युग है। एक ओर ऐतिहासिक, भौतिक दृष्टि कांति तथा वर्गहीन समाजवादी समाज की स्थापना का उद्देश्य लिए समाजवादी युग की चेतना तथा दूसरी ओर पूँजीवादी शोषण प्रवृत्ति की विचारधारा। जनवादी तथा राष्ट्रीय लेखकों के लेखन में मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था विद्यमान रही है। "साहित्यिक परिवर्तनों के मूल में परिवर्तन होता है। यही कारण है कि अनेक साहित्यकारों ने अपने मानवतावादी दृष्टिकोण को क्रान्तिकारी मोड़ दिया है।"9

नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य यह है कि हिन्दी साहित्य में नाटक विधा के अन्तर्गत अनेकानेक नाटकों के माध्यम से जनमानस में देश प्रेम, स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रीय एकता सदृश्य भाव उत्पन्न करना। हमें हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग से ही हिन्दी नाटकों में राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय चेतना का भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। इस राष्ट्रीय चेतना जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे जयशंकर प्रसाद, राधाकृष्ण दास तथा उदयशंकर भट्ट जैसे नामी-गिरामी नाटककारों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सन् 1857 ई. की क्रांति ने देश में राष्ट्र की एकता एवं राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करने तथा जनजीवन में राष्ट्रीय चेतना की भावना को जाग्रत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उस कालखण्ड में लोक साहित्य (नाटक) ही भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का महत्वपूर्ण साधन था। भारत दुर्दशा नाटक ने सर्वप्रथम देश की दुर्दशा और स्वतंत्रता की आवश्यकता को उजागर किया है। इसके पश्चात् चन्द्रगुप्त और ध्रुव स्वामिनी (जयशंकर प्रसाद) नाटकों ने भी राष्ट्रीय चेतना को प्रकाशित किया है इसके पश्चात् निरन्तर नाट्य साहित्य ने अतीत, गौरव, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय एकता को विचारों से जनमानस को अवगत करवाया है। वर्तमान समय में डॉ. राम कुमार वर्मा जी एवं अनेक नाट्य साहित्यकारों ने अपनी नाट्य कृतियों में राष्ट्रीय चेतना के पक्ष का उजागर किया है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के पूर्व हमारे देश का जनमानस गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। परतंत्रता के कारण जनमानस की आवाज उसके शरीर रूपी चौखटों के भीतर ही कैद थी। हमारे देश भारतवर्ष में राष्ट्रीय चेतना का पुनर्जागरण सन् 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् ही हुआ है। नाट्य साहित्य विधा जो कि हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है ने भारतीयों के मन में राष्ट्रीय चेतना की भावना जाग्रत की है। हमारे देश भारतवर्ष के अनेक नाटक साहित्यकारों यथा-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मीनारायण लाल, डॉ. रामकुमार वर्मा, हरिशंकर परसाई, नरेन्द्र कोहली, तथा रवीन्द्र त्यागी आदि ने राष्ट्रीय प्रेम तथा राष्ट्रीय एकता को व्यक्त किया है।

संदर्भ

1. साठोत्तर साहित्य में राजनीतिक चेतना-डॉ. कांबले बालकृष्ण यलप्पा, पृ. 176 संस्करण 2012, अपर्णा प्रकाशन कानपुर।
2. नालंदा विशाल शब्द सागर-सं. श्रीनवल जी, पृ. 235, संस्करण 2018, आदीश बुक डिपो दिल्ली 3. नालंदा अद्यतन कोश-सं. पुरुषोत्तम नारायण अग्रवाल, पृ. 863, संस्करण 1982, ज्ञानमण्डल वाराणसी
4. हिन्दी शब्द सागर-सं. श्याम सुन्दर दास, पृ. 1576, संस्करण 1980, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
5. साहित्य के नए संदर्भ-डॉ. रामगोपाल शर्मा, पृ. 45 संस्करण 1999 दिनमान प्रकाशन दिल्ली
6. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में व्यष्टि-समष्टि चेतना-डॉ. आवचार आमोबा, पृ. 99, संस्करण 2016, समता प्रकाशन रुरा कानपुर देहात
7. वही, पृ. 99
8. दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में चेतना के विविध आयाम-डॉ. अमर बारकुल पाटील, पृ. 34, संस्करण 2015 समता प्रकाशन रुरा कानपुर देहात।
9. हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना-डॉ. शिवाजी, सांगोले, पृ. 154 संस्करण 2006, समता प्रकाशन रुरा कानपुर देहात

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२०. **हिंदी कहानी में राष्ट्रीय चेतना**

प्रो.वसंत माळी

उपप्रधानाचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,

श्री आसारामजी भांडवलदार कला,वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

देवगांव(रं),तह.कन्नड,जि.छत्रपति संभाजीनगर

शोध सार: हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना आजादी मिलने के पहले से ही पाई जाती है। कहां जाता है कि अठारवीं और उन्नीसवीं सदी में अनेक लेखकों ने, कवियों ने, साधु-संतों ने साहित्य चेतना को बढ़ावा देने का कार्य किया है। वास्तव में राष्ट्रीय चेतना के विकास में आधुनिक हिंदी साहित्य का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी साहित्य ने हमेशा अपने साहित्य सृजन के माध्यम से भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है। समाज में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया है। लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्य के प्रति जागरूक भी किया है। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जी की मान्यता है कि राष्ट्रीयता श्रेणीगत चेतना की एक अनुभूति है, जो एक ओर तो वह सभी को भेदभाव दबाकर एक सूत्र में बांधे रखती है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी साहित्यकारों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण हैं।भारतीय साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से विदेशी शासको के विरोध में जनता में जागरूकता लाने का प्रयास किया हैं।उनमें नई चेतना जागरूक की है।ऐसे साहित्यकारों में प्रेमचंद,माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर,निराला,सुभद्रा कुमारी चौहान आदि के नाम उल्लेखनीय है।इन साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनता को आजादी की लड़ाई में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

बीज शब्द: राष्ट्रीयता, स्वदेश प्रेम, मातृभूमि, त्याग, गुलामी,बलिदान।

भूमिका:-

भारत एक प्रभावशाली राष्ट्र रहा है।यहां पर अनेक भारतीय लेखकों ने अपनी-अपनी भाषाओं के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने का प्रयास किया हैं।जब भारत देश पर अंग्रेजों का राज था, उस समय गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने का प्रयास सभी लेखकों ने किया हैं।राष्ट्रीय चेतना का सीधा अर्थ समाज की प्रगति से है ।जिस क्षण से समाज में एकता की लहर सहज भाव से आ जाती है, उस समय से राष्ट्रीय चेतना का श्रीगणेशा होता है। राष्ट्र शब्द समाज के अर्थ में ही प्रमुख होता है। इसका अर्थ है देश की रक्षा, देश का गौरवगान,देश के प्रति जनता की अच्छी सोच आदि।राष्ट्रीय चेतना से देश के गौरव के लिए बलिदान और साहस की भावना बढ़ती है।देश के अस्मिता के लिए प्रयास होता है।देश के विकास में सामाजिक,आर्थिक और राजनीतिक विकास होता है।

हिंदी कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने और राष्ट्रीय चेतना विकसित करने का एक सशक्त माध्यम रही हैं। राष्ट्र की उन्नति और सामाजिक बदलाव में साहित्य की

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

महत्वपूर्ण भूमिका होती है, और हिंदी कहानियाँ इस दिशा में विशेष योगदान देती हैं।राष्ट्रीय चेतना का अर्थ केवल देशप्रेम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की समस्याओं को पहचानने, उनके समाधान के लिए प्रयास करने और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के प्रति जागरूकता फैलाने से भी जुड़ा है। हिंदी कहानियों ने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक भारत के निर्माण तक इस चेतना को अभिव्यक्त किया है।

प्रेमचंद, यशपाल, जयशंकर प्रसाद, भीष्म साहनी और अज्ञेय जैसे लेखकों की कहानियों ने भारतीय समाज की वास्तविकताओं को उकेरते हुए राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार और लोकतांत्रिक मूल्यों को बल दिया। उनकी कहानियाँ न केवल पाठकों को प्रेरित करती हैं, बल्कि उन्हें राष्ट्र की प्रगति और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूक भी बनाती हैं।इस प्रकार हिंदी कहानियाँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के संवाहक के रूप में भी कार्य करती हैं, जो समाज में परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हिंदी की प्रमुख कहानियों में राष्ट्रीय चेतना किस तरह अभिव्यक्त हुई है,उस पर विस्तार से प्रकाश डालने की कोशिश करेंगे।

प्रेमचंद के 'गरीबों का राज' कहानी में देश प्रेम:

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के महान लेखक और उपन्यासकार थे, जिनका योगदान भारतीय साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका वास्तविक नाम दीनानाथ शर्मा था, लेकिन वे प्रेमचंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के पास लमही नामक गाँव में जन्मे थे और 8 अक्टूबर,1936 को उनका निधन हुआ। प्रेमचंद का समग्र साहित्य भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है।जिसमें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं की गहरी समझ होती है। उनके साहित्य में मानवता, नैतिकता, और सामाजिक न्याय के विषय प्रमुख हैं।

प्रेमचंद के उपन्यास भारतीय समाज की सच्चाइयों को उजागर करने वाले हैं। उनके प्रमुख उपन्यासों में गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि, नवजीवन, सेवासदन, प्रतिज्ञा, मनसोस आदि आते हैं। इनमें से गोदान सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण उपन्यास है, जो भारतीय किसानों की जीवन-स्थिति और संघर्ष को दर्शाता है।प्रेमचंद की कहानियाँ जीवन की सरलता और कठोरता दोनों को व्यक्त करती हैं।उनकी कहानियाँ समाज के निम्न वर्ग, किसान, मजदूर, और शोषित वर्ग की स्थिति को चित्रित करती हैं। उनकी प्रमुख कहानियों में ईदगाह, पंच परमेश्वर, दो बैलों की कथा, कच्ची कली, ठाकुर का कुआँ,गरीबों का राज और जवानी की आंधी शामिल हैं। 'गरीबों का राज' कहानी में देश प्रेम का प्रमुख संदेश यह है कि एक सच्चा देशभक्त वह है जो अपने देश के गरीब और असहाय वर्ग की मदद करता है, उनकी भलाई के लिए काम करता है। इस कहानी में गरीबों के राजा का चरित्र देश प्रेम की एक अलग ही परिभाषा प्रस्तुत करता है। वह देश के कमजोर वर्ग के लिए न केवल योजनाएं बनाता है, बल्कि उनकी समस्याओं का समाधान भी करता है।कहानी में राजा यह महसूस करता है कि असली देश प्रेम केवल युद्ध में शौर्य दिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गरीबों, असहायों, और शोषित वर्ग की मदद करने से भी जुड़ा हुआ है। वह समझता है कि एक राष्ट्र तब तक समृद्ध नहीं हो सकता, जब तक उसके हर नागरिक को समान अधिकार और अवसर न

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

मिले।राजा का यह दृष्टिकोण देश प्रेम की गहरी और सच्ची भावना को व्यक्त करता है। वह यह दिखाता है कि देश की असली ताकत उसके नागरिकों की खुशहाली और उनके अधिकारों की रक्षा में है। इसलिए, गरीबों की भलाई में ही देश की सच्ची प्रगति और समृद्धि है।राजा अपने राज्य के गरीबों के लिए योजनाएं बनाता है, तो वह यह दिखाता है कि किसी भी राष्ट्र की शक्ति उसके नागरिकों की खुशहाली और उनके अधिकारों की रक्षा में है। राजा कहता है,"देश की सेवा सिर्फ लड़ाई में नहीं, बल्कि लोगों के दुखों को कम करने में है,"1 यह उद्धरण देश प्रेम के सच्चे रूप को दर्शाता है

यशपाल के 'धरती और गुलाम' कहानी में राष्ट्रीय चेतना:

यशपाल(1903-1976) हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कथाकार और निबंधकार थे। वे प्रगतिशील साहित्यिक आंदोलन के स्तंभों में से एक थे। और अपने क्रांतिकारी विचारों, सामाजिक चेतना और यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध थे। उनके साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक असमानता, स्त्री विमर्श और सामाजवादी विचारधारा के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।यशपाल ने कई चर्चित उपन्यास लिखे, जो भारतीय समाज और राजनीति की वास्तविकता को उजागर करते हैं। दादा कॉमरेड,झूठा सच,मनुष्यता के प्रति,मेरी तेरी उसकी बात आदि उनके उपन्यास प्रसिद्ध रहे हैं।

यशपाल की कहानियाँ समाज के विविध पहलुओं को दर्शाती हैं। उनकी भाषा सहज, स्पष्ट और प्रभावशाली है।उनकी पिंजरे की उड़ान,फिराक़ गोरखपुरी,भस्मावृत्त,देशद्रोही,तर्क का तूफ़ान आदि महत्वपूर्ण कहानियां हैं। यशपाल की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना एक प्रमुख विषय रहा है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम, समाज में व्याप्त अन्याय और स्वतंत्रता के बाद की परिस्थितियों को अपनी कहानियों में प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट रूप से उभरती है, जिससे पाठकों को तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों की झलक मिलती है।'धरती और गुलाम' इस कहानी में स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में किसानों और मजदूरों की स्थिति को उकेरा गया है। लेखक ने दिखाया है कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता भी आवश्यक है। वे कहते है,"हमारे लिए गुलामी सिर्फ विदेशी सत्ता की नहीं, बल्कि उस व्यवस्था की भी है जो हमें शोषित और पराधीन बनाए रखती है।"2 यशपाल की कहानियाँ केवल राष्ट्रीय आंदोलन तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता के बाद की विसंगतियों और समस्याओं को भी उजागर किया। उनकी लेखनी समाज के वंचित और उत्पीड़ित वर्ग की आवाज बनी, जिससे उनकी कहानियाँ राष्ट्रीय चेतना के सशक्त दस्तावेज बन गईं है।

जयशंकर प्रसाद की 'गुंडी' कहानी में राष्ट्र प्रेम:

जयशंकर प्रसाद (1889-1937) हिंदी साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में से एक थे। वे छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक माने जाते हैं।और उनकी रचनाएँ काव्य, नाटक, उपन्यास तथा कहानी सभी विधाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ कामायनी,झरना,आँसू,लहर,कानन कुसुम आदि है।

जयशंकर प्रसाद को हिंदी नाटक को एक नई ऊँचाई देने का श्रेय जाता है।उनके प्रमुख नाटक चंद्रगुप्त,,स्कंदगुप्त,ध्रुवस्वामिनी,अजात शत्रु, विशाख आदि हैं।इन नाटकों में भारतीय गौरवशाली इतिहास

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

को जीवंत किया गया है।जयशंकर प्रसाद हिंदी के प्रथम सशक्त कहानीकारों में से एक माने जाते हैं। उनकी कहानियों में भावुकता, करुणा और आदर्शवाद देखने को मिलता है। उनकी प्रमुख कहानियों का संकलन इंद्रजाल नामक संग्रह में मिलता है।उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ गाँव,पुरस्कार,गुंडा,स्वर्ग के खंडहर,छोटा जादूगर आदि है।जयशंकर प्रसाद का साहित्य भारतीय संस्कृति, इतिहास और मानवीय मूल्यों का संगम है। उन्होंने हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयाँ दीं और उसे समृद्ध किया। उनका काव्य, नाटक और कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं।और हिंदी साहित्य में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

जयशंकर प्रसाद की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख आधार स्वदेश प्रेम है। वे भारतीय समाज को गौरवशाली अतीत से जोड़ते हुए उसे प्रेरित करने का प्रयास करते हैं। उनकी कहानी "गुड्डी" में बाल मनोविज्ञान के साथ-साथ देशभक्ति का भाव प्रकट होता है। देशभक्ति के संदर्भ में वे कहते हैं,"राष्ट्र का उत्थान नारी के सम्मान पर आधारित है। जब तक हमारी मातृभूमि स्वतंत्र नहीं होगी, तब तक कोई भी पुत्र उसका सच्चा भक्त नहीं बन सकता।"3 जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत हैं। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय राष्ट्रभक्ति, स्वाभिमान और समाज सुधार के विचारों को अपने साहित्य में प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को देश के प्रति प्रेम और कर्तव्य भावना से जोड़ती हैं।

भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' कहानी में देश प्रेम:

भीष्म साहनी (1915-2003) हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखकों में से एक थे। वे एक कुशल उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार और अनुवादक थे। उनके प्रमुख उपन्यास में तमस,बसती,कुत्तों आदि है। साथ ही कहानी संग्रह में भूलभुलैया,पहला पाठ,वाङ्चू आदि प्रसिद्ध है। इसके पश्चात नाटक में माधवी,हानूश चर्चित है।भीष्म साहनी का साहित्य समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज है। वे केवल एक लेखक ही नहीं, बल्कि एक विचारक भी थे । जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक अन्याय और मानवता के संघर्ष को प्रकट किया। उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और हिंदी साहित्य की धरोहर मानी जाती हैं।

'चीफ की दावत' इस कहानी में सरकारी तंत्र और स्वतंत्रता संग्राम की विडंबना को उजागर किया गया है। एक ईमानदार स्वतंत्रता सेनानी की देशभक्ति को नौकरशाही की उपेक्षा के साथ दिखाया गया है। भीष्म साहनी कहते है,"सच्ची देशभक्ति का अर्थ केवल वंदे मातरम् कहना नहीं, बल्कि देश की सेवा करना और उसकी सच्ची तस्वीर को पहचानना है।"4 कहानी यह दिखाती है कि स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस स्वतंत्रता की कल्पना की थी, वह प्रशासनिक भ्रष्टाचार के चलते कहीं खोती जा रही थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'वीरों का कैसा हो बसंत' कहानी में राष्ट्रीय चेतना:

सुभद्रा कुमारी चौहान (1904-1948) हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थी। उनका साहित्य मुख्यत:वीर रस, राष्ट्रीय चेतना, समाज सुधार और नारी जागरूकता से ओत-प्रोत है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, स्त्री-सशक्तिकरण और सामाजिक कुरीतियों पर प्रभावशाली प्रकाश डाला है।सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ सरल, सहज और भावनात्मक रूप से प्रभावशाली होती थी। वे अपनी ओजस्वी वाणी और प्रेरणादायक शैली के लिए प्रसिद्ध थी। उनकी सबसे

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की गाथा का मार्मिक चित्रण करती है। उनकी अन्य प्रसिद्ध कविताएँ खूब लड़ी मर्दानी,बुंदेलों का सम्मान,जलियाँवाला बाग में बसंत आदि है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कहानियाँ भी लिखीं, जिनमें समाज की कुरीतियों, स्त्री-विमर्श और देशभक्ति का संदेश प्रमुखता से देखने को मिलता है। उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन, स्त्री-शिक्षा, दहेज-प्रथा और जाति-पाति की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। उनकी प्रमुख कहानियाँ सुखमय जीवन,दानेवर,मिला तेज सेतेज,बेरोज़गार,क्षमा आदि है।सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं था, बल्कि उसमें समाज-सुधार, राष्ट्रप्रेम और नारी-जागरण की भावना स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उनकी लेखनी आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक बनी हुई है।

'वीरों का कैसा हो बसंत' इस कहानी में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के जोश और बलिदान की भावना को चित्रित किया गया है। बसंत ऋतु को उल्लास और जीवन के प्रतीक के रूप में दिखाते हुए इसे वीरों के बलिदान से जोड़ दिया गया है। देश भक्ति के संदर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान कहती है,"यह बसंत हमारे लिए केवल फूलों का मौसम नहीं, यह बलिदान की ऋतु है।"5

निष्कर्ष:

हिंदी कहानियों में राष्ट्रीय चेतना का विशेष स्थान है। ये कहानियाँ समाज में जागरूकता फैलाने, देशभक्ति की भावना विकसित करने और स्वतंत्रता संग्राम से लेकर समकालीन सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों तक राष्ट्रीय चेतना को सशक्त करने का कार्य करती हैं। प्रेमचंद, यशपाल, जैनेन्द्र, अज्ञेय, भीष्म साहनी,सुभद्रा कुमारी चौहान और कमलेश्वर जैसे कथाकारों की रचनाएँ इस चेतना को प्रकट करती हैं।

हिंदी कहानियों ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वाधीनता की भावना को बल दिया और स्वतंत्रता के बाद सामाजिक,आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तनों को स्वर दिया है।वर्तमान समय में भी हिंदी कहानियाँ राष्ट्रीय अस्मिता, सामाजिक समानता, भ्रष्टाचार, जातिवाद और लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा जैसे विषयों पर प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डालती हैं। इस प्रकार हिंदी कहानियाँ न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि समाज में जागरूकता और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का एक सशक्त साधन भी हैं।

संदर्भ सूची:

1) प्रेमचंद,गरीबों का राज,पृ.18
2) यशपाल, धरती और गुलाम,पृ.51
3) जयशंकर प्रसाद, गुड्डी,पृ. 25
4) भीष्म साहनी,चीफ की दावत,पृ.55
5) सुभद्रा कुमारी चौहान, वीरों का कैसा हो बसंत,पृ.60

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२१. अज्ञेय का काव्य और राष्ट्रीय चेतना

डॉ. अर्चना पत्की
हिंदी विभागाध्यक्ष
नूतन महाविद्यालय,सेलू जि. परभणी

सारांश:

हिंदी काव्यों की परंपरा में अज्ञेय अर्थात सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन का नाम राष्ट्रीय चेतना के कवि के रूप में लिया जाता है। वे हिंदी साहित्य के प्रगतिशील और प्रयोगवादी कवि के साथ ही उनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना प्रमुख रूप में प्रकट हुई है। राष्ट्र के प्रति गहरी प्रतिबध्दता, स्वाधीनता संग्राम का समर्थन देशभक्ति एवं क्रांति का भाव, त्याग एवं बलिदान की भावना, राष्ट्रीय उत्थान और मातृभूमि के प्रति प्रेम भावना उनकी कविताओं को केंद्रीय आशय होने से यही प्रमाणित होता है कि अज्ञेय की काव्य में राष्ट्रीय चेतना की मूलसंवेदना परिलक्षित होती है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति, स्वाधीनता संग्राम, त्याग एवं बलिदान, राष्ट्रीय उत्थान, देश-प्रेम, क्रांति।

1. प्रस्तावना:

राष्ट्र कवि के परंपरा में दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान, निराला जैसी राष्ट्र कवि की परंपरा में अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरायनंद वात्स्यायन) का नाम पाठकों के जबान में रहा है। स्वतंत्रता के आंदोलन में देशवासियों के मन में देश के प्रति प्रेम, राष्ट्रभक्ति, और राष्ट्रीय उत्थान के साथ ही राष्ट्रीय चेतना निर्माण करने में कवि अज्ञेय ने अपना दायित्व निभाया है। अपने समकालीन गुलाम भारत की दुरदशा को देखकते हुए आजादी का आंदोलन तेजी से आगे बढना चाहिए इसलिए उन्होंने 'भग्नदुत ', 'इत्यलम ', 'हरी घास पर क्षण भर ', 'आंगन के पार द्वार ' इन प्रमुख कविता संग्रहों की कविताओं के जरीए राष्ट्रीय चेतना का स्वर उठाने का महान काम किया था। कवि अज्ञेय महान साहित्यकार के साथ ही एक महान देशभक्त भी थे। देश के लिए उन्होंने खुद जेल की यातनाएं भी भोगी थी। देश के आज़ादी के प्रति उनकी असीम निष्ठा थी। इसलिए उनकी कविताओं में देशभक्ति और राष्ट्र चेतना का स्वर मुखर हुआ है। इसी कारण प्रस्तुत लेख का मुख्य उद्देश्य अज्ञेय की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का स्वर किस प्रकार मुखर हुआ है। इसी का अध्ययन उनकी प्रमुख कविताओं के माध्यम से किया है।

2. अज्ञेय के काव्य में चित्रित राष्ट्रीय चेतना:

राष्ट्र कवि अज्ञेय ने भारतीय आजादी का आंदोलन खुद देखा है, उसमें भाग भी लिया और कई बार जेल यातना भी झेली है। देश के लिए त्याग, समर्पण और बलिदान देने का भाव एक राष्ट्र कवि का ही हो सकता है। बंदीग्रह में रहकर अनंत यातनाएं झेली; परंतु कभी हार नहीं मानी। यही देशभक्ति की चेतना आज भी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

देशवासियों को प्रेरित करती है। उन्होंने 'जीवनदान ' कविता के माध्यम से एक सच्चे राष्ट्र भक्त एवं देशभक्त का बंदीजीवन किसी महान कार्यों से कम नहीं होता है। एक देशभक्त का बंदिस्त जीवन भी स्वतंत्र भावना का ऐहसास कराता है। पैरों में बेड़िया, शरीर घावों से भरा होता है, भूख प्यास भी नियमों में बंदिस्त होती है। एक बलिदानी या जेल की यातनाओं में जकडा हुआ कैदी देश को आजाद कराने के लिए जेल में बंदिजीवन को स्वीकार करता है, ताकि देश आजाद हो। इस जेल की बंदिस्त जीवन को राष्ट्रीय चेतना के रूप में कवि अज्ञेय लिखते हैं-

"मुक्त बंदी के प्राण!
पैरों की गति श्रृंखल-बाधित
क्या कारा-कलुषाच्छादित
पर किस-बिकल प्रेरणा-स्पंदित
उध्दत उसका गान!
अंग अंग उसका क्षत-विहल
हृदय हताशाओं से घायल
किंतु असहय रणातुर उसकी
आत्मा का आहवान!
उसकी भुख प्यास भी नियमित
उसको अन्तिम संपत्ति परिहत
लज्जित पर बलि-दान देकर
उसका जीवनदान!
मुक्त बंदी का प्राण!"1

अज्ञेय जी एक देशभक्त कवि के रूप में उन्होंने कारावास में अधिक समय बिताने वाले क्रांतिकारी कवि थे। अपने स्वतंत्रता आंदोलन को जारी रखने के लिए कई लोग अग्रेजों के खिलाफ जाकर जेलों में बंदिस्त जीवन यातना भोगते थे। अज्ञेय इसी यातनाओं को देशभक्ति के रूप में अपने कविता के जरिए साजा करते हैं। 'इतिहास का न्याय ' इस कविता में अज्ञेय ने नीडर होकर कहा कि सच्चे देशभक्तों कभी न्याय नहीं मिला है। लेकिन पाखंडी देशभक्तों की जयजयकार होती है और मातृभूमि के लिए लड़नेवालों की उपेक्षा होती है। इसलिए सच्चे देशभक्तों को अधिकार और सम्मान की अपील करते हुए अज्ञेय कहते हैं-

"जो जिये वे ध्वज फैराकर घर लौटे
जो मरे वे खेत रहें।
जो झूमते नगर लौटे, डूबे जय रस में,
(खंडहरों के प्रेत और कौन है-जिनके मुंडे हो पैर पीछे को)
जो खेत रहे थे अंकुरित हुए

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

इतिहासों की उर्वर मिट्टी में,
कुसुमित पल्लवित हुए स्वप्नकल्पीत लोकमानस में। "2
अज्ञेय इस कविता के माध्यम से काफी संवेदनशील अपील करते है कि देश देशभक्तों का सम्मान और उनका गौरव होना ही चाहिए, ताकि इससे देशवासियों के मन राष्ट्रीय चेतना की भावना पूरजोर से कार्यान्वीत होती है। अज्ञेय एक जागृत कवि है। अपने देश की चिंता और उसकी आजादी के साथ ही भारत को मातृरूप में मां के प्रति देखना पसंद करते थे। मातृभूमि की दुर्दशा का वास्तव वर्णन करते हुए कवि अज्ञेय भारत माता किस तरह दुखी है इसको भावनात्मक रूप में अभिव्यक्त करते हैं-

"तड़प उठा गैं, चीख उठा अब गेरा, हा! निस्तार कहां है?
मेरे हित कलंक की कारिख का अब गुरूभार यहां है
फट जा आज धरित्री! मेरी दुस्सह लज्जा आज मिटा दे
रक्त स्नात वह मेरा साकी मेरी दुखिया भारत मां है। "3

एक सच्चा भारत मां का पुत्र बनकर उसकी दुर्दशा से चिनतीत बेटा भावना विवश होकर अज्ञेय का कवि मन भारत मां की वेदना को पढ़कर भावनाविवेश होता है।
क्रांतिकारी कवि अज्ञेय देशभक्ति का भाव जन-जन के मन-मन में बिठाना चाहते थे। क्योंकि भारत की दुर्दशा को रोकने के लिए जब-जब भारत संकटों में घीरता रहा तब-तब क्रांति की मशाल कवियों को अपने हातों में लेनी की प्रेरणा अज्ञेय देते हैं। स्वयं कवि के रूप में फिर एक बार क्रांति की आवश्यकता है। इसलिए क्रांति की प्रेरणा देते हुए कवि अज्ञेय कहते हैं-

"कवि एक बार फिर गा दो !
एक बार इस अंधकार में फिर आलोख दिखा दो!
अब मिलित है मेरी आंखे
पर मैं सूर्य देख आता हूं,
आज पडी है कडियां पर मैं
कभी भुवन भर में छाया हूं,
उस अबाध आततुरता को कवि,
फिर तुम छेड जगा दो!
.....
बहुत दिनों के बाद आज कवि !
मुझे में फिर कुछ जाग रहा है,
दर्प भरे अप्रतिहत स्वर में
जाने बया कुछ मांग रहा है,
मेरे प्राणों के तारों को छूकर फिर तडपा दो !"4

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

इसी काव्य पंक्तियों से यही प्रमाणित होता है कि कवि अज्ञेय क्रांति की मशाल बनने की प्रेरणा अपनी कवि भाइयों को देते हैं, क्योंकि अब देश भी क्रांति चाहता है।

अज्ञेय स्वतंत्रता के बाद भारत की तरकी का स्वप्न भी देखते हैं। नये भारत की तस्वीर बनाने की मानसिकता रखते हैं। देश के बहुजनों के कल्याण के लिए हम सभ भारतवासी एक साथ मिलकर करने की अपील भी करते हैं। सभी मिलकर निराशा की रात्री को छोडकर सजग रहकर नया सवेरा क्रांतिकारी बेनेगा इसी आशा को अभिव्यक्त करते हुए अज्ञेय कहते हैं-

"सूनों हे नागरिक ! अभिनय सभ्य
भारत के नये जन राज्य के
सूनों ! यह मंजूषा तुम्हारी है।
पला हे आलोक चिर-दिन तुम्हारे स्नेह से,
तुम्हारे ही रक्त से।
तुम्ही दाता हो, तुम्ही होता, तुम्ही यजमान हो।
यह तुम्हारा पर्द है।
भुमि-सुत: इस पुण्य भू की प्रजा, स्रष्टा तुम्ही हो
इस नये रूपाकर के
तुम्ही से उभ्दूत हो कर बल तुम्हारा
साधना का तेज तप की दीप्ति तुमको
नया गौरव दे रहा है।
यह तुम्हारा कर्म की ही प्रस्फुटन है
नागरिक, जय प्रजा जन, जया राष्ट्र
के सच्ची विधायक, जय। "5

कवि अज्ञेय की कविताओं की भावनाओं का आशय राष्ट्रीय चेतना को परिलक्षित करता हुआ नजर आता है। 'मैंने तेरा कान छुआ भारत ' जैसी कविता में वे मातृभूमि के प्रति गहरा प्रेम प्रकट करते हैं। 'सांप ' और 'बावरा अहेरी ' नामक काव्य संग्रहों में अज्ञेय राष्ट्रीय चेतना नामक काव्य के दार्शनिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को भी उजागर करते हैं।

निष्कर्ष:

हिंदी की काव्य परंपरा में देशभक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना का बडा सम्मान रहा है। अज्ञेय ने अपने कविताओं के जरिए मातृभूमि की भक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति की है। आजादी के आंदोलन में खुद अज्ञेय जी जेल जाकर जेल की यातनाए भोगनेवाले क्रांतिकारी कवि थे। अपने समकालीन क्रांतिकारी परिवेश और भारत को आजाद कराने का जूनून उनके कलम में खुद की अभिव्यक्ति से आया है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

'जीवनदान ', 'इतिहास का न्याय ', 'बांदी स्वप्न ', 'भग्नदूत ' जैसी कई कविताओं में स्वाभाविक रूप में देशभक्ति की भावना देश की चिंता, क्रांति, त्याग, बलिदान, देश उन्नति के साथ राष्ट्रीय चेतना को सांस्कृतिक रूप में अज्ञेय ने अपने काव्यों के द्वारा परिलक्षित किया है।

संदर्भ सूची:

1. इत्यलम, (बांदी स्वप्न), अज्ञेय, पृ. 59
2. इंद्रधनु (रौदे हुए ये), अज्ञेय, पृ. 45
3. इत्यलम अज्ञेय, पृ. 64
4. बावरा अहेरी, अज्ञेय, पृ. 39
5. वही, पृ. 40

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२२. **हिंदी कविता मे राष्ट्रीय चेतना**

प्रो.माधव पाटील

बी. रघुनाथ महाविदलय. परभणी

Email. Madhavpatil365@gmail.com Contact no.9421364801

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को लेकर देश में व्याप्त उथल-पुथल को हिन्दी कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाकर साहित्य के क्षेत्र में दोहरे दायित्व का निर्वहन किया। स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए कवि व साहित्यकार एक ओर तो राष्ट्रीय भावों को काव्य के विषय के रूप में प्रतिष्ठित कर रहे थे वही दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना को भी हवा दे रहे थे। कवि व साहित्यकार अपनी उर्वर प्रज्ञा भूमि के कारण युगीन समस्याओं के प्रति अधिक सावधान व संवेदनशील रहता है। भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के आरम्भ से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक भिन्न-भिन्न चरणों में राष्ट्रीय भावनाओ से ओत-प्रोत कविताओं की कोख में स्वातन्त्र्य चेतना का विकास होता रहा। 'विप्लव गान' शीर्षक कविता में कवि की क्रान्तिकामना मूर्तिमान हो उठी है।

" कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर को जाये
नाश ! नाश! हाँ महानाश! ! ! की प्रलयंकारी आंख खुल जाये। "-नवीन

भारतेन्दु युग का साहित्य अंग्रेजी शासन के विरूद्ध हिन्दुस्तान की संगठित राष्ट्रभावना का प्रथम आह्वाहन था। यही से राष्ट्रीयता का जयनाद शुरू हुआ। जिसके फलस्वरूप द्विवेदी युग ने अपने प्रौढ़तम स्वरूप के साथ नवीन आयामों और दिशाओं की ओर प्रस्थान किया। भारतेन्दु की 'भारत दुर्दशा' प्रेमघन की आनन्द अरूणोदय, देश दशा, राधाकृष्ण दास की भारत बारहमासा के साथ राजनीतिक चेतना की धार तेज हुई। द्विवेदी युग में कविवर 'शंकर' ने शंकर सरोज, शंकर सर्वस्व, गर्भरण्डारहस्य के अर्न्तगत बलिदान गान में 'प्राणों का बलिदान देष की वेदी पर करना होगा' के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रान्ति एवं आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा दी। छायावादी कवियों ने राष्ट्रीयता के रागात्मक स्वरूप को ही प्रमुखता दी और उसी की परिधि में अतीत के सुन्दर और प्रेरक देशप्रेम सम्बन्धी मधुरगीतों व कविताओं की सृष्टि की । निराला की 'वर दे वीणा वादिनी' , 'भारती जय विजय करे' , 'जागो फिर एकबार' , 'शिवाजी का पत्र' , प्रसाद की 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' चन्द्रगुप्त नाटक में आया 'हिमाद्रि तुंगश्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' आदि कविताओं में कवियों ने हृदय के स्तर पर अपनी प्रशस्त राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति की है।

स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रभावित हिन्दी कवियों की श्रृखला में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियाराम शरण गुप्त, सोहन लाल

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय, अज्ञेय इत्यादि कवियों ने परम्परागत राष्ट्रीय सांस्कृतिक भित्ति पर ओजपूर्ण स्वरों मे राष्ट्रीयता का संधान किया।

हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य में देशप्रेम व स्वतन्त्रता की उत्कट भावना की अभिव्यक्ति दी है। राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रणेता के रूप में माखन लाल चतुर्वेदी की हिमकिरीटनी, हिमतरंगिनी, माता, युगचरण, समर्पण आदि के काव्यकृतियों के माध्यम से उनकी राष्ट्रीय भावछाया से अवगत हुआ जा सकता है। चतुर्वेदी जी ने भारत को पूर्ण स्वतन्त्र कर जनतन्त्रात्मक पद्धति की स्थापना का आहवाहन किया। गुप्त जी के बाद स्वातन्त्र्य श्रृखला की अगली कड़ी के रूप में माखन लाल चतुर्वेदी का अविस्मृत नाम न केवल राष्ट्रीय गौरव की याद दिलाता है अपितु संघर्ष की प्रबल प्रेरणा भी देता है। जेल की हथकड़ी आभूषण बन उनके जीवन को अलंकृत करती है।

क्या? देख न सकती जंजीरो का गहना
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना'
(कैदी और कोकिला)

पिस्तौल, गीता, आनन्दमठ की जिन्दगी ने इनके भीतर प्रचण्ड विद्रोह को जन्म दे वैष्णवी प्रकृति विद्रोह और स्वाधीनता के प्रति समर्पण भाव ने इनके जीवन को एक राष्ट्रीय सांचे में ढाल दिया। 1912 में उनकी जीवन यात्रा ने बेड़ियों की दुर्गम राह पकड़ ली।

'उनके हृदय में चाह है अपने हृदय में आह है
कुछ भी करें तो शेष बस यह बेड़ियों की राह है।'

1921 में कर्मवीर के सफल सम्पादक चतुर्वेदी जी को जब देशद्रोह के आरोप में जेल हुई तब कानपुर से निकलने वाले गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्र 'प्रताप' और महात्मा गाँधी के 'यंग इण्डिया' ने उसका कड़ा विरोध किया। 'मुझे तोड़ लेना वन माली देना तुम उस पथ पर फेंक मातृभूमि पर शीष चढ़ाने जिस पर जाते वीर अनेक "पुष्प की अभिलाषा" शीर्षक कविता की यह चिरजीवी पंक्तियाँ उस भारतीय आत्मा की पहचान कराती है जिन्होनें स्वतन्त्रता के दुर्गम पथ में यातनाओं से कभी हार नही मानी।

"जो कष्टों से घबराऊँ तो मुझमें कायर में भेद कहाँ
बदले में रक्त बहाऊँ तो मुझमें डायर में भेंद कहाँ!"

अनुभूति की तीव्रता की सच्चाई, सत्य, अहिंसा जैसे प्रेरक मूल्यों के प्रति कवि की आस्था, दृढ़ संकल्प, अदम्य उत्साह और उत्कट् अभिलाषा को लेकर चलने वाला यह भारत माँ का सच्चा सपूत साहित्यशास्त्र और कर्मयंत्र से दासता की बेड़ियों को काट डालने का दृढ़व्रत धारण करके जेल के सींखचों के भीतर तीर्थराज का आनन्द उठाते है।

" हो जाने दे गर्क नशे में, मत पड़ने दे फर्क नशे में, के उत्साह व आवेश के साथ स्वतन्त्रता संग्राम श्रृंखला की अगली कड़ी के रूप में आबद्ध एक श्लाघ्य नाम बालकृष्ण शर्मा नवीन का है वह स्वतन्त्रता आन्दोलन के मात्र व्याख्यता ही नहीं अपितु भुक्तभोगी भी रहे। 1920 में गाँधी जी के आह्वाहन पर वह कालेज

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

छोड़कर आन्दोलन में कूद पड़े। फलत: दासता की श्रृंखलाओं के विरोध संघर्ष में इन्हे 10 बार जेल जाना पड़ा। जेल यात्राओं का इतना लम्बा सिलसिला शायद ही किसी कवि के जीवन से जुड़ा हो। उन दिनों जेल ही कवि का घर हुआ करता था।

अपनी प्रथम काव्य संग्रह 'कुंकुम' की जाने पर प्राणार्पण, आत्मोत्सर्ग तथा प्रलयंकर कविता संग्रह में क्रान्ति गीतों की ओजस्विता व प्रखरता है।

'यहाँ बनी हथकड़िया राखी, साखी है संसार
यहाँ कई बहनों के भैया, बैठे है मनमार।'

राष्ट्रीय काव्यधारा को विकसित करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान का 'त्रिधारा' और 'मुकुल' की (मुरलीलाल)मुखरित है। उन्होने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। आंदोलन के दौरान उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। 'जलियावाला बाग में बसंत' कविता में इस नृशंस हत्याकाण्ड पर कवयित्री के करूण क्रन्दन से उसकी मूक वेदना मूर्तिमान हो उठी है।

" आओ प्रिय ऋतुराज, किन्तु धीरे से आना
यह है शोक स्थान, यहाँ मत शोर मचाना
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खा कर
कलियाँ उनके लिए चढ़ाना थोड़ी सी लाकर।"

दिनकर की हुँकार, रेणुका, विपथगा में कवि ने साम्राज्यवादी सभ्यता और ब्रिटिश राज्य के प्रति अपनी प्रखर ध्वंसात्मक दृष्टि का परिचय देते हुए क्रान्ति के स्वरों का आह्वाहन किया है। पराधीनता के प्रति प्रबल विद्रोह के साथ इसमें पौरूष अपनी भीषणता और भंयकरता के साथ गरजा है। कुरूक्षेत्र महाकाब्य पूर्णरूपेण राष्ट्रीय है।

'उठो- उठो कुरीतियों की राह तुम रोक दो
बढो-बढो कि आग में गुलामियों को झोंक दो '।

दिनकर स्वतन्त्रता की प्रथम शर्त कुर्बानी व समर्पण को काव्य का विषय बना क्रान्ति व ध्वंस के स्वर से मुखरित दिनकर की कवितायें नौंजवानों के शरीर में उत्साह भर उष्ण रक्त का संचार करती है ।

जिसके द्वारों पर खड़ा क्रान्त, सीमापति! तूने की पुकार
पददलित उसे करना पीछे, पहले ले मेरा सीस उतार।

सोहनलाल द्विवेदी की भैरवी राणाप्रताप के प्रति, आजादी के फूलों पर जय-जय, तैयार रहो, बढ़े चलो बढ़े चलो, विप्लव गीत कवितायें, पूजा गीत संग्रह की मातृपूजा, युग की पुकार, देश के जागरण गान कवितायें तथा वासवदत्ता, कुणाल, युगधारा काब्य संग्रहों में स्वतन्त्रता के आह्वान व देशप्रेम साधना के बीच आशा और निराशा के जो स्वर फूटे है उन सबके तल में प्रेम की अविरल का स्रोत बहाता कवि वन्दनी माँ को नहीं भूल सका है ।

'कब तक क्रूर प्रहार सहोगे ? / कब तक अत्याचार सहोगे ?

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

कब तक हाहाकार सहोगे ? / उठो राष्ट्र के हे अभिमानी
सावधान मेरे सेनानी।'

सियाराम शरण गुप्त की बापू कविता में गाँधीवाद के प्रति अटूट आस्था व अहिंसा, सत्य, करूणा, विश्व-बधुत्व, शान्ति आदि मूल्यों का गहरा प्रभाव है। राजस्थानी छटा लिये श्यामनारायण पाण्डेय की कविताओं में कहीं उद्‌बोधन और क्रान्ति का स्वर तथा कहीं सत्य, अहिंसा जैसे अचूक अस्त्रों का सफल संधान हुआ है। इनकी 'हल्दीघाटी' व 'जौहर' काव्यों में हिन्दू राष्ट्रीयता का जयघोष है । देशप्रेम के पुण्य क्षेत्र पर प्राण न्यौछावर के लिए प्रेरित करने वाले रामनरेश त्रिपाठी की कविता कौमुदी, मानसी, पथिक, स्वप्न आदि काव्य संग्रह देश के उद्धार के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना उत्पन्न करते है । देश की स्वतन्त्रता को लक्ष्य करके श्री गया प्रसाद शुक्ल सनेही ने कर्मयोग कविता में भारतवासियों को जागृत कर साम्राज्यवादी नीति को आमूल से नष्ट करने का तीव्र आह्‌वाहन किया । श्रीधर पाठक ने भारतगीत में साम्राज्यवादियों के चंगुल में फंसे भारत की मुक्ति का प्रयास किया। प्रयोगवादी कवि अज्ञेय भी अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए कई बार जेल गये। जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द की कवितायें भी इस दिशा मे सक्रिय हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि स्वतन्त्रता आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास के साथ हिन्दी कविता और कवियों के राष्ट्रीय रिश्ते मजबूत हुए। राजनीतिक घटनाक्रम में कवियों के तेवर बदलते रहे और कविता की धार भी तेज होती गई। आंदोलन के प्रारम्भ से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक हिन्दी काव्य संघर्षो से जूझता रहा। स्वाधीनता के पश्चात राष्ट्रीय कविता के इतिहास का एक नया युग प्रारम्भ हुआ। नये निर्माण के स्वर और भविष्य के प्रति मंगलमय कल्पना उनके काव्य का विषय बन गया। फिर भी स्वतन्त्रता यज्ञ में उनके इस अवदान और बलिदान को विस्मृत नही किया जा सकता । भारत का ऐतिहासिक क्षितिज उनकी कीर्ति किरण से सदा आलोकित रहेगा और उनकी कविताए राष्ट्रीय आस्मिता की धरोहर बनकर नयी पीढ़ी को अपने गौरव गीत के ओजस्वी स्वर सुनाती रहेगीं।

संदर्भ सूची:

1 बच्चन, सिंह. हिन्दी साहित्य काइतिहास. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2009. हिन्दी.
2 मुरलीलाल, शर्मा. हिन्दी के आधुनिक प्रतींनिधी कवि. दिल्ली: जीवन ज्योति प्रकाशन, 2004. हिन्दी.
3 रामकुमार, वर्मा. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. इलहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2010. हिन्दी.
4. रामचंद्र, शुक्ल. हिन्दी साहित्य का इतिहास. दिल्ली: वंदना प्रकाशन, 2009. हिन्दी.

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

२३. निशा नंदिनी के काव्य ने व्यक्त राष्ट्रीय चेतना

डॉ पद्मानंद पी. सोनकाम्बले
संतश्रेष्ठ नामदेव महाराज पठाडे महाविद्यालय हिंगोली जि हिंगोली 431513
email- sonkamblepadmanand@gmail.com दूरभाष- 7020689504

भूमिका -

हिंदी साहित्य का क्षेत्र विस्तृत है। हिंदी साहित्य के अनेक विधाओं द्वारा रचनाकारों ने समाज तथा राष्ट्र के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। हिंदी साहित्य के विकास के साथ-साथ काव्य का भी विकास होता गया। काव्य में धीरे-धीरे सभी प्रकार की चेतना जागृत करने के लिए काव्य रचना की गई। काव्य हमें शीघ्र ही एकजुट करता है वही जीवंत रहने के लिए प्रेरणा भी देता है। ऋग्वेद में जहां राष्ट्रीय स्वतंत्रता, देश उत्थान और संगठन में शक्ति जगाने के लिए "वयम: राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:" का उल्लेख मिलता है वहीं राज्य के सभी प्रजाओं के कल्याण हेतु "यतेमहि स्वराज्ये" भी पढ़ने को मिलता है। हिंदी साहित्य के प्रत्येक काल खंड में महान कवियों ने अपने उद्‌बोधन में एवं अपनी कविता में राष्ट्रीयता के स्वर दिये हैं। हम जानते हैं कि राष्ट्रवाद का कोई एक रूप नहीं होता। राष्ट्र के प्रति प्रेम तथा विचारों के अनुसार राष्ट्रवाद के विभिन्न रूप जैसे कि; क्रांतिकारी राष्ट्रवाद, सुधारवादी राष्ट्रवाद, जन राष्ट्रवाद, पुनरुत्थानवादी राष्ट्रवाद आदि। हम हिंदी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकालीन साहित्य इस प्रकार के राष्ट्रवाद को देखते हैं। परंतु, राष्ट्रीय चेतना एक प्रवृति के रूप में साहित्य के आधुनिक काल में ही देखने को मिलता है। आधुनिक काल में अनेक राचकारों ने अपनी कविताओं के मध्यम से राष्ट्र प्रेम को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। लेखिका डॉ निशा नंदिनी ने भी अपने काव्य के मध्यम से भारत के युवावर्ग में राष्ट्र प्रेम की ज्वाला जलती रहे इस दुष्टीकोन से काव्य में राष्ट्रीय चेतना के बीज बोए है ।

बीज शब्द — चेतना बोध होना, राष्ट्रीयता नागरिकत्व, प्रस्तर पत्थर, अर्चना पूजा, साधना — कठोर श्रम, आदी ।

उद्देश्य - देश के युवाओं में राष्ट्रभक्ती और निशा नंदिनी के कविताओं को प्रकाश में लाना।

मुख्य विषय-

इक्कीसवीं सदी में कविताओं के माध्यम से देशप्रेम की भावना को जागृत करने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें निशा नंदिनी के काव्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के प्रमुख प्रतिक में से एक देश का तिरंगा है। सभी भारतीयों को तिरंगा अपनी जान से भी प्यारा है। देश के हर नागरिक के लिये तिरंगा ही आन-बान-शान है । इसी के गर्व को चित्रित करते हुये लेखिका का ने अपने कविता संग्रह "बिन आखर बिन शब्द" में लिखा है — "है वतन की शान तिरंगा हमारा यह विजयी विश्व तिरंगा हमारा ।
आंधी तूफान प्रस्तर सहता रहे पिसकर हिना सा निखरता रहे।" 1

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

इससे यह स्पष्ट होता है कि लेखिका ने तिरंगे की गरिमा को प्रस्तुत किया है। तिरंगा विजयी रहे इस दृष्टी से देश का प्रत्येक नागरिक प्रयत्नरत रहे यह संदेश दिया गयादेखने को मिलता है । इतना ही नही तो लेखिका ने अपनी कविता में युवाओं में राष्ट्र के प्रती प्रेम की तथा आदर की भावना विकसित हो इसलिये उसकी वंदना करने तथा अर्चना करने की बात कही है। साथ ही राष्ट्र हित की साधना करने की गुहार लगाते हुये लिखा है

"हे माँ सरस्वती तेरी वंदना करें
वंदना करें तेरी अर्चना करें
बुद्धि दो ज्ञान दो वरदान दो
राष्ट्र हित हम तेरी साधना करें" ।2

इससे यह स्पष्ट होता है कि लेखिका युवाओं से माँ सरस्वती की वंदना करके राष्ट्र हित की अर्चना करने के लिये कहती है। इतना ही नही तो उक्त पंक्तियों में हम देखते हैं कि अपनी प्रार्थना में भी वे राष्ट्र हित की बात करती हैं। निशा जी सरस्वती से इस राष्ट्र में व्याप्त अंधकार को दूर कर ज्ञान के प्रकाश को भरने के लिए पूजा करती है। वे कहती है कि नेक मार्ग पर चलते समय यदि मेरे कदम डगमगाएं तो इतनी शक्ति देना कि हम उस लक्ष्य को प्राप्त कर सके। वह लिखती है कि राष्ट्र के उत्थान हेतु हमें हमेशा कर्म करना चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि लेखिका ने राष्ट्रीय अस्मिता कि रक्षा के लिए देश के लोगों को प्रेरित किया है।

निशा जी कहती है वतन पर जान लुटाने वालों के लिए जब भी कलम उठेगी यशस्वी गीत लिखेगी, उनका जयकार लिखेगी। वे कहती है कि हमारे देश के साहित्यकारों ने जब भी सैनिकों के लिए लिखा है जयकार किया है। क्योंकि जब तक वे सरहद पर अडिग हैं सीन ताने खड़े हैं तब तक हम देश के अंदर महफूज हैं। सैनिकों के प्रति विशेष लगाव है। डॉ. निशा जी ने बारे में विस्तृत वर्णन अपनी कविताओं में करती नजर आई है। उन्होंने लिखा है कि सैनिक अपने घर-द्वार सब छोड़कर माँ भारती की रक्षा प्रतिकूल प्रस्थितियों में करता है। उन्हें वहाँ बॉर्डर पर अनुकूल खाना-पीना एवं रहने की व्यवस्था नहीं होता फिर भी वे हमेशा अपना शत- प्रतिशत देने को तैयार रहते हैं। वह लिखती है;

"माँ भारती को वरण किया
घर-द्वार सब छोड़ दिया
छू कर उनके चरणों को
कलम जी जयकार लिखेगी" ।3

इस प्रकार निशा जी ने भारतीय शहिदो की वीरगाथा को लिखते हुये उनके त्याग की प्रवृत्ती को चित्रित किया गया है । इतना ही नही तो सैनिकों की वजह से हम अपने आप को भारतीय होने का गर्व करते हैं। उनके बदौलत हम क्षण से विदेशियों से नजर मिलाते हैं। सैनिकों को हिमालय की उपाधि प्रदान करती हुई कहती है कि सैनिक हिमालय की तरह खड़ा रहकर सभी संकट एवं तूफ़ानों से तथा हर एक दुशमनों से रक्षा करता है।

सारांश —

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है की निशा जी ने अपनी कविता के माध्यम से देश के युवाओं में राष्ट्र प्रेम जागृत करने का प्रयास करते हुये देश की महत्ता तथा
3 डॉ. निशा गुप्ता - बिन आखर बिन शब्द (2020), पृष्ठ सं-१४

तिरंगे की गरिमा को प्रस्तुत किया है। आज प्रत्येक युवा अपना जीवन जीने के लिये संघर्ष करता हुवा दिखाई देता है । उसे न तो देश की चिंता है न ही तिरंगे की फिक्र है ऐसे में उनमें देश प्रेम की भावना को विकसित करना अनिवार्य हो जाता है यही प्रयास लेखिका ने किया हुवा देखने को मिलता है ।

संदर्भ –

1 डॉ. निशा गुप्ता - बिन आखर बिन शब्द (2020), पृष्ठ सं-15
2 डॉ. निशा गुप्ता - बिन आखर बिन शब्द (2020), पृष्ठ सं-११
3. डॉ. निशा गुप्ता - बिन आखर बिन शब्द (2020), पृष्ठ सं-15
4. डॉ. निशा गुप्ता - बिन आखर बिन शब्द (2020), पृष्ठ सं-११
5. डॉ. निशा गुप्ता - बिन आखर बिन शब्द (2020), पृष्ठ सं-१४

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

२४. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता

प्रा. डॉ. सुभाष क्षीरसागर
हिंदी विभाग प्रमुख
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय वसमतनगर
E Mail: subhashksh72@gmail.com मो. नं 9423140248

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आजादी की लड़ाई में सहभाग लेने वाला हर पत्रकार, लेखक अपनी कलम के द्वारा राष्ट्रीयता के भाव जन जन तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा था । स्वाधीनता के पूर्व राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, मौलाना आजाद, डॉ बाबासाहेब आंबेडकर, मदन मोहन मालवीय जैसे प्रसिद्ध जननेता भी पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए थे। उनके सृजनशील विचारों का असर भारतीय समाज व्यवस्था पर पड़ा था। तत्कालीन पत्रकारिता ने सोई हुई भारतीय जनता को जगाया और उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन के राह पर अग्रसर किया। उसी समय भारतीय समाज मानवीय अधिकार एवं हक्कोंसे बेखबर होकर अंधकार के गर्त में भटक रहा था। ऐसी कठिन स्थितियों में पत्रिकाओं में व्यक्त विचारों से प्रभावित होकर उनके अंदर राष्ट्रीयता के भाव जागृत होने लगे। इस समय की पत्रकारिता अत्यधिक निर्भीक, सत्यवादी और व्यवसायिकता से दूर रही। इन पत्रकारों में कहीं पर भी स्वार्थ भावना या धन के प्रति आसक्ति नहीं थी। तत्कालीन पत्रिका के संपादकों ने पत्रकारिता को कला , वृती और सेवा के रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने भारतीय जनता का ज्ञान बढ़ाकर उनकी चेतना को जागृत करते हुए, सामाजिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का मौलिक मार्गदर्शन किया है। इसलिए देश के हर कोने में उनके विचार बड़े आदरता के साथ आत्मसात करने लगे थे। आम जनता भी उनसे प्रभावित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगी।

भारत में पत्रकारिता का आरंभ बंगाल से राजा राममोहन राय ने किया था। 'बंगाल गजट '1816 में प्रकाशित पत्र भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र कहा जाता है, जिसके संपादक गंगाधर भट्टाचार्य थे। इसके बाद राजा राममोहन राय ने मीरातुल, संवाद कौमुदी जैसी पत्रिका के माध्यम से भारतीयों के सामाजिक आर्थिक हितों का समर्थन कर समाज में व्याप्त अंधकार, विषमता, कर्मकांड, कुरीतियां आदि विकृतियों पर पत्रिका के माध्यम से प्रहार किया। परिणामतः लोगों में एक जागृति निर्माण हुई। 30 मई 1826 को हिंदी भाषा का पहला साप्ताहिक समाचार पत्र "उदंत मार्तंड" प्रारंभ हुआ। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में इस पत्र का ऐतिहासिक महत्व है। इसी समय 'अभ्युदय' सत्याग्रह समाचार, क्रांतिवीर, स्वदेश, नया हिंदुस्तान, हिंदी प्रदीप जैसी पत्रिकाओं ने भारतीय समाज में युगांत कारी परिवर्तन निर्माण किए।इन पत्रिकाओं में 'ईस्ट इंडिया कंपनी का जमकर विरोध होने लगा। अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में सीधा साधा एक माहौल तैयार किया गया। ब्रिटिश सरकार ने पत्रकारों के कलम की तेज धार और संपादकों का नीडर तेवर देखकर उन्हें जेल में

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

बंद करवाने का काम भी किया तथा प्रेस की स्वतंत्रता को बाधित करने हेतु अंग्रेजी सरकार ने अपने काले कानूनों का सहारा लेकर पत्रिकाओं पर प्रतिबंध तथा जुर्माना लगा दिया। आपत्तिजनक लेखवाले पत्रिका को जप्त भी कर लिया जाता था। ऐसी विपरीत स्थितियों में भी उस समय के पत्रकारों ने अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से सामाजिक जनजागृति निर्माण करने वाले विचारों को रोके नहीं बल्कि आजादी की लड़ाई के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन पत्रिकाओं में राष्ट्रीय चेतना का अभूतपूर्व स्वरूप प्रकट होने लगा।

भारतेंदु युग की पत्र-पत्रिकाओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बड़ी सजगता के साथ अपनी भूमिका निभाई है। स्वयं भारतेंदु ने हिंदी गद्य, पद्य लेखन के लिए हिंदी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की, साथ ही समाचार पत्रों में खटकने वाली कमी को भी पूर्णता दी है। उनकी "कवि- वचन-सुधा" नामक पत्रिका 1868 में काशी से प्रकाशित की गई थी। इस पत्रिका में अनेक प्राचीन नवीन कवियों की कविताएं प्रकाशित हो रही थी। आरंभ में 'कवि वचन सुधा' पत्रिक मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होती थी लेकिन समाज तथा देश की दूरावस्था से असाहय होकर भारतेंदुजी ने उसे पाक्षिक के रूप में प्रकाशित करवाया। इस पत्र में प्रकाशित रचनाएं राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत रही। कवि वचन सुधा का उद्देश्य था" सत्य निज भारत गहे"। उस समय के अधिकांश कवि पत्रों की शीर्षस्थ पंक्तियां देश और देश हित को प्राधान्य देने वाली थी। सही मायने में स्वदेशी आंदोलन को शुरू करने का श्रेय कवि वचन सुधा इस पत्रिका को जाता है। इस पत्रिका के संदर्भ में डॉक्टर राधाकृष्ण दास ने लिखा है-" कवि- वचन-सुधा में गद्य रचनाओं का प्रकाशन पाक्षिक हो जाने पर हुआ। जिस समय भारत अपने सत्व बोध से अपरिचित था उस समय कवि- वचन- सुधा ने राष्ट्रीय चेतना में सोई हुई पढ़ी-लिखी भारतीय जनता की भावना को राष्ट्रीय कर्मों में प्रवर्तक करने का, जागरण संदेश देने का प्रयास किया। यह पत्र विदेशों में भी नैतिकता के बल पर ही चर्चा का विषय बना। फ्रांस के विद्वान ताशी ने 'लीलैंग्यू' पत्र के सन 1857 ईस्वी के किसी अंक में कवि- वचन - सुधा और उसके संपादक की उचित प्रशस्ति की थी। "(1) अतः कहा जा सकता है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखे हुए आकर्षक ढंग के राष्ट्रीय विचारधारा से संबंधित लेखों के कारण यह पत्र अत्यंत चर्चा का विषय बना था। भारतेंदु जी ने अपने समय के समविचारी लेखकों का एक समूह बनाकर उनके माध्यम से लोगों के मन में देश के प्रति चेतना निर्माण करने का कार्य किया। उनकी प्रेरणा से ही बालकृष्ण भट्ट जी ने हिंदी प्रदीप (1877) का प्रकाशन प्रारंभ किया। यह पत्रिका अंग्रेजी व्यवस्था के खिलाफ लेख और अन्य सामग्रियां प्रकाशित कर रही थी। माधव की रचना- बम क्या है, बंदर सभा(1908) मेंअंग्रेजों की तुलना बंदर से कहकर उन पर टिप्पणी की गई। परिणामस्वरूप हिंदी प्रदीप को तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने ₹3000 का जुर्माना भी कर दिया था। उस समय संपादक के पास जुर्माना देने के लिए पैसे नहीं थे इसलिए पत्रिका को बंद किया जाता है।

स्वतंत्रता पूर्व काल की पत्रकारिता लड़ाकू और निडर रही वह पत्रकार कभी भी व्यवस्था के सामने झुके नहीं ब्रिटिश सरकार का विरोध करते हुए सामान्य जनता का प्रतिनिधि बनकर व्यवस्था से संघर्ष कर रहे थे 18 सो 81 में प्रकाशित उचित वक्ता इस पत्रिका के संपादकीय लेख तत्कालीन जनता की आवाज को बुलंद कर रहे थे प्रस्तुत पत्रिका में अंग्रेजी सत्ता के दमन और शोषण पर तीखा प्रहार किया गया तत्पश्चात

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

कई पत्रिकाएं इसी शैली का प्रयोग कर जनता को अंग्रेजी व्यवस्था के विरुद्ध खड़े करने का प्रयास कर रही थी इनमें अंबिका प्रसाद व्यास बालकृष्ण भट्ट महावीर प्रसाद द्विवेदी अमृतलाल चक्रवर्ती गणेश शंकर विद्यार्थी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है उस समय पत्रकार एवं संपादकों में अपनी पत्रकारिता के लिए सर्वस्व त्याग किया था स्वतंत्रता पूर्व काल की पत्रकारिता विशेष रुप से तीन प्रकार के कार्य कर रही थी एक सर्व सामान्य जनता की आवाज को उठाना दूसरा उन्हें उचित न्याय दिलाने के लिए तत्पर रहना तथा तीसरा साहित्य का परिष्कार करना। इस पत्रकारिता ने तत्कालीन समाज में वैचारिकी एवं बुद्धिजीवी वर्ग को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तत्कालीन पत्रकारिता के संदर्भ में धर्मवीर भारती लिखते हैं - "स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता की परंपरा और परवान चढ़ती गई। वह चाहे क्रांतिकारियों का स्वतंत्र आंदोलन हो या गांधीजी का सत्याग्रह यह अखबार उनके माध्यम से जन जागरण के अग्रदूत थे। रोज जमानत मांगी जाती थी रोज-रोज पुलिस छापे मारती थी। संपादक का एक पाव जेल में रहता था। संपादक और पत्रकार जनता के आदमी थे और उनमे जनता की भाषा के साथ हिंदी के साथ एक गहरी प्रतिबद्धता थी। अपनी मातृभाषा के गौरव से उद्दीप्त थी वह पत्रकारिता। "(2) अतः इस युग की पत्रकारिता का मूल स्वर राष्ट्रीय भावना से संबंधित रहा। वे कवि पत्रकार लोग स्वतंत्रता प्राप्ति ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य मानकर ब्रिटिश सता के विरोध में जन आंदोलन निर्माण कर रहे थे। वे स्वयं के जीवन की परवाह न करते हुए स्वतंत्रता की आवाज बुलंद कर रहे थे।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में "आनंद कादंबिनी"(1900)बद्रीनारायण चौधरी "जासूस" (1900)गोपालदास गहिमरी "स्वराज्य" (1907) शांति नारायण भटनागर "अभ्युदय" मदन मोहन मालवीय "हरिजन"महात्मा गांधी आदि पत्रिकाओं ने राष्ट्रभक्ति परख विचारों का पुनरुत्थान किया। जासूस पत्रिका में लिखा - "डरिए मत यह कोई भकौआ नहीं है। धोती सरका कर भागिए मत, यह कोई सरकारी सीआईडी नहीं।"इससे पता चलता है कि इस दशक की पत्रकारिताओं में निडरता का स्वर प्रस्फुटित हो रहा था। दूसरे दशक में भारतीय राजनीति पर महात्मा गांधी का प्रभाव पड़ने लगा। "आज" नामक पत्रिका काशी से प्रकाशित हो रही थी, जिसके संपादक बाबू विष्णु पराड़कर रहे। इस पत्रिका का उद्देश्य गांधी के पद चिन्हों पर चलते हुए देश को स्वतंत्र कराना था। नमक आंदोलन, असहयोग आंदोलन ने स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती प्रदान की। परिणामस्वरूप इन आंदोलन के कारण जनता के मन में जागृति निर्माण हुई। गांधी युग का साहित्य पत्रकारिता में स्वतंत्रता इस विषय की प्रधानता रही। स्वतंत्रता के लिए पत्रकारिता ने जो कीमत चुकाई है उसका अंदाज हम आसानी से लगा नहीं पाएंगे। गांधी युग में पत्रकारिता का एक दीर्घ दौर पनपता रहा था। युगांतर, ग़दर, वंदे मातरम, संध्या, स्वराज, भारतमित्र जैसे पत्र उस युग के धधकते अग्निकुंड थे। 'युगांतर, के कई संपादकों को जेल यात्रा भुगतनी पड़ी' गदर'के संपादक लाला हरदयाल और सरदार करतार सिंह उन्हें छेः साथियों के साथ फांसी की सजा सुनाई गई थी। 1907 में इलाहाबाद से प्रकाशित "स्वराज" पत्रिका के पत्रकारों ने स्वतंत्रता के इतिहास में साहस और शूरता की एक अद्‌भुत मिसाल कायम की। एक ढंग से देखा जाए तो जनता का सामाजिक और राजनीतिक प्रबोधन का बेजोड़ काम तत्कालीन पत्रकारिता ने

किया था। गांधी युग की पत्रकारिता के संदर्भ में एम. बी. शहा अपने लेख में लिखते हैं - "1920 से शुरू होने वाले गांधी युग ने पत्रकारिता की एक नई राह बनाई। गांधीजी यह मानते थे कि समाचार पत्र का पहला उद्देश्य है जनता के विचारोंको समझना तथा व्यक्त करना, दूसरा उद्देश है जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना तथा तीसरा उद्देश है सार्वजनिक दोषों को निर्भयता पूर्वक प्रकट करना। खुद गांधी जी यह तीनों उद्देश्य ध्यान में रखकर पत्रकारिता करते थे। बगैर किसी प्रकार की आक्रमक धाकड़ और भड़काऊ भाषा का उपयोग किए विरोधियों के जाल को कैसे तोड़ा जाए इसका नमूना गांधीजी की पत्रकारिता थी।"(3)उस समय पत्रकारिता देश के दुर्भाग्य को अपना दुर्भाग्य मानकर उसे दूर करने का प्रयास कर रही थी। पत्रकार अपने समय के लोकनायक के रूप में जनता में परिचित थे। डेढ़सौ साल तक अंग्रेजों की गुलामी करने वाले देश के दिल दिमाग पर सही मायने में तत्कालीन पत्रकारिता ने गहरा असर डाला। उन्होंने यहां की जनता को सामाजिक तथा राजनीतिक संस्कार किये। युगों युगों भारतीय समाज की सामाजिक बुराइयों को झेल रहा था उसे दूर करने का काम पत्रकारिता ने किया, और समाज सुधार की एक नई राह बताइ। एक और पत्रकारिता समाज का नेतृत्व कर रही थी तो दूसरी ओर समाज को सलाह भी दे रही थी। जातिभेद, धर्मभेद, भाषाभेद, प्रांतभेद से देश बिखर रहा था, ऐसी विपरीत स्थिति में सबको एकता का संदेश देते हुए, देश के स्वाधीनता की लड़ाई में सहयोग देने के लिए तत्कालीन पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय की पत्रकारिता समाज में संस्कार विकसित करने का कार्य कर रही थी।

संदर्भ सूची

1)हिंदी भाषा के सामयिक पत्रोंका इतिहास :श्री राधाकृष्ण दास पृ.सं. 12
2)हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ रमेशकुमार जैन पृ.सं117
3)स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी : संपा.श्रीमती मीना गौतम पृ.सं.49

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२५. राष्ट्रीय चेतना और मैथिलीशरण गुप्त की हिंदी कविता

प्राचार्य डॉ. बी. डी. मुंडे

जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, परली-वै, जि. बीड

प्रस्तावना :

भारत को आज़ाद कराने के लिए अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। कई परिवारों ने अपने लाल खोए, कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जीवन को देश की सेवा में न्योछावर कर दिया। तब जाकर हमें यह अनमोल आज़ादी प्राप्त हुई है। आज़ादी का आंदोलन अनेक प्रकार के हथियारों से लड़ा गया। अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग के साथ साथ क्रांतिकारों की सशस्त्र संघर्ष के परिणाम स्वरूप हमें आजादी मिली है। परंतु कलम के सिपाहियों ने आजादी के आंदोलन में जो योगदान दिया है, वह काबीले तारीफ है। साहित्यकारों और कवियों ने अपनी कलम के माध्यम से इस संघर्ष को बल दिया। कलम और तलवार दोनों ही धारदार होते हैं, दोनों से ही क्रांति लाई जा सकती है। साधारण दिखने वाली कलम भले ही तलवार से छोटी हो, लेकिन उसकी शक्ति स्थायी और अजेय होती है। कलम समाज को जागरूक बनाती है, विचारों का निर्माण करती है और पीढ़ियों तक प्रभाव छोड़ती है। हिंदी साहित्यकारों ने भी अपने लेखन से देशवासियों के मन में स्वतंत्रता और देशभक्ति की भावना जगाई। उन्होंने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना का बीजारोपण किया और लोगों को आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं, विशेषकर काव्य, में राष्ट्रीय चेतना कूट-कूट कर भरी हुई है। हिंदी कविताओं में देशभक्ति, त्याग, बलिदान और आत्मसमर्पण की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। कवियों ने अतीत के गौरव का वर्णन करते हुए वर्तमान की दुर्दशा को उजागर किया और जनता को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने हेतु जागरूक किया। कुछ कवियों ने तो देशभक्ति से ओतप्रोत भाषणों के कारण जेल भी काटी और वहां से भी राष्ट्रप्रेम की अलख जगाते रहे। मुख्यधारा के साहित्यकारों के साथ-साथ अन्य सभी साहित्यकारों ने विशेषत: बाल साहित्य में भी राष्ट्रीय चेतना की मजबूत अभिव्यक्ति हुई है। तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना से भरी रचनाओं ने सभी के मन में देशभक्ति के बीज बोये और उन्हें देशप्रेमी और देश के लिए प्राणों को न्यौछावर करने की अद्‌भुत प्रेरणा दी। पराधिनता, गुलामी जैसे कलंक को मिटाने के लिए देश के नागरिकों में प्रेरणा जागृत करने का महान कार्य तत्कालीन साहित्यकारों ने बडी इमानदारी से किया। मैथिलीशरण गुप्त इन रचनाकारों में अपने आपमें अनूठे और विशेष हैं।

राष्ट्रीय चेतना और साहित्यकार

साहित्य समाज का दर्पण होता है। जब साहित्य में राष्ट्रीय भावना उभरती है, तब वह न केवल समाज का चित्रण करता है, बल्कि उसे दिशा भी देता है। साहित्यकार जनता के भीतर वह "चेतना की चिंगारी" पैदा करते हैं जो क्रांति को जन्म देती है। भारत की स्वतंत्रता में साहित्यकारों का योगदान भी महत्वपूर्ण है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

साहित्यकारों ने अपनी कलम की शक्ति को उतनी ही प्रभावशाली ढंग से चलाया जितना की स्वाधिनता आंदोलन के अन्य साधन-शस्त्रों को चलाया गया था । हिंदी साहित्य ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर जनता को एकजुट किया और स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक बल प्रदान किया। राष्ट्रीय चेतना का व्यापक स्वरूप स्पष्ट करते हुए डॉ. सरस्वती गागराई लिखती हैं "राष्ट्रीय चेतना का मतलब है युग की तत्कालीन सामाजिक संस्कृत साहित्य का आर्थिक राजनीतिक धार्मिक आदि परिस्थितियों और उनसे जुड़े हुए मूल्य के संदर्भ में जन जागृति उत्पन्न करना यह चेतना राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के फल स्वरुप जागृत होती है। "

साहित्य के माध्यम से देशप्रेम, त्याग और बलिदान की भावना को लोगों के दिलों में संजोया गया, और यह परंपरा आज भी जारी है।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ संघर्ष करने के लिए जनता को मानसिक और वैचारिक रूप से तैयार किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रकसा द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद जैसे कवियों ने अपनी कविताओं में राष्ट्रप्रेम, बलिदान और क्रांति की भावना भरी। "पुष्प की अभिलाषा" जैसी कविता में माखनलाल चतुर्वेदी ने तत्कालीन भारतीयों राष्ट्र के लिए प्राणों के बलिदान देने की प्रेरणा दी। "झाँसी की रानी" यह सुभद्राकुमारी चौहान कविता वीरता और देशभक्ति से ओतप्रोत कविता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना को प्रखर करती हैं। राष्ट्रीय चेतना और साहित्यकार एक-दूसरे के पूरक हैं। जब देश को प्रेरणा, दिशा और साहस की आवश्यकता होती है, तब साहित्यकार अपने विचारों की मशाल से अंधकार मिटाते हैं। वे कलम को तलवार बनाकर राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक शक्ति प्रदान करते हैं। ऐसे साहित्यकार हमारे इतिहास के हीरो हैं जिन्होंने शब्दों से आज़ादी की जंग लड़ी।

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ

राष्ट्रीय चेतना से तत्कार्य है देश के सभी नागरिकों में देश के प्रति प्रेम और देशवासियों के प्रति बंधुता की भावना ।देश और उसकी एकता, संस्कृति, स्वाभिमान, स्वतंत्रता और विकास के प्रति जागरूकता और प्रतिबद्धता। बाबूलाल मुर्मू आदिवासी ने राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए कहा है जिस धरती पर मनुष्य पैदा होता है उसको वह जनानी के समान मानता है इसलिए जिस भूमि में मनुष्य जन्म लेता है वह उसकी मातृभूमि और उसे जन्मभूमि की रक्षा करना उसके लिए बैठना गुणगान करना संस्कृत भाषा जाति धर्म साहित्य आदि का संरक्षण देना ही देशभक्त है।" आदिवासी साहित्य पत्रिका अंक ६ अप्रैल जून 2016. गंगा सहाय मीणा पृष्ठ 48

जब देश किसी संघर्ष, विशेषतः स्वतंत्रता आंदोलन से गुजरता है, तब यह चेतना अत्यंत आवश्यक होती है। ऐसे समय में साहित्यकारों की भूमिका केवल भावनाओं को शब्द देने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे जनमानस को जगाने वाले क्रांतिकारी विचारक बन जाते हैं। साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

से लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हैं। वे गुलामी, अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाते हैं। उनकी रचनाएँ समाज के मन को झकझोरती हैं।

मैथिली शरण गुप्त की कविता में राष्ट्रीय चेतना

हिंदी साहित्य के इतिहास में मैथिली शरण गुप्त एक ऐसे युगप्रवर्तक कवि हैं जिन्होंने राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय चेतना को अपनी कविताओं का केंद्रीय विषय बनाया। वे 'राष्ट्रकवि' के रूप में प्रसिद्ध हुए और उनकी रचनाओं ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनमानस को जाग्रत करने का कार्य किया। उनका काव्य लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत है, जिसमें भारतीय संस्कृति, इतिहास, और गौरवमयी परंपरा का पुनर्जागरण हुआ है। मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक कवि माने जाते हैं। उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी गई थी, क्योंकि उनकी कविताओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्र जागरण में अहम भूमिका निभाई। गुप्त जी ने खड़ी बोली हिंदी को काव्य की मुख्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनकी भाषा सरल, सहज, और भावपूर्ण होती थी, जिससे आम जनमानस तक उनकी कविताएँ पहुँच सकीं। उनकी कविताओं में राष्ट्रभक्ति, धार्मिकता, नारी गरिमा, संस्कृति गौरव, और मानवता का गहरा संदेश मिलता है।

प्रमुख काव्य रचनाएँ:

भारत भारती – राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत, स्वतंत्रता संग्राम के समय अत्यंत लोकप्रिय।
साकेत – रामायण की कथा में उर्मिला का महत्त्वपूर्ण चित्रण।
पंचवटी – रामकथा का एक भाग, लेकिन समकालीन सामाजिक और राजनीतिक सन्दर्भों से जुड़ा।
यशोधरा – बुद्ध के जीवन की पृष्ठभूमि में नारी मन की गहराई का चित्रण।

मैथिली शरण गुप्त को हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद के अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने कविता को केवल सौंदर्य या भावना का माध्यम न मानकर उसे एक सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्य का स्वरूप दिया। उन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया था, और वे राज्यसभा के सदस्य भी बनाए गए। मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी काव्य को जन-जन से जोड़ा और उसे राष्ट्रीय आंदोलन का सशक्त माध्यम बनाया। वे भारतीय साहित्य के उन रचनाकारों में से हैं जिनकी लेखनी ने देशभक्ति की भावना को स्वर दिया और भारतीय आत्मा को शब्द दिए।

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप

मैथिली शरण गुप्त की कविता में राष्ट्रीय चेतना का स्वर कई स्तरों पर देखा जा सकता है। मैथिलीशरण गुप्त जी अत्यंत भावुक तथा प्रखर राष्ट्रभक्त कवि थे। उनकी कविताओं को पढकर हम राष्ट्रीय भावनाओं से भर जाते हैं। देश के लिए सब कुछ न्यौछावर करने की भावना हमारे हृदय में स्वाभाविक रूप से निर्माण हो जाती है। भारत देश का गौरवमयी अतीत वे हमारे सामने लाते हैं। अंग्रेजों ने भारत को भले ही पराजित किया हो, गुलामी की जंजिरों में जकडा क्यों न हो परंतु एक समय ऐसा था जब पूरे देश में भारत की संस्कृति का डंका बजता था। कला, साहित्य संस्कृति के क्षेत्र में भारत सबसे आगे

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

था।मैथिलीशरण गुप्त जी भारतवासियों को इसी गौरवशाली अतीत का दर्शन करवाते हैं। 'भारत-भारती' में वे लिखते हैं-

"चर्चा हमारी भी कभी संसार में सर्वत्र थी,
वह सद्‌गुणों की कीर्ति मानो एक और कलत्र थी ।
इस दुर्दशा का स्वप्न में भी क्या हमें कुछ ध्यान था ?
क्या इस पतन ही को हमारा वह अतुल उत्थान था ! ॥४॥"

मैथिली शरण गुप्त जी ने अपने काव्य में भारत के स्वर्णिम अतीत की महिमा का वर्णन किया, जिससे जनमानस में स्वाभिमान का संचार हुआ। 'भारत-भारती' जैसी कृति इसका उदाहरण है, जिसमें उन्होंने भारत को मातृभूमि के रूप में प्रस्तुत कर भावनात्मक एकता का आह्वान किया।

गुप्त जी अपनी अत्यंत लोकप्रिय रचना 'भारत-भारती' में लिखते हैं, किसी समय भारत विश्व का अत्यंत समृद्ध राष्ट्र था। समूचे संसार में भारत की सभ्यता, संस्कृति तथा वैभव की चर्चा होती थी। भारत का चरित्र सद्‌गुणों से युक्त था। भारतवासी अपने अनूठे जीवन दर्शन के निर्देशों पर अपने अस्तित्व को कृतार्थ कर रहे थे। परंतु विदेशी आक्रमणकारियों ने क्रूरता पूर्वक तथा बलपूर्वक हमें गुलाम बनाया। भारत देश पर अपना शासन कायम किया। इस दुर्दशा के बारे में किसी भी नहीं सोचा था।

स्वदेश प्रेम और बलिदान की भावना:

गुप्त जी की कविताएँ स्वदेश प्रेम से परिपूर्ण हैं। उन्होंने भारतीय वीरों, त्याग और बलिदान की गाथाओं को काव्यात्मक रूप देकर पाठकों को प्रेरित किया। उनका यह प्रसिद्ध उद्धरण–"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी"—राष्ट्रीय आत्मबोध का प्रतीक है।

विदेशी शासन के प्रति विरोध का सांकेतिक चित्रण:

सीधे राजनीतिक विरोध करने के स्थान पर उन्होंने प्रतीकों और ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से औपनिवेशिक शासन की आलोचना की। 'साकेत' , 'पंचवटी' जैसी काव्य कृतियों में रामायण के पात्रों के माध्यम से उन्होंने परतंत्रता और स्वतंत्रता के विचारों को प्रस्तुत किया।

नारी चेतना और समाज सुधार के माध्यम से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण:

गुप्त जी ने नारी के सम्मान, शिक्षा और गरिमा को राष्ट्रीय उन्नति से जोड़ा। उन्होंने 'यशोधरा' , 'साकेत' आदि रचनाओं के माध्यम से नारी को केवल पत्नी या माता नहीं, अपितु राष्ट्र निर्माण की शक्ति के रूप में चित्रित किया।

"केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगत् को गर्व था,
गृह- देवियाँ भी थीं हमारी देवियाँ ही सर्वथा ।
था अत्रि - अनसूया - सदृश गार्हस्थ्य दुर्लभ स्वर्ग में,
दाम्पत्य में वह सौख्य था जो सौख्य था अपवर्ग में ॥
निज स्वामियों के कार्य्य में समभाग जो लेतीं न वे,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

अनुरागपूर्वक योग जो उसमें सदा देतीं न वे ।
तो फिर कहाती किस तरह 'अर्धांगिनी' सुकुमारियाँ,
तात्पर्य्य यह — अनुरूप ही थीं नरवरों के नारियाँ॥"

भारत-भारती: राष्ट्रीय चेतना का महाकाव्य

'भारत-भारती' मैथिली शरण गुप्त की वह अमर कृति है, जिसने स्वतंत्रता संग्राम के समय लोगों के भीतर देशभक्ति की भावना को जगाया। इसमें उन्होंने अतीत, वर्तमान और भविष्य के भारत को संबोधित करते हुए भारतीयों को जागने, संगठित होने और भारत माता की सेवा के लिए प्रेरित किया।

भारत भारती लिखने के लिए मैं जब आचार्य द्विवेदी जी से परामर्श किया तो उन्होंने लिखा आजकल ऐसे पुस्तक लिखने का लिखने पर शासको से लेखक की रक्षा कौन करेगा पर राजा रामपाल सिंह ने आश्वासन दिया कि हम राजद्रोह थोड़ी है मेरे सभी स्वजन और हितेषी चाहते थे कि भारत भारती जप्त ना हो और मुझे जेल भी न जाना पड़े उनके अनुरोध पर मुझे अपने बहुत से मूल पदों को जिन्हें वह आपत्तिजनक समझते थे बदल देना पड़ा जैसे जन्म लेते हैं तिलक से धार अभी यहां को बदलकर तो जनमत हैं कुछ द्रधवत लोकमान्य अभी यहां करना पड़ा तिलक का नाम निकालकर लोकमान्य से उसकी पूर्ति की गई थी भारत भारती की रचना में मुझे आत्म दमन में मानसिक व्यथा झेलनी पड़ी।" यह जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है।

चर्चा हमारी भी कभी संसार में सर्वत्र थी,
वह सद्‌गुणों की कीर्ति मानो एक और कलत्र थी ।
इस दुर्दशा का स्वप्न में भी क्या हमें कुछ ध्यान था ?
क्या इस पतन ही को हमारा वह अतुल उत्थान था ! ॥४॥
उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी,
जो हो रहा अवनत अभी, उन्नत रहा होगा कभी ।
हँसते प्रथम जो पद्म हैं तम पंक में फँसते वही,
मुरझे पड़े रहते कुमुद जो अन्त में हँसते वही ॥५॥
उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है,
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है ।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति - कला,
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला ? ॥ ६ ॥
होता समुन्नति के अनन्तर सोच अवनति का नहीं,
हाँ, सोच तो है जो किसी की फिर न हो उन्नति कहीं।
चिन्ता नहीं जो व्योम - विस्तृत चन्द्रिका का हास हो,
चिन्ता तभी है जब न उसका फिर नवीन विकास हो॥७॥
है ठीक ऐसी ही दशा हतभाग्य भारतवर्ष की,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

कब से इतिश्री हो चुकी इसके अखिल उत्कर्ष की ।
पर सोच है केवल यही यह नित्य गिरता ही गया,
जब से फिरा है दैव इससे नित्य फिरता ही गया ॥८॥

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'कैदी और कोकिला' हिन्दी साहित्य की एक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी कविता है, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौर में लिखी गई थी। यह कविता प्रतीकात्मक रूप से उस संघर्ष को दर्शाती है, जो भारत की स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारियों और देशभक्तों ने जेल में रहते हुए झेला। इस कविता में एक कैदी (देशभक्त) और कोकिला (कोयल पक्षी) के बीच संवाद होता है। कोकिला बाहर के खुले वातावरण में स्वतंत्रता से गीत गा रही है, जबकि कैदी जेल की कोठरी में बंद है। कोकिला की मधुर वाणी कैदी के हृदय को झकझोर देती है और उसमें आज़ादी की तड़प को और गहरा कर देती है। कैदी को कोकिला से ईर्ष्या नहीं, बल्कि प्रेरणा मिलती है। वह पूछता है कि क्या तुम जानती हो कि आज़ादी का मूल्य क्या होता है? क्या तुमने कभी किसी देश के लिए अपने सपनों, इच्छाओं और जीवन का बलिदान दिया है? कोकिला की स्वतंत्रता देखकर कैदी को अपने देश की गुलामी और अपनी बेबसी का एहसास होता है। कविता में कैदी का स्वर संवेदनशील, देशभक्ति से ओतप्रोत, और आत्मचिंतनशील है।

गुप्त जी की भाषा खड़ी बोली हिंदी है, जो उस समय जनता की भाषा बनने की दिशा में अग्रसर थी। उनकी भाषा सरल, स्पष्ट और भावपूर्ण है, जिससे उनके संदेश आम जनता तक सरलता से पहुँच सके। शैली में पौराणिक प्रतीकों का प्रयोग कर उन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं को गहराई प्रदान की।

निष्कर्ष

मैथिली शरण गुप्त की कविताएँ केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं हैं, बल्कि वे भारत की आत्मा की पुकार हैं। उनकी रचनाओं ने राष्ट्रीय चेतना को स्वर, गति और दिशा दी। वे भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण के कवि हैं, जिन्होंने कविता को जनजागरण का माध्यम बनाया। उनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना न केवल विचार के रूप में, बल्कि जीवन-मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित है।

संदर्भ :

आदिवासी साहित्य पत्रिका अंक ६ अप्रैल जून 2016. गंगा सहाय मीणा पृष्ठ 48
भारत भारती – मैथिली शरण गुप्त
हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रवाद – प्रो. नामवर सिंह
भारत भारती – मैथिली शरण गुप्त
भारत के प्रमुख साहित्यकारों से अंतरंग बातचीत, डॉ रणवीर रांग्रा पृष्ठ 18
भारत भारती – मैथिली शरण गुप्त अतीत खण्ड / १३

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२६ **'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से'कविता में राष्ट्रीय चेतना**

डॉ. संदीप एस. पाईकराव

हिंदी विभाग, यशवंत महाविद्यालय, नांदेड

sandippaikrao@gmail.com, 9421759024

शोध-सारांश

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के महान कवि और विचारक थे, जिन्होंने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता के विषयों को प्रमुखता से चित्रित किया। उनका काव्य न केवल सौंदर्य और रस की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय समाज की जागरूकता और संघर्ष की ओर भी प्रेरित करता है।जयशंकर प्रसाद का काव्य भारतीय राष्ट्रीयता, आत्मगौरव और कर्तव्य के प्रति निष्ठा की भावना से ओतप्रोत है। उनका मानना था कि स्वतंत्रता केवल बाहरी शोषण से मुक्ति नहीं है, बल्कि यह आंतरिक जागरूकता, राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना से प्राप्त होती है।प्रसाद जी के काव्य में राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता का स्पष्ट संदर्भ मिलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनता को उनके गौरवमयी अतीत और वीरता की याद दिलाई और उनके सामने कर्तव्यपालन, साहस, और संघर्ष के मार्ग को प्रस्तुत किया। उनके काव्य मेंराष्ट्रीय चेतनाकी भावना न केवल स्वतंत्रता संग्राम के समय की प्रेरणा देती थी, बल्कि आज भी यह संदेश प्रासंगिक है। विशेष रूप से उनकी कविता "हिमाद्रि तुंग श्रृंग से"में, वे भारतीय जनमानस को उसके गौरवमयी अतीत, वीरता और कर्तव्य के प्रति जागरूक करते हैं। यह कविता स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय आत्मसम्मान की पुनःस्थापना का आह्वान करती है।

बीज शब्द / संकेत शब्द

1. राष्ट्रीय चेतना
2. भारतीय संस्कृति
3. स्वतंत्रता संग्राम
4. वीरता
5. कर्तव्य
6. साहस
7. हिमाद्रि तुंग श्रृंग
8. राष्ट्रवाद
9. सामाजिक जागरूकता

राष्ट्रीय चेतना की अवधारणा:

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राष्ट्रीय चेतना का मतलब केवल एक राष्ट्र के प्रति प्रेम या श्रद्धा नहीं है, बल्कि यह उस राष्ट्र के प्रति जागरूकता, कर्तव्य, आत्मनिर्भरता और समाज के भले के लिए किए गए संघर्ष का प्रतीक है। जयशंकर प्रसाद का मानना था कि राष्ट्रवाद एक ऐसी चेतना है, जो समाज के हर व्यक्ति को अपने देश की समृद्धि, एकता और सम्मान के प्रति जागरूक करती है। उनके काव्य में यह राष्ट्रीय चेतना एक गहरी भावना के रूप में प्रकट होती है, जो स्वतंत्रता संग्राम के समय भारतीयों को न केवल जागरूक करती थी, बल्कि उन्हें एकजुट होकर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती थी।

राष्ट्रीय चेतना केवल एक राजनीतिक आह्वान नहीं है, बल्कि यह समाज की संस्कृति, इतिहास और कर्तव्यों के प्रति गहरी जागरूकता का परिणाम है। डॉ० देवराज पथिक का कहना है कि "राष्ट्रीय चेतना जिस देश में जितनी गहरी अनुप्राणित रहती है, उसकी देशभक्ति का उछाल भी उतना ही उन्नत और ऊँचा देखा जा सकता है।"1इसका मतलब है कि जब व्यक्ति अपनी मातृभूमि के इतिहास, संस्कृति, और उसकी समस्याओं से पूरी तरह अवगत होता है, तब उसका देश के प्रति प्रेम और समर्पण अधिक सशक्त और प्रभावशाली होता है। राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति एक-दूसरे के पूरक हैं, और जब एक का भाव प्रकट होता है, तो दूसरा भी स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है।जयशंकर प्रसाद का मानना था कि राष्ट्र की पहचान केवल उसकी भौतिक सीमाओं से नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक धरोहर, समाजिक एकता, और साझा संघर्ष से है। वे यह मानते थे कि भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने और अपने राष्ट्र की सेवा में तत्पर रहने की आवश्यकता है। उनका काव्य इस विचारधारा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है कि केवल तभी हम अपने राष्ट्र को सशक्त और स्वतंत्र बना सकते हैं जब हम अपने आंतरिक दृढ़ संकल्प को पहचानें और उसे कार्य में लाएँ।

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' कवितामें राष्ट्रीय चेतना:

जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 में वाराणसी में हुआ था। उनका जीवन भारतीय साहित्य के निर्माण में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। उन्होंने अपनी कविताओं, नाटकों और कहानियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रवाद की गहरी समझ को समाज के सामने प्रस्तुत किया। प्रसाद जी के साहित्यिक दृष्टिकोण में एक विशेष प्रकार की संवेदनशीलता, गहरे नैतिक मूल्य और राष्ट्र के प्रति निष्ठा पाई जाती है। उनकी रचनाएँ भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को जागृत करने का कार्य करती हैं।विशेष रूप से, उनकी कविता"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से"में राष्ट्रीय चेतना का प्रभावशाली चित्रण किया गया है, जो उन्हें भारतीय साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण कवि बनाता है।

1. भारत के गौरव का चित्रण:

"प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।"2जयशंकर प्रसाद के काव्य में भारत के गौरव का चित्रण अत्यधिक स्पष्ट रूप से किया गया है। वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे। उन्होंने अपनी कविता"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से"में हिमालय के शिखरों को भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना और भारतीयों से अपील की कि वे अपने गौरवमयी इतिहास और सांस्कृतिक

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

धरोहर को पहचानें। उन्होंने यह संदेश दिया कि भारत की महानता केवल भौतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि उसकी संस्कृति, उसकी भाषा, और उसकी परंपराओं में छिपी हुई है। वे मानते थे कि यदि भारतीय अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जानेंगे और समझेंगे, तो उन्हें अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा मिलेगी और वे अपने राष्ट्र की सेवा में तत्पर होंगे।

2. स्वतंत्रता और कर्तव्य का आह्वान:

प्रसाद के काव्य में स्वतंत्रता का विषय केंद्रीय स्थान पर है। "देश भक्ति का उद्वेलन कभी समर्पण तो कभी आंदोलन का रूप धारण कर लेता है, जिससे व्यक्ति के स्वत्व से लेकर राष्ट्र तथा देश की स्वतंत्रता और समानता की सुरक्षा के लिए सर्वस्व समर्पण तक के भाव समाविष्ट होते हैं।"3"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से"कविता में देवी सरस्वती के माध्यम से स्वतंत्रता की पुकार की जाती है।

"हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती" 4

सरस्वती ज्ञान और पवित्रता की देवी मानी जाती हैं, और उनके माध्यम से प्रसाद भारतीयों से अपील करते हैं कि वे अपनी संस्कृति और कर्तव्यों का पालन करते हुए स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए संघर्ष करें। वे यह मानते थे कि स्वतंत्रता केवल बाहरी शोषण से मुक्ति नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान, और कर्तव्य के पालन से प्राप्त होती है। यह संदेश स्पष्ट रूप सेस्वतंत्रता संग्रामके संदर्भ में किया गया था, जब भारतीय जनता अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिए संघर्षरत थी।

3. वीरता और साहस का उद्घाटन:

प्रसाद के काव्य में वीरता और साहस का भी विशेष महत्व है। उनकी कविता"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से"में भारतीयों से यह आह्वान किया गया है कि वे अपनी वीरता और साहस को पहचानें और अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा से कार्य करें। वे यह मानते थे कि वीरता और साहस केवल युद्ध में नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में जरूरी हैं।

'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़- प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।" 5

कवि के अनुसार, जो लोग दृढ़ संकल्प और साहस से अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, वही सच्चे वीर होते हैं। उनका यह संदेश उन लोगों के लिए था, जो या तो संघर्ष से भाग रहे थे या फिर अपने कर्तव्यों से विमुख थे। वे यह चाहते थे कि हर भारतीय अपने भीतर की वीरता को पहचानें और राष्ट्र के हित में कार्य करें।

4. राष्ट्रीय एकता और सामाजिक संघर्ष:

प्रसाद का काव्य राष्ट्रीय एकता और सामाजिक संघर्ष का प्रतीक है। वे यह मानते थे कि यदि भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करनी है, तो उसे अपनी सामाजिक एकता बनाए रखनी होगी। उनका यह संदेश था कि कोई भी समाज तभी मजबूत होता है जब उसके लोग एकजुट होते हैं।

"असंख्य कीर्ति-रश्मियां विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के - रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में, सुबाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो। "6

पंक्ति में वे यह बताते हैं कि भारतीयों का गौरवपूर्ण इतिहास हमेशा उनके मार्गदर्शन के लिए तैयार है, और उन्हें इस इतिहास को अपने मार्गदर्शन के रूप में उपयोग करना चाहिए। उनका काव्य यह भी दर्शाता है कि राष्ट्र की स्वतंत्रता और समृद्धि तभी संभव है, जब सभी भारतीय मिलकर काम करें और सामूहिक रूप से संघर्ष करें।

5. भारत की सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रवाद:

जयशंकर प्रसाद के काव्य मेंभारत की सांस्कृतिक धरोहरकी गहरी छाप दिखाई देती है। वे यह मानते थे कि भारतीयों की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सांस्कृतिक धरोहर में है। उनका काव्य यह संदेश देता है कि यदि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहेंगे, तो हमें किसी भी प्रकार के बाहरी आक्रमण या प्रभाव का सामना करने में आसानी होगी। वे यह मानते थे कि भारत की संस्कृति की जड़ें इतनी गहरी हैं कि कोई भी विदेशी शक्ति उसे नष्ट नहीं कर सकती। प्रसाद के काव्य में यह भावना स्पष्ट रूप से प्रकट होती है कि जब तक हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखते हैं, तब तक हम अपने राष्ट्र के लिए एक मजबूत और स्थिर आधार तैयार कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

जयशंकर प्रसाद का काव्य भारतीय राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। उनके काव्य में राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता और समाज की जागरूकता के तत्व प्रमुख हैं। वे मानते थे कि एक सशक्त और स्वतंत्र भारत की कल्पना केवल सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को पुनः स्थापित करने से संभव है। उनकी कविता"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से"के माध्यम से उन्होंने भारतीयों को उनके कर्तव्यों, वीरता और साहस की याद दिलाई और उन्हें अपने राष्ट्र की सेवा में तत्पर होने के लिए प्रेरित किया। प्रसाद जी का काव्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि उनके समय में था। उनके काव्य के माध्यम से हम समझ सकते हैं किराष्ट्रवादकेवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक जागरूकता, कर्तव्य और एकता का प्रतीक है।जयशंकर प्रसादके साहित्य में गहरी राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान और कर्तव्य का आह्वान यह सिद्ध करता है कि प्रसाद जी ने साहित्य के माध्यम से भारतीयों को अपनी शक्ति और कर्तव्यों का एहसास कराया। उनके काव्य में न केवल सुंदरता है, बल्कि यह हमारे इतिहास, संस्कृति और एकता के महत्व को भी प्रकट करता है।

संदर्भ:

1.डॉ० देवराज पथिक,'नई कविता में राष्ट्रीय चेतना' ,(1985) कादम्बरी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ २७
2.आचार्यरामचंद्रशुक्ल, 'हिंदी साहित्य का इतिहास',(2008), प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली ,पृष्ठ-21

3.डॉ. सुभाषमहाले,'माखनलाल चतुर्वेदी और वि. दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना', (1997), चंद्रलोक प्रकाशन,कानपुर,पृष्ठ -25
4.सं. डॉ. बालाजी भूरे,'काव्य तरंग' ,(2020)जयशंकर प्रसाद,'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' , शैलजा प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ -85
5.सं. डॉ. बालाजी भूरे,'काव्य तरंग' ,(2020) जयशंकर प्रसाद,'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' , शैलजा प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ -85
6.सं. डॉ. बालाजी भूरे,'काव्य तरंग' ,(2020) जयशंकर प्रसाद,'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' , शैलजा प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ -85

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२७. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं मे अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना

प्रा.डॉ.प्रकाश सदाशिव सूर्यवंशी
हिंदी विभाग,
स्वा.सै.सूर्यभानजी पवार महा.पूर्णा जि.परभणी

माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य में "एक भारतीय आत्मा" के नाम से प्रसिध्द है। अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय स्वर को उजागर करने वाले एक सच्चे राष्ट्रीय कवि के रुप में इनको अत्याधिक सफलता मिली है। महात्मा गांधीजी से प्रभावित होकर इन्होने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रीय सेनानी के रुप में कार्म किया। मानविय भावना, आदर्श, त्याग, बलिदान, समाज कल्याण और राष्ट्रप्रेम की भावना उनकी कविता लेखन का प्राण है। माखनलाल चतुर्वेदी ने अपना संपूर्ण जीवन देशसेवा के लिए समर्पित किया। वे एक सक्रीय स्वतंत्रता सेनानी, विशुध्द साहित्यकार, क्रांतीकारी एवं निर्भीक पत्रकार आदि बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अपनी पत्रकारीता के माध्यम से अंग्रेजी व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाकर हजारों युवकों में देशप्रेम की भावना जागृत करने कार्य माखनलाल जी ने किया उन्होने कर्मवीर, प्रताप जैसी पत्रिकाओं का संपादन करके राष्ट्रीय और सामाजिक मुद्दोपर आवाज उठायी है। "पुष्प की अभिलाषा" उनकी सर्वाधिक चर्चित रचना है। इस रचना के लिए उन्हे सागर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट.की मानक उपाधि से सन्मानित किया गया। उनके "ट्रिम तरंगिणी" इस काव्यसंग्रह के लिए 1955 मे साहित्य अकादमी से नवाजा गया। उन्होने समर्पण युग चारण और ट्रिम किरीटिनी आदि रचनाओ के माध्यम देश के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना को अभिव्यक्त किया है।

माखनलाल जी के काव्य में बलिदान, त्याग, समपर्ण, विद्रोह, गांधीवादी दृष्टि और वीर पुजा के स्वर प्रमुख रुप से दिखाई देते है। गांधीजी से प्रभावित होकर इन्होने स्वतंत्रता आंदोलन में हिंस्सा लिया। अपने क्रांतीकारी विचारो के कारण इन्हे अनेक बार जेल भी जाना पडा। सन 1922 में विलासपुर में भडकाऊ भाषण देने के कारण इन्हे जेल भी जाना पडा। इसी दौरान उन्होने एक पुष्प की अभिलाषा यह प्रसिध्द रचना लिखी। देश प्रेम से ओत-प्रोत इस रचना के माध्यम से माखनलाल ने भारतीय युवकों को आजादी के आंदोलन के लिए प्रेरित किया। एक फुल किसी सुरबाला के गहनो मे गुंथना नही चाहता है और न ही देवों के सिर पर चढकर अपने भाग्य पर इठलाना चाहता है। वह पुष्प उस वनमाली को विनंती करता है की, मुझे तोडकर उस पथ पर फेंकना जिस पथ पर मातृभूमी को शीश चढाने के लिए अनेक वीर जा रहे है। अपनी कविता में वे लिखते है।

चाह नही मैं सुरबाला के गहनों मे गुंथा जाऊं
चाह नही, देवों के सिर पर, चढु भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड लेना वनमाली उस पथ परदेना फेंक

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

मातृभूमि पर शीश चढाने, जिस पथ जावे वीर अनेक.

देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना माखनलाल चतुर्वेदी के कविताओं में कुट-कुट कर भरी है। अपने देश को अंग्रेजो की गुलामी से मुक्त करने के लिए कवि हर क्षण तत्पर है। उनकी कविताओ में क्रांतिवादी चेतना के स्तर है।

राष्ट्र के उत्थान के लिए युवावर्ग को संचेतना देते है। उनकेद्वारा लिखित सिपाहि कविता में देशभक्ती का उच्चस्तर दिखाई देता है। सच्चा राष्ट्रीय कवि नही है जो अपने देश की मिट्टी, पौधों लताओं, झरनों, नदियों से प्रेम करना है। अपने देश की रक्षा के लिए सिपाही के रुप में तत्पर रहकर अपना जीवन देश सेवा के लिए समर्पित करना है। अपनी कविता सिपाही में वे लिखते है -

बोल अरे सेनापति मेरे, मन की धुंदी खोल
सच्चा राष्ट्रीय कवि वही होता है जिसे अपने
देश की, मिट्टी, पेड पौंधो लताओ झरनो,नदियो
और उसके पर्वत शिखरो से प्रेम हो"

राष्ट्रीय चेतना का अत्यंत उदात्त स्वर माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में मिलता है। उनका काव्य सही अर्थो में भारतीय आत्मा का दर्शन कराता है। राष्ट्रीय चेतना का ज्वालाभुमी उनकी कविता में यत्र-तत्र धधकता हुआ दिखाई देता है। अंग्रेजी व्यवस्था को उखाड कर सात समुंदर पार फेककर भारत भुमी को मुक्त करता ही उनके कविता का उद्देश्य है। वे एक वीर सिपाही के रुप में सदैव राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में लक्ष्य प्राप्ती के लिए अटल खडे है। वे राष्ट्रीय मुक्ती संग्राम के सेनानी से अपनी बली देने की आज्ञा माँगते हुँए कहते है -

खिलने के पहले टुटेंगी, तोड बना मत भेद
बनमाली अनुशासन की, सुची से अंतर छेद
श्रम सीकर, प्रहार से जीकर बना लक्ष्य आराध्य
मैं हुँ एक सिपाही, बलि है मेरा अंतिम साध्य !

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में मुख्यता राष्ट्रीयता का भाव तथा जनचेतना का स्वर प्रमुख रुप से दिखाई देता है। राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना, स्वतंत्रता और देश को एकता का भाव उनकी कविताओं में दिखाई देता है। उन्होने अपना संपुर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया है। युवकों के दिलो मे देशप्रेम की भावना जागृत करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाने का संदेश उन्होने भारतीय युवको को दिया है। भारतीय युवको ने अगर ठाण लिया कि हम देश को अंग्रेजी व्यवस्था की गुलामी से मुक्त करेंगे तो वह दिन दुर नही जब भारत स्वाधीन होगा। उनका मानना था कि अंग्रेजी व्यवस्था के शोषण और अत्याचार के खिलाफ जिस व्यक्ती के ठम में ज्वाला न धधके तो वह भारतीय होकर भी उसका जीवन निरर्थक है। युवको को प्रेरित करते हुए वे लिखते है कि तुम्हारे नसों मे रक्त है या शुध्द पानी है यह जाँच करो। अपनी कविता में लिखत है -

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

एक हिम गिरि एक सिर
का मोल कर दें
मसलकर अपने इरादों सी, उठाकर
दो हथेली है की,
पृथ्वी गोल कर दे
रक्त है या नसों में शुद्र पानी
जाँच कर, तु सीस दे देकर जवानी।

इस प्रकार माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में देशप्रेम तथा राष्ट्रभक्ती का भान कुट-कुट कर भरा है। उनका जीवन और साहित्य दोनों ही राष्ट्रसेवा के लिए हमेशा समर्पित रहा है। अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीभक्ती की भावना अभिव्यक्त करते-करते पत्रकारिता के माध्यम से देश की राजनीती को नयी दिशा देने का काम इन्होने किया है।

संदर्भ सुची :-

1.मल्हार, माखनलाल चतुर्वेदी, एनसीईआरटी-2022
2.hindwi.org
3.हिंदी साहित्य : युग और प्रकृतियाँ डॉ.शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली-6 प्रका-2010
4.www.hindi ke rastriya chetna ke kavi.

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२८. कथेत्तर गद्य विधाओं में (आत्मकथा) राष्ट्रीय चेतना

राधा लखनलाल देवहंस
शोधार्थी छात्रा
रिसर्च सेंटर - आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली
radhamankar@gmail.com ८१४९८७२९१७

प्रा. डॉ. संजीवकुमार नरवाडे
शोध मार्गदर्शक
आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली

शोध सारांश

राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ राष्ट्रीय चेतना अपने चरम पर पहुंच गई थी। शिक्षा के प्रचार- प्रसार के कारण एक शिक्षित वर्ग का उदय हुआ। जिस ने स्वतंत्रता, राष्ट्रीयता की भावना और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया। सती प्रथा,बाल विवाह, जातिवाद जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध किए गए आंदोलन में भी राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया। ब्रिटिश काल की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक नीतियों के कारण भारतीय समाज में असंतोष फैला। उसी ने राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया। राष्ट्रीय चेतना को जगाने में आत्मकथाओं ने भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। आत्मकथा हमें हमारी संस्कृति, इतिहास और समाज को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है और हमें राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने के लिए प्रेरित करती है। आत्मकथा अपने समय के सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संदर्भों को दर्शाती है जिसे पढ़कर पाठक अपने राष्ट्र के इतिहास और वर्तमान स्थिति को बेहतर समझ सकता है। हिंदी में 17वीं शताब्दी में रचित बनारसीदास जैन की 'अर्धकथानक' (१६४१) ब्रजभाषा में लिखी पद्यात्मक आत्मकथा है। इसे हिंदी की 'पहली आत्मकथा' माना जाता है। दयानंद सरस्वती की 'आत्म चरित', सीताराम सूबेदार की 'सिपाही से सूबेदार तक' आत्मकथा अंग्रेजी अनुवाद संस्करण में उपलब्ध हैं। भारतेंदु की 'एक कहानी: कुछ आप बीती कुछ जग बीती' में अपने परिवेश को अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि के साथ उकेरा है। अंबिका दत्त व्यास की, 'निजवृतांत', सत्यानंद अग्निहोत्री की 'मुझ में देव- जीवन का विकास', स्वामी श्रद्धानंद कृत 'कल्याण पथ का पथिक', राधाचरण गोस्वामी की 'राधाचरण गोस्वामी का जीवन चरित्र', भाई परमानंद की आप बीती 'मेरी राम कहानी', आदि। इन आत्मकथाओं में तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का दर्शन होता है। 1924 में स्वामी श्रद्धानंद की 'कल्याण मार्ग का पथिक',राम प्रसाद बिस्मिल की फांसी के दो दिन पूर्व लिखी आत्मकथा एवं लाला लाजपत राय की आत्मकथा का प्रथम भाग कुछ महत्वपूर्ण लघु आत्मकथाएं हैं। 1941 में श्यामसुंदर दास की आत्मकथा 'मेरी आत्म कहानी' प्रकाशित हुई जिसमें नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना, तत्कालीन हिंदी और हिंदी की स्थिति के बारे में प्रकाश डाला गया है। 1946 में प्रकाशित 'मेरी जीवन यात्रा' (भाग १) राहुल सांकृत्यायन की प्रकृति में जीवन महत्व को निरूपित करती है। 1932 ई. में

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

मुंशी प्रेमचंद ने हंस का एक विशेष आत्मकथा अंक संपादित किया था। यह आत्मकथा विधा के विकास की एक बड़ी उपलब्धि थी।

बीज शब्द
राष्ट्रीयता, राष्ट्रप्रेम, आत्मकथा, आत्माभिव्यक्ति, साहित्य, संस्कृति, स्वतंत्रता, समर्पण, समाज, एकता

प्रस्तावना

जिस राष्ट्र में राष्ट्रीय चेतना जितनी अधिक बलवान होती है वह राष्ट्र उतना ही ज्यादा शक्तिशाली तथा समृद्ध माना जाता है। वैदिक काल से ही राष्ट्र शब्द का उपयोग होता आया है। समय-समय पर राष्ट्र की परिभाषाएं परिवर्तित होती रही है। किंतु परतंत्रता के समय से राष्ट्र और राष्ट्रीय चेतना अधिक विकसित हुई। परिणाम स्वरुप साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ। राष्ट्र का सीधा संबंध समाज से होता है। हिंदी साहित्य के उद्‌भव काल से ही राष्ट्रीय चेतना का अस्तित्व हिंदी साहित्य में मिलता है। भक्ति काल के भक्त कवियों के अंतर मन में बहती राष्ट्रीय चेतना ने निराश्रित समाज को नई दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया। जहां कबीर ने निराकार ब्रह्म की उपासना का उच्च आदर्श प्रस्तुत किया, वहीं तुलसी के लोक रक्षक, समन्वयवादी राम ने सांस्कृतिक एकता को उर्जा प्रदान की।

अगुन ही सगुन ही नहि कछु भेदा
गावहि श्रुति पुरान बुध वेदा।
अगुन अरूप अलख अज जोई
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।। 1

समाज को अपने सत्कर्म से जगाने हेतु और लोक रक्षा के लिए कर्मयोगी कृष्ण विविध लीला करते हैं। हिंदी साहित्य का रीतिकाल यद्यपि श्रृंगार काल माना जाता है, तथापि भूषण, मतिराम, वृंद कवियों का काव्य राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। भूषण ने अपने काव्य द्वारा राष्ट्रवादी चेतना से लोक मन को झकझोर दिया।

इंद्र जिमि जंभ पर
बाड़व सु अंभ पर
रावण सदंभ पर रघुकुल राज है
पौने बारिबाह पर
संभू रतिनाह पर
ज्यौ सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज हैं 2

विषय वस्तु

हिंदी साहित्य का आधुनिक युग राष्ट्रीय चेतना की भावना से सराबोर है। साहित्यकार अपने युगीन परिवेश से अछूता नहीं रहता। इसी वजह से आधुनिक काल में देश में जब राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की लहर दौड़ रही थी तब राष्ट्रीय चेतना का स्वर संपूर्ण साहित्य में गूंज उठा। स्वतंत्रता संग्राम से देश में मची उथल-पुथल ने साहित्यकारों को साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की गंगा बहाने की प्रेरणा दी। संपूर्ण भारतीय साहित्य के गर्भ में

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राष्ट्रीय चेतना का विकास हो रहा था। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'भारत दुर्दशा' द्वारा समाज को जगाने का कार्य किया। द्विवेदी युग में मैथिलीशरण गुप्त के रूप में पहला राष्ट्रवादी स्वर उठा। भारत-भारती ने नौजवानों में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया।

हम कौन थे क्या हो गए
और क्या होंगे अभी
आओ विचारे बैठकर
यह समस्याएं सभी 3

छायावादी काव्य राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। इस युग में स्वाधीनता संग्राम अपने यौवन पर था। हिमाद्रि तुंग-श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, अरुण यह मधुमय देश हमारा, जागो फिर एक बार, निराला की वर दे वीणा वादिनी, भारती जय विजय करे आदि कविताओं में राष्ट्र प्रेम का शंखनाद सुनाई देता है। हिंदी की राष्ट्र काव्य धारा में काव्य धारा के काव्य में देश प्रेम की अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीयता इस काव्य की मुख्य प्रवृत्ति थी। राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रणेता 'माखनलाल चतुर्वेदी' जी को 'एक भारतीय आत्मा' कहा जाता है। उनकी 'पुष्प की अभिलाषा' राष्ट्रीय भाव की अमर रचना है। हर भारतीय उस से प्रेरणा लेता रहेगा।

चाह नहीं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं प्रेमी माला में बिन्ध प्यारी को ललचाऊ
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि! डाला जाऊं
चाह नहीं देवों के सिर पर,
चढ़ू भाग्य पर इठलाऊं!
मुझे तोड लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावे वीर अनेक !!4

पुष्प के माध्यम से माखनलाल जी की राष्ट्र के प्रति समर्पण की पराकाष्ठा है। सुभद्रा कुमारी चौहान झांसी की रानी का गौरव गान करते हुए लिखती है–

बुंदेले हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।5

यह काव्य देश के प्रति अनुराग प्रकट कर राष्ट्र के लिए बलिदान करने की प्रेरणा देते हैं।

आत्मकथा के माध्यम से लेखक अपने अनुभव, विचारों और राष्ट्र के प्रति अपनी समझ को साझा करते हैं। जिससे पाठकों के मन में राष्ट्रीय चेतना जागृत होती है। मनुष्य प्रकृति की अनुपम कृति है तो निसंदेह मनुष्य की श्रेष्ठ कृति आत्मकथा है। आत्मकथा सहज और सरल होती है। बिना किसी मुखौटे के यथार्थ दर्शन

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

कराती है। पराधीन भारत में अंग्रेजी शिक्षा, साहित्य, संस्कृति के प्रचार-प्रसार के कारण राष्ट्रीय चेतना के प्रति आत्मीयता बढ़ी। स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में पनपती आत्मकथाओंने परिवेश के कोलाहल के साथ अंतर्मन को एक साथ बांधने का प्रयास किया। कई पीढ़ियां व्यापक मूल्य से जुड़ती राष्ट्रीय स्थिति को अपने लक्ष्य के साथ वैयक्तिक जीवन संदर्भ में आत्मकथा को निश्चित रूप देने में समर्थ हुई।

आत्मकथा का प्रथम चरण आरंभ से लेकर 1947 तक

1641 में ई. में प्रकाशित बनारसीदास जैन की 'अर्धकथानक' नामक आत्मकथा को हिंदी की पहली आत्मकथा माना जाता है। हालांकि पद्यात्मक शैली में लिखी इस आत्मकथा में 675 पद संकलित है। तत्कालीन परिवेश में व्यक्तिगत जीवन को लेकर लेखन होना बिल्कुल नई बात थी। साहित्य राज दरबार तक सीमित था उस समय बनारसी दास जैन ने अर्धकथानक द्वारा अपने जीवन की घटनाओं पर प्रकाश डाला। यह भारतीय साहित्य में नई घटना थी। बनारसीदास जैन ने अपने जीवन काल से प्रौढ़ावस्था तक की कुछ घटनाओं को अर्धकथानक के माध्यम से प्रस्तुत किया। इसमें अपने दोषों को भी उजागर किया। इस संदर्भ में डॉ.नारायण शर्मा लिखते हैं - "उन्होंने अपने जीवन के किसी भी विशिष्ट घटना पर पर्दा नहीं डाला है। लेखक ने यौवनावस्था की विलासिता व आचरण हीनता की आत्म स्वीकृति दी है।"6

अर्धकथानक के बाद लगभग डेढ़ सौ वर्ष तक कोई आत्मकथा प्रकाशित नहीं हुई। 18 वीं सदी से ब्रिटिश शासन शुरू हुआ, उस समय साहित्यकारों में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ। स्वतंत्रता की भावना जगाना साहित्यकारों का लक्ष्य था।उनके साहित्य ने राष्ट्रभक्ति, देश प्रेम, स्वदेशी का शंखनाद किया।

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में स्वामी दयानंद सरस्वती की 'आत्मचरित' नामक आत्मकथा ने देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का कार्य किया। जनता को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य किया। स्वतंत्रता पूर्व काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र, अंबिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, सीताराम सूबेदार, सत्यानंद अग्निहोत्री आदि की आत्मकथाओं ने इस विधा को गति प्रदान की। उसके बाद स्वामी दयानंद सरस्वती, भाई परमानंद, रामप्रसाद बिस्मिल, मूलचंद अग्रवाल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, राहुल सांकृत्यायन, भवानीदयाल संन्यासी आदि की आत्मकथाएं प्रकाशित हुई। स्वातंत्र्य पूर्व लिखी आत्मकथा का वर्ण्य - विषय 'स्व' के विश्लेषण के साथ देशप्रेम, राष्ट्रीय चेतना, क्रांतिकारी संगठन, ब्रिटिश काल में देशवासियों का शोषण आदि रहा है।

स्वामी दयानंद सरस्वती

1860 में स्वामी दयानंद सरस्वती की 'आत्मचरित' यह आत्मकथा प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा स्वयं कथित है। स्वामी जी ने अपने जीवन अनुभव को कथन किया उनके लिपिक ने लिपिबद्ध किया। यह आत्मचरित्र गद्य रूप में लिखा गया है। 24 वर्ष की आयु में संन्यास लेकर स्वामी जी ने संपूर्ण देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना की लहर दौड़ाई। देशवासियों को एक सूत्र में जोड़ने के लिए सहज, सरल, प्रभावपूर्ण भाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा के संदर्भ में डॉ. सविता सिंह लिखती है, "संस्कृत के प्रकांड पंडित होते हुए भी भारतीय लोकजीवन को एक सूत्र में जोड़ने और लोक हृदय को स्पष्ट करने के लिए आर्य भाषा को ही

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

आत्मकथा का माध्यम बनाया। उनकी शैली लघु वाक्य की है। संक्षिप्त तथा एवं सपष्टता इस कृति की विशिष्टता है।" 7

राधाचरण गोस्वामी

भारतेंदु युग के प्रमुख गद्य लेखक १९२० ई. में 'राधाचरण गोस्वामी' नाम से आत्म चरित्र लिखा। उन्होंने केवल 12 पृष्ठ लिखे। इस आत्मकथा में उनके व्यक्तिगत जीवन की अभिव्यक्ति की अपेक्षा साहित्य और समाज की चर्चा अधिक है। निजी भावना की जगह राष्ट्र प्रेम की भावना अधिक दिखाई देती है। समाज सुधार दिखाई देता है। इस संदर्भ में डॉ. नारायण शर्मा लिखते हैं, "इस छोटी सी पुस्तिका में 'स्व' पर कम और युगीन प्रवृत्तियों पर ही अपना ध्यान अधिक केंद्रित किया है।" 8

1924 में स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती की 'कल्याण मार्ग का पथिक' आत्मकथा का प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा ने हिंदी आत्मकथा विधा को सशक्त स्वरूप दिया। लेखक ने स्वयं को बड़ी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया। राहुल सांकृत्यायन की 1946 में 'मेरी जीवन यात्रा' नाम की आत्मकथा प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा पांच खंडों में प्रकाशित हुई।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता पूर्व काल में साहित्य अपनी भूमिका निभा रहा था। स्वतंत्रता काल के समय लिखी गई आत्मकथा का अपना अलग महत्व है। स्वतंत्रता पूर्व लिखी आत्मकथा का वर्ण्य विषय अपने स्वयं का विश्लेषण तो रहा ही है पर साथ ही देश प्रेम, क्रांतिकारी संगठन, ब्रिटिश काल में देशवासियों का शोषण आदि रहा है। साहित्यकारों ने अपने 'आत्म' को तटस्थ रूप से परखा है। 19 वीं सदी में आत्मकथा के बीज बोए गए और 20वीं सदी में साहित्यकारों ने इस विधा का महत्व पहचाना। आत्मकथा की विकास यात्रा गतिमान हुई। स्वतंत्रता पूर्व काल में आत्मकथा विधा तत्कालीन समय की आवश्यकता तथा परिवेश को लेकर विकास की ओर अग्रेसर हुई। इस विकास के दौर में कई आत्मकथाकारों ने अपना योगदान दिया। व्यक्तिगत जीवन की अपेक्षा समाज की चर्चा अधिक है। निजी भावना की जगह समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम की भावना अधिक दिखाई देती है। यूगीन प्रवृत्तियों पर आत्मकथाकारों ने अपना ध्यान अधिक केंद्रित किया है। स्वतंत्रता पूर्व की आत्मकथाओं में राजनीतिक परिस्थितियों, समाज और संस्कृति का चित्रण होने से राष्ट्रीय चेतना को उजागर करती है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी आत्मकथाएं उस समय के राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों को दर्शाती है और राष्ट्रीय चेतना को उजागर करती है।

संदर्भ सूची

१. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां,डॉ. शिवकुमार शर्मा, पृष्ठ 209
2. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां,डॉ. शिवकुमार शर्मा, पृष्ठ 355
3. भारत-भारती, वर्तमान खण्ड,मैथिलीशरण गुप्त,पृष्ठ 10
4. पुष्प की अभिलाषा,माखनलाल चतुर्वेदी, काव्यसंग्रह हिमतरंगिणी
5. झांसी की रानी, सुभद्रा कुमारी चौहान, काव्यसंग्रह त्रिधारा

6. हिंदी आत्मकथा, डॉ.नारायण वि.शर्मा, पुस्तक संस्थान, 109/50 ए, नेहरू नगर,कानपुर-208012प्रथम संस्करण, 1978 पृष्ठ 115
7. हिंदी आत्मकथा, डॉ. सविता सिंह, शैलजा प्रकाशन,57-पी, कुंज विहार-2, यशोदा नगर, कानपुर-208011, प्रथम संस्करण 2009 पृष्ठ 62
8. हिंदी आत्मकथा, डॉ.नारायण वि .शर्मा, पुस्तक संस्थान, 109/50 ए, नेहरू नगर ,कानपुर 208012 प्रथम संस्करण, 1978 पृष्ठ 117

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

२९. दिनकर का काव्य और राष्ट्रीय चेतना

प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र
हिंदी विभाग
बळीराम पाटील महाविद्यालय, किनवट
ई-मेल- sheshrao.mane@gamil.com

सारांश:
रामधारी सिंह 'दिनकर ' हिंदी साहित्य के प्रमुख राष्ट्रकवि माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना और देशप्रेम की भावना प्रबल रूप से व्यक्त होती है। दिनकर ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक अन्याय और राष्ट्र के गौरव को अपनी कविता के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति दी है। रश्मिरथी, कुरूक्षेत्र, हिमालय परशुराम की प्रतीक्षा, आदि काव्य रचनाओं के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की भावना, वरीीता और उत्साह का संचार, सामाजिक और राजनीतिक चेतना, भारत का सांस्कृतिक गौरव गान और क्रांति तथा संघर्ष का आव्हान आदि प्रमुख काव्य भावनाओं के द्वारा दिनकर जी हिंदी साहित्य के राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख कवि और देशभक्ति के रूप में आज भी राष्ट्रीयता की चेतना हम भारतवासियों को उकनी कविता देती है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता संग्राम, राजनीतिक चेतना, क्रांति का आव्हान, सांस्कति गौरव, वीरता का संचार

1. प्रस्तावना:

राष्ट्रीय काव्य धारा की परंपरा से होते हुए मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी सुभद्रा कुमारी चौहान, श्याम नारायण पांडे, श्रीकांत त्रिपाठी निराला और रामधारी सिंह दिनकर इन प्रमुख कवियों के कविताओं से निरंतर चली है। इन सभी क्रांतिकारी कवियों के समान ही दिनकर जी ने स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवादी भावनाओं के साथ ही राष्ट्रीय चेतना का संचार अपनी कविताओं के जरिए किया है। इसलिए दिनकर अपने कविताओं के जरिए राष्ट्र[a]ीय चेतना के सर्वाधिक सफल हसताक्षर माने जाते हैं राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता असफलता उत्साह आशा और निराशा के साथ ही देशभक्ति का अलग जुनून उनके कविता में झलकता है। हुंकार, चक्रवाल, कुरूक्षेत्र, उर्वशी, रश्मिरथी, नीम के पत्ते, रेणुका, कर्मवीर और युग धारा आदि मौथ्लक काव्य रचनाएं दिनकर जी की राष्ट्रवादी चेतना को अभिव्यक्त करती है। स्वतंत्रता के पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में कवि दिनकर जी राष्ट्रवादी कवि के रूप में आज भी पहचाने जाते हैं। उनकी राष्ट्रीय चेतना पाठकों को आज भी राष्ट्रीय उत्थान के लिए प्रेरित करती है।

2. दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना:

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

कवि दिनकर जी ने स्वतंत्रता के पूर्व आजादी के आंदोलन में चेतना और देशवासियों के मन में देशभक्ति का जुनून अपनी कविताओं के जरिए बनाने में कामयाब होने वाले क्रांतिकारी कवि थे। इसलिए दिनकर की काव्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख पहलू से उनकी राष्ट्रीय चेतना परिलक्षित होती है।

2.1. स्वतंत्रता संग्राम की भावना:

दिनकर की रचनाएं भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से गहराई से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में अंग्रेजों के अत्याचार और भारतीयों के संघर्ष को उजागार किया। उनकी रचना 'रश्मिरथी ' और 'कुरूक्षेत्र ' में अन्याय के विरूध्द संघर्ष का संदेश मिलता है-

"समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध। "

2.2. सामाजिक और राजनीतिक चेतना:

दिनकर ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और असमानता के विरूद भी आवाज उठाई। उनकी कविताएं जनता को जागरूक करने और सामाजिक परिवर्तन लाने की प्रेरणा देती है। दिनकर मानते थे कि राष्ट्र को भीम अर्जुन जैसे महान वीरों की आवश्यकता है जो की अंग्रेजों के अत्याचारी सत्ता को नष्ट नाबूत कर दे। इसलिए सत्याग्रह महा यज्ञ में आहुति देनेवाले सत्याग्रह प्रेरित करते हुए दिनकर कहते हैं,

"दिशा दीप्ति हो उठी प्राप्त कर पुण्य प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनिल अक्षरों में इतिहास तुम्हारा,
जिस मिट्टी ने लहू पिया वह फूल खिलाएंगे ही,
अंबर पर धन वन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा। "

दिनकर के इन पंक्तियों से सामाजिक और राजकीय चेतना का दर्शन होता है जो आज भी देश और समाज के प्रगति के लिए चेतना का काम करता है।

2.3. वीरता और उत्साह का संचार:

उनकी कविताएं वीर रस से ओत-प्रोत हैं, जो पाठकों में उत्साह और आत्मसम्मान की भावना जाग्रत करती हैं। 'हिमालय ' और 'परशुराम की प्रतीक्षा ' जैसी रचनाएं इस बात का उदाहरण हैं।

"उठो उठो कुरीतियों की राह तुम रोक दो,
बढ़ो बड़ों कि आग में गुलामियों को झोंक दो। "

दिनकर जी स्वतंत्रता संग्राम में घटित घटनाओं को राष्ट्रीय चेतना के रूप में मुखर होते थे। सन 1928 में लाहौर कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित होने पर कवि शब्दों की वीरता और उत्साह का संचार भरते हुए कहते हैं-

"टुकडे दिखा दिखा करते क्यों मृगपति का अपमान?
और मत सत्ता के मतवालों बनाना यूं नादान। "

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

इसके साथ ही कवि दिनकर राष्ट्रीय आंदोलन की पैरवी राष्ट्रीय भावना को वीरता के रूप में करते रहे हैं। 'हिमालय ' नामक रचना में 1931-32 में वरीता एवं उत्साह का संचार राष्ट्रीय भावना के रूप में संचलित हुआ है। अंग्रेजी राज के प्रति असंतोष को दर्शाते हुए कवि दिनकर भारतीय प्राचीन भरत के वीरता एवं शौर्य के दर्शन दर्शाते हुए कहते हैं-

"आहें उठी दीन कृषकों की, मजदूरों की तडप
अरे! गरीबो के लहू पर खडी हुई तेरी दीवारे। "

इन काव्यें पक्तियों से यही परिलक्षित होता है कि दिनकर की कविताओं में वीरता और उत्साह के संचार में राष्ट्रीय भावना का दर्शन स्वाभाविक रूप में होता है।

2.4. भारत की सांस्कृतिक गौरवगाथा:

दिनकर ने भारत की सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक गौरव को भी अपने काव्य में स्थान दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की महानता को रेखांकित करते हुए स्वाभिमान और आत्मगौरव का संदेश दिया। दिनकर जनजीवन में फैले नैराष्य भाव, वेदना और आक्रोश को सांस्कृतिक गौरव गान के रूप में 'हुंकार ' कविता में कहते हैं-

"युग धर्म का हुंकार हुं मैं,
प्रलय गांडीव का टंकर हुं मैं। "

2.5. क्रांति और संघर्ष का आव्हान:

दिनकर के काव्य में क्रांति की पुकार स्पष्ट सुनाई देती है। वे अन्याय और दमन के विरूध्द विद्रोह का आव्हान करते हैं। उनकी पंक्तियां जनमानस को आंदोलित करने वाली रही हैं।

"चीर दासता की जंजीरें, तोड़ गुलामी के बंधन,
जग उठो, हे भारतवंशी, आया नवयुग का रण। "

इतना ही नहीं दिनकर की कविता ऐसी शक्ति है जो अत्याचार शोषण उत्पीड़न के विरोध क्रांति के समान आग उगलती है। सत्ता में मस्त रहने वाले उन राजनेताओं की नींद भी उड़ती है। वे राष्ट्र को वास्तविक रूप में आम जनता को ही मानते थे। देश विरोधी और जन विरोधी बुरी शक्तियों को ललकारते हुए 26 जनवरी 1950 के इस गणतंत्र के शुभ अवसर पर उनके क्रांतिकारी आव्हान कविता के रूप में करते हैं-

"सदियों की ठंडी बुझी आग सुगबुगा उभी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह सम के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सियासन खाली करो कि जनता आती हैं। "

इस आव्हान से दिनकर जी का लोकतांत्रिक मूल्य भी परिलक्षित होता है जो की राष्ट्रीय चेतना के लिए समप्रित राष्ट्रीय मूल्य के रूप में आज समाज को उसकी नितांत आवश्यकता है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

दिनकर ने क्रांति की भावना को जगाने के लिए कुरूक्षेत्र का विशेष स्थान मानकर कुरूक्षेत्र के युध्द के कथानक के द्वारा स्वाभाविक रूप में अभिव्यक्त की है-

"रे रोक युधिष्ठिर को न यहां जाने दे उनको स्वर्ग पुकारे।
पर, किए हमें गाण्डीव-गदा लौटा दे अर्जुन, भीम वीर। "

3) निष्कर्ष:

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना उनके समय की आवश्यकताओं को दर्शाती है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जनमानस को जागरूक किया, स्वतंत्रता संग्राम में जोष भर और स्वतंत्र भारत में सामाजिक नयाय और समरसता की स्थापना की प्रेरणा दी। उनके काव्य में देश प्रेम, आत्मगौरव और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा आज भी जीवंत है।

संदर्भ सूची:

1. दिनकर, कुरूक्षेत्र
2. दिनकर, रश्मिरथी
3. दिनकर, हुंकार
4. दिनकर, चक्रवाल
5. डॉ. पुष्पा ठक्कर, दिनकर काव्य में युग चेतना

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

३० **कवि रामधारी सिंह दिनकरके काव्य मेंराष्ट्रीयचेतना**

डॉ. युवराज राजाराम मुळये

सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख,

श्री सिद्धेश्वर महाविद्यालय माजलगाव जिला बीड महाराष्ट्र ४३११३

ईमेल:- yrmulye2012@gmail.com दूरभाष :- 7588566823 / 9890785810

सारांश :

दिनकर के काव्य में 'राष्ट्र शक्ति' का चित्रण एक महत्वपूर्ण और केंद्रीय तत्व है। उनका मानना था कि राष्ट्र की शक्ति केवल बाहरी शक्ति में नहीं, बल्कि समाज की एकजुटता, संस्कृति, और जनसाधारण की जागरूकता में निहित है।उनकी कविताओं में राष्ट्र की महानता और उसकी शक्ति का संचार होता है। वे अपनी कविताओं में भारत के गौरवशाली अतीत, उसकी संस्कृति और उसकी अनंत क्षमता का चित्रण करते हैं। उनके काव्य में 'राष्ट्र शक्ति' एक प्रेरक शक्ति बनकर उभरती है, जो समाज को जागरूक और संगठित करती है। 'राष्ट्र शक्ति' के रूप में, दिनकर ने काव्य में देशवासियों की आत्मनिर्भरता, संघर्ष और एकता की भावना को प्रमुखता दी। उनका काव्य देशवासियों को यह संदेश देता है कि जब राष्ट्र के लोग एकजुट होते हैं, तो किसी भी बाधा को पार करना संभव है। उन्होंने भारतीय इतिहास में देश की शक्ति को पुनः जागृत किया और उसे एक प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया।दिनकर का काव्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक प्रखर आवाज़ के रूप में उभरा। उनके काव्य में न केवल स्वतंत्रता की आवश्यकता का आह्वान किया गया, बल्कि उन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से संघर्ष, बलिदान और देश के प्रति कर्तव्यों को भी उजागर किया।उनकी कविताएँ स्वतंत्रता संग्राम के नायकों के संघर्षों और बलिदानों का आदान-प्रदान करती हैं, जो उस समय की राष्ट्रीय चेतना को जागरूक करती थीं। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायकों की वीरता और साहस को शब्दों में उतारते थे, और उनके संघर्षों को एक प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत करते थे।दिनकर के काव्य में स्वतंत्रता संग्राम के महत्त्वपूर्ण घटनाओं और आंदोलनों का चित्रण किया गया है। उनका काव्य जनसाधारण को यह संदेश देता था कि स्वतंत्रता केवल एक राजनीतिक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकता है, और इसके लिए संघर्ष आवश्यक है।उनकी कविताएँ आज भी हमें स्वतंत्रता संग्राम के उन वीरों और संघर्षों की याद दिलाती हैं, जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी और जिन्होंने भारतीय जनता को जागरूक किया।

बीज शब्द :-

राष्ट्रीयता,स्वाधीनता, चेतना, क्रांतिकारी,सामाजिक,जागरूकता, राजनीतिक, बदलाव, स्वतंत्रता, समर्पण, अभिव्यक्ति, गौरव, वीरता,,दस्तावेज, जागरूकता,एहसास,प्रतिबिंब, राष्ट्रवाद,मानवता,जनमानस,परिवर्तन परिणाम,अभूतपूर्व,असहयोग,ललकारा,विचारधारा

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

प्रस्तावना :

दिनकर का काव्य भारतीय राष्ट्रीय चेतना का एक अद्वितीय रूप है। उनके साहित्य में राष्ट्रीयता, सामाजिक जागरूकता, और राजनीतिक बदलाव का सशक्त चित्रण मिलता है। उनकी कविताओं में न केवल स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरक स्वर होते हैं, बल्कि वे समाज को एकजुट करने और देश के प्रति समर्पण की भावना को जागृत करने के माध्यम बनती हैं। दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति निहित है।दिनकर का काव्य 'राष्ट्र शक्ति' और राष्ट्रीय संघर्ष को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रस्तुत करता है। उनके शब्दों में देश के गौरव, वीरता, और शक्ति का उत्सव है, जो लोगों को प्रेरित करता है कि वे अपने अधिकारों, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहें।उनकी कविताओं का सामाजिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय चेतना पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज भी उनके साहित्य में हमें भारतीयता की सशक्त भावना और राष्ट्रीय संघर्ष का आदर्श मिलता है, जो हमें अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और समर्पण की प्रेरणा देता है।दिनकर का काव्य न केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, बल्कि यह आज भी हमें अपने राष्ट्र की शक्ति और गौरव को समझने और उस पर गर्व महसूस करने की प्रेरणा देता है।

दिनकर के काव्य ने केवल राष्ट्रीय चेतना को ही नहीं, बल्कि समाज और राजनीति में भी जागरूकता का एक नया आयाम प्रस्तुत किया। उनके काव्य में समाज की विडंबनाओं और राजनीतिक भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष की आवश्यकता को बार-बार उकेरा गया है।वे न केवल स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में बल्कि सामाजिक सुधारों और राजनीतिक जागरूकता के लिए भी अपनी कविताओं में एक स्पष्ट संदेश देते थे। उनकी कविताएँ जनता को यह एहसास दिलाती थीं कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताएँ और भ्रष्टाचार को भी दूर करना आवश्यक है।दिनकर ने काव्य में नागरिकों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया और उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उन्होंने यह दिखाया कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए केवल एकजुटता और जागरूकता ही पर्याप्त नहीं, बल्कि इस दिशा में कार्य करने के लिए सक्रियता भी जरूरी है।उनकी कविताओं में यह संदेश था कि केवल बाहरी संघर्ष ही नहीं, बल्कि आंतरिक जागरूकता और सामाजिक सुधार भी आवश्यक हैं ताकि राष्ट्र का समग्र विकास हो सके।

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर कई कवियों की रचनाओं में दिखाई देते हैं. इनमें माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, भारतेंदु, प्रसाद जैसे कवियों के नाम प्रमुख है।राष्ट्रीय चेतना का विकास एक जटिल और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो किसी भी राष्ट्र के लिए उसके अस्तित्व और प्रगति के लिए आवश्यक है। यह चेतना लोगों में अपने देश, संस्कृति, और इतिहास के प्रति जागरूकता और प्रेम की भावना पैदा करती है। राष्ट्र 'और 'चेतना' दोनोस्वतंत्र शब्द हैं जिसके मेल से एक महान शक्ति उद्भित होकर राष्ट्रीयता ,राष्ट्रीय भावना अथवा राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप धारण करती है। यही भावना साहित्य में स्वर और सुर बनकर फूट पड़ती है और अनंतर प्रवाहित होती रहती है। इससे जनमानस में सामूहिक चेतना का निर्माण होता है। "देश भक्ति का उद्वेलन कभी समर्पण तो कभी आंदोलन का रूप धारण कर लेता है, जिससे

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

व्यक्ति के स्वत्व से लेकर राष्ट्र तथा देश की स्वतंत्रता और समानता की सुरक्षा के लिए सर्वस्व समर्पण तक के भाव समाविष्ट होते हैं।"1

यहां यह जान लेना आवश्यक है कि राष्ट्र सर्वथा आधुनिक संकल्पना नहीं है। इसका संबंध बहुत प्राचीन है। यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। यूं कहें तो यह हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। इसका संस्कृति से अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य भी उसी संस्कृति का एक अंग है । यह परस्पर एक दूसरे में गुथे हुए होते हैं,जिससे जनमानस में राष्ट्रीय चेतना को उत्तेजित तथा सुदृढ़ करने में सहायता मिलती है। इस पुनीत कार्य हेतु साहित्य सदैव अग्रणी की भूमिका में रहा है।राष्ट्रप्रेम अथवा राष्ट्रीय चेतना इस देश में सदैव से रही है, जैसा कि हमें विदित है- कोई भी देश बनता है भौगोलिक क्षेत्र से, उस क्षेत्र में रहने वाली जनता से, उसकी भाषा से, उसकी रहन-सहन तथा संस्कृति से और इन सबका प्रतिबिंब साहित्य में मिलता है ।आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस बात को इस प्रकार स्वीकार किया है कि "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है ।"2

तब यह निश्चित है कि हिंदी साहित्य के प्रत्येक कालखंड में अपने युगबोध के सापेक्ष कवियों ने अपनी कविता में राष्ट्रीयता के स्वर अवश्य दिए होंगे। उन्होंने दिया भी है, क्योंकि राष्ट्रवाद का कोई एक रूप नहीं होता।क्रांतिकारी राष्ट्रवाद, सुधारवादी राष्ट्रवाद, जन राष्ट्रवाद ,पुनरुत्थानवादी राष्ट्रवाद आदि राष्ट्रवाद के विचारधारात्मक प्रकार हैं। इन्हें हम हिंदी साहित्य के आदिकाल ,भक्तिकाल तथा रीतिकालीन साहित्य में पाते हैं ,किंतु राष्ट्रीय चेतना एक प्रवृति के रूप में अपनी पूरी धमक के साथ हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में ही प्रतिष्ठित होती है।

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य की एक प्रमुख विशेषता राष्ट्रीयता रही है ।हिंदी साहित्य का आधुनिक काल पराधीनता तथा स्वतंत्रता का युग है, इसलिए इस कालखंड की कविता में राष्ट्रीयता की चटख कुछ ज्यादा है ।इसकी शुरुआत भारतेंदु युग से होती है। भारतेन्दु तथा भारतेंदु मंडल के कवियों के बाद यह उत्तरोत्तर पुष्पित और पल्लवित होती चली गई। जिसके संवाहको में मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा' नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इन सभी कवियों ने संपूर्ण भारत के प्रति आस्था, अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा, मानवता के प्रति समर्पण, सामंती प्रवृत्ति के प्रति विद्रोह तथा स्वतंत्रता के लिए संकल्प एवं हुंकार भरते रहे हैं। हिंदी साहित्य के इन सब कवियों की अपनी -अपनी विशेषता रही है और सब में परस्पर फर्क भी। इन सब में दिनकर की विशेषता को समझने के लिए इनके अंतर को समझना होगा। आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रथम घोषित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को पुनरुत्थानवादी कवि कहा जाता है। इस मान्यता पर दिनकर जी भी सहमत हैं। राष्ट्रीयता के भीतर एक प्रवृति पुनरुत्थानवादी की रही है। वैसे मैथिलीशरण गुप्त पुनरुत्थान वादी थे ? यह हिंदी आलोचना में विवादास्पद है । वह अपने देश के अतीत गौरव की ओर देखते हैं, वहां जाते हैं तथा पाठकों को पहुंचाते हैं । यह बात सत्य है ,किंतु उनका मुख्य रूप से ध्यान स्वाधीनता का ही रहा है। वह महाभारत और रामायण के

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

साथ इतिहास के किसी दौर की कथा और चरित्र को जब उठाते हैं तो उसको आधुनिक राष्ट्रीयता की दृष्टि से ही देखते और प्रस्तुत करते हैं-

"संदेश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया ।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया" ।।3

'साकेत' की यह पंक्तियां जनमानस में शक्ति का संचार करती हैं।उन्हें उद्वेलित करती हैं। इनकी कृति 'भारत भारती' का तो कहना ही क्या! इस कृति ने इन्हें राष्ट्रकवि के पद पर आसीन करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है-

"सुख दुख में एक सा सब भाइयों का भाग हो ।
अंतः करण में गूंजता राष्ट्रीयता का राग हो।।" 4

मैथिलीशरण गुप्त पर गांधीवाद का जबरदस्त प्रभाव था। रामनरेश त्रिपाठी यद्यपि कभी अतीत में नहीं जाते। वह अपने सामने हुए आंदोलन की घटनाओं को समेटकर अपनी कथा तैयार करते हैं। इस दृष्टि से माखनलाल चतुर्वेदी का कार्य सबसे भिन्न है। यह राष्ट्रीय भावना के ओजस्वी कवि हैं-

"तोड़ लेना वनमाली उस मुझे पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पर जावें वीर अनेक।।" 5

माखनलाल चतुर्वेदी एक तरफ स्वाधीनता हेतु क्रांतिकारी धारा से जुड़े रहे तो दूसरी तरफ उनकी रचनाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन हेतु की गई कुर्बानियों का वर्णन है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन 'भी इसी काव्य चेतना को अंगीकार करते हैं। इसी क्रम मे कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का भी नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। एक रचना तो उनकी ऐसी भी है जिसमें साफ-साफ उनकी क्रांति धर्मिता परिलक्षित होती है- कहा मुझे कविता लिखने को /मैंने लिखा जालियांवाला बाग। इस कविता की बानगी मात्र से ही सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय चेतना का अंदाजा लगाया जा सकता है और यह समझा जा सकता है कि उन्होंने 'झांसी की रानी 'कविता क्यों?और कैसे लिखी है। बहरहाल! इन सभी कवियों से भिन्न महाकवि रामधारी सिंह दिनकर का राष्ट्रीय चेतना का स्वर है।

स्वाधीनता संग्राम में या बीसवीं सदी के आरंभ से ही राष्ट्रीय कांग्रेस और गांधीवाद से भिन्न भी क्रांतिकारी संघर्ष होते रहे हैं ।इसके पीछे शीघ्र से शीघ्र परिणाम हासिल करने का उद्देश्य रहता था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान ब्रिटिश सत्ता को शीघ्र से शीघ्र उखाड़ फेंकने की जो आक्रोश भरी चेतना सक्रिय रही है, वही बीसवीं सदी के तीसरे चक्र में सबसे अधिक संगठित और वैकल्पिक व्यवस्था के बारे में अधिकार संपन्न तथा जागरूक रही है। असहयोग आंदोलन के वापस लिए जाने के बाद युवा पीढ़ी के नवयुवकों में खासकर क्रांतिकारियों में अभूतपूर्व क्षोभ एवं रोष व्याप्त हो गया। इस दौर में पूरे देश में समाजवादी ,मार्क्सवादी तथा क्रांतिकारी गतिविधियां आकर्षण पैदा कर रही थी। भगत सिंह ,चंद्रशेखर आजाद तथा सुभाष चंद्र बोस आदि युवा पीढ़ी के दिलों में बस रहे थे। यही वह दौर है जब दिनकर की राष्ट्रीय चेतना प्रखर रूप ले रही थी-

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

" रे !रोक युधिष्ठिर को न यहां,
जाने दो उनको स्वर्ग धीर
पर फिरा हमें गांडीव गदा,
लौटा दे अर्जुन भीम भीम वीर।।" 6

'हिमालय' कविता की ये पंक्तियां राष्ट्रीय भाव को व्यक्त करने के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। यही वह दौर है जब बिहार प्रांत के सिमरिया गांव के इस सूर्य के ताप को पूरा हिंदुस्तान महसूस करने लगा था। जिसके हुंकार से न जाने कितने वर्षों के सोए इस देश की नींद में खलल पैदा कर उसमें नई शक्ति का संचार पैदा किया। स्वाधीनता के लिए उन्हें ललकारा तथा उनके अंदर की शक्ति को बाहर निकालने का प्रयास किया। उस दौर के हनुमानों के भीतर छिपी शक्ति को बाहर लाने के लिए दिनकर ने अपनी कविता के माध्यम से जामवंत की भूमिका का निर्वहन किया-

" सच है विपत्ति जब आती है ,
कायर को ही दहलाती है ।
है कौन विघ्न ऐसा जग में ,
टिक सके वीर नर के मग में ।
मानव जब जोर लगाता है ,
पत्थर पानी बन जाता है।
बत्ती जो नहीं जलाता है ,
रोशनी नहीं वह पाता है।।" 7

रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। प्रथम श्रेणी की अधिकांश कविताएं राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं। इन कविताओं में क्रांति का उद्घोष है। हृदय के अंदर जल रही धधकती ज्वाला है। दास्तां की पीड़ा है और उसके विरुद्ध विद्रोह की भावना है-

"जातीय वर्ग पर क्रूर प्रहार हुआ है ,
मां के किरीट पर ही यह बार हुआ है।
अब जो सिर पर आ पड़े नहीं डरना है,
जन्मे है तो दो बार नहीं मरता है।।" 8

राष्ट्रवादी विचारधारा की हिंदी कविताओं में वैसी कविता जो मन को आंदोलित कर दे और उसकी गूंज सालों साल तक सुनाई दे, जिसको सुनकर रोए भड़क उठे ,ऐसा बहुत ही कम देखने एवं सुनने को मिलती है। जिन कवियों को यह ख्याल मिलती है जिनको यह यश या लोकप्रियता हासिल है वह कुछ जन कवि होते हैं या राष्ट्र कवि होते हैं। ऐसा कवि जो जन कवि भी हो और राष्ट्र कवि भी हो यह इज्जत बहुत कम कवियों को प्राप्त हो पाती है। रामधारी सिंह दिनकर ऐसे ही कवियों में से एक हैं। जिनकी कविता किसी अनपढ़ किसान को भी उतने ही रुचिकर लगती है जितना कि उन पर शोध कर रहे एक शोधार्थी को लगती है।

निष्कर्ष:-

कवि रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना प्रबल रूप से दिखती है. उनकी रचनाओं में देश और समाज के लिए मर-मिटने की तमन्ना है. दिनकर की कविताएं राष्ट्रीय जागरण और संघर्ष के आह्वान का दस्तावेज़ है।राष्ट्रीय चेतना का विकास एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें सभी नागरिकों को सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए. हमें अपनी संस्कृति, इतिहास और मूल्यों को संरक्षित करना चाहिए और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना चाहिए. हमें सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के लिए भी काम करना चाहिए। दिनकर की कविताएँ केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं थीं, बल्कि वे समाज में जागरूकता फैलाने का एक शक्तिशाली माध्यम थीं। उनकी कविता में न केवल स्वतंत्रता की आवश्यकता का आह्वान था, बल्कि उन विचारों और भावनाओं का भी चित्रण था जो भारतीय जनता को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती थीं।उनकी कविताएँ आंदोलनों और संघर्षों को प्रेरित करती थीं, विशेषकर उन दौरों में जब भारतीय समाज में बोध की आवश्यकता थी। उनका काव्य न केवल विरोध और संघर्ष का प्रतीक था, बल्कि वह एक मार्गदर्शन भी था जो लोगों को अपने भीतर की शक्ति और राष्ट्रीय भावना को पहचानने के लिए प्रेरित करता था।दिनकर ने अपनी कविताओं में संदेश दिया कि जब तक राष्ट्र जागरूक नहीं होता, तब तक उसका विकास नहीं हो सकता। उन्होंने अपने काव्य में देशवासियों को एकजुट होने की प्रेरणा दी और सामाजिक, राजनीतिक बदलाव की दिशा में उनकीऊर्जा का संचार किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. डॉ. सुभाष महाले, 'माखनलाल चतुर्वेदी और वि. दा . सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना',(1997),
चंद्रलोक प्रकाशन ,कानपुर ,पृष्ठ -25
2. आचार्य रामचंद्र-शुक्ल, 'हिंदी साहित्य का इतिहास',(2008), प्रकाशन संस्थान ,नई दिल्ली ,पृष्ठ-21
3.डॉ.देवी शरण रस्तोगी, 'आधुनिक कवि और उनका काव्य',(1983) राजहंस प्रकाशन ,मेरठ ,पृष्ठ सं.-07
4. वही, पृष्ठ सं.-36
5. विश्वनाथ त्रिपाठी, 'हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ',(2000), एन .सी .आर .टी .नई दिल्ली ,पृष्ठ सं. 118
6. रामधारी सिंह दिनकर, 'संचयिता',(2015),भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली पृष्ठ-31
7, रामधारी सिंह दिनकर, 'रश्मिरथी'(2002),लोकभारती प्रकाशन ,इलाहाबाद ,पृष्ठ संख्या -27
8. रामधारी सिंह दिनकर, 'संचयिता',(2015),भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-49

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३१. राष्ट्रीयचेतना के प्रमुख हस्ताक्षर : कवि रामधारी सिंह दिनकर

डॉ. के.बी.गंगणे
प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय माजलगाव जिला बीड महाराष्ट्र ४३११३
ईमेल:- kbgangane@gmail.com दूरभाष :- 9421272898

सारांश :

दिनकर भारतीय काव्य और साहित्य के प्रमुख कवियों में से एक थे, जो न केवल एक श्रेष्ठ कवि थे बल्कि एक महान राष्ट्रीय चिंतक भी थे। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना का प्रकट होना एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो भारतीय समाज के जागरण, स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक चेतना से जुड़ा हुआ है। दिनकर का काव्य राष्ट्र के प्रति प्रेम, सम्मान और उस राष्ट्र के संघर्षों को केंद्र में रखता है। उनकी कविताओं में भारतीय समाज की जागरूकता और एकता की भावना उभरती है, जो उन्हें एक राष्ट्रीय कवि के रूप में पहचान दिलाती है।उनकी कविताएँ एक दौर में भारत के भीतर उभर रही राष्ट्रीय चेतना को प्रेरित करने वाली थीं और आज भी उन काव्य रचनाओं का प्रभाव भारत की राष्ट्रीयता और देशप्रेम के संदर्भ में जीवित है।दिनकर के काव्य ने केवल राष्ट्रीय चेतना को ही नहीं, बल्कि समाज और राजनीति में भी जागरूकता का एक नया आयाम प्रस्तुत किया। उनके काव्य में समाज की विडंबनाओं और राजनीतिक भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष की आवश्यकता को बार-बार उकेरा गया है।वे न केवल स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में बल्कि सामाजिक सुधारों और राजनीतिक जागरूकता के लिए भी अपनी कविताओं में एक स्पष्ट संदेश देते थे। उनकी कविताएँ जनता को यह एहसास दिलाती थीं कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताएँ और भ्रष्टाचार को भी दूर करना आवश्यक है।दिनकर ने काव्य में नागरिकों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया और उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उन्होंने यह दिखाया कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए केवल एकजुटता और जागरूकता ही पर्याप्त नहीं, बल्कि इस दिशा में कार्य करने के लिए सक्रियता भी जरूरी है।

बीज शब्द :-

वीर,ओज,शौर्य, धमनियों, अपमान, करुणा, मानवता, सहानुभूति, विश्वकल्याण, चापलूसी, स्वाभिमान, मनुष्यता, राष्ट्रीयता, इस्तीफा, खिताब, राष्ट्रवादी, कलात्मक, प्रतिनिधि, राजनीतिक, तेजस्वी, पहचान, आक्रमण, मुकाबला, मोहभंग

प्रस्तावना :-

राष्ट्रकवि दिनकर की चेतना महान है, वे संवेदनाओं एवं संचेतनाओं के साहित्यकार हैं। भारतीय संस्कृति और अस्मिता की जमीन से जुड़े साहित्यकार हैं, दिनकर जी। उनके काव्य ने समय-समय पर

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भारतीय युग चेतना को राष्ट्र की अस्मिता क प्रति उद्वेलित किया है। मन मानस को राष्ट्रीयता से आपूरित किया है। एतदर्थ राष्ट्रकवि दिनकर का काव्य प्रासंकितापूर्ण है और यह प्रासंगिकता युग-युग का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए राष्ट्रकवि दिनकर हिन्दी साहित्य-संसार में अमर है उनका काव्य भारतीय संस्कृति-भारतीयता से परिचित कराता है उनकी दृष्टि में भारत एक भू-खण्ड मात्र नहीं है। एक विचारधारा है जो भारतीयता से अंगीकृत है। कवि अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है। किसी भी कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में युग प्रतिबिम्बित होता है। स्वयं कवि ने स्वीकार किया है -'कवि मानवता का वह चेतन यंत्र है जिस पर प्रत्येक भावना अपनी तरंग उत्पन्न करती है। जैसे भूकम्प मापक यंत्र से पृथ्वी के अंग में कहीं भी उठने वाली सिहरन आप से आप अंकित हो जाती है।'

दिनकर 'वीर ' ,'ओज' और 'शौर्य 'के कवि हैं। सोई हुई धमनियों में भी रक्त का संचार कराने की सामर्थ्य इनकी कविता में निहित है। दास्ता और अपमान से रोज घुट-घुट कर मरने से बेहतर है अपनी शान के लिए लड़ते हुए राष्ट्र की पुण्य बलिवेदी पर एक दिन शहीद हो जाना। दिनकर की कलम इन्हीं की जय बोलती है। ओज-उत्साह के साथ- साथ दिनकर में अपने देश के प्रति अपार करुणा भी है तभी तो वह पीड़ित मानवता और दलित समाज के भूखे ,नंगे ,गरीब लोगों के प्रति दिनकर की सहानुभूति सहज ही फूट पड़ती है -

"श्वानों को मिलता दूध वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते हैं ।
मां की हड्डी से चिपक ,
ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं।।" 1

दिनकर की द्वितीय श्रेणी की कविताओं में विश्व कल्याण की महती भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है। वास्तव में देखा जाए तो ऐसी ही कविताएं दिनकर को देश काल की सीमा से मुक्त कर उन्हें विश्वव्यापी ख्यात दिलाती हैं। यह कविताएं विश्वकल्याण की पोशाक हैं। इन कविताओं ने कवि विश्वक्रान्ति द्वारा शांति चाहता है। विश्व की विषम परिस्थितियां दिनकर को उसी प्रकार बेचैन करती हैं जिस प्रकार देश की विषम परिस्थितियां चैन नहीं लेने देती। जिन लोगों ने यह आरोप लगाया कि दिनकर युद्ध के कवि हैं शायद उन्हीं लोगों के जवाब में यह कविताएं लिखी गई हैं। युद्ध विश्व की तथा मानवता की बड़ी समस्या है। यह एक अभिशाप है। दिनकर भी युद्ध के पक्ष में कभी नहीं थे-

"आशा की प्रदीप को जलाए चलो धर्मराज,
एक दिन होगी भूमि रणभीति से।
याधर्म का दीपक ,दया का दीप
कब जलेगा, कब जलेगा, विश्व में भगवान।" 2

दिनकर की कविता का मूल लक्ष्य मानवतावादी है। यह मानव को आत्म सम्मान के साथ जीने का तथा स्वाभिमान के साथ स्वतंत्र रहने की वकालत करती है। रामधारी सिंह दिनकर ने सहज रूप में युद्ध को

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

मनुष्य के लिए हितकर नहीं माना है । विश्व बंधुत्व के लिए युद्ध घातक है। इससे सिर्फ और सिर्फ मनुष्यता की हत्या होती है। इससे मानवीय भावनाओ की हत्या होती है-

" भाई पर भाई टूटेंगे ,विष वाण बूंद से छूटेंगे ,
वापस श्रृंगाल सुख लूटेंगे ,सौभाग्य मनुज के फूटेंगे।।" 3

यह बात आज के समय में भी चरितार्थ होती महसूस होती है। युद्ध तो प्राय: पड़ोसी देशों के बीच ही हुआ करते हैं। इसमें हथियारों का कारोबार करने वाले श्रृंगार ही सुख लूटते हैं। किन्तु दिनकर उस वक्त युद्ध के पक्ष में भी खड़े होते हैं जब इसके अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं हो। अन्याय के विरुद्ध निर्भयता के लिए यह आवश्यक है-

" छिनता हो स्वत्व कोई और तुम त्याग तप से काम ले ,यह पाप है ।
पुण्य है बिछिन्न कर देना उसे ,बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।।" 4

'कुरुक्षेत्र 'की यह पंक्तियां गुलामी और अन्याय का प्रतिकार करती हैं। देशवासियों में पुनः स्वाभिमान का संचार करती हैं। उनमें राष्ट्र के लिए मर मिटने का जज्बा पैदा करती हैं। दिनकर की कविता में ही सिर्फ राष्ट्रीयता के स्वर नहीं मिलते बल्कि उनका जीवन भी राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत हैं। बचपन से ही दिनकर में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी पड़ी थी। पढ़ाई के दिनों में उन्होंने स्वयं अंग्रेजी स्कूल से अपना नाम कटवा लिया था। जवानी के दिनों में जब घर तंगी के हालात से गुजर रहा था उस वक्त उन्होंने सामंती व्यवस्था के विरोध में सरकारी स्कूल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। सत्ता और देशप्रेम में हमेशा उन्होंने देश के साथ खड़ा होना पसंद किया। इसी कारण वह सड़क से संसद तक तथा जन-जन से जनपद तक बड़े चाव से पढ़े ,सुने और गुने जाते हैं।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रकवि का खिताब सिर्फ दो ही कवियों को प्राप्त है। प्रथम मैथिलीशरण गुप्त को तथा द्वितीय रामधारी सिंह दिनकर को। दोनों कवियों के रचना और मिजाज में अंतर है। राष्ट्रवादी चेतना की जो काव्य परंपरा चली आ रही थी उसे और तीव्र एवं प्रखर बनाने का कार्य रामधारी सिंह दिनकर ने ही किया। उन्होंने आरंभ से ही ओज और तेज से परिपूर्ण कविताएं लिखी। अपने को 'डिप्टी राष्ट्रकवि 'मानने वाली रामधारी सिंह दिनकर ने सर्वप्रथम गुप्त जी की रचना 'जयद्रथ वध 'के अनुकरण पर' प्रणभंग' काव्य की रचना की। उसके बाद बहुचर्चित राष्ट्रवादी चेतना को पोषित करने वाली हुंकार, रेणुका ,सामधेनी, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, पशुराम की प्रतीक्षा आदि रचनाए प्रकाशित हुई। जिसमें दिनकर ने आर्थिक ,सामाजिक और धार्मिक समस्याओं की अपेक्षा देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति एवं विद्रोह का सिंहनाद करते हुए जन जागरण के भावना को ही सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है। जिन रचनाओं का प्रकाशन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हुआ ;उनमें भी राज्यसभा सांसद होते हुए भी देश में व्याप्त राजनीतिक दुर्बलता एवं समस्याओं पर अपने विचार खुलकर प्रकट किए हैं। दिनकर की जब भी बात होती है तो लोग वह संस्मरण अवश्य सुनाते हैं कि जब एक बार किसी कार्यक्रम में नेहरू जी शिरकत करने मंच पर चढ़ रहे थे तो अचानक उनका पैर

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

लड़खड़ा गया और दिनकर जी ने उन्हें संभाल लिया। इसके उपरांत जब नेहरू जी ने कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहा तो दिनकर जी ने नेहरू जी से कहा 'इसमें कृतज्ञता वाली कोई बात नहीं है हमारे देश का इतिहास रहा है कि जब जब राजनीत लड़खडाती है तो साहित्य उसे सहारा देता है '।दिन कर का यह जवाब उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है ।यह जब तक रहे ,जहां रहे राष्ट्र और कलम के साथ रहे।

किसी भी देश का सच्चा राष्ट्रकवि कौन हो सकता है? इस पर गेटे की स्थापना बहुत महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार राष्ट्रकवि उसे कहना चाहिए "जिसने अपने जाति के इतिहास के सभी प्रमुख घटनाओं के पारस्परिक संबंध का संधान पा लिया है । जिसे यह ज्ञात हो चुका है कि उसके जाति इतिहास में कौन-कौन सी बड़ी घटनाएं घटी है। उसके परिणाम क्या निकले हैं? राष्ट्रकवि की एक पहचान यह भी है कि उसे अपने देशवासियों के भीतर निहित महत्ता का ज्ञात होता है। अपनी जाति की गहरी अनुभूतियों से परिचित होता है। उसे इस बात का पता होता है कि उसकी जात की कर्मठता का प्रेरक स्रोत क्या है। राष्ट्रकवि का एक लक्षण यह भी है कि उसकी जाति जिस उमंग से चालित होकर संपूर्ण इतिहास में काम करती आई है उसे वह कलात्मक ढंग से व्यक्त करें। राष्ट्र कवि केवल वह कवि हो सकता है जिसकी रचना में जाति अपनी आत्मा की प्रति छाया देखती हो। जिसमें उस जाति के बाहुबल का आख्यान हो। उसके विचारों की ज्योति और भावनाओं का गुंजन विद्यमान हो। और कोरे कवि जातीय कवि होने का दावा कर भी नहीं सकते जातीय कवि तो वे ही लोग होते हैं जिनमें कल्पना के साथ कर्मठता को भी प्रेरित करने की शक्ति हो। जो केवल अतीत की आराधना नहीं करके अपने व्यक्तित्व के जोर से भविष्य को भी प्रभावित करता है।

राष्ट्रकवि वह वैनतेय (गरूड़) है जो बहुत ऊंचाई पर उड़ता है। जिसकी एक पाख तो अतीत को समेटे रहती है किंतु जो अपने दूसरी पाख से भविष्य की ओर संकेत करता है। राष्ट्रकवि उसे कहना चाहिए जो अपने देश के प्रत्येक संस्कृति को अपने में समा लेता है। जो देश के प्रत्येक वर्ग का अपने को प्रतिनिधि समझता है। और सभी संप्रदायों के बीच जो देशगत एक्य है उसे मुखर बनाता है।" 5

"ऊंच-नीच का भेद न माने वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया धर्म जिसमें हो सबसे वही पूज्य प्राणी है ।।
तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला कर,
पाते हैं जग से प्रशस्ति अपना कर्तव्य दिखला कर।।" 6

उक्त बातें रामधारी सिंह दिनकर की रचनाओं पर अक्षरश: फिट बैठती है। इन सब का सांगोपांग निर्वहन दिनकर की कविताओं में हुआ है। इनके यहाँ भारतीय संस्कृति, आत्म गौरव एवं पराक्रम के संगम का अद्‌भुत उदाहरण मिलता है।दिनकर की एक बड़ी विशेषता उनकी राजनीतिक चेतना है। देश स्वतंत्र होने के बाद जो कुछ भी चीजें धुधली थी वह सब सब साफ हो गई। सड़क से लेकर संसद तक की पहुंच ने दिनकर को वह मौका दिया जिससे वह शासन और सत्ता के बीच रहकर उसकी कमियों एवं आम जनता के शोषण के केंद्रों को ठीक ढंग से पहचान सकें। उनसे सवाल-जवाब कर सके। उन्हें आईना दिखा सके-

"अत्याचार सहन करने का कुफल यही होता है,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

पौरूष का आतंक मनुज कोमल होकर खोता है।।
क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो
उसको क्या जो दंत हीन विष रहित विनीत सरल हो।" 7

चीनी आक्रमण एवं आजादी के बाद देश ने जितनी भी आपदाएं झेला दिनकर उसके साक्षी थे। उस हर आपदा से कवि ने मुठभेड़ किया। हाथ पर हाथ रखकर बैठने से कुछ नहीं होगा जिसका जो सामर्थ्य है वह उसके साथ आपदा से मुकाबला करने सामने आएं। सत्ता में रहते हुए सत्ता को चुनौती देना आसान बात नहीं थी। सत्ता को आइना दिखाना, उसे गलत ठहराना बहुत जोखिम का काम था। आज सत्ता प्रमुख है ,शासन प्रमुख है और देश बाद में है। लोग जी हुजूरी करने में, चापलूसी करने में अपनी पूरी कूबत खपा देते हैं। दिनकर ठीक इसके विपरीत थे। वह सच को सच कहने का साहस रखते थे। दिनकर जिस बात को कह देते थे आज कोई नहीं कह सकता ।वह कांग्रेस के सांसद होते हुए भी नेहरू जी से बहस कर लेते थे और उन्हें चुनौती दे देते थे। हमारे इतिहास और सांसद की गरिमा का प्रतीक बनने वाली दास्तान है। जब चीनी आक्रमण के समय नेहरू की ढीली रवैया को देखकर रामधारी सिंह दिनकर ने उन्हें एक तरह से ललकारते हुए कहा कि-

" समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध ,
जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध।।" 8

दिनकर सत्ता में रहते हुए सत्ता से जवाब तलब करने वाले सांसद थे। जब उनका कांग्रेस से मोहभंग हो गया तो उन्होंने सत्ता बदल देने का भी आह्वान किया-

" दो राह !समय के रथ को
पहिए का घर घर नाद सुनो।
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।।" 9

सत्ता और सम्मान का लोभ दिनकर में नहीं था। वह एक निर्भीक एवं स्वतंत्र चेतना के कवि थे। वह नेहरू जी का बहुत सम्मान करते थे किंतु उनके लिए सब रिश्तो से बड़ा रिश्ता राष्ट्र का था। उन्होंने उन सभी राजनीतिज्ञों का सम्मान किया जिनके अंदर राष्ट्रप्रेम की भावना थी। जिनके अंदर समाज के लिए कुछ करने की ललक थी। उन सभी पर दिनकर ने कविताएं भी लिखी है। चाहे वह गांधी हो ,नेहरू हो, लोहिया हो या जयप्रकाश हो।

निष्कर्ष:-

दिनकर का काव्य राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे न केवल एक कवि थे, बल्कि भारतीय समाज के सुधारक और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति समर्पित थे। उनका साहित्य स्वतंत्रता संग्राम के गहरे मुद्दों, संघर्षों और देश की एकता को प्रस्तुत और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति करता है।दिनकर ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीयता का आदान-प्रदान किया और भारतीय समाज को उनके राष्ट्रीय कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनके काव्य में प्रेरक और

उत्तेजक भाषा का प्रयोग होता था, जो जनता को एकजुट करने और स्वतंत्रता के प्रति समर्पण का संदेश देता था।उनकी कविताएँ ना केवल उनके समय की आवश्यकता थीं, बल्कि उनकी लेखनी ने देशवासियों को एक सशक्त और जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय संघर्ष के स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई देते हैं, जिनका प्रभाव स्वतंत्रता संग्राम के दौरान था और आज भी राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. आधुनिक काव्य, संपादक -हिंदी विभाग,काशीहिंदूविश्वविद्यालय(2011),विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, पृष्ठ संख्या -145
2. रामधारी सिंह दिनकर, 'संचयिता',(2015),भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली पृष्ठ संख्या-95
3. वही, पृष्ठ संख्या-100
4.वही, पृष्ठ संख्या-27
5. रामधारी सिंह दिनकर,'उर्वशी'(2001)लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद पृष्ठ 134
6. रामधारी सिंह दिनकर,'रश्मिरथी' (2002)लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या -09
7. रामधारी सिंहदिनकर,'संचयिता',(2015),भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली पृष्ठ संख्या-09
8. वही, पृष्ठ संख्या-101
9. वही, पृष्ठ संख्या-133

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३२. आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

प्रा. डॉ. शहाजी बाला चव्हाण
अध्यक्ष हिंदी विभाग, शोध निर्देशक
डॉ बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय, लातूर जि लातूर
Mail: shahajichavan1969@gmail.com 9422639967

शोध सारांश
आदिवासी साहित्य भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें आदिवासी समुदायों की जीवनशैली, परंपराएँ, संघर्ष और राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त किया जाता है। यह साहित्य केवल उनके सांस्कृतिक अस्तित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके ऐतिहासिक विद्रोह, स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी, शोषण के खिलाफ संघर्ष और आधुनिक काल में उनकी पहचान की रक्षा करने की चेतना को भी दर्शाता है। ब्रिटिश शासन के दौरान आदिवासियों ने कई विद्रोह किए, जैसे संथाल विद्रोह, कोल विद्रोह और बिरसा मुंडा का आंदोलन, जो राष्ट्रीय चेतना के स्पष्ट उदाहरण हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी आदिवासी नायकों ने अपनी अहम भूमिका निभाई। यह चेतना लोकगीतों, कहानियों और साहित्य में जीवंत बनी रही।
स्वतंत्रता के बाद आदिवासी साहित्य ने उनके भूमि अधिकार, विस्थापन, शोषण और शिक्षा से जुड़े मुद्दों को उठाया। महाश्वेता देवी, लक्ष्मण गायकवाड़, नरेश मीणा जैसे लेखकों ने आदिवासी समाज की समस्याओं को उजागर किया। समकालीन आदिवासी साहित्य राष्ट्रीय चेतना को नई दिशा दे रहा है, जहाँ आदिवासी समाज अपनी भाषा, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्षरत है। इस शोध में आदिवासी साहित्य के ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों को विश्लेषित किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह साहित्य केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का एक सशक्त माध्यम भी है।

बिजशब्द:आदिवासी साहित्य, राष्ट्रीय चेतना, बिरसा मुंडा, स्वतंत्रता संग्राम, आदिवासी विद्रोह, सामाजिक न्याय, शोषण, शिक्षा, आदिवासी भाषा, आदिवासी संघर्ष, आधुनिक आदिवासी साहित्य

परिचय
आदिवासी साहित्य भारतीय साहित्य का एक अभिन्न और महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो आदिवासी समुदायों के जीवन, संस्कृति, संघर्ष और उनकी राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त करता है। यह साहित्य केवल आदिवासी समाज की परंपराओं और उनकी सांस्कृतिक विशिष्टताओं को नहीं दर्शाता, बल्कि उनके अधिकारों, शोषण के विरुद्ध संघर्ष और सामाजिक न्याय की माँग को भी सामने लाता है। आदिवासी समुदाय सदियों से भारत की सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा रहे हैं, लेकिन मुख्यधारा की राजनीति और साहित्य में उनकी उपेक्षा की

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

गई। इसलिए, आदिवासी साहित्य एक आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम बनकर उभरा है, जिसमें उनकी समस्याएँ, आशाएँ और संघर्षों की झलक मिलती है।

आदिवासी साहित्य का स्वरूप मुख्य रूप से मौखिक परंपराओं से जुड़ा हुआ है। यह लोकगीतों, लोककथाओं, पहेलियों, मिथकों और ऐतिहासिक कथाओं के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित और संचारित होता आया है। आधुनिक काल में यह साहित्य लिखित रूप में भी समृद्ध हुआ है, जिससे यह व्यापक स्तर पर पढ़ा और समझा जाने लगा है। आदिवासी समाज का राष्ट्रीय चेतना से जुड़ाव केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं है, बल्कि वे अपनी पहचान, अधिकारों और अस्तित्व की रक्षा के लिए आज भी संघर्ष कर रहे हैं।

ब्रिटिश शासन के दौरान आदिवासी समुदायों ने विभिन्न विद्रोह किए, जैसे संथाल विद्रोह (1855), कोल विद्रोह (1831), भील विद्रोह और बिरसा मुंडा का आंदोलन (1899-1900)। इन आंदोलनों ने आदिवासियों के भीतर राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया और उन्हें अन्याय के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा दी। इन संघर्षों की गाथाएँ आज भी उनके लोकसाहित्य और गीतों में जीवंत हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी आदिवासी समाज को अपनी जमीन, अधिकारों और अस्तित्व के लिए लड़ना पड़ा। विस्थापन, जंगलों पर अधिकार, शिक्षा की कमी और सामाजिक भेदभाव जैसे मुद्दे आज भी उनके साहित्य का महत्वपूर्ण विषय हैं।

आधुनिक आदिवासी साहित्य में महाश्वेता देवी, लक्ष्मण गायकवाड़, नरेश मीणा, और वंदना टेटे जैसे लेखकों ने आदिवासी समाज के संघर्षों को केंद्र में रखा है। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों और आत्मकथाओं के माध्यम से आदिवासी जीवन के यथार्थ को उजागर किया है। समकालीन आदिवासी साहित्य राष्ट्रीय चेतना को और अधिक सशक्त कर रहा है, जहाँ आदिवासी समाज अपने अधिकारों और पहचान की रक्षा के लिए साहित्य के माध्यम से जागरूकता फैला रहा है।अतः, आदिवासी साहित्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का एक सशक्त माध्यम भी है, जो आदिवासियों के ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों को उजागर करता है।

आदिवासी साहित्य की परिभाषा एवं विशेषताएँ

परिभाषा

आदिवासी साहित्य वह साहित्य है, जो आदिवासी समुदायों के जीवन, संस्कृति, संघर्ष, परंपराओं और सामाजिक अनुभवों को अभिव्यक्त करता है। यह साहित्य आदिवासियों की मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति का समन्वय है, जिसमें उनकी लोककथाएँ, लोकगीत, कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, आत्मकथाएँ और उपन्यास शामिल हैं। यह केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि आदिवासी समाज की अस्मिता, संघर्ष और उनकी राष्ट्रीय चेतना का प्रतिबिंब भी है।

आदिवासी साहित्य की उत्पत्ति मूल रूप से मौखिक परंपरा से हुई, जिसमें उनके पूर्वजों की गाथाएँ, धार्मिक मान्यताएँ, प्रकृति के प्रति उनकी गहरी आस्था, सामाजिक रीति-रिवाज और ऐतिहासिक संघर्षों को समाहित

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

किया गया। आधुनिक काल में, जब आदिवासी लेखक मुख्यधारा के साहित्यिक परिदृश्य में आए, तब इस साहित्य ने नए आयाम प्राप्त किए और आदिवासी समुदाय की पीड़ा, शोषण और संघर्ष को उजागर किया। आदिवासी साहित्य सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय चेतना और आत्म-सम्मान की भावना को विकसित करने का कार्य करता है। यह साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आदिवासी समाज की आवाज़ बनकर उनके अधिकारों और अस्तित्व की लड़ाई को भी दर्शाता है।

आदिवासी साहित्य की विशेषताएँ

आदिवासी साहित्य की अपनी अनूठी पहचान और विशेषताएँ हैं, जो इसे अन्य साहित्यिक धाराओं से अलग बनाती हैं। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. मौखिक परंपरा और लोक साहित्य

आदिवासी साहित्य मुख्यतः मौखिक परंपरा पर आधारित रहा है। पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान, अनुभव और मान्यताओं का संचार लोककथाओं, लोकगीतों, पहेलियों और गाथाओं के माध्यम से किया गया है। लोक साहित्य में नायकत्व, वीरता, प्रकृति प्रेम और संघर्ष की झलक मिलती है।

उदाहरणस्वरूप,

- संथाल लोकगीतोंमें उनके संघर्ष और साहस की गाथाएँ मिलती हैं।
- भील और गोंड समुदायोंकी लोककथाओं में उनके देवी-देवताओं, पुरखों और वीर नायकों का वर्णन किया गया है।

2. प्रकृति प्रेम और पर्यावरण चेतना

आदिवासी साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण का विशेष स्थान है। आदिवासी समुदाय जंगल, नदियों, पहाड़ों और जीव-जंतुओं को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं। उनकी कथाएँ और कविताएँ प्रकृति के प्रति सम्मान और उसे संरक्षित करने की भावना को दर्शाती हैं।

महाश्वेता देवी के साहित्य में यह चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जहाँ आदिवासी समुदाय अपने जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं।

3. संघर्ष और प्रतिरोध का स्वर

आदिवासी साहित्य में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष और बाहरी शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध प्रमुख रूप से देखा जाता है। औपनिवेशिक काल में आदिवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ कई विद्रोह किए, जिनकी कहानियाँ उनके साहित्य का हिस्सा बनीं।

- बिरसा मुंडा का आंदोलन (1899-1900)
- संथाल विद्रोह (1855-56)
- कोल विद्रोह (1831-32)

इन संघर्षों को आदिवासी साहित्य में प्रमुख स्थान दिया गया है।

4. सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय चेतना

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

आदिवासी साहित्य केवल सांस्कृतिक कहानियाँ नहीं कहता, बल्कि यह सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय चेतना की भावना को भी प्रकट करता है। आदिवासी समुदाय लंबे समय से शोषण, अन्याय और भेदभाव का शिकार रहे हैं। उनके साहित्य में यह पीड़ा और उसके विरुद्ध संघर्ष की भावना स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

· लक्ष्मण गायकवाड़ की आत्मकथा 'उचक्का' में आदिवासी जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों का चित्रण मिलता है।

· महाश्वेता देवी का उपन्यास 'अरण्यर अधिकार' आदिवासी अधिकारों और उनके संघर्षों पर केंद्रित है।

5. सामूहिकता और समुदाय आधारित सोच

आदिवासी साहित्य में व्यक्तिगत संघर्ष से अधिक सामूहिक संघर्ष को प्राथमिकता दी जाती है। उनका समाज सामूहिकता पर आधारित है, जहाँ व्यक्ति का अस्तित्व समुदाय के साथ जुड़ा होता है। उनकी कहानियों और कविताओं में पूरे समुदाय की भावना, परंपराएँ और समस्याएँ परिलक्षित होती हैं।

6. भाषा और शैली की मौलिकता

आदिवासी साहित्य की भाषा में मौलिकता और सरलता पाई जाती है। इसमें उनकी अपनी भाषाओं (संथाली, गोंडी, भीली, कुरीख, हो, आदि) का प्रभाव देखा जा सकता है। यह साहित्य सीधे और भावनात्मक रूप से पाठकों को जोड़ता है।

उदाहरण के लिए,

· नरेश मीणाने राजस्थान के मीणा आदिवासी समाज की भाषा और संस्कृति को अपने साहित्य में जीवंत किया है।

· वंदना टेटेने झारखंड के आदिवासी समाज की भाषा और उनकी समस्याओं को साहित्य में प्रस्तुत किया है।

7. ऐतिहासिकता और यथार्थवाद

आदिवासी साहित्य केवल कल्पना पर आधारित नहीं होता, बल्कि यह ऐतिहासिक घटनाओं, संघर्षों और सामाजिक वास्तविकताओं का यथार्थवादी चित्रण करता है। इसमें आदिवासी जीवन के कटु सत्य, विस्थापन, गरीबी, शोषण और अन्याय को दर्शाया जाता है।

महाश्वेता देवी, नरेश मीणा, और रमणिका गुप्ता जैसे लेखकों ने आदिवासी समाज की यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत की है।

8. नारी चेतना और लैंगिक समानता

आदिवासी समाज में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उनके साहित्य में नारी सशक्तिकरण और लैंगिक समानता की झलक मिलती है। आदिवासी महिलाओं की आत्मनिर्भरता, संघर्ष और अधिकारों की माँग इस साहित्य का एक प्रमुख विषय है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

- महाश्वेता देवी की कहानी 'द्रौपदी' में आदिवासी महिला के संघर्ष को दर्शाया गया है।
- वंदना टेटे और जयश्री ओडजैसी लेखिकाएँ आदिवासी नारी चेतना को प्रमुखता से उठातीहैं।

आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास

आदिवासी साहित्य केवल कला या अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना के विकास का एक प्रभावी उपकरण भी है। यह साहित्य आदिवासी समाज के संघर्ष, उनकी सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक शोषण और अधिकारों की लड़ाई को उजागर करता है। भारत के आदिवासी समुदायों ने अपने अस्तित्व की रक्षा और सामाजिक न्याय के लिए ऐतिहासिक रूप से संघर्ष किया है, और यह चेतना उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

1. औपनिवेशिक युग और राष्ट्रीय चेतना

ब्रिटिश शासन के दौरान आदिवासियों ने अपने अधिकारों और संस्कृति की रक्षा के लिए कई विद्रोह किए, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

- संथाल विद्रोह (1855-56)
- कोल विद्रोह (1831-32)
- भील विद्रोह
- बिरसा मुंडा का आंदोलन (1899-1900)

इन आंदोलनों ने न केवल आदिवासी समाज में स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की चेतना विकसित की, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को भी बल प्रदान किया। आदिवासी साहित्य में इन संघर्षों का वर्णन लोकगीतों, कहानियों और किंवदंतियों के माध्यम से मिलता है।

2. स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासी साहित्य

भारत की स्वतंत्रता के दौरान और उसके बाद आदिवासी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का और अधिक विकास हुआ। आदिवासियों को केवल अपनी भूमि और अधिकारों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश की स्वतंत्रता और समृद्धि के लिए भी संघर्ष करना पड़ा। महाश्वेता देवी, लक्ष्मण गायकवाड़, वंदना टेटे और रमणिका गुप्ता जैसे लेखकों ने अपने साहित्य में आदिवासी संघर्षों को प्रमुखता से उठाया।

महाश्वेता देवी का उपन्यास 'अरण्यर अधिकार' आदिवासी समुदायों के अधिकारों और उनके संघर्षों को रेखांकित करता है। इस प्रकार का साहित्य आदिवासी समाज में जागरूकता लाने और उन्हें राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने में सहायक रहा है।

3. समकालीन आदिवासी साहित्य और राष्ट्रीय चेतना

आधुनिक युग में आदिवासी समुदायों को विस्थापन, शोषण, बेरोजगारी, शिक्षा की कमी और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन मुद्दों को आदिवासी साहित्य में प्रमुखता दी गई

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

है। आज का आदिवासी साहित्य राष्ट्रीय चेतना को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है, जहाँ आदिवासी समाज अपनी भाषा, संस्कृति और अधिकारों के लिए जागरूक हो रहा है।

आदिवासी साहित्य राष्ट्रीय चेतना को केवल राजनीतिक स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी विकसित कर रहा है। यह साहित्य आदिवासी समाज की पहचान और अस्मिता को संरक्षित करने के साथ-साथ पूरे राष्ट्र की सामाजिक समरसता और न्याय की भावना को भी सशक्त बना रहा है।

राष्ट्रीय चेतना और आदिवासी साहित्य का भविष्य

आदिवासी साहित्य केवल एक साहित्यिक धारा नहीं, बल्कि एक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन भी है, जो आदिवासी समुदायों की अस्मिता, उनके संघर्षों और राष्ट्रीय चेतना के विकास को दर्शाता है। यह साहित्य केवल अतीत की घटनाओं का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह वर्तमान समस्याओं और भविष्य की संभावनाओं पर भी केंद्रित है। जैसे-जैसे समाज और राजनीति विकसित हो रही है, वैसे-वैसे आदिवासी साहित्य भी नए विषयों, नई शैली और नए दृष्टिकोणों के साथ आगे बढ़ रहा है।

1. राष्ट्रीय चेतना और आदिवासी साहित्य का आपसी संबंध

राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य उस जागरूकता से है, जो किसी समुदाय या व्यक्ति को अपने अधिकारों, पहचान और सामाजिक दायित्वों के प्रति सचेत करती है। आदिवासी साहित्य ने इस चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

· इतिहास से सबक:संथाल विद्रोह, कोल विद्रोह, भील विद्रोह और बिरसा मुंडा का आंदोलन केवल ऐतिहासिक घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि ये आदिवासी समुदायों के आत्म-सम्मान और संघर्ष की प्रतीक भी हैं।

· स्वतंत्रता संग्राम के बाद:स्वतंत्रता के बाद भी आदिवासी समुदायों को हाशिए पर रखा गया, जिसके कारण उनका साहित्य अन्याय, शोषण और विस्थापन के खिलाफ आवाज़ उठाने का माध्यम बना।

· आधुनिक समस्याएँ और साहित्य:आज के आदिवासी साहित्य में भूमि अधिग्रहण, औद्योगीकरण, जल-जंगल-जमीन के अधिकार, शिक्षा और सांस्कृतिक पहचान जैसे विषय प्रमुख हो गए हैं।

2. आदिवासी साहित्य के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ

आदिवासी साहित्य को मुख्यधारा के साहित्य में समुचित स्थान नहीं मिल पाया है। इसके विकास में कई बाधाएँ हैं:

· भाषा और लिपि की समस्या:अधिकांश आदिवासी भाषाओं की अपनी लिपि नहीं है, जिससे लिखित साहित्य सीमित हो जाता है।

· शिक्षा की कमी:आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम होने के कारण पढ़ने-लिखने की परंपरा विकसित नहीं हो पाई है।

· मुख्यधारा से दूर रहना:मुख्यधारा की साहित्यिक और मीडिया संस्थाएँ आदिवासी साहित्य को उतना महत्व नहीं देतीं, जिससे इसका प्रचार-प्रसार सीमित रह जाता है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

3. आदिवासी साहित्य का भविष्य

आदिवासी साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि यह न केवल अपने समाज की अस्मिता की रक्षा कर रहा है, बल्कि राष्ट्रीय चेतना को भी समृद्ध कर रहा है। कुछ महत्वपूर्ण संभावनाएँ इस प्रकार हैं:

(i) डिजिटल और सोशल मीडिया का प्रभाव

आज के डिजिटल युग में आदिवासी साहित्य के प्रसार की संभावनाएँ बढ़ी हैं। सोशल मीडिया, ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और ई-बुक्स के माध्यम से यह साहित्य तेजी से लोगों तक पहुँच रहा है।

(ii) अनुवाद और मुख्यधारा से जुड़ाव

यदि आदिवासी साहित्य को हिंदी, अंग्रेज़ी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाए, तो यह व्यापक स्तर पर लोगों तक पहुँच सकता है।

(iii) शिक्षा और साहित्य का विकास

सरकार और गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों से यदि आदिवासी समाज में शिक्षा का स्तर सुधरता है, तो अधिक लेखक, कवि और विचारक उभरकर सामने आएंगे, जिससे इस साहित्य की समृद्धि और विस्तार होगा।

(iv) नए विषयों और विधाओं का समावेश

भविष्य में आदिवासी साहित्य केवल ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसमें विज्ञान, तकनीक, समकालीन राजनीति और वैश्विक मुद्दों का भी समावेश होगा।

4. राष्ट्रीय चेतना और आदिवासी साहित्य की भूमिका

आदिवासी साहित्य केवल आदिवासियों के अधिकारों और संघर्षों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह पूरे समाज को राष्ट्रीय एकता और सामाजिक न्याय के लिए प्रेरित करेगा।

- सांस्कृतिक विविधता की रक्षा:आदिवासी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति की विविधता संरक्षित रहेगी।
- सामाजिक न्याय:यह साहित्य समाज के सभी वर्गों को न्याय और समानता के लिए प्रेरित करेगा।
- राष्ट्रीय एकता:जब आदिवासी साहित्य मुख्यधारा का हिस्सा बनेगा, तब पूरे देश में सामाजिक समरसता और एकता को बल मिलेगा।

उपसंहार

आदिवासी साहित्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि यह सामाजिक न्याय, अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना का प्रतिबिंब भी है। यह साहित्य आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के साथ-साथ उनके संघर्षों, शोषण और अधिकारों की माँग को भी उजागर करता है।इतिहास गवाह है कि आदिवासी समाज ने अपनी जमीन, जल, जंगल और पहचान की रक्षा के लिए लंबे समय तक संघर्ष किया है। उनके वीरता पूर्ण आंदोलन, जैसेबिरसा मुंडा आंदोलन, संथाल विद्रोह, कोल विद्रोहआदि, राष्ट्रीय चेतना

के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। आधुनिक आदिवासी साहित्य भी इन्हीं संघर्षों को आगे बढ़ाते हुए, शिक्षा, विस्थापन, सामाजिक भेदभाव और आर्थिक शोषण जैसे विषयों पर केंद्रित हो रहा है।

आधुनिक तकनीक, अनुवाद और शिक्षा के माध्यम से आदिवासी साहित्य का दायरा व्यापक हो रहा है, जिससे यह मुख्यधारा के साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रहा है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म आदिवासी लेखकों की आवाज़ को सशक्त बना रहे हैं, जिससे उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहुँच रही हैं।भविष्य में, यदि आदिवासी साहित्य को और अधिक प्रोत्साहन और मंच मिले, तो यह न केवल आदिवासी समाज की पहचान को मजबूत करेगा, बल्कि पूरे राष्ट्र की सामाजिक समरसता और एकता को भी सुदृढ़ बनाएगा। यह साहित्य भारत की सांस्कृतिक विविधता का अनमोल हिस्सा है और इसे संजोकर रखना राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. महाश्वेता देवी — अरण्यर अधिकार (1988)
2. रमणिका गुप्ता — आदिवासी साहित्य की भूमिका (2013)
3. लक्ष्मण गायकवाड़ — उलगुलान की कहानी (2000)
4. वंदना टेटे — आदिवासी साहित्य: पहचान और परिप्रेक्ष्य (2015)
5. भगवान दास मोरया — आदिवासी चेतना और भारतीय समाज (2018)
6. गौरी शंकर — आदिवासी संस्कृति और आधुनिकता (2020)
7. राष्ट्रीय आदिवासी साहित्य अकादमी — आदिवासी साहित्य: अतीत से भविष्य तक (2019)
8. यशपाल जैन — आदिवासी जीवन और संघर्ष (2017)
9. डॉ. सूर्यकांत मिश्रा — भारतीय समाज में आदिवासियों का योगदान (2016)
10. भारत सरकार — जनजातीय मंत्रालय रिपोर्ट्स (विभिन्न वर्षों)

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३३. राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत भारतेंदु युगीन काव्य

डॉ. विजय शिवराम पवार
श्री गुरु बुद्धिस्वामी महाविद्यालय,पूर्णा(जं)
ईमेल : vijayshivrampawar@gmail.Com मोबाईल: 9420393931

भूमिका

भारतीय साहित्य में भारतेंदु युग (१८५०-१८८५) को हिंदी नवजागरण का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस युग में हिंदी साहित्य ने सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरूकता को अभिव्यक्त करने का कार्य किया। विशेष रूप से, इस काल के काव्य में राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं उनके समकालीन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का कार्य किया। राष्ट्रीयता की भावना का उद्भव १९वीं शताब्दी में भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था, जिससे देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। इस स्थिति से देश को मुक्त कराने के लिए साहित्यकारों ने अपनी कलम को एक हथियार के रूप में उपयोग किया। भारतेंदु युग के कवियों ने अपनी कविताओं में देशभक्ति, स्वाभिमान, सामाजिक सुधार और स्वतंत्रता की अभिलाषा को प्रमुखता दी। भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य का 'पितामह' कहा जाता है। उनकी कविताएँ देशभक्ति से ओतप्रोत थीं। उन्होंने अपने काव्य में भारत की आर्थिक दरिद्रता, विदेशी शोषण और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया। उनकी प्रसिद्ध कविता "भारत दुर्दशा" में भारत की दयनीय स्थिति को मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है: "रोवत सब भारत जननी, देखी अपनी दुर्दशा।" उनकी रचनाएँ न केवल सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक रहीं, बल्कि उन्होंने भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित होने की प्रेरणा भी दी। अन्य कवियों का योगदान भारतेंदु युग में कई अन्य कवियों ने भी राष्ट्रीय चेतना को उजागर किया। इनमें बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, राधाचरण गोस्वामी, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि प्रमुख थे। इन कवियों की रचनाओं में स्वतंत्रता की प्यास, देशप्रेम और सांस्कृतिक गौरव को महत्व दिया गया। हिंदी साहित्य में आधुनिक काल भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। रीतिकालीन सामंती आदर्श जर्जरित होते जा रहे थे तथा हिंदी साहित्य में नवोत्थानारंभ हो चुका था। वैज्ञानिक साधनों रेल, तार, मुद्रण यंत्र आदि के द्वारा समाज में नया परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा था। सन 1857 का विप्लव भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना रही । यद्यपि हिंदी साहित्य में इस संघर्ष का अधिक उल्लेख नही मिलता। लेकिन लोकभाषाओं में देश की स्वतंत्रता को प्राप्त करनेवाले वीर पुरुषों के शौर्यपूर्ण युध्द की सुंदर तथा मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। इन लोकगीतों में विदेशी राज्य के प्रति घृणा तथा उपेक्षा का भाव व्यंजित हुआ, जिससे देश के जनमानस की चेतना और देशप्रेम की भावना का अनुमान लगाया जा सकता है। इस साहित्य में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के उग्र रुप

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

की झाँकी दिखाई देती है। जिससे आनेवाले कई वर्षों तक ब्रिटिश शासन से संघर्षरत रहने की प्रेरणा और शक्ति मिलती रही ।

जिस कविता में देश को जागृत करने का सामर्थ्य होता है, वह कविता राष्ट्रीय चेतना की कविता कहलाती है। राष्ट्रीय चेतना के काव्य में देश की त्रुटियों का वर्णन निसंकोच रुप से किया जाता है। देश के दुखद एवं सुखद घटनाओं के साथ कवि के प्राण क्लेशित और रोमांचित होते रहते हैं। उसके हृदय की स्थिति देश के उत्थान-पतन के साथ उठती गिरती रहती है। भारतेंदु युगीन काव्य में राष्ट्रीयता का जो प्रभावी रूप मिलता है, वह भारतीय साहित्य की प्राचीन परंपरा की देन है। वैदिक और संस्कृत भाषा में ईश्वर की परमसत्ता को स्वीकार करते हुए मानव कल्याण की कामना की गई है। इसके तहत हम कह सकते हैं कि, राष्ट्रीयता का मूल भी हमारा वैदिक तत्व और मानवीय तत्व रहा है। भारतेंदु युगीन धरातल पर राष्ट्रीयता को नूतन रूप मिला है। हिंदी साहित्य का आधुनिक युग स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीयता का युग रहा है। भारतीय स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आंदोलन से हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता का भावप्रवण रुप विकसित हुआ है। देश की संस्कृति, सभ्यता भाषा, परंपरा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की मनभावन आधारभूमि पर देशवासियों में एकानुभूतियों का उन्मेष हुआ है। युगीन कवियों ने अतीत की गौरवशाली गाथा को प्रस्तुत करते हुए 'स्वाभिमान' और 'राष्ट्रीयता को उध्दीप्त किया है। हिंदी साहित्य के इस नवीन विशदपूर्ण और विविध विषय संपन्न स्वरुप के निर्माण का श्रीगणेश दो सभ्यताओं के सांस्कृतिक संपर्क के फलस्वरुप 19 वीं शती के उत्तरार्ध में हुआ था। भारतीय सभ्यता शताब्दियों के बोझ से स्थिर हो चुकी थी। इसी समय वह एक यंत्रसज्ज विजेता देश के संपर्क में आ गई। अंग्रेज लोग यांत्रिक, औद्योगिक सभ्यता के अग्रदूत तथा नवीन ऐतिहासिक शक्ति के प्रतिनिधि होने के कारण प्रभावपूर्ण बन गए थे। इस पाश्चात्य संपर्क के परिणाम स्वरुप ही भारत में राष्ट्रीयता का उदय हुआ। इसमें सजीवता उत्पन्न हुई और राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का विकास हुआ। इस युग की राष्ट्रीयता के संदर्भ में सन 1857 का वर्ष महत्वपूर्ण घटना के रुप में सामने आया है। इस समय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से अंग्रेजी शासन को समाप्त करने का प्रयत्न किया गया किंतु ऐसा नही हो सका। भारतीय जनमानस में उभरा विद्रोह स्वतंत्रता का अभिलाषी था । इस आंदोलन से राष्ट्रीयता का मुखर स्वर सामने आया है। युगीन कवियों ने समाज सुधार के साथ अतीत का गौरवगान करते हुए भारतीयों में आत्मसम्मान और स्वाभिमान का भाव जगाया। अतः युगीन काव्य सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीयता की भावों के साथ विकसित हुई है। युगीन कवियों ने सामंतवाद को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न किया था। क्योंकि सामंतवाद ने भारतीय समाज व्यवस्था में रुढियाँ, अंधविश्वास, शोषण और जड़ता भर दी थी। इन्ही कारणों से हमारा देश गुलाम हुआ था । अतः राजनीतिक स्तर पर अगर समाज को उपनिवेशवाद से लड़ना हो तो अपने जड़ समाज को गतिशील और जागरुक बनाना जरुरी था । यह विणारधारा युगीन कवियों के सोच का केंद्रबिंदु था ।

भारतेंदुयुग वस्तुतः राष्ट्रीयता के विकास का युग रहा है। इस तथ्य को रेखांकित करते हुए कृष्णदत्त पालीवाल ने लिखा है- 'यह समय निर्विवाद रुप से भारतीय समाज के आधुनिकीकरण, भारतीयकरण,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राजनीतिकरण के विशिष्ट चिंतन को सींचता है।' समाजशास्त्र की शब्दावली में कहे तो उन्नसवीं शताब्दी भारत को हिंदू संघ न बनाकर 'भारतीय राष्ट्र' और 'भारतीय जन' में तेजी से बदलती नजर आती है। देश और काल के चिंतनात्मक उठान से भारत में देशभक्तिवाद, राष्ट्रवाद, मातृपूजा भावना तथा प्रचंड बुध्दिवाद आलोकित हो उठता है। बंकिमचंद्र के 'वंदे मातरम्' का महाभाव भारतीय सृजन के भीतर से बोल पड़ता है। एक खास ढंग से 'वंदेमातरम्' की यह भावना भारतेंदु में 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' के रूप में दृष्टिगत होती है । भारतेंदु के काव्य का पर्यवेक्षण करते हुए कृष्णदत्त पालीवाल ने लिखा है- भारतेंदु में देशसेवा और लोकोध्दार के लिए सब कुछ होम देने की बात मामूली नही है। इनमें कबीर का साहस और तुलसी का संकल्प एकसाथ मिलकर बोलता है। भारतेंदु के लिए देशभक्ति का अर्थ है-भारतीय गौरवमयी परंपराओं की रक्षा तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद की शोषण, अन्याय नीति के खिलाफ जनता की खुली लड़ाई का जयघोष संकल्प अभियान । देशभक्ति के इस बहुसुत्रीय कार्यक्रम में अशिक्षा, भूक, अज्ञान, आपसी कलह को मिटाने का व्यापक भाव है।" भारतेंदु युग के काव्य में राष्ट्रीय चेतना एक प्रमुख विषय के रूप में उभरकर सामने आई। इस चेतना को विभिन्न कवियों ने अपनी रचनाओं में भिन्न-भिन्न रूपों में व्यक्त किया।

1.देश की दयनीय स्थिति का चित्रण - इस युग के कवियों ने भारत की तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक दुर्दशा को अपनी कविताओं में व्यक्त किया। युगीन हिंदी काव्य में देश की तत्कालीन विषम रानीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रति गहरी व्यथा प्रकट की गई है। अंग्रेजों की दमन और शोषण की नीति से देश का मार्ग अंधकार से आच्चादित हो गया था। कवियों ने निराशा के वातावरण में आशा का संचार करने का सराहनीय प्रयास किया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'भारत दुर्दशा' में भारत के अतीत का गौरवगान करते हुए अंग्रजों के दुष्कृत्य पर उँगली उठाई है- भारतेंदु हरिश्चंद्र की कविता "भारत दुर्दशा" इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है:

"रोवत सब भारत जननी, देखी अपनी दुर्दशा।"
'सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो । सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो ।।
सबके पहिले जो रुप रंग - भीनो । सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो ।।
अब सबके पीछे सोई परत लखाई ।हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।।
अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी । पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ।।
सबके उपर टिक्कस की आफत आई। हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई । 1

2. विदेशी शासन की आलोचना - अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के शोषण और दमन की कड़ी आलोचना इस युग की कविताओं में देखी जा सकती है। इसने भारतीय जनता को स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूक किया। भारतेंदु युग में राष्ट्रीयता को नया रूप मिला है। इस समय देश अंग्रेजी शासन की निचता-कठोरता से प्रबल रूप में प्रभावित हो चुका था। देश की राष्ट्रीयता के संदर्भ में सन 1857 का आंदोलन महत्वपूर्ण घटना के रुप में सामने आया है। किंतु परतंत्रता के परिवेश में भारतीयों को घुटन और संत्रास ही मिला। इसको पार

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

करने के संदर्भ से राष्ट्रीयता मुखरित हुई है । कवि अंग्रेजी शासक पर तीखा और कटू व्यंग्य करते हुए सामने आते हैं-

'भीतर भीतर सब रस चूसे, हँसि हँसि के तन-मन-धन मूस ।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि साजन नहीं अंग्रेज ।।2

सहृद्य साहित्यकार देश को दासता की जंजीर से मुक्त कराने के लिए अंग्रेजी शासन का विरोध करता हुआ जन-मानस को उद्बोधित करता हुआ दिखाई देता है-

'चुरन साहब लोग जो खाता, सारा हिंद हजम कर जाता ।
चूरन पुलिसवाले खाते सब कानून हजम कर जाते ।। " 3

कवियों ने अंग्रेजी शासन के फूट और बैर के भाव को समाज से नष्ट करने के लिए नव- जागरण का संदेश दिया है। स्वदेशी वस्तुओं के प्रति अनुराग जगाते हुए बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने लिखा है-

'ज्यों-ज्यों चरखा चलत।
बैर फूट बढ़ाय भारत वासिनै जे चलत
प्रेमघन तिन मिलन लखि उनको हियो खलभलात ।। 4

3. भारतीय संस्कृति और गौरव का वर्णन - इस युग के कवियों ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और भाषा की महत्ता को उजागर किया और विदेशी प्रभाव से बचाने का प्रयास किया। बालमुकुंद गुप्तजी का मत है कि अतीत की गरिमा का वर्णन करके वर्तमान की दयनीय दशा के कारणों की पोल खोलकर उसे बदलने के लिए संघर्ष करना है । कवि ने प्राचीन कालीन लोगों की वीरता की भावना, उनके अद्भुत शौर्य एवं पराक्रम को कुछ इस प्रकार कलमबध्द किया है-

'जिनके क्षत्रन पर रही तरिवारन करि चंह।
अभय सबन को करत ही जिनकी लंबी बांह ।।
जिनके करसों मरन लौं दुटयो न कठिन कृपान ।
तिनके सुत प्रभु पेट हित भये दास दरवान ।। 5

इस अत्याचार से भारत को बचाने तथा भारतीयों में व्याप्त आलस्य को दूर कर उन्हें कर्मरत बनाने की प्रार्थना करते हुए कवि भगवान को जगाने की चेष्टा भी करता है-

'डूबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागो ।
जागो बली बेगहि नाथ अब देहु दीन हिंदुन सरभ ।।17।। 6

4.स्वतंत्रता की प्रेरणा - कविताओं के माध्यम से भारतीयों को आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी गई।स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा की विशेष भूमिका रही है। दूसरे शब्दों में कहे तो स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा ही हिंदी थी। जो पूरे देशवासियों को एक सूत्र में बाँध रही थी । भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी भाषा प्रेम को मनोरम अभिव्यक्ति प्रदान की है-

'निज भाषा उन्नति अहैं सब उन्नति को मूल ।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल ।। " 7

उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक भारत की भौगोलिक एकता की तुष्टि करनेवाले सुविख्यात नगरों- काशी, अयोध्या, प्रतिष्ठानपुर, इंद्रप्रस्थ, मथुरा, द्वारिका, चित्तौड़, पाटलिपुत्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए इनके पतन या विनाश पर कवि शोक प्रकट करता है-

'नही वह काशी रह गयी, हती हेममय जौन ।
नहि चौरासी कोस की रही अयोध्या तौन ।।
राजधानी जो जगत की रही कभी सुख साज ।
सो बिगहा दस बीस में सिकुडी सी जनुआज ।। 8

वास्तव में भारतेंदु किसी भी भाषा के विरोधी नही थे। वे मातृभाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के हक में थे। युगीन काव्य में इन्होने अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं की श्रेष्ठता और उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला है। वे कहते हैं कि अंग्रेजी अत्यंत समृध्द भाषा है क्योंकि उसमें अनूदित साहित्य की भरमार है। अंग्रेज सब जगह से अपने काम की सामग्री अनुवाद के द्वारा ही जुटाते हैं । अतः हिंदी साहित्य भांडार को भी इसी प्रकार समृध्द करना चाहिए-

'तासों सब होहि घर विद्या बुद्धि निधान ।
होइ सकत उन्नति तबै और उपाय न आन ।। 9

बालमुकुंद गुप्तजी के हृदय में सामंतो के प्रति कोई सहानुभूति नही थी, क्योंकि वे किसानों, मजदूरों तथा दलित वर्ग के लोगों का शोषण करते थे। उनकी सहानुभूति तो उस किसान के साथ थी जो स्वयं भूखा रहकर दूसरों का पेट भरता है । कवि अंग्रेजी सरकार के चापलूस सर सैय्यद अहमद जैसे सामंत को संबोधित करते हुए लिखते हैं-

'जिनके कारण सब सुख पावैं, जिसका बोया सब जग खावैं,
हाय हाय उनके बालक नित भूखों के मारे चिल्लावैं,
हाय जो सबको गेहूँ देते वह ज्वार बाजरा खाते हैं,
वह भी जब नहिं मिलता तब वृक्षों की चल चबाते हैं ।।' 10

कवि ने आपसी बैर और फूट के परिणामों पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि, फूट से कौरवों का नाश हुआ, लंका पूरी ध्वस्त हो गई और जयचंद के कारण आज तक गुलाम रहना पड़ा इसलिए बैर त्यागकर मातृ भाव ग्रहण करने को भारतेंदु कहते हैं-

"फूट बैर दूरि करि बाँधि कमर मजबूत ।
भारत माता के बनो भ्राता पूत सपूत ।। 11

उपसंहार भारतेंदु युगीन काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध था, बल्कि इसमें राष्ट्रीयता की भावना भी स्पष्ट रूप से झलकती थी। यह युग भारतीय नवजागरण का प्रतीक था, जिसमें कवियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से देशवासियों को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। हिंदी साहित्य में इस युग का योगदान

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

अविस्मरणीय है और इसकी कविताएँ आज भी राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में सक्षम हैं। हिंदी साहित्य राष्ट्रीय चेतना के विकास में हमेशा से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। यह चेतना केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रही, बल्कि आज भी समाज में बदलाव लाने, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने और देश को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत की जा रही है। राष्ट्रीय चेतना का यह स्वर हिंदी साहित्य को हमेशा जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखेगा। युगीन कवियों की यह कामना रही है कि, भारतीयों को पराधीनता की शृखला से मुक्त करने तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम जागृत करना। जनता में निजत्व की भावना जागृत कर स्वदेश निर्मित वस्तुओं का प्रयोग एवं निज भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करके राष्ट्रीयता को जगाने का प्रयास किया है। स्पष्ट है कि युगीन काव्य तत्कालीन परिवेश में जीवन के नए मूल्यों को लेकर अवतरित हुआ है। अंततः भारत के राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक क्षितिज पर होनेवाले युगांतकारी महापरिवर्तन के अरुणोदय की सूचना बनकर भारतेंदुयुगीन काव्य सामने आया है। इन कवियों ने अपनी प्राचीन घिसी-पिटी परिपाटी को छोड़ अतीत का गौरवगान, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना एवं राष्ट्रीयता का अपने नए ढंग से प्रवर्तन किया है। युगीन काव्य के सिंहावलोन से भारतीय समाज पहलीबार अपने विषय में जागरुक हुआ। अतः राष्ट्रीयता को जगाने में इस युग की कविता का महान योगदान रहा है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत भारतेंदु युगीन काव्य न केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति था, बल्कि एक सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन का हिस्सा भी था। भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके समकालीन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध, राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक गौरव को बढ़ावा दिया। यह युग हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के बीज बोने वाला सिद्ध हुआ, जिसका प्रभाव बाद के साहित्यिक आंदोलनों में भी दिखाई देता है।

संदर्भ सूची

1. ओमप्रकाश सिंह- भारतेंदु हरिश्चंद्र ग्रंथावली, भाग-1, पृ. 113, 114.
2. मदन गोपाल- भारतेंदु हरिश्चंद्र, राजपाल ॲन्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम सं. 1976
3. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय आधुनिक हिंदी साहित्य, हिंदी परिषद, इलाहाबाद, तृतीय सं. एवं परिवर्द्धित संस्करण अप्रैल 1954 ई.
4. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी, प्रभावत प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम सं. 1973 ई.
5. डॉ. चंद्रभानु सोनवणे- भारतेंदुके विचार एक पुनर्विचार, प सं. 1962 ई.
6. डॉ. कमला कानोडिया- भारतेंदुकालीन हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सं. 1971 ई.
7. डॉ. रामचंद्र मिश्र - भारतेंदु साहित्य, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर सीताबर्डी, प्रथम सं. मई 1970.
8. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय भारतेंदु हरिश्चंद्र साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद, तृतीय सं. 1965 ई.
9. श्री. नारायण पांडेय- भारतेंदु हरिश्चंद्रः नए संदर्भ की तलाश सं.1988 ई.10.
10. पं. बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन प्रेमघन सर्वस्व खंड 2
11. बालमुकुंद गुप्त स्फुट कविताएँ

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३४. विष्णु प्रभाकर के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना

प्रा.डॉ.महावीर रामजी हाके
असोशिएट प्रोफेसर , हिन्दी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड जि.परभणी।
मो.नं.9423143835 ई - मेल: mrhake67@gmail.com.

प्रस्तावना:

विष्णु प्रभाकर एक संवेदनशील साहित्यकार हैं। उनके नाटकों का कथानक प्रायः सामाजिक विषयों से संबंध है। उनके जीवन निर्माण में दो प्रमुख तत्व है। वे हैं संघर्ष और सुधार। उनका यह प्रभाव उनकी रचनाओं में देखने को मिलताा है। विष्णु प्रभाकरजी साहित्यकार होने के नाते अपने दायित्व को कभी नहीं भूलें। उनके मत में नाटक मानव के आंतरिक संघर्ष की कहानी हैं। नाटकों को सामाजिक बदलाव का एक साधन भी मानते हैं। उनके नाटकों की विशेषता यह है कि वे अपनी रचनाओं में समाज की ज्वलंत समस्या को रखते हैं पर साथ ही उस समस्या का समाधान भी स्वयं देते हैं। शांति, अहिंसा, दया, ममता, करुणा आदि मनोभाव उनके नाटकों में व्यक्त हुए हैं जिनमें मानवीय मूल्यों की स्थापना हुई है। विष्णु प्रभाकर किसी एक युग के नहीं है वे दो युग के पीढ़ियों को समझते हैं उनके अनुरूप रचना करते हैं। ऐसे पात्रों का चुनाव करते है जिससे यह आभास होता है कि हॉ वह बात है जिसकी समाज को जरूरत है।

नारी शोषणः 'अब और नहीं' नाटक में स्वाभिमानी नारी की स्वतंत्रता हेतु छटपटाहट को अभिव्यक्त किया है। नारी को सदा समाज में वस्तु समझा गया। उसके व्यक्तित्व को स्वतंत्र रूप से निखारने का कभी मौका नही दिया गया। हर स्थिति में पीडा नारी ने झेली है नारी के शोषण का पूरा इतिहास है। उस इतिहास में शोषण के अनेक प्रकार हम देख सकते हैं। उसके अंदर के अहम तत्व, बुद्धि तत्व को सहलाकर उसे पशु बना देना। पुरुष का सामंती स्वरूप प्रेम जैसी पवित्र वस्तु को भी शोषण को हथियार बना सकता है, बनाता रहा है।

वीरेंद्रनाय अपनी पत्नी (शांता) को मानसिक रूप से प्रताडित कर उसका शोषण करता है। उसकी कलात्मक रुचियों के विकास को परवाह नहीं करता। धीरे-धीरे यह बात एक ग्रंथी बनकर शांता के गहन अवचेतन में बैठ जाती है तथा समय-समय पर उभरती रहती है उसका कहना है- "मैंने वही चाहा जो वह चाहते थे। मैंने वही किया जो उनकी इच्छा थी। वही कहा जो वह कहलवाना चाहते थे। वही विश्वास किया जो इनका विश्वास था। "[1]

उसका सारा तन मन इन अत्याचारों से आकांत हो चुका है। अतः वह कहती है: "में विश्राम चाहती हूँ। मैं अवकाश चाहती हूं। कोल्हू के बैल की तरह बहुत चक्कर काटे बहुत पत्थर तोडे बागों में पानी दिया।देखो तो

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

मेरे हाथ कितने सख्त हो गये हैं। कैदखाने से बाहर जाना चाहती हूं।मैं मुक्ति चाहती हूँ। वह मुक्ति मुझे कोई भी नही देना चाहता। डॉक्टर साहब। मेरे चारो ओर हवा बंद है। मैं मुक्त हवा चाहती हूँ।" [2]

वीरेंद्र के माध्यम से नाटककार यह बताना चाहते हैं कि नारी शोषण में व्यक्ति के साथ-साथ सामाजिक रुढियों-परंपराएँ रीति-रिवाज सांचे में ढली पारिवारिक जीवन पद्धति ये सभी सामाजिक बुराईयों भागिदारी है। नारी को छटपटाहट तथा उसके विद्रोह को शब्दों द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान की है, वह अद्वितीय है।

अनमेल विवाह:

भारत वर्ष में संतान के विवाह का अधिकार प्रायः माता-पिता को ही रहा है। परिस्थितियों से हार मानकर कई कई बार माता-पिता या अभिभावक योग्य वर न मिलने पर धन के लालच में आकर अपनी कन्या का विवाह वृद्ध से करते हैं एवं पति-पत्नी में अधिक आयु अंतर के कारण स्त्रीयों के विधवा होने की संभावनाएँ बढ जाती हैं। इस प्रकार आयु अथवा मानसिक रूप से मेल न खाने पर कन्या का जीवन प्रायः नष्ट हो जाता है। 'चंद्रहार' नाटक में पचपन वर्षीय दमें के मरीज वकील इंद्रभूषण का दूसरा विवाह रतन से होता है। आठ वर्ष के दांपत्य जीवन के पश्चात भी वह निःसंतान रहती है। इसके बडे दुख को झेलते हुए भी वह अपने भाग्य से समझौता कर लेती है। अपने दिल की बात सखी जालपा से कहती है:

जालपा: वकील साहब का दूसरा विवाह होगा।

रतन: हाँ, अभी पांच ही बरस तो हुए हैं। इनकी पहली पत्नी को मरे पैतीस वर्ष हो गए। उस समय इनकी अवस्था कुल पच्चीस साल की थी। लोगोंने समझाया, दूसरा विवाह कर लो, पर इनको एक लड़का हो चुका था। विवाह करने से इंकार कर दिया और तीस साल तक अकेले रहे।

फिर इनके जवान बेटे का देहांत हो गया।

जालपा: ओह!

रतन: तब विवाह करना आवश्यक हो गया । मेरे माँ बाप न थे। मामाजी ने मेरा पालन किया था। कह नहीं सकती इनसे कुछ ले लिया या इनकी सज्जनता — पर मुग्ध हो गए। मैं तो समझती हूं कईश्वर की यही इच्छा थी। "[3]

इसप्रकार उसे दांपत्य जीवन का सुख प्राप्त नहीं होता। अंत में अपने पति जो दमे का मरीज है, कोलकता ले जाकर दमे का इलाज करवाने के बावजूद उन्हें नहीं बचा पाती है।

अंध विश्वासों का विरोध:-

'बंदिनी' नाटक में विष्णुजी ने अंधविश्वास के आधार पर दुर्घटनाग्रस्त जीवन को आधार बनाया है। 'बंदिनी' विष्णु जी का बहुचर्चित नाटक है। दिल्ली के नाटक घरों में कई बार मंचित भी हो चुका है। इस नाटक का पात्र कालीनाथ भी अंधविश्वास के हाथों बंदी है। वह गांव का जमीनदार है। गाँव भर उन जैसा धनी-मानी व्यक्ति नहीं है। वे पूजा पाठ में अधिक समय बिताते है। एक रात उन्होंने एक स्वप्न देखा जिसमें उन्हें साक्षात देवी ने दर्शन दिया और प्रसन्नवदन बोली "है भक्त तू पत्थर की प्रतिमा प्रतिष्ठित करने के

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भूलावे में पड़ा है, जबकि मैं तेरे घर में मानवी रूप में अवतरित हो चुकी हूँ। तू उसी रूप की उपासना कर। वह रूप तुम्हारी छोटी बहू 'उमा' है।[4]

इसप्रकार कहना न होगा कि विष्णुजी के नाटकों द्वारा हमारे जीवन से संबंधित अंधविश्वास की समस्या को भी उभारा गया है। उनका कहना है अंधविश्वास अज्ञानता पर ही पलता है। अतः अज्ञान पर विजय प्राप्त करना होगा।

पीढ़ी संघर्ष:-

विष्णु जी के अन्य नाटकों में 'टूटते परिवेश' उल्लेखनीय नाटक हैं। यह नाटक स्वयं लेखक की परिवर्तित मानसिकता का प्रतीक और उसके स्वीकार की उद्घोषणा है। जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है कि लेखक ने टूटते हुए परिवेश को चित्रित किया है।

'टूटते परिवेश' नाटक पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के संघर्ष को उजागर करता है। विश्वजीत इस नाटक का नायक है जो अपने ही बेटी-बेटों की संस्कार हीनता और भावशुन्यता से पूर्णत: खंडित हो जाता है। उसकी पत्नी का नाम करुणा है। मनीषा, दीप्ति, इंदू, विवेक, शरत, दीपक और विमल उसके बेटी-बेटे हैं।

माता-पिता के अपने संस्कार बोध, मान्यताएं और अनुशासन हैं। वे इन्हें अपनी पीढ़ी को देना चाहते है। एक मर्यादित परंपरा-प्रमाणित जीवन में वे उन्हें देखने का स्वप्न लेते हैं। परंतु इस कामना में दुराग्रह और ममता दोनों है। नई पीढ़ी इस विचार में संस्कार-विच्युत हुई है। उसे विरासत में मिली है गंदी राजनीति, भ्रष्ट शासन व्यवस्था मान्यताएँ, जड़ परंपराएँ और विजड संस्कृति तथा एक व्यापक विकराल मुखौटाधर्मिता । इस कुहासे में न तो स्वयं को पहचान पाते हैं और न अपने जीवनदाय को हीं। इसीलिए उसमें एक तीव्र आक्रामक आक्रोश, हिंसक विरोध, संपूर्ण अस्वीकार, अराजक आचरण और उच्छृंखलता आ गई है।

पीढ़ी अंतर:-

विष्णु प्रभाकरने बहुत ही गहराई से 'युगे युगे क्रांति' में पीढ़ियों के अंतर और उसके संघर्ष को वाणी दी है। नयी पीढ़ी के लिए परंपराओं और संस्कारों का कोई महत्व नहीं है। प्रस्तुत नाटक में एक शताब्दी में होने वाले सामाजिक परिवर्तन को बडे नाटकीय ढंग से बताया गया है। केंद्रीय पात्र देवी प्रसाद के संवादों के माध्यम से पांच पीढ़ियों की घटनात्मकता को चित्रित करने का प्रयोग किया है। प्रत्येक नयी पीढी को पिछड़ा और रुढिवादी मानकर उनके विरुद्ध क्रांति करती है- किंतु वही पीढी दूसरी नयी पीढीको अपने विचारों का विरोध करते देखती है तो उसे क्रांतिकारी घोषित करती है।

क्रांति की पहली भूमिका में कल्याण सिंह आता है। उसेअपने माता-पिता की मान्यताओं से टक्कर लेनी पडती है। उसका दोष था कि वह दिन में अपनी पत्नी रामकली का मुंह देखा पथा। परिणामस्वरूप अपने पिता के हाथों पिटना पड़ा था और कई दिनों तक इसी विषय को लेकर पास पड़ोस में चर्चा रही। कल्याणसिंह अपने समय की स्थापित मान्यता से टक्कर लेकर पर्दा-प्रथा को चुनौति देना है। प्यारे लाल के घर में शारदा एक क्रांति बनकर जन्मती है। और प्यारे लाल उसका विरोध करता है। शारदा गांधी जी के

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

प्रभाव के कारण सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेती है। सिपाहियों के साथ सार्जेंट के मना करने पर शारदा कहती है- "हम यहां से जाने के लिए नहीं आयी है। हम पिकेटिंग करेंगी। "[5]

परिणाम यह होता है कि शारदा बंदी गृह में बंद कर दी जाती है। घर के अंदर अवगुंठन में रहनेवाली युवती बंदीगृह में चोर-डाकुओं के मध्य निवास करे, वह उस युग की बहुत बडी क्रांति थी। अंत में साहसी युवक विमल से विवाह कर लेती है।

वेश्यावृत्ति:- वेश्यावृत्ति अपनाने का कारण बहुधा परिस्थितियों और मजबूरियों की जटिलता होती है। युवतियॉं न चाहते हुए भी इस पेशे से बंध जाती है। " संसार में वेश्यावृत्ति एक प्राचीनतम व्यवसाय है। वेश्याओंका उल्लेख ऋग्वेद से लेकर – महाभारत, अर्थशास्त्र, मेघ संदेश, जातक कथाएँ आदि ग्रंथों में मिलता है। 'मनुस्मृति' में भी इसका तीव्र खंडन दिखायी देता है। इससे स्पष्ट होता है कि भारत मेंवेश्यावृत्ति अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। "[6]

वर्तमान समय में भी ऐसी अनेक युवतियॉं परिस्थियों के आगे घुटने टेक वेश्यावृत्ति जैसे घृणित व्यवसाय को अपनाती है। इसप्रकार विष्णु जी समाज को अपने दायित्वों के प्रति सचेत करते हैं।

शोषण वृत्ति का उद्घाटन:-शोषण की समस्या प्राचीन काल से ही चली आ रही है। तथा वर्तमान समय में भी इसकी जड़ मजबूत है। प्राय: बिना रिश्वत के कोई काम नही होता है। यहाँ तक कि पुलिस भी रिश्वत लेकर काम करती है। विष्णु प्रभाकर के 'होरी' नाटक में हीरा ने होरी की गाय को विष देकर मार डाला। परिणाम स्वरूप पुलिस बुलाई गई। दरोगा पटेश्वरी से कहता है कि या तो तीस रुपये दिलवाओ नहीं तो मैं हीरा के घर की तलाशी लूंगा। पटेश्वरी गिडगिडाती है, "नही हुजुर, ऐसा न कीजिये, नहीं फिर हम कहाँ जायेंगें। हमारे पास दूसरी और कौन सी खेती है?" इस पर तीस रुपये की बात पक्की होती है। दरोगा पटवारी से कहता है, "दरोगा अच्छा जाओ, तीस रुपये दिलवा दो; बीस रुपये हमारे, दस रुपये तुम्हारे।

पटेश्वरी: चार मुखिया है इसका ख्याल कीजिए।

दरोगा: अच्छा आधे-आध पर रखो, जल्दी करो। मुझे देर हो रही है। "[7]

होरी खून का घूंट पी कर रह गया। सारा समूह जैसे थर्रा उठा। नेताओं के सिर झुक गए। दारोगा का मुँह जरा सा निकल आया। अपने जीवन में उसे लताड न मिली थी।

अविवाहिता की समस्या:

'श्वेत कमल' एक सामाजिक नाटक है। समाज के मध्यमवर्गीय परिवार की समस्या को चित्रित किया गया है। बिंदू आदर्शवारी नारी है। वह अंत तक अपने आदर्शों का पालन करती हुई दिखायी देती है। पिता के देहांत के बाद लड़का बनकर परिवार वहन का दायित्व अपने कंधों पर लेती है। कार्यालयों में चल रहे नैतिक शोषण से बचने के लिए वह बार-बार नौकरी छोड देती है। बिंदू जैसी समाज में कई युवतियॉं है जो आर्थिक समस्या के कारण विवाह नहीं करती।

विष्णु प्रभाकर नारीमुक्ति के समर्थक हैं 'श्वेत कमल' नाटक की भुमिका वे अपने विचार पाठकों के सामने रखते हैं। जीवन मूल्य बदले जरूर है, भले ही वह बदलाव हमें रसातल की ओर ले गया हो। कुछ

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

दवाव ऐसे भी है जिनके कारण नारी मुक्ति के इस युग में भी वह असहाय बन कर रह गयी है। उन दबावों में एक दबाव आर्थिक भी है।

नारी चेतना सामाजिक संदर्भ में:-विष्णुजी नारी मुक्ति के समर्थक हैं। उनकी रचनाओं में नारी चेतना का स्वर सर्वत्र मुखरित हुआ है। उनके साहित्य का लक्ष्य मानवता की खोज है वे शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के साहित्य से अधिक प्रभावित है।

'कुहासा और किरण' नाटक में नारी की स्थिति बताते हैं पुरुष शासित आज के समाज में नारी कैसी विडंबना में जी रही है। पुरुष कहता है तो यह है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता रमण करते हैं। परंतु समझता है आज भी उसे चरण दासी । पर वह यह भूल गया है कि नारी आज जाग चुकी है। वह मात्र माँ, बहन, पत्नी और पुत्री नहीं है 'नारी' भी है। पहले नारी है, पीछे कुछ और। प्रभा जो उपन्यासकार है, वह अपने पास पनप रहे भ्रष्ट राजनीतिज्ञों का पर्दाफाश करने में संकोच नहीं करती। वह मुखौटे लगाएँ मुखबिरों को, भ्रष्टाचारियों को, देश में फैले छद्म को बेनकाब करने का प्रण लेती है।

सारांश:

विष्णु जी के नाटकों के कथानक प्रायः सामाजिक विषयों से संबद्ध है। राजनीतिक और इतिहास के आधार पर भी कुछ नाटक लिखे हैं। सामाजिक नाटकों में मनोविज्ञान की शैली में मानव मन के द्वंद्व को चित्रित किया है। मनोवैज्ञानिक घरातल पर निर्मित कथानक के पात्र किसी मनोविकार या मनोग्रंथी से पीड़ित है। उनके नाटकों में मध्यमवर्गीय मानव जीवन अपने मानसिक संघर्ष तथा बाह्य द्वंद्व के साथ उभरकर आये हैं।

संदर्भ :

1)अब और नहीं: विष्णु प्रभाकर पृ.सं 60,61
2)वहीं पृ.सं. 61
3)चंद्रहार :विष्णु प्रभाकर पृ.सं. 219
4) विष्णु प्रभाकर के नाटकों में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतनाः डॉ पार्वती पृ.सं. 76
5) युगे-युगे क्रांति – विष्णु प्रभाकर पृ.सं. 22
6) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी और तेलुगु नाटकों में नारी समस्याएँ : डॉ. सुमनलता पृ.सं- ९१
7) होरी: विष्णु प्रभाकर पृ.सं. ४६

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३५. हिंदी दलित साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. विवेक घन:शाम घोबाळे
प्राचार्य (प्र.)
श्री संत गजानन कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, अंबाजोगाई जिला बीड मोब. 9145126838

भूमिका

हिंदी दलित साहित्य सामाजिक न्याय, समानता और राष्ट्रीय चेतना के महत्वपूर्णआयामोंकोदर्शाने वाला साहित्य है। यह साहित्य उनवर्गों की पीड़ा, संघर्ष और आत्मसम्मान की लड़ाईको प्रस्तुत करता है, जिन्हेंसदियोंतक सामाजिक असमानताओं और भेदभाव का सामना करनापड़ाहै। दलित साहित्य केवल एक साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति भीहै, जो दलित समुदायों के अधिकारों, अस्मिता और आत्मनिर्णय की चेतना को उजागर करता है। राष्ट्रीय चेतना का इसमें विशेष स्थान हैक्योंकियह देश की सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिकमूल्योंको स्थापित करने की दिशा में कार्य करता है।

कुंजी शब्द और उनका अर्थ:

१. दलित साहित्य- ऐसा साहित्य जो हाशिए पर पड़े समाज की व्यथा, संघर्ष और आत्मसम्मानको व्यक्त करता है।

२. राष्ट्रीय चेतना- सामाजिक जागरूकता जो व्यक्ति और समुदाय कोअपनेअधिकारों के प्रति सचेत बनाती है।

३. सामाजिक न्याय- समाज के सभीवर्गोंको समान अवसर और अधिकार प्रदान करने की प्रक्रिया।

४. समानता-जाति, धर्म, लिंग आदि किसीभी आधार पर भेदभाव से मुक्त समाज की अवधारणा।

५. आत्मनिर्णय- व्यक्ति या समुदाय द्वारा अपनीपहचान और भविष्य के बारेमें निर्णय लेने की स्वतंत्रता।

६. संघर्ष और क्रांति- सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध उठने वाली आवाज और आंदोलन।

७. दलित विमर्श- साहित्य, राजनीति और समाज में दलित मुद्दों पर केंद्रितविमर्श।

१. राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप और उसकी परिभाषा-

राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य उस सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता सेहै, जो व्यक्ति और समुदाय कोअपनेअधिकारों के प्रति सचेत बनाती है। हिंदी दलित साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य दलित समुदाय की स्वतंत्रता, सामाजिक समानता और न्याय के प्रति उनकेदृष्टिकोणसेहै।

राष्ट्रीय चेतना किसीभी राष्ट्र की सामूहिक आत्मा होती है, जो वहां के नागरिकों की एकता, संस्कृति, परंपराओं, इतिहास और मूल्योंसेजुड़ी होती है। यह चेतना लोगोंमेंअपने राष्ट्र के प्रति प्रेम, गर्व और समर्पण की भावना को उत्पन्न करती है, जिससे वे राष्ट्र की प्रगति और सुरक्षा के लिए समर्पित रहतेहैं। राष्ट्रीय चेतना केवल भौगोलिक सीमाओंतक सीमित नहीं होती, बल्कियह भाषा, साहित्य, कला, धर्म, समाज और

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

राजनीतिक चेतना के माध्यम से विकसित होती है। जबकिसी देश के नागरिक अपने राष्ट्रीय अस्तित्व और उसकी गरिमा कोसमझतेहैं, तब वे देश की स्वतंत्रता, संप्रभुता और एकता के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। राष्ट्रीय चेतना की परिभाषा कोइस प्रकार समझा जा सकताहै कि यहकिसी राष्ट्र के नागरिकोंमें व्याप्त वह भावनात्मक और बौद्धिक जागरूकता है, जो उन्हें एकता और राष्ट्रीय हितों की ओर प्रेरित करती है। यह चेतना समाज मेंसमरसता, सहयोग और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती है, जिससे राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव होता है। जब कोई देश अपनी राष्ट्रीय चेतना को सशक्त करता है, तो वह सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से अधिक सुदृढ़ बनता है। राष्ट्रीय चेतना का विकास शिक्षा, मीडिया, साहित्य और सामाजिक आंदोलनों के माध्यम सेकिया जाता है, जिससेनागरिकोंमें राष्ट्रीय कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूकता बनीरहतीहै।

२. दलित साहित्य में सामाजिक न्याय और समता का प्रश्न-

दलित साहित्य भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक अन्याय, शोषण और असमानता के खिलाफ एक सशक्त प्रतिक्रिया है। यह साहित्य हाशिए पर पड़े दलित समुदाय की पीड़ा, संघर्ष और आत्मसम्मान की खोज को उजागर करता है। डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारोंसे प्रेरित यह साहित्य सामाजिक न्याय और समता की स्थापना की दिशा मेंमहत्वपूर्ण योगदान देता है। आंबेडकर ने कहाथा– "स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं, यदिइसमें सामाजिक न्याय शामिलनहींहै।" (आंबेडकर, एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, पृष्ठ २५)। यह कथन स्पष्ट करता है कि समता और सामाजिक न्याय केवल संवैधानिकप्रावधानोंतक सीमित नहीं रह सकते, बल्कि समाज के प्रत्येक स्तर पर इसकी स्थापना आवश्यक है।

दलित साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज की उनकड़वीसच्चाइयोंको उजागर कियाहै, जिन्हेंअक्सरअनदेखाकिया जाता रहा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' मेंउन्होंने वर्णन कियाहै कि किस प्रकार जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय ने उनकेबचपनकोविषमय बना दिया (वाल्मीकि, जूठन, पृष्ठ ३४)। इसी प्रकार, शरणकुमारलिंबाले ने 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' मेंलिखाहै– "दलित साहित्य केवल साहित्य नहीं, यहसामाजिक क्रांति की प्रस्तावना है।" (लिंबाले, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृष्ठ ४२)। ये उद्धरणदर्शातेहैं कि दलित साहित्य केवल व्यक्तिगत या आत्मकथात्मकपीड़ा की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन की मांग करता है, जहां हर व्यक्ति को समान अवसर और न्याय मिले।

- दलित साहित्यकारों ने समाज में व्याप्त असमानताओंको उजागर कियाहै।
- डॉ. भीमरावअंबेडकर के विचारों ने दलित साहित्य को नई दिशा दी।
- 'जो मुझेनहींचाहिए, वहमैंदूसरोंकोभीनहींदूँगा।' - डॉ. अंबेडकर
- ३. दलित साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास-

दलित साहित्य केवल सामाजिक शोषण और असमानता की अभिव्यक्ति तक सीमित नहींहै, बल्कियह राष्ट्रीय चेतना के विकास मेंभीमहत्वपूर्ण भूमिका निभाताहै। यह साहित्य भारतीय समाज में व्याप्त

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

जातिवाद, भेदभाव और अन्याय को उजागर करते हुए समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना कोप्रोत्साहित करता है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने राष्ट्रीय चेतना कोपरिभाषित करते हुएकहाथा– "सच्ची राष्ट्रीयतातभी संभव हैजब समाज में समानता और न्याय की स्थापना हो।" (आंबेडकर, एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, पृष्ठ ५६)। दलित साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम सेयह स्पष्ट कियाहै कि जबतकदलितोंकोउनके अधिकार नहींमिलते, तबतक राष्ट्रीय एकता और प्रगति अधूरी रहेगी।

दलित साहित्यकारोंजैसे ओमप्रकाश वाल्मीकि, शरणकुमारलिंबाले और दलित पैंथर्स आंदोलन सेजुड़ेलेखकों ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त विषमता और शोषण के खिलाफआवाज़उठाई। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' मेंवर्णितजातिगत अपमान यहदर्शाताहै कि सामाजिक न्याय के बिना सच्ची राष्ट्रीय चेतना विकसित नहीं हो सकती (वाल्मीकि, जूठन, पृष्ठ ४५)। इसी प्रकार, शरणकुमारलिंबाले ने 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' मेंलिखाहै– "दलित साहित्य राष्ट्रीय चेतना का साहित्य है, क्योंकियह एक ऐसे भारत की कल्पना करता हैजहां कोई भेदभाव न हो।" (लिंबाले, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृष्ठ ८७)। इस प्रकार, दलित साहित्य राष्ट्रीय चेतना को एक समतामूलक समाज की दिशा में प्रेरित करता है, जो भारतीय लोकतंत्र और संविधान के मूल्योंको सशक्त बनाता है।

· प्रेमचंद की कहानियाँ, विशेष रूप से'सद्गति' और 'ठाकुर का कुआँ', दलित पीड़ाकोदर्शातीहैं।

· दलित आत्मकथाएँजैसे कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' और शरणकुमारलिंबाले की 'अक्करमाशी' ने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल किया।

· हिंदी दलित कविता मेंदुष्यंत कुमार, जयप्रकाश कर्दम, कंवल भारती और अन्य साहित्यकारों ने राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया।

४. दलित आंदोलन और साहित्यिक अभिव्यक्ति-

दलित आंदोलन भारतीय समाज में समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए एक सशक्त संघर्ष रहा है। यह आंदोलन केवल सामाजिक या राजनीतिक स्तर तक सीमितनहीं रहा, बल्किइसकीगूंज साहित्य मेंभीसुनाईदेतीहै। दलित साहित्य इस आंदोलन की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बना, जिसनेदलितों के अनुभवों, पीड़ा, संघर्ष और उनकी सामाजिकस्थितिको स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने इस संदर्भ मेंकहाथा–"यदिहमें वास्तव में समानता प्राप्त करनीहै, तो हमें न केवल राजनीतिकबल्कि सामाजिकऔर सांस्कृतिक क्रांति की भी आवश्यकता है।" (आंबेडकर, एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, पृष्ठ ७२)।दलित साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम सेइस क्रांति की आवाज़ बुलंद की, जिससेयह स्पष्ट हुआ कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन काभी एक प्रभावी माध्यम हो सकताहै।

दलित साहित्य और दलित आंदोलन का परस्पर संबंध गहरा और अविच्छेद्यहै। २०वीं सदी में दलित आंदोलन को प्रेरित करनेवालेसाहित्यकारों ने अपनीरचनाओंमें सामाजिक अन्याय के खिलाफ चेतना जागृत की। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' जातिगत अपमान और संघर्ष को व्यक्त करती है,

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

जो इस आंदोलन की सशक्त अभिव्यक्ति है (वाल्मीकि, जूठन, पृष्ठ ३८)। इसी प्रकार, शरणकुमारलिंबाले ने 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' मेंलिखाहै– "दलित साहित्य अन्याय के विरुद्ध विद्रोह का साहित्य है, जो केवल अतीत की व्यथा नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण का भीदस्तावेज़है।" (लिंबाले, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृष्ठ९२)। इस प्रकार, दलित साहित्य ने दलित आंदोलन को वैचारिक बल प्रदान किया और सामाजिक क्रांति की दिशा मेंइसे एक ठोस आधार दिया।

५. दलित साहित्य और आधुनिक संदर्भ-

दलित साहित्य केवल ऐतिहासिक अन्याय और उत्पीड़न की अभिव्यक्ति तक सीमित नहींहै, बल्कियह आधुनिक समाज में सामाजिक न्याय, समानता और समावेशिता की प्रासंगिकताकोभी उजागर करता है। समकालीन समय में दलित साहित्य उनमुद्दोंकोसंबोधित करता है जो आज भी दलित समुदाय के लिएचुनौती बने हुएहैं, जैसे– शिक्षा में भेदभाव, रोजगार मेंअसमानता, राजनीतिकहाशिएकरण और सांस्कृतिक पहचान का संकट। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने कहाथा– "जहां सामाजिक समानता नहीं होती, वहां स्वतंत्रता केवल नाममात्र की होती है।" (आंबेडकर, द अनटचेबल्स: हूवेयर दे एंडव्हाई दे बिकेमअनटचेबल्स, उत्कृष्ट क्रमांक १४५)। यह कथन स्पष्ट करता है कि आधुनिक युग मेंभी सामाजिक समानता की लड़ाई जारी है, और दलित साहित्य इस संघर्ष कोप्रतिबिंबितकरने का एक प्रभावी माध्यम बना हुआहै। आधुनिक दलित साहित्यकारों ने अपने लेखन में समकालीन राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियोंको स्थान दियाहै। ओमप्रकाश वाल्मीकि, शरणकुमारलिंबाले, जयप्रकाश कर्दम, तुलसीराम और अन्य लेखकों ने अपने साहित्य में दलित जीवन के यथार्थ कोउकेराहै। उदाहरण के लिए, तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' दलितों के जीवन संघर्ष और शिक्षा के प्रति उनकीजिजीविषाकोदर्शातीहै (तुलसीराम, मुर्दहिया, उत्कृष्ट क्रमांक २१०)। वहीं, शरणकुमारलिंबालेलिखतेहैं– "दलित साहित्य केवल वर्णन नहीं, बल्कि समाज कोबदलने का एक आंदोलन है।" (लिंबाले, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, उत्कृष्ट क्रमांक ७८)। यह स्पष्ट करता है कि दलित साहित्य आधुनिक संदर्भ में न केवल एक साहित्यिक धारा है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और न्याय की दिशा में एक सक्रिय हस्तक्षेप भीहै।

६. दलित साहित्य में महिला दृष्टिकोण-

दलित साहित्य में दलित महिलाओं का दृष्टिकोण विशेष महत्व रखताहैक्योंकि वे जाति और पितृसत्ता, दोनों के दोहरे शोषण का सामना करती हैं। दलित महिला लेखन मुख्यधारा के नारीवादी साहित्य से भिन्न है, क्योंकिइसमें न केवल लैंगिक भेदभाव, बल्किजातिगत अत्याचार और सामाजिक बहिष्करण की भी प्रखर अभिव्यक्ति होती है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने कहाथा– "किसी समाज की प्रगति का आकलन वहां की महिलाओं की स्थितिसेकिया जा सकताहै।" (आंबेडकर, थॉट्स ऑन लिंग्विस्टिकस्टेट्स, पृष्ठ ४५)। यह कथन दलित महिलाओं की स्थितिकोसुधारने की आवश्यकता कोरेखांकित करता है, जिसे दलित महिला साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से उजागर कियाहै।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

दलित महिला साहित्यकारोंजैसेबबीता, कौसल्याबैसंत्री, उर्मिला पवार और शांताबाईकांबले ने अपनेआत्मकथात्मक और कथा-साहित्य में दलित महिलाओं के संघर्ष को केंद्र में रखा है। कौसल्याबैसंत्री की आत्मकथा "दोहरा अभिशाप" दलित महिलाओं के शोषण और सामाजिक असमानता का जीवंत चित्रण करती है (बैसंत्री, दोहरा अभिशाप, पृष्ठ ११२)। इसीतरह, उर्मिला पवार लिखतीहैं– "दलित महिला होना केवल जाति का सवाल नहीं, यह अस्तित्व की लड़ाईभीहै।" (पवार, आयदान, पृष्ठ ८९)। यह स्पष्ट करता है कि दलित साहित्य में महिला दृष्टिकोण केवल दलित समुदाय की पीड़ा का हिस्सा नहींहै, बल्कियह एक स्वतंत्र विमर्श के रूप मेंउभरकर सामाजिक परिवर्तन की दिशा मेंमहत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

- दलित महिलाओं के संघर्ष कोदर्शाने वाली आत्मकथाएँ जैसे' शिखरिणी' और 'मूलमंत्र'।
- महिलाओं पर जातिगत और लैंगिक शोषण की दोहरी मार।

७. राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संविधान-

राष्ट्रीय चेतना किसीभी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिकमूल्यों का प्रतिबिंब होती है, और भारतीय संविधान इसे सशक्त करने का प्रमुख दस्तावेजहै। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ, जिसने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतोंकोअपनाने की प्रेरणा दी। संविधान निर्माता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने इसे स्पष्ट करते हुएकहाथा– "संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेजनहींहै, बल्कियह राष्ट्रीय जीवन का एक सामाजिक एवं नैतिक अभिव्यक्ति है।" (आंबेडकर, संविधान सभा वाचन, पृष्ठ ६२)। संविधान के मौलिक अधिकार और नीति निर्देशक सिद्धांत राष्ट्रीय चेतना को सशक्त बनातेहैं, जिससे हर नागरिक को समान अवसर और गरिमा प्राप्त हो सके।

भारतीय संविधान जाति, धर्म, लिंग और भाषा के आधार पर भेदभाव को समाप्त कर समतामूलक समाज की नींवरखताहै। इसमेंउल्लिखितअनुच्छेद१४ (समानता का अधिकार), अनुच्छेद१९ (स्वतंत्रता का अधिकार) और अनुच्छेद२१ (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) राष्ट्रीय चेतना कोलोकतांत्रिकमूल्योंसेजोड़तेहैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संविधान को राष्ट्र की आत्मा बताते हुएकहाथा– "हमारा संविधान केवल एक दस्तावेजनहीं, बल्कियहहमारे राष्ट्र की आकांक्षाओं और आदर्शों का प्रतीक है।" (नेहरू, डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृष्ठ २१५)। यह स्पष्ट करता है कि भारतीय संविधान न केवल विधिक शासन का आधार है, बल्कियह राष्ट्रीय चेतना को समानता, न्याय और स्वतंत्रता के सिद्धांतों पर आगेबढ़ाने का माध्यम भीहै।

८. दलित साहित्य का वैश्विक परिप्रेक्ष्य-

अफ्रीकी-अमेरिकी साहित्य और हिंदी दलित साहित्य मेंसमानताएँ।दलित साहित्य का उदय भारतीय समाज में सामाजिक अन्याय और भेदभाव के खिलाफ साहित्यिक प्रतिरोध के रूप मेंहुआहै। यह साहित्य न केवल दलित समाज की व्यथा, संघर्ष और अस्मिता को उजागर करता है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बनता है। नामदेव ढसाल, ओमप्रकाश वाल्मीकि, शरणकुमार लिंबाले और सुशीला टाकभौरे जैसी साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से दलित चेतना को सशक्त कियाहै। *ओमप्रकाश वाल्मीकि*

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

अपनी आत्मकथा 'जूठन' मेंलिखतेहैं– "हमारेलिएस्कूल का आंगनभीप्रतिबंधितथा, वहांबैठने की जगहगोबरसेलीपी जाती थी। हम छू लें तो पंडितों के लड़के हाय-हाय कर उठते।" (वाल्मीकि, १९९७, पृष्ठ १२)। यहउद्धरण स्पष्ट करता है कि दलित समाज किस प्रकार शैक्षिक और सामाजिक भेदभाव का शिकार रहा है। दलित साहित्य का वैश्विक परिप्रेक्ष्यभीमहत्वपूर्णहै, क्योंकियह केवल भारत तक सीमित नहींहै, बल्कि दुनिया भर मेंहाशिए के समाजों की पीड़ाको अभिव्यक्त करता है। अफ्रीकी-अमेरिकी साहित्य में जेम्स बाल्डविन और टोनी मॉरिसन ने नस्लीय भेदभाव को उजागर किया, जो दलित साहित्य के उद्देश्योंसे मेल खाता है। शरणकुमारलिंबालेअपनी पुस्तक 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' में लिखते हैं– "दलित साहित्य सिर्फ साहित्य नहीं, बल्कि सामाजिक आंदोलन है जो समानता और न्याय की मांग करता है।" (लिंबाले, २००४, पृष्ठ ८५)। इससे स्पष्ट होता है कि दलित साहित्य सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया मेंउत्पीड़ितसमाजों की आवाज़को बुलंद करता है।दलित साहित्य की अंतरराष्ट्रीय पहचान।

उपसंहार

हिंदी दलित साहित्य केवल उत्पीड़न का चित्रण नहीं करता, बल्कियह सामाजिक चेतना और बदलाव की प्रेरणा भी देता है। राष्ट्रीय चेतना इसमें एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करता है और सामाजिक न्याय की अवधारणा कोबढ़ावा देता है। दलित साहित्य ने हाशिए के समाज कोअपनी आवाज देने का कार्य कियाहै, जो राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया मेंमहत्वपूर्ण भूमिका निभाताहै। यह साहित्य केवल वर्ण-व्यवस्था के खिलाफनहीं, बल्कि समानता और स्वतंत्रता के आदर्शोंको स्थापित करने की दिशा में कार्यरत है।

संदर्भ सूची-

१. अंबेडकर, बी. आर. (१९४५)।जाति का उच्छेद। मुंबई: शिक्षा प्रकाशन। पृ.१०२।
२. वाल्मीकि, ओमप्रकाश (१९९७)।जूठन। राजकमल प्रकाशन। पृ.२१०।
३. लिंबाले, शरणकुमार (२००३)।अक्करमाशी। अनु. सुरेश कुमार। पृ.१८०।
४. प्रेमचंद, मुंशी (१९३६)।सद्गति और अन्य कहानियाँ।लोकभारती प्रकाशन। पृ.७५।
५. कंवल भारती (२०१८)।दलित साहित्य की भूमिका। वाणी प्रकाशन। पृ.१४५।
६. जयप्रकाश कर्दम (२०१५)।दलित चेतना और साहित्य। साहित्य भवन। पृ.२२०।
७. दुष्यंत कुमार. (१९७५)।सायेमें धूप। राजकमल प्रकाशन। पृ.१३५।
८. नागराज, डी. आर. (१९९३)।द फ्लेमिंग फीटएंडअदरएसेज। पेंग्विन इंडिया। पृ.१९०।
९. इलैय्या, कांचा. (२००९)।व्हाई आई एम नॉट अ हिंदू। सम्यक प्रकाशन। पृ.२५०।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३६. राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता

प्रा. डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे
शोध निर्देशक एवं असोशिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा

शोध भुमिका:

भारतवर्ष लगभग हजार साल तक दूसरों की गुलामी में रहा। इस गुलामी की परंपरा में शक, हुण, डच, फ्रेंच, पोर्तुगीज, मुगल और ब्रिटिश आक्रांताओ ने किसी न किसी रूप में सत्ता संघर्ष कर अपनी षड्यंत्रकारी नीतियों के आधार पर खंडप्रायः भारतवर्ष को गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर राज सत्ता स्थापित कर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मानसिक एवं शारीरिक शोषण करने का भरसक कार्य किया। इन विदेशी आक्रमणकारियों का भारतीय राज सिंहासन पर आरूढ़ होने के पीछे जनमानस में प्रचलित अज्ञानता, अपढ़ता, अंधविश्वास, रूढ़ि-प्रथा-परंपरा, विभिन्न कर्मकांड, सामाजिक एकता का अभाव, वर्ण व्यवस्था पद्धति का प्रचलन, ऊंच-नीचता, श्रेष्ठ-कनिष्ठता तथा विभिन्न रियासतों में बंटे हुए राजा-महाराजाओं में एकता, अखंडता, राष्ट्रीयता तथा देशप्रेम का अभाव आदि प्रबल और प्रमुख कारण रहे हैं।

गुलामी की परंपरा में ब्रिटिश आक्रमणकारियों ने सन १७ वी शताब्दी में भारत में अपने साम्राज्यवाद की नींव रखी। धीरे-धीरे दमन, षड्यंत्र एवं बंटवारे की अभद्र राजनीति कर भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी, पूरब से पश्चिम तक आपने साम्राज्यवाद की जड़ों को मजबूत कर पूर्ववर्ती शासनकाल की अपेक्षा कई गुना अधिक भारत को क्षतिग्रस्त किया। भले ही एक और अंग्रेजी शासन ने भारत में न्याय प्रणाली, पत्राचार, यातायात एवं शिक्षा दीक्षा के क्षेत्र में विकासोन्मुख कार्य किया हो पर दूसरी ओर भारतीय जनमानस को कारकुनी शिक्षा देकर उपयुक्त मनुष्य बल तैयार कर आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, मानसिक एवं शारीरिक शोषण कर भारतवर्ष को खोखला करने का निरंतर प्रयास करते रहे। देश को सभी दृष्टियों से अंदर से खोखला करनेवाली शोषणमुलक राज सत्ता में परिवर्तन लाकर स्वशासन स्थापन करने हेतु तथा गुलामी के बंधन को तोड़ कर उन्मुक्त होने की कामना ने सन १८५७ में क्रांति की नई जमीन को खोज निकाला। इस क्रांति महायज्ञ में प्रथम आहुति देने वाले मंगल पांडे ने ८ अप्रैल १८५७ को अपनी शहादत से स्वतंत्रता का प्रथम दीप जलाया।

तदनंतर सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले समाज सुधारक, विभिन्न संस्थाएं ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी तथा अरविंद दर्शन एवं राजनीति के क्षेत्र में डॉ. ह्युम द्वारा सन १८८५ में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नरम एवं गरम दल के सभी सक्रिय नेता और अपनी कलम के जरिए तमाम जनमानस को एकता के सूत्र में पिरोकर उनकी अंतश्चेतना में राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम की भावना को जागृत करने वाले राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों और साहित्यकारों ने अपनी अहम

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भूमिका निभाई। स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में जहां एक ओर महात्मा गांधी सत्य, अहिंसा व शांति आदि अमोघ साधनों का आश्रय ले रहे थे, वहां दूसरी ओर उसके समानांतर एक क्रांतिकारी सशक्त विचारधारा भी पर्याप्त सक्रिय थी। खुदीराम बोस, वीर सावरकर, महेंद्र प्रताप, भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद, अरविंद घोष, योगेश चटर्जी तथा सुभाष बंद्र बोस आदि नेताओं, क्रांतिकारी उपायों और आजाद हिंद फौज के गठन से अंग्रेजी सरकार के सामने एक सफल चुनौती खड़ी कर दी थी। इस प्रकार इन क्रांतिकारी प्रयासों के परोक्ष रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में गांधीवाद की निश्चित रूप से सहयोग दिया।

बीज शब्द : राष्ट्रीय, चेतना, स्वर्णिम, जन्मभूमि के प्रति प्रेम, आंदोलन, क्रूर, प्रहार, संग्राम, साम्राज्यवाद, पराधीन

राष्ट्रीय चेतना' की अवधारणा इस देश को आधुनिक काल में प्राप्त हुई है। अर्थात् 1850 के बाद। इसके पूर्व संपूर्ण भारत को एक राष्ट्र मानकर उसके प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करने की परंपरा का यहाँ पूर्णतः अभाव था। राष्ट्रीय काव्यधारा का एक अर्थ वीर रस की कविता से लिया जाता है। परंतु यह अर्थ भी बड़ा ही सीमित है। हिंदी के आदिकालीन साहित्य में इसकी रचनाएँ मिलती हैं। इन रचनाओ में वीरोत्तेजक भावनाएँ, स्वामी भक्ति, भूमि-प्रेम, राजपूती गौरव, खानदानी परंपरा, उसके प्रति मर मिटने की भावना व्यक्त हुई है। परंतु राष्ट्रीय भावना का अभाव है। आश्रयदाताके शौर्य की प्रशंसा करना उन कवियों का उद्देश्य था ।

भक्तिकाल और रीतिकाल में भी राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं हुई है। अपवाद रूप में भूषण, लाल, चंद्रशेखर, और जोधराज के नाम लिए जा सकते है । परंतु इन कवियों की राष्ट्रीयता किसी जाति या धर्म के दायरे में फँसी हुई थी ।

हिंदी में राष्ट्रीय काव्यधारा की शुरुवात भारतेंदु से हो जाती है। भारतेंदु की कविता में पहली बार राष्ट्र विषयक विविध समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। जन्मभूमि के प्रति प्रेम, स्वर्णिम अतीत, प्रकृति, प्रेम, विदेशी शासन की निंदा, सामजिक सुधार का आग्रह, वीर-पुरुषो, नेताओं की स्तुति, किसान मजदुरों का चित्रण, समता, बंधुता का आग्रह आदि कई छटाएँ राष्ट्रीयता की हो सकती हैं। द्विवेदी युग मे राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर की कविताएँ मिलती हैं। द्विवेदी काल से लेकर सन् 1947 तक अनेक महान प्रतिभाएँ इस क्षेत्र में कार्य कर रही थी।

राष्ट्रीयता की भावना तथा स्वाधीनता आंदोलन की धार तीव्र करने का कार्य हिंदी कविता में भारतेंदु के समय से ही प्रारंभ हो गई थी भारतेंदु की कविता में विदेशी शासन के प्रति रोष देखने को मिलता है-

"अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी ।
पै धन विदेश चलि जात यहै अति ख्वारी।।"

देश को राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक अधःपतन को देखकर इन्होंने अतीत का गौरव गान करके उसके उन्नयन की चेष्टा की। इनकी देश भक्ति में किसी भी प्रकार की चाटुकारिता नहीं बल्कि, देश की दशा का मार्मिक प्रस्तुतीकरण कर स्वाधीनता आंदोलन हेतु लोगों को जागृत करने की भावना विद्यमान है-

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

"भीतर-भीतर सबरस चूसे,
बाहर से सब तन मन मुसे
जाहिर बातन में अति तेज,
क्यों सखी! साजन नहीं अंगरेज।"

इनकी कविता में विदेशी वस्तुओं के व्यवहार पर क्षोभ प्रकट किया गया है। देश की जागृति के लिए इश से बार-बार वंदना की है।

राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम की भावना से युक्त काव्य परंपरा में जयशंकर प्रसाद का 'हिमाद्रि तुङ्गश्रृंग' से यह गीत राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। स्वतंत्रता संग्राम के समय मातृभूमि को वीर और साहसी जवानों की आवश्यकता थी। हिमालय पर्वत भारत भूमि के लिए अटल विश्वास और दृढ़ता का परिचायक है। उससे प्रेरणा लेकर कवि देश के स्वतंत्रता प्रेमी नागरिकों को ललकारते हुए कहता है-

"हिमाद्री तुङ्गश्रृंग' से,प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्जला,स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पथ है, बड़े चलो बढ़े चलो।"

इस तरह देश की स्वतंत्रता की पुकार कवि कोटि-कोटि जन तक पहु ंचाना चाहता है। कवि का यह विश्वास है कि, राष्ट्रीय संग्राम में योगदान से ही युवकों को असंख्य कीर्ति और यश प्राप्त हो सकता है। वे ही युवक मातृभूमि के सपूत है, जो शुर-बीरता व साहस का परिचय देते हुए संग्राम में आगे बढ़ते जाते हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिनिधि और 'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्त अपनी राष्ट्रीय रचनाओं के कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय अत्यंत लोकप्रिय रहे। उनकी 'भारत-भारती' संपूर्ण भारतवर्ष में गूंज उठी थी। उन्होंने जहां स्वतंत्रता आंदोलन में व्यक्तिगत रूप में भाग लिया वहीं अपनी रचनाओं से देश प्रेम की भावनाओं का प्रचार-प्रसार कर देश की आजादी हेतु जनमानस को चिंतन के लिए बाधित किया है जैसे-

"हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ बिचारे आज मिलकर यह समस्याएं सभी।"

मैथिलीशरण का यह वाहन ही साम्राज्यवाद की जड़े हिलाने के लिए पर्याप्त था। मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर गांधीवाद का गहरा प्रभाव रहा है। गांधी जी के सत्य, अहिंसा और शांतियुक्त आंदोलनों ने किस प्रकार अंग्रेज शासन को अस्थिर कर दिया इस बात को अभिव्यक्ति देते हुए राष्ट्रकवि लिखते हैं-

" अस्थिर किया टोपवालों को गांधी टोपी वालों ने,
शस्त्र बिना संग्राम किया इन माई के लालों ने।"

इस प्रकार उनकी अनेक प्रेरक कविताओं ने अनेक भारतीयों को बलि पथ पर अग्रसर किया। स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में रामधारी सिंह दिनकर की 'हुंकार', 'रेणुका', 'विपथगा' काव्य संग्रहों में साम्राज्यवाद

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

और ब्रिटिश राज्य के प्रति अपनी प्रखर ध्वंसात्मक दृष्टि का परिचय देते हुए क्रांति के स्वरों का आवाहन किया है। 'कुरुक्षेत्र' में तो कवि पराधीनता के प्रति प्रबल विद्रोह के साथ इसमें पौरुष अपनी भीषणता और भयंकरता के साथ गरजा है-

"उठी-उठो कुरीतियों की राह तुम रोक दो,
बड़ो- बड़ो की आग में गुलामियों को झोंक दो।"

स्वाधीनता आंदोलन को पुष्ट करनेवाली कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी 'त्रिधारा', 'मुकुल की राखी', 'झांसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो बसंत' आदि कविताओं में राष्ट्रीयता के तीक्ष्ण भावों की अभिव्यक्ति की है। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका दर्ज करने के साथ-साथ कई बार जेल में भी गई उनकी 'झांसी की रानी' कविता में प्रखर राष्ट्रीयता की भावना को मुखर अभिव्यक्ति मिली है-

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।"

इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविता 'झांसी की रानी' के माध्यम से देश की आत्मा को झकझोर कर रख दिया था। सोहनलाल द्विवेदी ने भारत के आजादी के गीतों का मुक्तकंठ से गायन किया। राणा प्रताप के प्रति, आजादी के फूलों पर जय-जय, तैयार रहो, मातृपूजा, युग की पुकार, देश के जागरण गान, वासवदत्ता, कुणाल तथा युगधारा आदि रचनाओं में स्वतंत्र साधना के उच्च स्वर सुनाई देते हैं-

"कब तक क्रूर प्रहार सहोगे?
कब तक अत्याचार सहोगे?
कब तक हाहाकार सहोगे?"
उठो राष्ट्र के अभिमानी सावधान मेरे सेनानी।"

आजादी को लेकर देश में व्याप्त उथल-पुथल को हिंदी कवियों ने अपनी कविता का विषय बना कर साहित्य के क्षेत्र में दोहरे दायित्व का निर्वहन किया। स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक भिन्न-भिन्न चरणों में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कविताओं की कोख में स्वतंत्र चेतना का विकास होता रहा। इसी स्वतंत्र चेतना को मुखरित करने में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' राष्ट्रीय चिंतन धारा के अत्यंत प्रभावशाली कवि रहे हैं। राष्ट्रीयता, क्रांति, विद्रोह आदि आपकी कविता के मूल स्वर रहे हैं। 'विप्लवगान' शीर्षक कविता में कवि की क्रांतिकामना मूर्तिमान हो उठी है-

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए:
प्राणों के लाले पड़ जाए, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए;
नाश और सत्यानाश का धुआंधार जग में छा जाए।"

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

पराधीन देश के कवि के मन में व्यवस्था के प्रति विद्रोह है। इसीलिए कविता के माध्यम से विनाश लीला देखने के रूप में वह अपने अंत:करण का आक्रोश व्यक्त कर रहा है।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के इस कठिन काल में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय काव्यधारा के बड़े कवि के रूप में सामने आते हैं। उनकी हिमकिरीटनी, हिम तरंगिणी, माता, युगचरण, समर्पण आदि काव्य कृतियां राष्ट्रीय भाव छाया से आप्लावित है। 'पुष्प की अभिलाषा', कविता में वे पुष्प के माध्यम से देश को आत्मोत्सर्ग का मार्ग समझाते हुए कहते हैं -

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जावे वीर अनेक।"

उक्त स्वाधीनता आंदोलन के राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों के अलावा रामनरेश त्रिपाठी, श्याम नारायण पांडे, कविवर शंकर, सियारामशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, गया प्रसाद शुक्ल नेही, अज्ञेय, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन की धार को तीव्रता प्रदान करने का कार्य किया है। इन कवियों और उनकी उत्प्रेरक कविताओं के संदर्भ में अच्युतानंद मिश्र एक स्थान पर लिखते हैं "मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी या सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय नवजागरण के उत्प्रेरक ऐसे कवियों के नाम है, जिन्होंने अपने संकल्प और चिंतन, त्याग और बलिदान के सहारे राष्ट्रीयता की अलख जगाकर अपने पूरे युग को आंदोलित किया था, गांधीजी के पीछे देश की तरुणाई को खड़ा कर दिया था।"

निष्कर्ष : अंततोगत्वा यह कहा जा सकता है कि, स्वतंत्रता आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास के साथ हिंदी कविता और कवियों के राष्ट्रीय रिश्ते मजबूत हुए। राजनीतिक घटनाक्रम में कवियों के तेवर बदलते रहे और कविता की धार भी तेज होती गई। स्वाधीनता आंदोलन के हर पड़ाव पर हिंदी कवियों ने जनमानस के हृदय में देश-प्रेम, राष्ट्रीयता, विद्रोह और क्रांति का अलख जगाते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति तक संघर्षों से जूझते रहे। परिणामत: देश को स्वाधीनता का सूरज देखने को मिला।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. डॉ. चातक प्रो. राजकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य का इतिहास- कॉलेज बुक डिपो, नई दिल्ली
२. डॉ शिवकुमार शर्मा,हिंदी साहित्य युग और प्रवृतिया अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली -
३. डॉ अर्जुन शतपथी, मधुसूदन साहा, राष्ट्रीय चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त संपादक, नई दिल्ली - ३२.
४ डॉ राधा गिरधारी डॉ. त्र्यंबक देशपांडे ,काव्य रचना - समन्वयक संपादक
५. संपा. डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे , आधुनिक काव्य: सृष्टि तथा दृष्टि, विद्याभारती प्रकाशन लातूर -1998
६. https://hindi.webduniya.com
७. https://bharatdarshan.co.nz

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३७. छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना: एक अवलोकन

प्रा. डॉ. आर. एस. पवार
अध्यक्ष हिंदी विभाग, जयक्रांती कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

शोध सारांश :
छायावादी कविता दो महायुद्धों के बीच की कविता है। छायावाद का कालखंड १९१८ से १९३६ तक माना जाता है। वैयक्तिकता, मानवतावाद, प्रकृति चित्रण, कल्पना की अधिकता, रहस्यवादी स्वर, वेदना, निराशा, सौंदर्य बोध, संगीतात्मकता इस युगीन काव्य की विशेषताएं रही है। "डॉ. नगेंद्र ने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहां है। यह विद्रोह भाव तथा शैली दोनों स्तरों पर है। इन चार महानुभावों को छायावाद की चौकड़ी कहा जाता है। ये चारों छायावादी काव्य के प्रतिनिधि कवि है।" प्रसाद यदि छायावादी युग के ब्रह्मा, पंत विष्णु तो निराला जी उसके शिव शंकर, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा एवं माखनलाल चतुर्वेदी छायावाद की लघुत्रयी के अंतर्गत आते हैं। प्रसाद की राष्ट्रीयता मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर और माखनलाल चतुर्वेदी से भले ही भिन्न हो, लेकिन उनकी कविता में राष्ट्रीय चेतना का गहरा स्वर विद्यमान है। हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय चेतना से युक्त कविता के क्षेत्र में छायावादी कवि निराला ने गुरु की भूमिका अदा की है। निराला एक युगपुरुष के रूप में देखे जाते हैं। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के उभार का समय हिंदी साहित्य में हिंदी साहित्य में कवि निराला का अभ्युदय काल भी है। १९२० से १९४७ तक स्वाधीनता प्राप्ति की आकांक्षा उनके साहित्य की मौलिक प्रेरणा रही है। महादेवी वर्मा, छायावादी कवियों में एकमात्र महिला स्तंभ है, उनकी कविता में भले ही स्पष्ट राष्ट्रवाद की झलक नहीं, परंतु उनकी काव्य में अध्यात्म के सूक्ष्म तत्वों का चित्रण भारत की संस्कृति और अस्तित्व के संघर्ष से जुड़ा हुआ था।

बीज शब्द :- (छायावाद, रहस्यवाद, स्थूल, सूक्ष्म, चौकड़ी राष्ट्रीय चेतना, अध्यात्म, राष्ट्रवाद, मानवतावाद, संगीतात्मकता आदि)

भूमिका:
छायावादी कविता दो महायुद्धों के बीच की कविता है। छायावाद का कालखंड १९१८ से १९३६ तक माना जाता है। वैयक्तिकता, मानवतावाद, प्रकृति चित्रण, कल्पना की अधिकता, रहस्यवादी स्वर, वेदना, निराशा, सौंदर्य बोध, संगीतात्मकता इस युगीन काव्य की विशेषताएं रही है। छायावादी काव्य में प्रकृति के माध्यम से परम तत्त्व की प्राप्ति का आध्यात्मिक प्रयास भी दिखाई देता है। छायावादी कविता का मूल स्वर व्यक्तिवादी रहा है। राष्ट्रीयता की भावना भी छायावादी कवियों की कविता में विद्यमान रही है। छायावादी कविता कवि की अनुभूति का परिपाक है। साथही इस कविता में कल्पना की ऊंची उड़ान भी पाई जाती है। यही कारण है कि छायावादी काव्य इतना भाव प्रवण तथा रंगीन बन पड़ा है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने ठिकही कहा

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

था, " इस छायावाद के हम पंडित रामचंद्र शुक्ल के कथनानुसार केवल अभिव्यक्ति की एक लाक्षणीक प्रणाली विशेष नहीं मान सकेंगे। इसमें एक नूतन संस्कृतीक मनोभावना का उद्म है और एक स्वतंत्र दर्शन की नियोजना भी।"' आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद को परिभाषित करते हुए लिखा है," मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौंदर्य को आध्यात्मिक छाया का भाव मेरे विचार से छाया का सर्व सामान्य व्याख्या हो सकती है। "डॉ. नगेंद्र ने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहां है। यह विद्रोह भाव तथा शैली दोनों स्तरों पर है। छायावादी काव्य को आधुनिक युग का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस युग को स्वर्ण युग बनाने वाले चार प्रमुख कवि रहे हैं। इसमें विशेष कर जयशंकर प्रसाद, सुमीत्रा नंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला तथा महादेवी वर्मा का नाम लिया जाता है। इन चार महानुभावों को छायावाद की चौकड़ी कहा जाता है। ये चारों छायावादी काव्य के प्रतिनिधि कवि है।" प्रसाद यदि छायावादी युग के ब्रह्मा, पंत विष्णु तो निराला जी उसके शिव शंकर, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा एवं माखनलाल चतुर्वेदी छायावाद की लघुत्रयी के अंतर्गत आते हैं। छायावाद के महासागर में और भी अनेक नदी तथा नदी ने योगदान दिया। जिसमें भगवती चरण वर्मा, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, एवं रामनरेश त्रिपाठी आदि का नाम उल्लेखनीय है।"२

छायावादी काल भारतीय जीवन के लिए विषम संघर्ष का समय था। देश साम्राज्यवादियों के चंगुल में फंसा हुआ था। अंग्रेजों का उद्देश्य केवल भारतवासियों का शोषण करना था। यह कारण था कि उनके प्रति भारतियों के मन में आक्रोश था। यह आक्रोश धीरे-धीरे बढ़ता हुआ स्वाधीनता संग्राम के रूप में फूट पड़ा और महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी का संघर्ष एक नए रूप में अहिंसा और सत्य पर आधारित सहयोग के रूप में हमारे सामने आया। अनेकों कवियों ने जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा दी। अपनी कविताओं के माध्यम से इन कवियों ने भारतीयों के मन में राष्ट्रीय चेतना को जगाने का काम किया है।

छायावादी कवि प्रसाद की महत्वपूर्ण काव्य-कृति के रूप में 'लहर' को जाना जाता है। इस काव्य कृति में 'आंखों में अल जगाने को' यह कौन भैरवी आई है', बीती विभावरी जागरी, 'अब जागो जीवन के प्रभात', 'जगती की मंगलमय उषा बन', 'करुणा उसे दिन आयी थी।' ये चार कविताएं है जो उद्बोधन का काम करती है। इन चार कविताओं में मानव को प्रेरित किया गया है। अज्ञान, कायरता, दुःख और वेदना की रात्रि का समापन है और ज्ञान, निडरता सुख और मिलन की उषा का उदय है। वस्तुतः प्रसाद की इन कविताओं को संस्कृतिक उदबोधन के रूप में लिया जाना चाहिए। 'लहर' काव्यग्रंथ की लंबी कविता' पेशोला की प्रतिध्वनि में प्रसाद ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली प्रसंग का स्मरण करके तत्कालीन आधुनिक गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारत की दयनीय स्थिति पर शोक प्रकट किया है। महाराणा प्रताप की जन्मभूमि उदयपुर में स्थित पेशोला झील को देखकर कवी प्रसाद का हृदय रो उठता है। उस झील से प्रसाद जी को सुनाई पड़ती है कि गुलाम भारत में कोई महाराणा प्रताप जैसा वीर नहीं है। जो अपने शौर्य, पराक्रम, साहस, वीरता, धैर्य एवं स्वाभिमान से देश को स्वतंत्र कर सके। यह कविता भारतीयों में देशभक्ति और राष्ट्रीयता

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

की अलख जगाने वाली है। स्वदेश प्रेम, त्याग, बलिदान एवं कर्तव्यपरायणता को जागृत करने वाली है। इस कविता को हम आज भी प्रासंगिक मान सकते हैं। कवि कविता में लिखता हैं-

" कौन लेगा भार यह? जीवित है कौन?
साँस चलती है जिसकी, कहता है कौन ऊंची छाती कर।
मैं हूं, मैं हूं मेवाड़ में ?

प्रसाद की राष्ट्रीयता मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर और माखनलाल चतुर्वेदी से भले ही भिन्न हो, लेकिन उनकी कविता में राष्ट्रीय चेतना का गहरा स्वर विद्यमान है। वे प्रकृति और प्रेम को माध्यम बनाकर जनता को जागृत करते हैं। उनकी कविता' बीती विभावरी जागरी' मैं प्रकृति का सहारा लेकर आलस्य और निष्क्रियता को त्यागने का आवाहन किया गया है। यह कविता एक प्रकार का सांकेतिक संदेश है। कवी राष्ट्रीय चेतना को जगाते हुए लिखता है-

" बीती विभावरी जागरी।
अंबर पनघट में डुबो रही, तारा- घट उषा नागरी।
खग-कल-कल-कल-सा बोल रहा.
किसल्या का आँचल डोल रहा।
तू अब तक सोयी है आली
आंखों में भरे विहाग री।"

प्रसाद की कविता में राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति प्रतिबद्धता और जनता को जागृत करने का प्रयास स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। छायावाद ने भारतीय साहित्य को एक नई दिशा दी, जिसमें व्यक्तिगत सौंदर्य और सामाजिक चेतना का अनूठा समन्वय देखने को मिलता हैं। छायावादी कवियों का योगदान राष्ट्रीय जागरण की दिशा में महत्वपूर्ण माना जाता है। छायावादी कवियों ने न केवल समाज को जागृत किया, बल्कि जागरूक जनता का मार्गदर्शन भी किया है। प्रसाद ने जागृत जनता को स्वतंत्रता संग्राम में आगे बढ़ाने और विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए अपनी कविता में लिखा है-

" हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो,
दृढ प्रतिज्ञ सोच लो प्रशस्त पुण्य पंथ है-
'बढ़े चलो, बढ़े चलो'
असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
रुको न शूर साहसी

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

सपूत मातृभूमि के -
अराति सैन्य सिंधु में-सुबाडवाग्नी- से जलो
प्रवीर हो जयी-बनो बढे, चलो बड़े चलो।"

इस प्रकार कवि प्रसाद बारंबार देशवासियों को जागृत करते हुए हमारे गौरवमयी अतीत की याद दिलाता है। कवि मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने का आव्हान करता है।

हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय चेतना से युक्त कविता के क्षेत्र में छायावादी कवि निराला ने गुरु की भूमिका अदा की है। निराला एक युगपुरुष के रूप में देखे जाते हैं। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के उभार का समय हिंदी साहित्य में हिंदी साहित्य में कवि निराला का अभ्युदय काल भी है। १९२० से १९४७ तक स्वाधीनता प्राप्ति की आकांक्षा उनके साहित्य की मौलिक प्रेरणा रही है। हिंदी में उनकी पहली प्रकाशित कविता है, " "जन्मभूमि मेरी है जगन्महाराणी" जो स्वाधीन चेतना से युक्त है। देशवासियों की पराधीनता देखकर निराला के मन में अनेक भाव उदय होते हैं। कभी वह आत्मग्लानी से युक्त होते हैं। कभी अतीत का स्मरण करके जनता में राष्ट्रीय आत्म सम्मान का भाव जगाते हैं। रामविलास शर्मा लिखते हैं कि, " निराला की रहस्यवादी रचनाओं में तो ऐसी तन्मयता और भाव -विहलता के दर्शन होते हैं किंतु देश प्रेम पर लिखी हुई कविताओं में भाषण अधिक मार्मिकता कम होती है। निराला के चिंतन में भारत और भारतीय एक दूसरे से अलग नहीं है। इसीलिएउन में राष्ट्रीयता की दृष्टि आलोक और भक्त की विहलता है।" निराला ने अपनी कविता' जागो फिर एक बार' में अपनी राष्ट्रीय चेतना को कुछ इस प्रकार वाणी दी है-

" पशु नहीं, वीर तुम :
समर-शुर, क्रूर नहीं, कालचक्र में हो दबे, आज तुम राजकुँवर समर सरताज !
मुक्त हो सदा ही तुम बाधा विहीन बंध छंद ज्यों, डुबे आनंद में सच्चिदानंद- रूप। महा-मंत्र ऋषियों का अणुओं परमाणुओं में फुंका हुआ, " तुम हो महान तुम सदा हो महान है नश्वर यह दीनभाव कायरता, कामपरता ब्रह्मा हो तुम पदराज भर भी है नहीं पूरा यह विश्वभार जागो फिर एक बार।"

इस प्रकार कविवर निराला भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना को जगाते हैं। निराला ने अपनी कविता 'छत्रपति शिवाजी का पत्र' में शिवाजी के आदर्श चरित्र और ओजवाणी को प्रस्तुत कर प्रेरणा देते हैं। निराला की राष्ट्रीय चिंतन धारा मूलतः मानवतावादी है। उन में व्यष्टी तथा समाष्टि दोनों के लिएमहत्व भाव दिखाई देता है। स्पष्ट रूप से कह तो निराला राष्ट्रकवि होने के साथ-साथ विश्व कवि भी है । अपनी जन्मभूमि के प्रति उनमें अगाध प्रेमभाव है।

प्रसाद और निराला के साथ-साथ पंत के काव्य में भी राष्ट्रीय चेतना को देखा जा सकता है। उनके काव्य में गांधी दर्शन प्रकृति चेतना और समाज चेतना के तत्व विद्यमान है। पंत को विश्वास था कि, भारत को स्वतंत्रता अवश्य मिलेगी। पंत के काव्य में मानवतावाद कुट कुटकर भरा पड़ा नजर आता है। पंत अपनी 'ग्रामवासिनी' कविता में लिखते हैं-

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

" भारत माताग्राम वासिनी खेतों में फैला है श्यामल धूल भरा मैला सा आँचल गंगा जमुना में आँसू जल मिट्टी की प्रतिमा उदासीनी ।"

महादेवी वर्मा, छायावादी कवियों में एकमात्र महिला स्तंभ है, उनकी कविता में भले ही स्पष्ट राष्ट्रवाद की झलक नहीं, परंतु उनकी काव्य में अध्यात्म के सूक्ष्म तत्त्वों का चित्रण भारत की संस्कृति और अस्तित्व के संघर्ष से जुड़ा हुआ था।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कहा जाए तो छायावादी काव्य की आत्मा में राष्ट्रीय चेतना कूट-कूट कर भरी पड़ी है। प्रसाद पंत निराला वर्मा के साथ-साथ अन्य कवियों के काव्य में भी राष्ट्रीय चेतना को देखा जा सकता है। "आधुनिक युग के पुनर्जागरण के आंदोलन के आध्यात्मिक सत्य का जो स्वरूप स्वीकार किया था, वह छायावादी संवेदना का भी अंतरंग मूल्य बन गया है। आध्यात्मिकता सत्य को स्वीकार करते हुए लौकिक यथार्थ के स्थूल और व्यापक सत्य की स्वीकृति विचार की दृष्टि से छायावादी भावबोध की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसीलिये यह काव्य निराशा और अकर्मण्यता के स्थान पर आशा, आत्मविश्वास और कर्मवाद की प्रकृति से युक्त है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ क्र. १४०
२) डॉ. शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ क्र. ४६३
३) प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, निराला समग्र, पृष्ठ क्र. १२९
४) संपादक-डॉ. नरसिंह प्रसाद दुबे, अर्वाचीन हिंदी काव्य, पृष्ठ क्र. ३५,३६
५) डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ क्र. ५४४

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३८. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीयता के स्वर

डॉ. देविदास भीमराव जाधव
हिंदी विभागाध्यक्ष,
पानसरे महाविद्यालय अर्जापुर
तहसील बिलोली, जिला नांदेड़
मो. ७८७५३८३८७२ ईमेल : drdevidasjadhav२@gmail.com

शोध सारांश

राष्ट्रीय चेतना से व्यापक अर्थ का बोध होता है जिसमें राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा, राष्ट्र का गौरव-गान, राष्ट्र का परिवेश, राष्ट्र का उन्मेष और राष्ट्र के प्रति उस देश के नागरिकों की समग्र सोच और अनुभूति समाहित होती है। किसी व्यक्ति का अपने देश के प्रति लगाव, प्रेम और स्वाभिमान तब जागृत होता है ज़ब वह अपनी जाति, वर्ण, धर्म, प्रान्त और भाषा की संकीर्णताओं से उपर उठकर राष्ट्रीयता की भावना क़ो स्पर्श करता है। छोट-छोटे प्रान्त कभी राष्ट्र नहीं बन पाए। वीरों की वीरता का गुणगान करना ही केवल राष्ट्रीयता नहीं अपितु देश की सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक तत्व जैसे-हिमालय, नदियाँ और समंदर आदि के प्रति प्रेमाभिव्यक्ति भी राष्ट्रीयता के मानदंड कहे जा सकते है। राष्ट्रीय चेतना का अर्थ है देश के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना, जो राष्ट्र की एकता, शक्ति और समृद्धि के लिए आवश्यक है। यह चेतना हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग करने, देश के विकास में योगदान करने और राष्ट्र की रक्षा के लिए तैयार रहने में मदद करती है। किसी व्यक्ति का त्याग, सेवा, समर्पण एवं बंधुत्व भाव का अर्पण ही राष्ट्रभक्त की निशानी है। इन विशेषताओं से युक्त देश का एक सामान्य नागरिक, एक वीर योद्धा, एक पत्रकार और साहित्यकार के जहन में राष्ट्रीयता के स्वर क़ो देखा जा सकता है। केवल शस्त्रों से लड़ना ही देशप्रेम नहीं किन्तु कलम से देशवासियों में राष्ट्र के प्रति अपनेपन का भाव जागाना भी देशप्रेम कहलाता है।

बीज शब्द : राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्र की एकता, सेवा और समर्पण, विद्रोह का स्वर, सांस्कृतिक संरक्षण।

प्रस्तावना : राष्ट्रीय चेतना हमें विभिन्न जातियों, धर्मों और भाषाओं के बावजूद एक साथ रहने और एक राष्ट्र के रूप में कार्य करने में मदद करती है। इस दृष्टि से हिंदी कविता में राष्ट्रीयता के स्वर क़ो सहजता से समझा जा सकता है। आधुनिक हिंदी कवियों की कविता में देशप्रेम का भाव भरा पड़ा है। एक भू-भाग के लोगों के समान सामजिक, धार्मिक, भाषिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति ही राष्ट्रीयता की पहचान है। ऐतिहासिक रूप से, राष्ट्रीय चेतना में वृद्धि एक राष्ट्र बनाने की दिशा में पहला कदम रहा है। आधुनिक काल के कवियों की कविता में देशभक्ति, सेवा और समर्पण का भाव अभिव्यक्त हुआ है। आधुनिक युग के प्रथम चरण में बाबू भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने तो देश कि लुट क़ो देखकर चिंता में डूबें हुए है। इस युग के लगभग सभी कवियों ने देशभक्ति पूर्ण रचनाओं का सृजन किया। इस काल के कवियों ने

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

परतंत्रता की गहरी नींद में सोए हुए भारतीयों को जगाने का काम किया तथा राष्ट्रीयता की लहर पूरे देश मे फैलाई। असहयोग स्वतंत्रता आंदोलन आदि को अपने काव्य का विषय बनाकर सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। इस युग के लेखकों की कृतियाँ देश प्रेम की भावना से परिपूर्ण हैं। भारतेंदु जी के स्वदेशी विचारधारा के प्रति टिप्पणी करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं कि-"यह कहना अत्युक्ति न होगी कि हिंदी प्रदेश में स्वदेशी आंदोलन के जन्मदाता और देश के लिए बलिदान का पाठ पढ़ाने वाले भारतेंदु ही थे।"1

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अंग्रेजों द्वारा निरीह भारतीय जनता पर होनेवाले अन्याय एवं लूट-खसोट का उन्होंने विरोध किया। उन्हें इस बात का क्षोभ था कि अंग्रेज यहां से सारी संपत्ति लूटकर विदेश ले जा रहे थे। इस लूटपाट और भारत की बदहाली की ओर संकेत करते हुए उन्होंने लिखा है-

"भीतर भीतर सब रस चुसै, हंसी हंसी के तन मन धन मुसै।
जाहिर बातन में अति तेज ।क्यों सखि साजन नहिं अँग्रेज।"२

द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवाररूपी कलम को पैना किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित किया। 'भारत-भारती' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त 'राष्ट्रकवि' कहलाए, तो वहीं माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान के भाव जागृत किए। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' आदि कविताओं के माध्यम से स्वाधीनताआंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका अदा की। मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने की बात की-

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।"३

मैथिलीशरण गुप्त के बाद राष्ट्रकवि के सम्बोधन से सम्मानित कवि दिनकर की कविता में वीर भाव की प्रधानता रही है। रेणुका, कुरुक्षेत्र, परशुराम की प्रतीक्षा, हुंकार आदी रचनाएं स्वतंत्रता सेनानीयों को बल प्रदान करती है। देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' , सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश' , निराला ने भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे' , कामता प्रसाद गुप्त ने 'प्राण क्या हैं देश के लिए, देश खोकर जो जिए तो क्या जिए' , इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' आदि कविता में आजादी का बिगुल बजा दिया था। कवि शंकर सर्वस्व 'बलिदानगान' कविता में क्रांति का संदेश देते हुए लिखा है-

"देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदीपर करना होगा।"४

महान कवि रामधारी सिंह दिनकर की कविताएं देशप्रेम के भाव और वीर रस से भरी हुई हैं। 'कलम, आज उनकी जय बोल' और 'किसको नमन करूँ मैं भारत' जैसी इनकी रचनाएं देशप्रेम के भाव से भरी हुई

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

हैं। उनकी कई रचनाएं आजादी की लड़ाई के दौरान आम जनमानस के बीच प्रचलित थीं। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन' , रामनरेश त्रिपाठी, राधाचरण गोस्वामी, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही बंकिम चंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत 'वंदे मातरम' गीत आजादी के परवानों को प्रेरित करता है। बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन ने अतीत के पतन का कारण हमारी एकता का अभाव मानते हुए लिखा है -"देशवासियों की फुट, आपसी महाभारत, आलस ,कलह आदि का लाभ उठाकर यवनों ने मंदिर फोड़े थे, मूर्तियां तोड़ी थी और अब अंग्रेजी राज्य में देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ गया था।"5

राष्ट्रीय चेतना के महायज्ञ में अपनी भावनाओं की समिधा अर्पित करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी साहित्य में जागरण की कवयित्री के रूप में जानी जाती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता ने अंग्रेजों को ललकारने का काम किया था। उनका लिखा यह काव्य सिर्फ़ कागज़ी नहीं था, जिस जज़्बे को उन्होंने कागज़ पर उतारा उसे जिया भी। इसका प्रमाण है कि सुभद्रा कुमारी चौहान महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली प्रथम महिला थीं और कई दफ़ा जेल भी गयीं। सुभद्रा जी १७ साल की उम्र में ही गिरफ्तार हुईं और '४२ के आंदोलन में अपने नाटककार पति लक्ष्मण सिंह के साथ जेल गईं। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता को कौन भूल सकता है जिसने अंग्रेजों की चूलें हिलाकर रख दीं। उनकी कविता में देश की उस वीरांगना के लिए ओज था, करूण था, स्मृति थी और श्रद्धा भी। इसी एक कविता से उन्हें हिंदी कविता में प्रसिद्धि मिली और वह साहित्य में अमर हो गयीं।वीर रस की यह कविता स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेरणास्रोत बनी। यह वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है-

"बुन्देले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।"५

'एक भारतीय आत्मा' नाम से मशहूर माखन लाल चतुर्वेदी की कलम ने स्वतंत्रता सेनानियों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना जाग्रत की। माखनलाल चतुर्वेदी स्वाधीनता आंदोलन में दोहरी भूमिका निभाई। एक ओर सत्याग्रह करके जेल चले जाते थे दूसरी ओर अपनी कलम से सनसनी पैदा कर लोगों को प्रेरित करतें हैं। इनकी 'कैदी और कोकिला' स्वतंत्रता सेनानीयों अत्यधिक प्रिय रही। उनके बारे में कहा जाता है कि वे बारह बार जेल गए थे और ६९ बार उनके घर की तलाशी ली गई थी। उनकी प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' से अगली पीढ़ी को भी प्रेरणा मिली थी। 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ–

"मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फ़ेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ जावें वीर अनेक।"६

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

रामनरेश त्रिपाठी ने भी अनेक स्वाधीनतापरक कविओताओं का प्रणयन किया। उन्हें पढ़कर पाठकों के ह्रदय में स्वतंत्रता के प्रति सहज अनुराग हुआ है। 'पथिक' खंड काव्य में परवशता और स्वतंत्रता का प्रतिपादन इस प्रकार किया गया है-

"एक घड़ी भी परवशता, कोटि नरक के सम है
पल पर की भी स्वतंत्रता, सौ स्वर्गों से उत्तम है।"७

जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश।' इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिदुस्तां हमारा' तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' लिखा। इन सबके अलावा बंकिमचंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत गीत 'वंदे मातरम्' ने लोगों की रगों में उबाल ला दिया।प्रणय गीत में देशवासियों को शत्रु का डटकर सामना करने की प्रेरणा दी गई है। भारत के अमर वीरों तथा साहसी युवाओं का आह्वान किया गया है कि वह देश में घुस आए विदेशी शत्रुओं का वीरतापूर्वक सामना करें। महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा प्रस्तुत प्रयाण गीत ने स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा आजादी के दीवानों को दी थी -

"हिमाद्रि तुंगश्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुंज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।"८

बालकृष्ण शर्मा नवीन हिंदी जगत् के कवि, गद्यकार और अद्वितीय वक्ता थे। उन्हें राष्ट्रीय जागरण व प्रेम-विरह का कवि माना जाता है। हिंदी साहित्य में उनका आगमन उस समय हुआ जब भारत में अंग्रेजी राज से आजादी का आंदोलन चल रहा था। इस तत्कालीन स्थिति का उन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। वह सहज रूप से राष्ट्रीय जागरण के प्रति प्रवृत्त हुए तथा आजादी के आंदोलन को उन्होंने अभिप्रेरक आवाज दी।वे स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लेने लगे। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़कर राजनीति के क्षेत्र में आ गए। यहीं से नवीनजी की जेल यात्राओं का अनवरत सिलसिला शुरू हुआ, जो देश की आजादी तक निरंतर चलता रहा। असहयोग आंदोलन के बाद नमक सत्याग्रह, फिर व्यक्तिगत सत्याग्रह और अन्त में 1942 का ऐतिहासिक भारत छोड़ो आंदोलन। इस प्रकार कुल छः जेल यात्राओं में जिन्दगी के नौ साल नवीनजी ने जेल में बिताये। शर्माजी की सर्वश्रेष्ठ रचनाएं इन्हीं जेल यात्राओं के दौरान रची गईं। स्वाधीनता आंदोलन में आग में घी का काम करने वाली कविता -

"कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ,जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए,एक हिलोर उधर से आए।"९

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में हम उन नायकों को भी याद कर रहे हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपने अभूतपूर्व योगदान से हिंदुस्तान को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी दिलाई। स्वतंत्रता आंदोलन की लड़ाई में बहुत से नायक ऐसे थे जिनकी लेखनी ने आंदोलनकारियों को संघर्ष करने की प्रेरणा दी। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की लेखनी ने आजादी की लड़ाई में बड़ा योगदान दिया था। उनके उपन्यास 'आनंदमठ' में लिखे गए गीत 'वन्दे मातरम्' ने देश में आजादी की लड़ाई के दौरान एक ऐसी स्फूर्ति जगाई कि

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

हर देशभक्त की जुबान पर यह गीत नारा बनकर चढ़ गया। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने 'आनंदमठ' उपन्यास अंग्रेजों के विरुद्ध १८ वीं सदी में लंबे समय तक चले 'सन्यासी विद्रोह' के बारे में लिखा था। इस उपन्यास के जरिए उनकी लेखनी ने देश को आजादी की लड़ाई में एक सूत्र में पिरो दिया. आगे चलकर 'वन्दे मातरम्' को आजाद भारत का राष्ट्रगीत बनाया गया। आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारी गतिविधियों के जरिए अंग्रोजों के पसीने छुड़ा देने वाले महान क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी लेखनी से भी आजादी की लड़ाई में रंग भरा दिया था। उनके द्वारा लिखे गए गीत की एक झलक देखिए-

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।"1०

छायावादी कवियों पर यह आरोप लगाया जाता है कि, वे स्वाधीनता आंदोलन को सजग प्रहरी के रूप में नहीं देखा। वे अपनी प्रणय-पीडा से व्याकुल है। वे पराधीनता के अभिशाप से परिचित होते हुए भी प्रकृति, प्रेम, मिलन-बिछोह जैसी नीजी सातों को काव्य का विषय बनाया है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिसे गांधी युग कहा जाता है साहित्यिक दृष्टि से उसे ही छायावादी युग की संज्ञा दी जाती है। तात्पर्य यह है कि छायावादी काव्य गांधी युग की मिट्टी में अंकुरित पुष्पित पल्लवित हुआ । गांधी युग राष्ट्रीय चेतना का उत्कर्ष काल था। उस समय भारतीय जनमानस में राष्ट्रप्रेम का समुद्र हिलोरें मार रहा था। छायावादी काव्य से यह आशा करना स्वाभाविक ही था कि वह अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति करें । नन्ददुलारे वाजपेयी ने आधुनिक साहित्य में कहा है, "केवल राष्ट्रीयता की भावना देश और समाज के सांस्कृतिक जीवन के बहुमुखी पहलुओं का स्पर्श नहीं करती और एक बड़ी सीमा तक एकांगी बनी रहती है। नवयुग के कवियों ने इस तथ्य को समझ लिया था और इसीलिए उनकी रचनाएं 'राष्ट्रीय' न रहकर अधिक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक भूमियों पर पहुंची थीं।" ११

हिंदी साहित्य में दिनकर की पहचान राष्ट्रकवि के रूप में है। उनका साहित्य राष्ट्रीय जागरण व संघर्ष के आह्वान का जीता-जागता दस्तावेज़ है। दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना कई स्तरों पर व्यक्त हुई है। हुंकार, रेणुका, इतिहास के आँसू जैसी कविताओं में दिनकर जी ने विद्रोह और विप्लव के स्वर को उभारा है। इनमें कर्म, उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना का संचार है। यह सब तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति के लिये अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने सामाजिक उत्थान-पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य-सृजन किया है। देश पर जब-जब संकट के बादल घिरते हैं, मानव-जीवन संघर्ष में जूझने लगता है, तब-तब दिनकर की कविता जन-मानस में ऊर्जा का संचार करती रहेगी।

उनकी कविताओं में राष्ट्र की महानता और उसकी शक्ति का संचार होता है। वे अपनी कविताओं में भारत के गौरवशाली अतीत, उसकी संस्कृति और उसकी अनंत क्षमता का चित्रण करते हैं। उनके काव्य में 'राष्ट्र शक्ति' एक प्रेरक शक्ति बनकर उभरती है, जो समाज को जागरूक और संगठित करती है। 'राष्ट्र शक्ति' के रूप में, दिनकर ने काव्य में देशवासियों की आत्मनिर्भरता, संघर्ष और एकता की भावना को

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

प्रमुखता दी। उनका काव्य देशवासियों को यह संदेश देता है कि जब राष्ट्र के लोग एकजुट होते हैं, तो किसी भी बाधा को पार करना संभव है। उन्होंने भारतीय इतिहास में देश की शक्ति को पुनः जागृत किया और उसे एक प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया।

हिंदी साहित्य में दिनकर की पहचान राष्ट्रकवि के रूप में है। उनका साहित्य राष्ट्रीय जागरण व संघर्ष के आह्वान का जीता-जागता दस्तावेज़ है। दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना कई स्तरों पर व्यक्त हुई है। हुंकार, रेणुका, इतिहास के आँसू जैसी कविताओं में दिनकर जी ने विद्रोह और विप्लव के स्वर को उभारा है। इनमें कर्म, उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना का संचार है। यह सब तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति के लिये अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने सामाजिक उत्थान-पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य-सृजन किया है। देश पर जब-जब संकट के बादल घिरते हैं, मानव-जीवन संघर्ष में जूझने लगता है, तब-तब दिनकर की कविता जन-मानस में ऊर्जा का संचार करती रहेगी। समर शेष कविता की पंक्तिया दृष्टव्य है -

" समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो
पथरीली ऊँची जमीन है? तो उसको तोडेंगे
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे
समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर
खण्ड-खण्ड हो गिरे विषमता की काली जंजीर" १२

निष्कर्ष : प्रस्तुत अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, आधुनिक युग के कवियों कि कविता में देश प्रेम, स्वतंत्रता, बंधुभाव, सामाजिक एकता, हमलावरों के प्रति विद्रोह, और राष्ट्र कि एकता और अखंडता क़ो बल देने तथा सांस्कृतिक विरासत का सरंक्षण करने का कार्य इस युग कि कविता करती है। राष्ट्रप्रेम की भावना से युक्त कविता किसी व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में ओ जज्बा भर देती है और गुलामी की जंजीरों को तोड मुक्ति पाने के लिए मजबूर हो जाता है। भूषण और कवि चंद को कौन भूल सकता है, जो एक-एक छंद में समग्र युद्ध को पलट देने की क्षमता रखते हैं। संघर्ष से घबराकर पलायन करने वाले को फिर से समर भूमि लाकर खड़ा करने की शक्ति केवल कविता में है। इस दृष्टि से आधुनिक हिंदी कविता राष्ट्रीय जागरण में कर्तव्य दक्ष दिखाई देती है। शताब्दियों से गुलामी के बंधन में जकड़े हुए भारतवासियों में व्याप्त हीनता की भावना को दूर कर उसमें आत्म गौरव और आत्मविश्वास का संचार करने के लिए हिंदी कविता सफल दिशा निर्देश देती है। देश में जब जब विदेशी शक्ति का आक्रमण होगा, तब-तब कवि की लेखनी दृढ़ होकर जनमानस तक देशप्रेमी बनकर शामिल होने के लिए पुकारती रहेगी। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

संदर्भ सूची :

1. रामविलास शर्मा-भारतेंदु हरिश्चंद्र पृ. 35
2. डॉ. वार्ष्णेय-आधुनिक हिंदी काव्य पृ. 277
3. रामविलास शर्मा-भारतेंदु हरिश्चंद्र पृ. 36
4. मैथिलीशरण गुप्त,भारत भारती, वर्तमान खण्ड, पृ.118
5. प्रा. रा. तु. भगत,आधुनिक हिंदी कविता के चार दशकअजब पुस्तकालय कोल्हापुर पृ.26
6. वही पृ. 27
7. डॉ. रमेशचन्द्र शर्मा, हिंदी साहित्य का इतिहास, विद्या प्रकाशन कानपुर, पृ.293
8. प्रा. रा. तु. भगत,आधुनिक हिंदी कविता के चार दशकअजब पुस्तकालय कोल्हापुर पृ. 32
9. डॉ शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां पृ.305
10. वही, पृ.476
11. आशारानी, व्होरा स्वाधीनता सेनानी लेखक पत्रकार (संस्करण-1). नई दिल्ली: प्रतिभा प्रतिष्ठान, पृ. 18
१२. Kavitakosh.org./kk समर शेष -रामधारी सिंह दिनकर

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

३९. राष्ट्रीय चेतना और हिन्दी साहित्य

प्रा.डॉ.सुरेश शेळके
सहयोगी प्राध्यापक,
नागनाथ महाविद्यालय, औंढा ना. जि.हिंगोली

भूमिका —

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ है देश और समाज के प्रति सामूहिक जागरूकता, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता की भावना और सांस्कृतिक एकता का बोध। हिन्दी साहित्य ने इस चेतना के निर्माण और विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेषकर १९वीं और २०वीं शताब्दी में जब भारत स्वतंत्रता संग्राम की ओर अग्रसर हो रहा था, तब हिन्दी साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से जनमानस को जागृत किया।

भारत में राष्ट्रीय चेतना का उदय और पुनर्जागरण की पृष्ठभूमि

भारतीय पुनर्जागरण (Indian Renaissance) का आरंभ १९वीं शताब्दी में पश्चिमी शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और औपनिवेशिक शासन की पृष्ठभूमि में हुआ। यह एक ऐसी सांस्कृतिक जागृति थी जिसने समाज में सामाजिक-सुधार, धार्मिक आलोचना और आधुनिक बौद्धिक प्रवृत्तियों को जन्म दिया। भारतीय पुनर्जागरण ने देशवासियों में आत्मबोध और आत्मगौरव की भावना को जगाया। इससे भारतीयों में यह बोध पैदा हुआ कि वे केवल उपनिवेश नहीं, बल्कि एक समृद्ध सभ्यता और संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं। इसी चेतना ने आगे चलकर राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया।

अंग्रेजी शिक्षा के परिणाम स्वरूप अनेक भारतीय युवाओं में नई सोच जागृत हुई। नव विचारकों ने अंग्रेजी शिक्षा को अपनाकर तर्क, विवेक और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया। इसने भारतीयों को अपने समाज के दोषों (जातिवाद, अंधविश्वास, सती प्रथा आदि) पर विचार करने को प्रेरित किया और समाज सुधार की लहर उठी। ब्रह्म समाज (राजा राममोहन राय), आर्य समाज (स्वामी दयानन्द सरस्वती), रामकृष्ण मिशन (विवेकानंद) आदि आंदोलनों ने हिन्दू धर्म की सकारात्मक छवि प्रस्तुत की और यह दिखाया कि भारतीय संस्कृति आत्म-गौरव के योग्य है।

स्त्रियों की शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह की समाप्ति जैसे मुद्दों पर काम होने लगा, जिससे समाज में आधुनिकता आई और एक नया चेतनशील वर्ग तैयार हुआ।

ऐतिहासिक लेखन और सांस्कृतिक गौरव पुनर्जागरण काल में भारत के प्राचीन गौरवशाली इतिहास, विज्ञान, कला और साहित्य की पुनर्खोज हुई। इससे भारतीयों में राष्ट्र के प्रति गर्व और एकता की भावना जागृत हुई। अखबारों, पत्रिकाओं और साहित्य ने राष्ट्रवादी विचारों को फैलाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिन्दी, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं में लेखन राष्ट्रीयता का माध्यम बना।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

पुनर्जागरण की यह चेतना धीरे-धीरे राजनीतिक चेतना में परिवर्तित हुई। १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना इस चेतना का पहला राजनीतिक स्वरूप था। राष्ट्र के लिए सोचने की यह शक्ति पुनर्जागरण की ही देन थी। हिन्दी साहित्य में भारतेंदु युग से लेकर प्रगतिशील युग तक यह चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। साहित्यकारों ने जनजागरण, सांस्कृतिक एकता और देशभक्ति को अपने लेखन का आधार बनाया।

भारत में राष्ट्रीय चेतना का बीज पुनर्जागरण काल में ही बोया गया। इसने भारतीयों को अपने अतीत से जोड़ते हुए वर्तमान में उनके अधिकारों के प्रति सजग किया और स्वतंत्रता की आकांक्षा को जन्म दिया। पुनर्जागरण न केवल बौद्धिक क्रांति थी, बल्कि राष्ट्रीय चेतना की पुनरावृत्ति थी, जिसने भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने की दृष्टि दी।

राष्ट्रीय चेतना कोई स्वाभाविक तत्व नहीं है, बल्कि यह ऐतिहासिक परिस्थितियों और सामाजिक आंदोलनों का परिणाम होती है। भारत में यह चेतना औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष के दौरान विकसित हुई। हिन्दी साहित्य, विशेषतः कविता और गद्य ने इस चेतना को जन-जन तक पहुँचाया।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के बीज

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के आरंभिक स्वर भारतेन्दु युग में दिखाई देते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विषयों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता को सजग किया।भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रखर राष्ट्रीय चेतना के दीप स्तंभ थे। भाषा राष्ट्रीय चेतना का मूल आधार होती है। इसके संबंध में वे लिखते हैं-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"

द्विवेदी युग और राष्ट्रीयता

महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पादन में सरस्वती पत्रिका ने हिन्दी को राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बनाया। इस युग में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे कवियों ने भारत की स्वतंत्रता, संस्कृति और गौरव पर आधारित रचनाएँ कीं।

मैथिलीशरण गुप्त की "भारत-भारती" राष्ट्रीय चेतना की महत्वपूर्ण रचना है:

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी।"

राष्ट्रीय चेतना का सर्वाधिक तेजस्वी कालखंड स्वाधिनता आंदोलन रहा है।तत्कालीन कवितयों ने अपनी भावनाओं के, विचारों के माध्यम से हिन्दी साहित्य में जन जागरण और ओजस्विता के साथ प्रकट किया हैं। उनका काव्य मात्र शब्दों का संयोजन नहीं था, बल्कि वह क्रांति की मशाल थी, जिसने तत्कालीन जनमानस को आंदोलित किया।

'झाँसी की रानी' जैसी कालजयी कविता ने अंग्रेजों की चूलें हिला दी थीं। इस कविता में केवल वीर रस का प्रवाह नहीं था, बल्कि उसमें श्रद्धा, स्मृति, करुणा और आत्मगौरव की समवेत ध्वनि थी। वे उस युग की वह आवाज़ थीं, जो स्त्रियों के भीतर भी राष्ट्रप्रेम की चिंगारी को धधकाने वाली प्रेरणा बनीं। सुभद्राकुमारी चौहान जी की विशेषता यही नहीं थी कि उन्होंने राष्ट्रप्रेम लिखा–उन्होंने उसे जिया भी। वे मात्र कलम की

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

योद्धा नहीं थीं, बल्कि कर्मभूमि की भी सेनानी थीं। वे असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली प्रथम महिला थीं और महज़ १७ वर्ष की उम्र में ही गिरफ्तार की गईं। इसके बाद भी वह कई बार जेल गईं, विशेषतः ९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अपने पति लक्ष्मण सिंह के साथ।

उनकी कविता में राष्ट्रभक्ति केवल भाव नहीं, बल्कि जीवंत ऊर्जा थी–ऐसी ऊर्जा जो पाठक के अंतर्मन को झकझोर देती है:

"ख़ूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

यह पंक्ति आज भी हर भारतीय के हृदय में गर्व और प्रेरणा की अग्नि प्रज्वलित करती है।

छायावाद और स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति

छायावादी कवि जैसे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला और महादेवी वर्मा ने स्वतंत्रता, आत्मबोध और सांस्कृतिक गौरव को अपने काव्य में प्रस्तुत किया। यद्यपि छायावाद मूलतः आत्मानुभूति और सौंदर्यबोध का युग था, परंतु उसमें भी राष्ट्रीय चेतना के संकेत स्पष्ट हैं।

प्रगतिशील आन्दोलन और जनचेतना

१९३६ में शुरू हुए प्रगतिशील लेखक संघ ने साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का हथियार माना। प्रेमचन्द, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह जैसे रचनाकारों ने अंग्रेज़ी हुकूमत और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध लेखनी चलाई। प्रेमचन्दजी ने लिखा है, "साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, वह जीवन की आलोचना है।"

आधुनिक हिन्दी साहित्य और राष्ट्रचेतना

आज़ादी के बाद भी हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की सतत उपस्थिति रही है। समकालीन साहित्य में जातीय, भाषायी, और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद एकता की भावना पर ज़ोर दिया गया है।

निष्कर्ष :

हिन्दी साहित्य ने भारत में राष्ट्रीय चेतना के विकास में एक सेतु की भूमिका निभाई है। यह साहित्य केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि जनमानस को दिशा देने वाला माध्यम रहा है। हिन्दी के कवियों और लेखकों ने अपने लेखन से लोगों में स्वतंत्रता, समता और सामाजिक न्याय के लिए प्रेरणा दी।

संदर्भ:

१. मिश्र, रामविलास. भारतीय साहित्य और संस्कृति. राजकमल प्रकाशन, २००२
२. सिंह, नामवर. आलोचना और विचार. राजकमल प्रकाशन, १९८०
३. त्रिपाठी, रामनरेश. हिन्दी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, १९७५
४. राही, ओमप्रकाश. भारतेन्दु युगीन साहित्य और राष्ट्रीय चेतना, साहित्य भवन, इलाहाबाद, १९९५
५. देव, नागेन्द्र. हिन्दी साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन, प्रकाशन संस्थान, १९९८
६. द्विवेदी, महावीर प्रसाद. सरस्वती के संपादकीय, नागरी प्रचारिणी सभा, १९१०

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

४०. ओमप्रकाश वाल्मीकि के कविताओं में यथार्थ

प्रा.डॉ. गौतम वाघमारे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख

संत तुकाराम कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, परभणी

ईमेल -gautamwaghmare72@gmail.com मो.9960138835

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी दलित साहित्य में एक प्रमुख हस्ताक्षर है। ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वयं दलित जाति सें होने के कारण बचपण से ही जाति के दंश झेलते हुए अपना जीवन बीताया है।

30 जून 1950 में उत्तरप्रदेश के मुजफ्फर नगर जिले के बरला गाँव में जन्म हुआ था। बरला गाँव भी जातियता, छुआ-छूत , अस्पृश्यता, उँच-नीच से दूर नहीं था। देश को आजादी मिली थी, मगर दलितों के लिए आजादी मात्र कागजों में ही थी। स्कूल के द्वार सबके लिए खुले थे कहने के लिए, मगर दलितों के लिए मात्र मनुवादी व्यवस्था ने बंद ही किय थे। स्वयं ओमप्रकाश वाल्मीकि जी आत्मकथा 'जूठन' में इसका विस्तार से मनुवादी व्यवस्था का विवेचन करते है। बचपण से ही जातियता के दंश झेलते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी दलित साहित्य में कविता, कहानी, आत्मकथा, आलोचना, नाटक तथा अनेक गोष्टीयों के माध्यम से भारतीय समाज व्यवस्था का यथार्थ बयान करते दिखाई देते है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के जीवन मे पिता छोटनलाल के शब्द उर्जा देते है- "पढ-लिखकर जात सुधारनी है।" जन्म से लेकर मृत्युतक जाति व्यवस्था ने पिछा नहीं छोडा है। स्वयं ओमप्रकाश जी के अनुभवों से ज्ञात जोता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि व्यक्तित्व और कृतित्व तमाम दलितों तथा साहित्यकारों को हमेशा के लिए याद रहेगा। ओमप्रकाश वाल्मीकि की प्रकाशित रचनाएँ जिस में-सदियों का संताप, बस्स! बहुत हो चुका, अब और नही, शब्द झूठ नहीं बोलते, चयनित कविताएँ (कविता संग्रह), जूठन (आत्मकथा) (दो भागों में) अंग्रेजी, स्वीडिश, पंजाबी, तमिळ, मलयालम कन्नड, तेलगू में अनुदिन एवं प्रकाशित। सलाम, घुसपैठिए, अम्मा एंड आदर स्टोरीज, छतरी (कहानी संग्रह) दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, मुख्यधारा और यथार्थ (आलोचना) सफाई देवता (सामाजिक अध्ययन) सायरन का शहर (अरुण काले) मराठी से हिंदी अनुवाद मैं हिंदू क्यों नहीं (कांचा एलैया) अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, लोकनाथ यशवंत की मराठी कविताओं का हिंदी अनुवाद। एक रंगकर्मी होने के नाते 60 नाटकों में अभिनय एवं निर्देशन किया है। अनेक राष्ट्रीय सेमिनारों मे सहभाग तथा दलित साहित्य संमेलनों मे अध्यक्ष स्थान स्वीकार चूकें है। देश के अनेक विश्व विद्यालयों मे आपकी रचनाएँ पाठ्यक्रमों में सामील है। आपको अनेक पुरकारों से सम्मानित किया गया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का निधन 17 नवम्बर 2023 मे देहरादून में हो गया। भले ही आप इस दूनियाँ मे नहीं रहें। लेकिन आपकी साहित्य कृतियों के जरिए आप तमाम भारतीयों के दिलों मे बसे हुए है। उसे कभी भी भूला नहीं जा सकता।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109

A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal

Vol. 12, Issue 2, February 2025

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी बरला से देहारादून, देहरादून से जबलपूर, जबलपूर से अंबरनाथ (मुंबई) अंबरनाथ से चंद्रपूर (महाराष्ट्र) चंद्रपूर से देहरादून, देहरादून से जबलपूर, चालीस वर्ष की यात्रा की नौकरी के कारण हुई है। मैं एक शोध छात्रा के रुप मे ओमप्रकाश वाल्मीकि से देहरादून मिलने गया था। तब चर्चा में कई बातों पर प्रकाश डाला गया। आप दलित आंन्दोलन, दलित साहित्य से कैसे जुडे तब ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने कहा था- मैने 13 वर्ष चंद्रपूर में बिताये है। महाराष्ट्र में म. फुले, छ.शाहु महाराज तथा डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचरों से प्रभावित रहा हूँ। मेरे कई मित्र थे। जिनके कारण मैं विचारधारा के आंदोलन से जुडा रहा हूँ। साथ ही डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के सामाजिक आंदोलनों की भूमि महाराष्ट्र ही रही। मेरे लिए महाराष्ट्र की भूमि तथा डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मेरे लिए ऊर्जा तथा प्रेरणा दायी बने रहे।

मराठी में दलित साहित्य लेखन होता रहा था। सन 1960 के बाद दलित लेखक अपनी रचनाऐं प्रकाशित कर रहे थे। मगर हिंदी प्रदेश की हिंदी पत्रिकाओं में हिंदी प्रदेश की रचनाएँ छपवाते नहीं थे। उनका मानना यह था कि महाराष्ट्र के जैसी परिस्थिती हिंदी प्रदेशों मे नही है। हिंदी प्रदेशों में अनेक नारायणपूर, बेलछी कांड आदि हो गये थे। हिंदी संपादको का ध्यान उन घटनाओं को अनदेखा करता दिखाई देता रहा।

समाचार पत्रों के संपादक तथा पत्रिकाओं के संपादक दलित लेखकों की रचनाएँ छापते ही नहीं थे। यदि छापतें तो उनके मर्जी के अनुसार होता है। इसका उदाहरण बताते हुए, कहते है कि, 1980 मे 'जंगल की रानी' कहानी 'सारिका' पत्रिकाने स्वीकार की थी। छपवाने के लिए पंरतू 1990 में वापीस भेज दी गई बिना छापे ही। किननी पिडा दंश झेलते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि कभी हारे नहीं। अपने कविताओं मे कहानियों मे दलित समाज की पीडा , दर्द और सदियों से धर्म के ठेकेदारो द्वारा शोषण, अमानविय जीवन जीने के लिए बाध्य करने वाली व्यवस्था के प्रति संताप प्रकट करते है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का पहला कविता संग्रह 1989 मे फिलहाल प्रकाशन,24/49 धर्मपूर, देहरादून से प्रकाशित हो गया था। प्रस्तुत कविता संग्रह समर्पित युगपूरूष डॉ. भीमराव अम्बेडकर को, जिसने आदमी की तरह जीना सिखाया साथ ही उन सबको जो युगों-युगों से मूक बने, अन्याय सहते रहे और इन कविताओं का कारण बने।

सदियों से दलितों का जीवन नरक समान था, इन्सान होकर इन्सानी दर्जा न के बराबर था. जाति-पॉति, सामाजिक भेदभाव, विषमता, वर्ण व्यवस्था का बोलबाला रहा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी कविता के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक ओर दर्शनिक प्रश्न उपस्थित करते है। साथ ही दलितो कें अस्तित्व पर भाष्य भी करते है।

भारतीय समाज को एक संघ बनाये रखने का कार्य संविधान करता है। मगर समाज में आज भी जाति, धर्म के नाम पर विषमता देखने को मिलती है। आर्थिक दृष्टी से देखा जाए तो दलितों का आज भी शोषण जारी है।

दलित सदियों से अपने अस्तित्व की तलाश के लिए संघर्ष कर रहे है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ठाकूर का कुआ कविता में दलितो के दिल में उठनेवाले सवाल को प्रस्तुत करते है-

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

"चुल्हा मिट्टी का / मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का। / भूख रोटी की
रोटी बाजरे की / बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का । / हल ठाकुर का
हल की मूठ पर हथेली अपनी / फसल ठाकुर की।
कुंआ ठाकुर का / पानी ठाकुर का
खेत-खलिहान ठाकुर के / गली-मुहल्ले ठाकुर के
फिर अपना क्या ? / गाँव ?
शहर ? / देश ?" 1

सवर्ण समाज के हाथ में आर्थिक साधनों पर एकाधिकार रहा है। दलित-वंचित समाज ने बडे कष्टों में जीवन बिताया है । मेहनत मजदूरी कर के सारा धन ठाकुरों के हवेलीओं पर जमा करना, रोटी के लिए मोहताज होना पडता है। प्रश्न पैदा होता है कि इस देश में दलितों के लिए क्या है? हम भी इस देश के नागरीक है। हमे इन सभी अधिकारों से दूर क्यों ? हमारा अस्तित्व का क्या ? यह सवाल करती कविता है।

सदियों से दलितों को जाति के आधार पर काम लगाये गये है। निचले स्तर के काम केवल मानों दलितो के जिम्मे बने हुए है। मनुवादी विचार धारा आज भी समाज , शासन में कायम है। देश के तमाम नगरपालिका, महानगरपालिकाओं में सफाई कर्मचारी केवल दलित ही मिलेंगे यही पर कोई स्वर्ण स्त्री झाडू मारनेवाली, या मैला सफाई कर्मचारी नहीं मिलेगी। ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित मलिलाओं के दर्द को, दयनिय दशा को दर्शाते है। -"झाडू वाली" कविता में -

"साल-दर-साल गुजरते हैं
दीवारों पर चिपके चुनावी पोस्टर
मुंह चिढाते है।
जब तक रामेसरी के हाथ में
खडांग-खांग घिसटती लौह गाडी है
मेरे देश का लोकतंत्र एक गाली है!" 2

देश मे स्वातंत्र, समता बंधुत्व और न्याय का पक्ष संविधान ने सभी को दिया है। मगर आज भी रामेसरी जैसी महिलाएँ समाज का मैला गंदगी साफ सफाई अपने हाथों से करनी पडती है। यह मेरे देश के लिए तथा लोकतंत्र के लिए गाली है। मनुवादी विचारों के नेतागन चुनाव के समय बडे-बडे वादे करते है। महिलाओं के उन्नति तथा दुय्यम दर्जा को हटाकर उन्हे सम्मान जनक हाथों को काम देने का वादा तो करते है। मगर चुनाव होने के बाद सब कुछ भूला देते है।

सदियों का संताप प्रकट करते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते है कि, सदियों से दलितों को गाँव के बाहर रहने के लिए मजबुर किया गया था। अस्पृश्यता, छुआ-छूत, उच-निचता के चलते शिक्षा से कोसो दूर

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

रखा गया था। एक इन्सानी दर्जा नहीं दिया था। तब हमारे पूर्वजों ने कितनी यातनाएँ भोगी, दर्द पीडा और प्रताडनाएँ सही है तो कवि कहते है- तब तुम क्या करोंगे? कविता में मनुवादीयों को सवाल करते है-

"यदि तुम्हें
धकेल कर गाँव से बाहर कर दिया जाये
पानी तक न लेने दिया जाये कुंऐ से
दुतकारा-फटकारा जाये
चिल चिलाती दुपहर में
कहा जाये तोडने को पत्थर
काम के बदलें
दिया जाये खाने को जूठन
तब तुम क्या करोंगे ।" 3

ओमप्रकाश वाल्मीकि जीने अपनी कविता के जरिए जाति व्यवस्था पर प्रहार करते है। बल्कि जातियता के नामपर जो प्रताडनाएँ होती है, जो दिल को पीडा देती है। मनुवादी व्यवस्था के द्वारा स्वर्ग का गुणगान किया जाता है। ओमप्रकाश वाल्मिकि काल्पनिक स्वर्ग को तो अस्विकार करते है। फिर भी मरने के बाद स्वर्ग में जाने की बातों को वे धिक्कारते है-

"स्वीकार्य नहीं मुझे जाना
मृत्यु के बाद
तुम्हारे स्वर्ग में
वहाँ भी तुम
पहचानोंगें मुझे मेरी जाति से ही। " 4

सारांश :

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने भारतीय समाज व्यवस्था में सदियों से दलित शोषित वंचित समाज का यथार्थ बयान किया है। स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्र भारत में दलितों के प्रति भेदभाव और जाति, धर्म के नाम पर प्रताडना के शिकार बनाया जा रहा है।

दलितो के मन में असुरक्षा का भय पैदा हो गया है। गाँव, शहर, देश के प्रति जो अपनेपण की भावना बनी रहनी चाहिए मगर दलितों के गाँव, शहर, देश के साधन संपत्ति से बे दखल कर दिया जा रहा है। उनके अस्तित्व को ही नकारा जा रहा है। तब दलित अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे है। अपना क्या है, यह प्रश्न संताप के रुप में प्रकट हो रहा है।

देश में आज भी जातियता के नाम पर शोषण होता है। जाति के नाम पर काम भी करना पडता है। निचले स्तर के काम करने वाले लोगों के मन मे आशा की किरण है कि एक न एक दिन हमारे उन्नति हो जायेगी। चुनाव के समय नेता गन बडे बडे वादे करते है। समाज में दलित महिलाओं के उन्नति के मार्ग पर

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भाष्य करते है। मगर चुनाव खत्म होते ही किय गये वादे हवा में ही घुल मिल जाते है। स्वातंत्र्य , समता, बंधुत्व तथा न्याय की बात मात्र संविधान के पन्नो में ही बरकरार है। वास्तव में दलितो तथा दलित महिलाओं का जीवन बडा ही दयनिय देखा जाता है।

जातिप्रथा , छुआछूत के जो दंश झेलते दलित सवाल करते है कि जिस प्रकार से हमें गाँव से बाहर पानी से वंचित तथा सभी चिजो से वंचित रखा गया, खाने के लिए जूठन दिया गया है। वर्ण व्यवस्था का समर्थन करने वालों से सवाल कवि करते है कि आपके साथ यदि छुआ-छूत, अस्पृश्यता का व्यवहार किया जाये तो कैसे लगेगा।

कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वर्ग-नरक की मान्यता को नकारते है। क्योंकि जातिव्यवस्था के कारण पल-पल छलना आज भी देश में चालू है, इसलिए कवि कहते है मुझे नहीं जाना तुम्हारे स्वर्ग में ? क्योंकि वहाँ पर तुम मुझे मेरे जाति से पहचानोगें। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपने कविता के माध्यम से भारतीय समाज व्यवस्था का यथार्थ बयान करते है।

संदर्भ :

सदियों का संताप-ओमप्रकाश वाल्मीकि , पृ.3
सदियों का संताप-ओमप्रकाश वाल्मीकि , पृ.17
सदियों का संताप-ओमप्रकाश वाल्मीकि , पृ.28
बस्स! बहुत हो चुका-ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.78
सदियों का संताप- (कविता संग्रह) ,ओमप्रकाश वाल्मीकि
जूठन- (आत्मकथा) ओमप्रकाश वाल्मीकि

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

४१. माखनलाल चतुर्वेदी के कविता में राष्ट्रीय चेतना

डॉ.अर्चना बंग सोमाणी
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, छ. संभाजीनगर
मो.क्र. 9766860888 E-mail: archanasomani888@gmail.com

भारत द्वारा स्वतंत्रता की प्राप्ति दीर्घ और निरन्तर संघर्ष का परिणाम रहा है। विदेशी साम्राज्यवादीयों कि गुलामी भारत के समग्र क्षेत्रो पर विनाशकारी प्रभाव डालता नजर आया है। जिनमें सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक जीवन प्रभावित हुआ है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास गहन मानवीय दिलचस्पी तथा नाटकियता से ओतप्रोत है। अंग्रेज से पुर्व अनेक विदेशी भारत को लुटकर पुन: अपने स्थान चले गये किन्तु अंग्रेज शासक भारत पर राज करने की भावना से आये थे। भारत का शोषण कर अपने देश की उन्नती करना यह उद्देश रहा, यही अक्रोश का कारण बनया और इसका परिवर्तन स्वाधीनता- संग्राम के रुप में सामने आया जिसे कारण भारत का इतिहास सारे संसार के लिए एक अलग मिसाल बन गया है। प्रधान रुप से महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित अहिंसात्मक संघर्ष मानवीय सम्बधो की जटिलतम समस्याओं में से एक का समाधान प्रस्तुत करता है। गांधीजी के सत्य अहिंसा तत्व असहयोग कि दिशा बताते नजर आये। अत: राष्ट्रीय चेतना की भावना काव्य के रुप में प्रस्तुत होते हु भारत की आंतरिक विसंगतियो और विषमताओं को दुर करने कि खातिर कवियों ने आवाहन किया तथा जनता को विदेशी शासन से मुक्ती पाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में सहयोग देने की प्रेरणा दी। छायावादी प्रमुख कवियो के अलावा माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण नविन और सुभद्राकुमारी चौहान ने राष्ट्रप्रेम केवल लेखन द्वारा ही चित्रित नही किया अपितु स्वाधीनता संग्राम में सहभागी होकर कविता में अनुभुति की सच्चाई और आवेश दिखाया है। जिस प्रकार कैदी और कोकिला इस कविता में माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी अनुभुति को एक उच्चतर और लोकसामान्य भावभूमी के आधारपर स्पष्ट किया है।

"क्या देख न सकी जंजीरो का गहना?
हथकडियां क्यो? यह ब्रिटिश राज्य का गहना?
कोल्हू का चईक चू? जीवन की तान,
गिट्टी पर लिखे अंगुलियो ने गान?
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड का कुआ।" 1

प्रस्तुत पंक्तीयों में आजादी के खातिर आवाज उठानेवाले व्यक्ति को जेल में भी जाना पडा किन्तु वहाँ भी वह अपनी आवाज बुलंद करते नजर आते है।

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

माखनलाल चतुर्वेदी एक भारतीय आत्मा उपनाम से पहचाने जाते है। ये एक सजग, संवेदनशील एवं उत्साही व्यक्ति थे और आरंभ से ही देश की दशा के प्रति जागरुक दिखाई देते है। उनका लेखन स्वतंत्रता संग्राम की चेतना को काव्य और गद्य दोनो के माध्यम से समाज को प्रेरित करता नजर आया है। इनके 'हिमकिरीटनी' और 'हिमतरंगिनी' छायावाद युग के प्रमुख कविता संग्रह है। इनका साहित्य देशके प्रति समर्पित है, जिनमें विविधता से भावनाएँ प्रगट होती है।

स्वाधीनता संग्राम: माखनलाल चतुर्वेदी का लेखन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के खारित गहरी संवेदना व्यक्त करता नजर आया है। विदेश साम्राज्य के विरोध ममें तीव्र विरोध दिखाई दिया है।

"वह दिन दूर नही जब भारत सेतु बनेगा।
खुशहाली में बसा एक महाशक्ति बनेगा।
आगे बढे हम सभी संगठित हो,
हमारा भारत फिर से सोने की चिडिया बनेंगा।।" 2

"वह दिन दूर नही" यह कविता राष्ट्रीय एकता और भारतीय जनमानस को जागृत करती नजर आती है।

राष्ट्रीयता कि ऱ्हदयस्पर्शी कविताएँ : राष्ट्रीयता को प्रदर्शित करती तीव्र भावनाओ से ओतप्रोत विविध कविताएँ माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखी है। भारतीय युवा और समाज को स्वतंत्रता संग्राम के खातिर प्रेरित भावना व्यक्त होती 'पुष्प की अभिलाषा' इस कविता गान में लिखित पक्तीयाँ

"मुझे तोड लेना वनमाली
उस पथ में देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने
जिस पथ पर जावे वीर अनेक" 3

उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने स्वतंत्रता के खातिर सच्ची निष्ठा तथा समर्पण का भाव दर्शाया है।

राष्ट्रीय चेतना का प्रतिक: चतुर्वेदीजी की रचनाओं का स्वर राष्ट्रप्रेम और उससे जुडी भावनाएँ अनेक प्रतिको द्वारा व्यक्त होती है। उनकी कविता "हाथ में तिरंगा हो" भारतीय ध्वज के महत्व और उसकी रक्षा के प्रति अपना अन्योन भाव दर्शाया है।

"हाथ में तिरंगा हो, सर पर गांधी की टोपी
भारत के हर नागरिक के दिल में हो जोश
समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, एकता की पुरी पहचान हो,
स्वतंत्रता की आवाजा हो, और देश का हर कोना हो खुश।" 4

प्रस्तुत पंक्तीयों में तिरंगा राष्ट्रीय चेतना का प्रतिक के रुप में सम्मुख रखते हुए हार भारतीय जनता में जागृती, एकता तथा जिम्मेदारी का अहसास दिलाने का प्रयास होता नजर आता है।

राष्ट्रीयता तथा समाजिक भावना का समन्वय: राष्ट्रीय चेतना की भावनाएँ उजागर करते हुएँ उन्होंने समाज सुधार की भी भूमिका निभायी है। व्यक्ती व्यक्ती से मिलकर समाज बनता है अत: समाज में सामजस्य की

The South Asian Academic Research Chronicle ISSN 2454-1109
A Refereed Interdisciplinary Indexed International Open Access Monthly e-Journal
Vol. 12, Issue 2, February 2025

भावना निर्माण होना आवश्यक है, जिससे प्रेम और सौदाहर्य के साथ राष्ट्रीयता की जिम्मेदारी ज्ञात होने से राष्ट्रप्रेम जागृत होता है। "आओ कि तुमसे हम" इस कविता द्वारा भारतीय समाज को एकजुट करने की प्रेरणा नजर आती है। वह इस प्रकार

"आओ कि तुमसे हम कुछ काम करे,
हर हाथ में एक तलवार हो साथ चले हम।
नफरत की दिवारो को गिरा दे हम,
सबका एक ही नारा हो, भारत माता की जय।" 5

प्रस्तूत पंक्तियों में विविधता से संपन्न भारत में एकता और सामुहिक प्रयास से ही भारत माता को स्वतंत्रता का सुनहरा समय प्राप्त होगा। यह भाव समाज जागृती को प्रेरणा देता नजर आता है।

माखनलाल चतुर्वेदी जी के काव्य लेखन में देश प्रेम, देश कल्याण के लिए आत्मोर्त्सग की उत्कृष्ट भावना दिखाई देती है। देश की जनता को संघर्ष साधना और राष्ट्रीय एकता की भावनाओं का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देने का सफल प्रयास किया है। उनके काव्य और गद्य ने भारतीय समाज में न केवल जागृती निर्माण की है बल्कि अध्यात्मिक भावना, रहस्य भावना के साथ साथ समाज को राष्ट्रीय चेतना के भावना में एक महत्वपुर्ण तथा सफल योगदार दिया है। उनकी प्रेरणा एक सभ्यता का एक राष्ट्रीयता में परिवर्तन है। अत: यह राष्ट्रीय प्रभुसत्ता की स्थापना के माध्यम से राष्ट्रीयता की पुर्णता माखनलाल चतुर्वेदीजी के लेखन की सफलता है।

संदर्भ सुची:

1] हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ.नगेंद्र पृष्ठ क्र.519
2] वह दिन दुर नही – माखनलाल चतुर्वेदी इंटरनेट
3] पुष्प की अभिलाषा – माखनलाल चतुर्वेदी इंटरनेट
4] हाथ में तिरंगा हो – माखनलाल चतुर्वेदी इंटरनेट
5] आओ कि तुमसे हम – माखनलाल चतुर्वेदी इंटरनेट